





मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

(भूतपूर्व जोधपुर-नरेश परमपद-प्राप्त राजर्षि महाराजा श्री श्री मानसिंहजी महोदय रचित व्यावहारिक आत्म-ज्ञान के पद्यों का संग्रह)

दूसरा भाग

—: संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक :—

रामगोपाल मोहता

बीकानेर (राजस्थान)

[illegible]री बार ५०० } सम्वत् २००६ { मूल्य कागज, छपाई, जिल्द बधाई आदि का [illegible] रु०

मुद्रक :—
गोरख प्रिन्टिङ्ग प्रेस,
नियर पोस्ट ऑफिस के पास,
बीकानेर।


॥ लाडूनाथजी ॥
॥ श्री देवनाथजी महाराज ॥
॥ महाराजा श्री मानसिंहजी जोधपुरके ॥



मान पद्य-संग्रह

दूसरे भाग की पद्य-सूची



मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार में, एक अखण्डित देव।
गुणिजन गुण गायन करे, करत बुद्धि जन्न सेव॥
मानसिंह जग आयके, ऐसा रटहु गणेश।
आय जाय जन्मे नहीं, अमर रहत हमेश॥
गुणगण[1] गणपति[2] गणाधिपति[3], गुणहु अनन्त गुण होय।
मानसिंह वो गणपती, मरे न जन्मे कोय॥

॥ गान ॥

॥ राग देश। ताल दीपचन्दी ॥

सईयाँ गणपति गुण गावो ए।
निराकार निर्लेप गजानन्द, सोई मनावो ए॥ टेर॥
मूल महल में ॐ गणेशा, सोई निज ध्यावो ए।
निश्चय करने उलटा चालो, निज घर आवो ए॥ १॥
ज्ञान कर्म संग नित रहवो, बाहर न जावो ए।
अपनो स्वरूप सोई तुरिया बिच, मौज उड़ावो ए॥ २॥

१—तीन गुणों का समुदाय, २—सगुण ईश्वर, ३—परब्रह्म।

स्वास न रूँधो कान नहीं मूँदो, ब्रह्म में समावो ए।
सातों हि सुन्न बिना हि परिश्रम, सहजे चढ़ावो ए ॥ ३ ॥
प्रकृत पुरुष पुरुष सो प्रकृति, भिन्न न बतावो ए।
तू है जगत् जगत् है तुझ में, एक मिलावो ए ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु ब्रह्म स्वरूपी, सहज दिखावो ए।
मान गणेश मरे नहिं जन्मे, अमर पद पावो ए ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मान सेव वो भगवती, रही विश्व को धार।
वो देवी क्या सुमरिये, जो और से मांगण हार।
और से मांगण हार, भोग फिर और लगावे।
इतनी हिम्मत नाँय, आप हाथे जो खावे।
पुरुषारथ से हीन सो, पूजत मूर्ख गँवार।
मान सुमर वो भगवती, रही विश्व को धार ॥

॥ कुण्डलिया ॥

योगमाया जो कृष्ण की, कृष्ण सर्व आधार।
तू उनही को ध्याय ले, तब हो बेड़ा पार।
तब हो बेड़ा पार, रूप अपने को पावे।
कृष्ण के माँय समाय, माया फिर नाँय सतावे।
काल सदा डरतो रहे, मिटे जो द्वैत विकार।
योगमाया जो कृष्ण की, कृष्ण सर्व आधार ॥

॥ कुण्डलिया ॥

कोइक पूजत कालिका, कोइक चण्डी ध्याय।
कोइक पूजत शीतला, अन्धविश्वास न जाय।
अन्धविश्वास न जाय, कहो कब तक समझावें।
कह गये संत अनंत, अनन्त* जो कहत थकावे।
इनको चाहे कितनी कहो, अक्ल जरा नहीं आय।
कइयक पूजत कालिका, कइयक चण्डी ध्याय ॥

॥ चौपाई ॥

चारूँ वेद में कही यह बानी। इच्छा आदि ब्रह्म की मानी ॥
तातें बात समझ कर लीजे। पुरुष एक रट दुविधा तजीजे ॥

---

* शेष भगवान्।

इच्छा पुरुष माँय मिल जावे। तातें पुरुष जो एक कहावे॥
अविद्या मात्र लेश है भाई। तातें बंधन रूप कहाई॥

॥ दोहा ॥

माया ब्रह्म द्वितिये नहीं, हुवा न कभी होय।
मानसिंह जग भरम में, पड़ी लटक रही सोय॥

॥ दोहा ॥

मान कहे महादेव सब, करे न अर्थ विचार।
देव विचारे आपनो, तो भव सागर पार॥
सब देवन को देव है, महा एक आतम देव।
और देव सब छोड़ के, करिये आतम सेव॥
जीव भाव जड़ता तजो, फिर नहीं आय कलेश।
सब से शेष पावे तुम्हें, उनको समझ महेश॥
विषय तजे इन्द्री तजी, तज दीनो जब मन।
तब मिल गये निज शंभु से, आतम अखिल रतन॥

॥ गान ॥

॥ राग टोडी। ताल तिताला ॥

उन हर की बलिहारी, साधो मैं तो उन हर की बलिहारी।
सबके हृदय बीच जो व्यापक, वेद रटे नित चारी। साधो मैं तो॥ टेर॥
नहीं काशी कैलाश में जाऊँ, पैंड एक नहीं धारी।
तीन गुणों पर मन को मार्यो, सो महेश त्रिपुरारी॥ १॥
नहीं भंग पीवे न होय बावरो, चातुर अजब खिलारी।
जगत् रच्यो और रहत अकर्ता, इनकी शोभा न्यारी॥ २॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जब, बिगड़ी बात सुधारी।
मानसिंह परस्यो निज शंकर, गिरजा पुरत हमारी॥ ३॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरव। ताल दादरा ॥

हे महेश दीन बन्धु, सर्व व्यापी प्यारे।
हम हैं तेरे तुम हो मेरे हम न तुम से न्यारे॥ टेर॥
कहते हैं यह मसखरे सब मकर से उचारे।
गाल को बजाय गाय झूठ कहें सारे॥ १॥
कहते तुमको भंग पीये कलंक झूठ डारे।

विश्वपति हो जो तुम्ही जगत् के इजारे ।। २ ।।
तुम से भूमि और आकाश सूर्य चन्द तारे ।
जाने नहीं अर्थ तेरो वृथा सिर को मारे ।। ३ ।।
कहते हैं जो शिव शिव अर्थ ना विचारे ।
आत्म रूप शिव स्वरूप वेद कहैं चारे ।। ४ ।।
कहते बम्म भोला तुम्हें मूर्ख जो गंवारे ।
अगर आप भोले होते जगत् क्यों रचा रे ।। ५ ।।
करते हैं यह विनय तुम से वेद विधि उचारे ।
मगर अर्थ भूल गये जिनसे दुःख भारे ।। ६ ।।
बार बार वर यह माँगूँ घट के पट उघारे ।
मान जीव भाव त्याग ब्रह्म में बिठा रे ।। ७ ।।

।। सवैया ।।

श्याम स्वरूप सभी जग है वह नित्य सदा न गयो नहीं आयो ।
गुंडन गोल में भूल गयो इन न्यारो हि न्यारो जो मोय बतायो ।
देवहुनाथ कृपा करके निज रूप दिखाय के भरम मिटायो ।
मान को जान परी अबही तब पोल के पन्थ को दूर हटायो ।।

।। ज्ञान ।।

।। राग मलार । ताल ध्रुपद ।।

भूलत[1] मेरो अखण्ड श्याम[2], पास रहत प्यारी[3] ।। टेर ।।
नांय कहीं जाय आय, प्राण की आधारी ।
भूले जीव जाने नाँई, पावत दुःख भारी ।। १ ।।
पंच कोश पंच विषय, रहत आज्ञाकारी ।
देख जाको दिव्य दृष्टि, मोह तम हारी ।। २ ।।
नहीं राधे कुकर्म कीन, कृष्ण ना व्यभिचारी ।
मानसिंह पूर्ण ब्रह्म, कूरो कहे लबारी ।। ३ ।।

।। ज्ञान ।।

।। राग मलार । ताल ध्रुपद ।।

कृष्णचन्द्र पुरुष एक, गोपी जगत् सारी ।। टेर ।।
धरत स्वाँग नये नये, भीख के भिखारी ।
कहत हरि ब्रज बिहारी, जगत् को विहारी ।। १ ।।

१—सर्वत्र व्याप रहा, २—आत्मा, ३—बुद्धि ।

कृष्ण जैसे महा योगी, वेद रटत चारी ।
इनके मन में शरम नाँही, कहवत व्यभिचारी ॥ २ ॥
मान कहे देवनाथ, मेरी तो सुधारी ।
मेरी कही तुम भी मानो, होवहु भवपारी ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके की । ताल कैरवा ॥

मोहन रूप मिल्यो जग में ओ मोहन हारो रे;
रूप निज श्याम निहारो । हाँ रूप निज० ॥ टेर ॥
आदि अमर अज्ञात कहाय; नित्य रहे ओ आय न जाय ।
गुणिजन करत विचार धार नित एक ही सारो रे । रूप निज श्याम० ॥ १ ॥
वही गोपाल और ग्वाल कहाय; नारी पुरुष में एक रहाय ।
वोही बैन बजाय के विश्व नचावन हारो रे । रूप निज श्याम० ॥ २ ॥
बन उपवन लीना सब जोय; न्यारो नहीं तो मिले क्या कोय ।
गीता ग्रन्थ में कृष्ण स्वयं यूँ आप पुकारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ३ ॥
भूल पड़े सो न्यारो गाय; न्यारो कहे जाके हाथ न आय ।
ढूँढ लेवो सब जगत् मिले नहीं श्याम हमारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ४ ॥
तुम ढूँडो जो नंद को लाल; वो तो गये काल के गाल ।
चट पट ढूँढो आतम कृष्ण नहीं तो काल तुम्हारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ५ ॥
देवनाथ भ्रम भञ्जनहार; जिन दिखलायो नित्य अवतार ।
मानसिंह जब निरख लियो भ्रम उड़ गयो सारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल तिताला या कैरवा ॥

देख्यो मैं तो सब घट श्याम बिहारी रे ॥ टेर ॥
श्याम बिना कोई घट नहीं खाली, हरदम समझ बिचारी रे । देख्यो मैं तो० ॥१॥
जिण घट में जो श्याम न होवे, चट देवें बाहर निकारी रे । देख्यो मैं तो० ॥२॥
वोही मन्दिर वोही है मूरत, वोही है प्रेम पुजारी रे । देख्यो मैं तो० ॥३॥
जड़ चेतन में श्याम ही दीखे, श्याम रूप नर-नारी रे । देख्यो मैं तो० ॥४॥
श्याम ही मित्र श्याम कहिये शत्रु, सृष्टि श्याम निहारी रे । देख्यो मैं तो० ॥५॥
देवनाथ गुरु मिले मान को, जिण कियो सुखकारी रे । देख्यो मैं तो० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ राग मांड-आसावरी । ताल तिताला या कैरवा ॥

देख्यो मैं तो सब जग खेल खिलारी रे ॥ टेर ॥
खेले खेल अखेल रहे नित, इनकी है गत इक न्यारी रे । देख्यो मैं० ॥ १ ॥
मोतियाबिन्द कियो सब जग को, भूल गयो जग सारी रे । देख्यो मैं० ॥ २ ॥
अंजन ज्ञान कियो गुरु मुख सूँ, जब सूझी मोहे सारी रे । देख्यो मैं० ॥ ३ ॥
साधक सिद्ध ने सिद्ध सुजान भये, सोई अंजन हम सारी रे । देख्यो मैं० ॥ ४ ॥
नभ पाताल भूमण्डल सारो, कौतुक रूप निहारी रे । देख्यो मैं० ॥ ५ ॥
मान कहे ऐसी भई सम दृष्टि, जैसे तुलसी पुकारी रे । देख्यो मैं० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती-गरबा, झेला । ताल नकटा दादरा ॥

बाला सब माँय खेले म्हारो श्याम; एने कोई जाणतो नथी ।
जाणतो नथी एने पहिचानतो नथी; बाला सब माँय खेले० ॥ टेर ॥
एवो कहिये श्याम हमारो रे । सब माँय खेले सब थी न्यारो रे ।
हाँ रे बाला पूरण रूप तमाम; एने कोई जाणतो नथी ॥ १ ॥
भूला जीव बाहिर भरमावे रे । बिन जाण्याँ बिन केम करी पावे रे ।
हाँ रे बाला शी कर थाय विश्राम; एने कोई जाणतो नथी ॥ २ ॥
प्राणांनु प्यारो वालो आपनु आप छै रे । भेद बिना बधा सहे सन्ताप छै रे ।
हाँ रे बाला पढ़ता नथी वेद ना कलाम; एने कोई जाणतो नथी ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु भेद जणाव्यो रे । शुद्ध करी ने रूप समझाव्यो रे ।
हाँ रे बाला दूर थई रह्यो छै अज्ञान; एने कोई जाणतो नथी ॥ ४ ॥
मानसिंह हवे भूलत नाँई रे । जेवो हतो तेवो दीधो लखाई रे ।
हाँ रे बाला दीधो छै काल सिर पाँव; एने कोई जाणतो नथी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती गरबा । ताल नकटा दादरा ॥

बाला सूता उडाड़ी गुरू नींद छै रे ॥ टेर ॥
जन्म अनेकनी आ नीन्द एवी कहिये ।
हाँ रे बाला आयने बजाई गुरू बीण छै रे । बाला सूता उडाड़ी ॥ १ ॥
जागी गयो छूँ हवे पाछो नथी सोऊँ ।
हाँ रे बाला गुरु चरणाँ में सिर दीनां छै रे । बाला सूता उडाड़ी ॥ २ ॥
आत्म तत्त्व पायो हवे सर्वे दुःख टूटा ।

हाँरे वाला ब्रह्म घोड़े चढ़ी थयो वींद छै रे। वाला सूता उडाड़ी ॥ ३ ॥
देवनाथं हाथ पकड़ आप में मिलायो।
हवे मान थयो गुरु बिच लीन छै रे। वाला सूता उडाड़ी ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड—आसावरी। ताल कैरवा ॥

निरख[1] रूप सुख पाई हे; बिहारी[2] जी रो, निरख रूप सुख पाई हे ॥ टेर ॥
सब में बिहार[3] करे ओ निर्भय, किण सूँ ही शंके[4] नांई हे। बिहारीजी रो० ॥१॥
सुरत सुहागण श्याम ने निरख्यो, मन मन्दिर रे माँई हे। बिहारीजी रो० ॥२॥
नित झाँकी ज्याँ रे पड़दो न कोई, बात कराँ मन भाई हे। बिहारीजी रो० ॥३॥
बाल न ज्वान वृद्ध कुछ नाँही, एक रस रहत सदाई हे। बिहारीजी रो० ॥४॥
एक रस श्याम[5] श्यामा[6] भई एक रस, रस[7] बिच रस हो समाई हे। बि० ॥५॥
मानसिंह गुरु देवनाथ सो, भ्रम दियो दूर भगाई हे। बिहारीजी रो० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ राग टोडी जौनपुरी। ताल कैरवा ॥

सनमुख दरसण कीना; बिहारीजी रा, परगट दरसण कीना।
कर दरसण सब दुविधा भागी, इत उत कहीं भटकी ना। बिहारीजी रा० ॥ टेर ॥
करम कपाट ज्याँरा नहीं उघड़े, वो समझो मत हीना।
करम कपाट को दूर किये जिन, सदाई रहत रङ्ग भीना ॥ १ ॥
इण दरसण में अमृत बरसे; भाग बड़ा जिन पीना।
है मतिमन्द प्रगट नहीं जोवे, जाय पथरन सिर दीना ॥ २ ॥
मन्दिर में गावें और नाचें, निरत बहु विधकीना।
हम तो परिश्रम बहुत ही कीनो, वाह वाह तक नहीं दीना ॥ ३ ॥
गाय गाय सिर दूखण लागो, नाचण शक्ति रही ना।
हम ही थाक कर घर को चले गये, उण तो कुछ भी कही ना ॥ ४ ॥
ऐसो गूँगो देव हमारो, वृत्ती मान रही ना।
मानसिंह आतम भयो अनुभव, पल एक दूर गई ना ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग गोरी। ताल कैरवा ॥

इन छबि पर बलिहारी, मोहन प्यारे इन छबि पर बलिहारी ॥ टेर ॥

१—आत्म ज्ञान, २—आत्मा, ३—व्यापक, ४—सदा एक रस, ५—आत्मा, ६—सुरता, ७—आत्म-प्रेम,

समता स्वरूप मुकुट शिर धारी, सब जग को अधिकारी ।
सब को खेलावे आपही खेले, ऐसो है अजब मदारी । मोहन प्यारे० ॥ १ ॥
मीठा बोल चाल अति मीठी, प्रेम सहित ब्रह्मचारी ।
अपनो ही भाव सकल माँहि देखे, समझे न जग को न्यारी । मोहन प्यारे० ॥२॥
चारूँ वेद उपनिषद् इक शत, हो तुम सार में सारी ।
सो सारांश गुप्त नहिं राख्यो, गीता प्रगट पुकारी । मोहन प्यारे० ॥ ३ ॥
नभ और भू पाताल बंसी[1] सब, लागत हमको प्यारी ।
आप बजावे आप बस भयो है, करत रागनी सारी । मोहन प्यारे० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु निगुण सगुण होय, बात कही अति भारी ।
मानसिंह गम अन्तर कर के, मन बिच देख्यो मुरारी । मोहन प्यारे० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज लावणी की । ताल कैरवा ॥

मिल्यो सखी मग में बनवारी; उन्हीं से लागी दो तारी ॥ टेर ॥

सैन मोहन से लगी म्हारी; सैन लगते ही सुधि हारी ।
गो रक्षक गोपाल ने, मम तन मन वश कीन ।
और बात मोये कछु नहीं सूझे, भई स्याम आधीन;
भूल गई तन की सुध सारी; उन्हीं से लागी० ॥ १ ॥
सैन में अजब रंग प्यारी; प्रेम की छटा बहुत भारी ।
कैद कियो इण विश्व को, न्यारो रह गयो आप ।
जो इणने जाणे नहीं सरे, सहे तीन संताप;
कहे यूँ वेद प्रकट जारी; उन्हीं से लागी० ॥२॥
घड़े अब जीव ब्रह्म दोई; पिया[1] और प्यारी[2] एक होई ।
पड़दा टूटा द्वैत का, पायो एक स्वरूप ।
अपने आप समा गयो सरे, बूर भरम का कूप;
आनन्द उपज्यो दिल में भारी; उन्हीं से० ॥३॥
करै क्या जग इण से हारी; थाक गये वेद कहत च्यारी ।
इण चटकीले श्याम ने, सबको लियो चित चोर ।
विश्व विभू की कुञ्ज गली में, खेले नवलकिशोर;
खेल रही गोपी संग नारी; उन्हीं से० ॥४॥

१—आत्मा, २—वृत्ति ।

मिले गुरु देवनाथ नामी ; कृपा कर भेट्यो निज स्वामी ।
मान दान जोवन(१) तणो गुण्डन को नहीं दीन ।
महान में मान समा गयो सरे, होय कृष्ण में लीन;
मिटी है विपदा सब म्हारी; उन्हीं से लागी० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "व्रज के रसिया" की । ताल कैरवा ॥

ऐसो अजर अमर घनश्याम(२) श्याम से प्रीत लगाई रे ॥ टेर ॥
प्रीत लगाय के पलटत(३) नांई रे । जो पलटे तो प्रीत न कहाई रे ।
प्रीत लगाय के पलटत नांई । जो पलटे तो प्रीत न कहाई ।
शीश(४) उतार धर्यो जब अपनो आवत नाँई रे । ऐसो अजर अमर० ॥१॥
प्रीति करी जद यह फल पायो रे । अपने संग निज रूप बनायो रे ।
प्रीति करी जद यह फल पायो । अपने संग निज रूप बनायो ।
जीव जीव के जाल मिटाय जिन भ्रान्ति भगाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥२॥
सत् चित् घन प्रभु नाम तुम्हारो रे । सब में रहत लगत अति प्यारो रे ।
सत् चित् घन प्रभु नाम तुम्हारो । सब में रहत लगत अति प्यारो ।
क्या कहूँ शोभा आपकी मैं कुछ पार न पाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥३॥
देवनाथ को साथ सुहायो रे । जिन ब्रह्माण्ड को ब्रज यह बतायो रे ।
देवनाथ को साथ सुहायो । जिन ब्रह्माण्ड को ब्रज यह बतायो ।
मान रास अस देखत मन में हरष मनाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "व्रज के रसिया" की । ताल कैरवा ॥

थाँसूँ प्रीत करी मनमोहन(५), म्हारी(६) प्रीत निभाज्यो जी ॥ टेर ॥
इण भव में कोई साथी न म्हारो जी । थे हो म्हारा ने मैं हूँ थाँरो जी ।
इण भव में कोई साथी न म्हारो । थे हो म्हारा ने मैं हूँ थाँरो ।
आदि सनातन जाण आपणो मत विसराज्योजी । थाँसूँ० ॥ १ ॥
थे छो मोटा ने मैं हूँ छोट(७) जी । होय अविद्या में कर्म किया खोटा जी ।
थे छो मोटा ने मैं हूँ छोटा । होय अविद्या में कम किया खोटा ।
अब तो आपणो जाण अविद्या दूर हटाज्यो जी । थाँसूँ० ॥ २ ॥

१—मनुष्य-जीवन, २—आत्मा, ३—दृढ़ निश्चय, ४—देहाभिमान का त्याग । ५—परमात्मा, ६—जिज्ञासु, ७—जीवभाव ।

हम तुम दोऊ इक संग उपजाये जी। एक अनेक तुमही तो बनाये जी।
हम तुम दोऊ इक संग उपजाये। एक अनेक तुम ही तो बनाये।
मैं हूँ अंश तुम्हारो प्रभु अब मोय मिलाज्यो जी। थाँसूँ० ॥ ३ ॥
किया अनेक एक कर लीजे जी। तुम बहुनामी कछु नहिं छीजे जी।
किया अनेक कर लीजे। तुम बहुनामी कछु नहिं छीजे।
हम तुमरी आज्ञा को पाली अब तुम पालीज्यो जी। थाँसूँ० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरू मिले ब्रह्मज्ञानी जी। मान बात तब ही पहिचानी जी।
देवनाथ गुरू मिले ब्रह्मज्ञानी। मान बात तब ही पहिचानी।
प्रेम पियाला पाय नाथ अपनो अपनाज्यो जी। थाँसूँ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "व्रज के रसिया" की। ताल कैरवा ॥

देखी माया सब गोपाल की, क्या तुम रास दिखावो रे ॥ टेर ॥
असल मिले नकली नहीं भावे रे। झूठे स्वाँग कुण ध्यान लगावे रे।
असली मिले नकल नहीं भावे। झूठे स्वाँग कुण ध्यान लगावे।
सत पुरुषाँ रो स्वाँग धार मत श्यान गमावो रे। देखी माया सब० ॥ १ ॥
कृष्ण समान नहीं ब्रह्मचारी रे। आप समान लखी ब्रजनारी रे।
कृष्ण समान नहीं ब्रह्मचारी। आप सभान लखी ब्रजनारी।
झूठो नाम लगाय धरम ने दाग लगावो रे। देखी माया सब० ॥ २ ॥
अन्तर कृष्ण को ध्यान लगावो रे। होय बारीक कृष्ण में समावो रे।
अन्तर कृष्ण को ध्यान लगावो। होय बारीक कृष्ण में समावो।
जाणो ईश्वर रूप जन्म तुम फेर न पावो रे। देखी माया सब० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरू पर उपकारी रे। सहज बतायो है कृष्ण मुरारी रे।
देवनाथ गुरू पर उपकारी। सहज बतायो है कृष्ण मुरारी
मान कहे मैं देखूँ नहीं तुम दूर हो जावो रे। देखी माया सब० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह या जगत में, पूजा एक महान।
पूजन जिन(१) को भूल गये, पूजन लगे पहान(२) ॥
मानसिंह या जगत में, पूजा एक प्रधान।
पूजन जिनको भूल गये, सभी बिगाड़ी तान ॥
सेवा कर जाने नहीं, सेवक नाम धराय।

१—आत्मा, २—पत्थर, ।

निज मन्दिर में श्याम है, तिनकी सेवा पाय ॥
ऊपर तिलक लगाय के, जगत दिखाऊ सन्त ।
अन्तर तिलक (१) सो बिखरियों, लख्यो न प्रेम को पन्थ ॥
प्रेम पन्थ जाने बिना, प्रेम नगर (२) किम आय ।
प्रेम नगर आयाँ बिना, गिरधर मिलसी नाँय ॥
प्रेम गाम पारथ चल्यो, मिले हैं सुन्दर श्याम ।
सो गीता को देख लो, कहत प्रेम को गाँव ॥
प्रेम गाम की सैल सो, पारथ प्रतच्छ कीन ।
रण झूझ्यो भारत कियो, रह्यो ब्रह्म में लीन ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड—आसावरी । ताल कैरवा ॥

मिल गये प्रेम पुजारी रे; मन्दिरिये(३) में मिल(४) गये प्रेम-पुजारी(५) रे ॥ टेर ॥
प्रेम पुजारी कपट पट खोल्या, दरश दियो गिरधारी रे। मन्दिरिये में मिल गये० ॥ १ ॥
इण मन्दिर में दरशण कीना, मिटी है कल्पना सारी रे। मन्दिरिये में० ॥ २ ॥
मन मैलापण दूर गयो सब, हरदम रहत उजियारी रे। मन्दिरिये में० ॥ ३ ॥
मानसिंह जब मिले गिरधर में, नाँहि पुरुष नहिं नारी रे। मन्दिरिये में० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड—आसावरी । ताल कैरवा ॥

प्रेम नहीं पर (६) घर में ; यह देख्यो मैं तो, प्रेम नहीं पर घर में ॥ टेर ॥
चारूँ ही धाम तीरथ सब खोज्या, पायो मन मन्दिर में। यह देख्यो मैं तो० ॥ १ ॥
पर घर प्रीत प्रीत नहीं घर सूँ, सो योंही रहसी अधर में। यह० ॥ २ ॥
प्रेम पन्थ कोई बिरला पावे, कबहूँ न जाय भँवर (७) में। यह० ॥ ३ ॥
बाहिर भटकी कबहूँ न पायो, खो दीवी सगरी उमर में। यह० ॥ ४ ॥
पर घर पलट घर को घर जोयो; उतर ने खेली समर (८) में। यह० ॥ ५ ॥
मानसिंह प्रेम पद पूरो, जाय मिल्या गिरधर में। यह० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड—आसावरी । ताल कैरवा ॥

सिन्धु सुता (९) पति पायो ; अन्तर मैं तो, सिन्धु सुता पति पायो ॥ टेर ॥

१—ज्ञान, २—सर्वात्म भाव, ३—मन, ४—परमात्मा से मिल गये, ५—आत्म-प्रेम के उपासक, ६—बाहिरी मन्दिरों आदि में, ७—अविद्या, ८—विचार रूपी युद्ध, ९—परमात्मा।

शिव रिपु(१) मेरो कछु ना कर ही, विष्णु प्रिय (२) मन भायो। अन्तर मैं तो० ॥१॥
भृगु के मित्र(३) को अलग कर दीनो, राधे मीत(४) अपनायो। अन्तर० ॥ २ ॥
भरत रिपु(५) को नाश कियो जद, मीत(६) प्रह्लाद सुहायो। अन्तर० ॥ ३ ॥
रावे रिपु (७) को अलग कियो मैं, मान यूँ सहज समायो। अन्तर० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

कृष्ण कहो किम आवे। श्रद्धा बिन कृष्ण कहो किम आवे ॥ टेर ॥
क्या वो आवे कहाँ गयो है, नैन(८) बिना नहीं पावे।
नारी नर और नर निरखे नारी, कृष्ण को दोष लगावे। श्रद्धा० ॥ १ ॥
यह तन रथ इन्द्रिय सब घोड़े, अर्जुन मन ठहरावे।
निज निश्चय की बाग डोर कर, कृष्ण हाथ पकड़ावे। श्रद्धा० ॥ २ ॥
शुद्ध चेतन निज कृष्ण विराजे, दिव्य दृष्टि दरसावे।
गुरु गम ज्ञान तरक कर पूछे, सब संशय भग जावे। श्रद्धा० ॥ ३ ॥
मन और जीव जो एक रूप है, जीव ही ब्रह्म कहावे।
अर्जुन कृष्ण कृष्ण भये अर्जुन, गीता गुप्त गम पावे। श्रद्धा० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु भेद दियो जद, मन को भरम मिटावे।
मान कृष्ण मेरे पास सदा है, कुण फिर भेज बुलावे। श्रद्धा० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल तिताला ॥

पपीहा(९) वृथा बोल क्यों खोवे। तू बोले पर शक्र(१०) सुने नहीं;
विरहनी(११) सुन कर रोवे ॥ टेर ॥
मरुधर(१२) देश कोसाँ जल(१३) दूरो, कहाँ यहाँ निकट पड़्यो है।
बूँद(१४) चहे तो जाय दधि(१५) ढिग, जहाँ नित मेघ(१६) चढ़्यो है ॥१॥
इन्द्र(१७) भी मिठुर(१८) निठुर हैं हम भी, दोनूँ को युद्ध(१९) छिड़्यो है।
महा भयानक काल (२०) निकस गयो, तब हूँ न प्राण हर्यो है ॥ २ ॥

१—कामदेव, २—सत्वगुण, ३—क्रोध, ४—प्रेम, ५—मोह, ६—ज्ञान, ७—मान, ८—ज्ञान-दृष्टि, ९—नाम रटने वाला, १०—भगवान्, ११—भक्त, १२—तुरीय पद १३—आनन्द, १४—आनन्द, १५-विचार-समुद्र, १६-ज्ञानामृत रूपी वर्षा, १७-परमात्मा, १८—नाम रूप से परे-निर्बन्ध, निर्लिप्त, १९—एकता की लड़ाई, २०—मृत्यु।

या तो पपीह पीह(१) मत बोलो, नहीं मन भावत मोहे ।
बोल पीह पीह पीयहि(२) बुलावे, जब जानें हम तोहे ॥ ३ ॥
वो दिन(३) गये सुनत बान तेरी, अब तो दूर(४) गयो है ।
उड़ परे जाय कान मत खावे, शीश पचाय रह्यो है ॥ ४ ॥
पिया परदेश(५) जहाँ तुम जावो, यहाँ पड़्यो क्या रोहे ।
मान कहे चातक(६) मानो अब, काहे को मूरख भयो है ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

मोहे भगवत भक्ति भावे ।
ब्रह्म सम्बन्ध प्रेमयुत लीनो और न सम्बन्ध सुहावे ॥ टेर ॥
गोस्वामी सो सतगुरु मेरे, जिनसे प्रेम बढ़ावें ।
गो अतीत गोपाल निरख के, बाहर कहीं न जावें । मोहे भगवत० ॥ १ ॥
सब कुछ भोगत रहत अभोगी, बाल न बृद्ध कहावे ।
ऐसो पाय अवर क्यों ध्यावें, मन मन्दिर दरसावे । मोहे भगवत० ॥ २ ॥
पाँच पचीस मिली सब गोपी, तुरीये पद जहीं आवे ।
अनहद रास रच्यो एकताई, कृष्ण में गोपी समावे । मोहे भगवत० ॥ ३ ॥
पन्थापन्थ के जाल फँसे नहीं, प्रेम माग खिच जावे ।
विश्व सभी है रूप विष्णु को, सो हम इष्ट मनावे । मोहे भगवत० ॥ ४ ॥
पोला पन्थ में बहुत रहे हम, अब ना श्यान रमावें ।
असली वैष्णव विश्व को जाने, सो इस माग में आवे । मोहे भगवत० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु गम गोकुल में, मधु भर बैन सुनावे ।
मानसिंह अब मरे न जन्मे, ब्रह्म स्वरूप समावे । मोहे भगवत० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डंके" की । ताल कैरवा ॥

बिहारी जी रो छोगो है अमर सदाई हो ।
निरख्यो मैं तो निरख परख सुख पाई हो ॥ टेर ॥
चार(७) ने छः(८) सूँ बणियो है छोगो, जिण में धागो(९) लग्यो है अमोलो ।
वृत्ति चढ़ावण आई हो । बिहारी जी रो० ॥ १ ॥

१—परमात्मा का नाम रटना, २—परमात्मा, ३—अन्ध-विश्वास की दशा, ४—आगे बढ़ गये, ५—दूर, ६—पपीहा; चतुर, ७—अन्तःकरण, ८—षट्-सम्पत्ति, ९—एकता ।

साम्य(१) योग को मोर मुकुट है, प्रेम प्रीत की सोहे लट है।
एकटक ध्यान लगाई हो। बिहारी जी० ॥ २ ॥
इण छोगे रा तार(२) अनन्ता, गिण गिण हार्‌या वेद और ग्रन्था।
धारे सो अमर हो जाई हो। बिहारी जी० ॥ ३ ॥
ओ छोगलो छैल छबीलो, कृष्णचन्द्र नित रहत रँगीलो।
मिले जो रँगीली(३) तो पिव पाई हो। बिहारी जी० ॥ ४ ॥
ओ छोगालो नित मतवालो, म्हाँ ने घणो नित लागे वालो।
छोडण कदे न चित चाई हो। बिहारी जी० ॥ ५ ॥
नाथजी आया पट खुलवाया, मान मान में महान खिलाया।
रहूँ मैं मन्दिरिये रे माँई हो। बिहारी जी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल तिताला ॥

मारग वाम(४) हमारो, साधो मारग वाम हमारो।
सब से ही वाम चले न दाहिने(५) निज स्वरूप चित्त धारो ॥ टेर ॥
वृत्ति भगवती पूजा कीनी, कियो ज्ञान उजियारो।
बीज मंत्र ले 'तत्त्वमसि' को उर बिच मेरे धारो। साधो मारग वाम० ॥१॥
पाँच(६) पचीस(७) मिल जागण(८) कीनो, उड़ गयो भरम अन्धारो।
ऊँच ने नीच जाति कुल नाँहि, ऐसो पन्थ हमें प्यारो। साधो मारग वाम० ॥२॥
वृत्ति उपवृत्ति सुरती और निरती, जमघट भयो अपारो।
भेद भाव को दूर कियो है, एक ही रूप निहारो। साधो मारग वाम० ॥३॥
प्रेम प्रीत मद पियो धापके, मन अजिया(९) सुत मारो।
सब मिल गोठ(१०) करी बेगम(११) घर, आनन्द भयो है अपारो। साधो मारग० ॥४॥
जग आचार को पलट दिये हम, कीन ब्रह्म व्यभिचारो।
ऐसे वाम धर जो कोई आवे, वो प्यारो है मित्र हमारो। साधो मारग० ॥५॥
ना कोई करम ज्यूँ कुकर्म नांहि, हूँ दोनूँ से न्यारो।
ब्रह्म ज्योति उर अन्तर जागी, जीवपनो उड्यो सारो। साधो मारग० ॥६॥

१—समता, २—नाम रूप, ३—जिज्ञासु-वृत्ति, ४—अज्ञान ग्रस्त जन साधारण समझ के विरुद्ध, ५—जन साधारण की रूढ़िवाद के अनुकूल, ६—इन्द्रियां, ७—प्रकृति ८—आत्मज्ञान, ९—बकरा, १०—एकतारूपी सहभोज, ११—आत्मानन्द।

ब्रह्म स्थिर थावर(१) बार भयो अब, लख्यो ब्रह्म आधारो।
पड़वा(२) बीज(३) एक कर लीनी, ऐसो मतो विचारो। साधो मारग वाम० ॥७॥
इस मारग को वाम मारगी, होवे तो हो भवपारो।
मान कहे उल्टा क्यूँ दौड़ो, रत्न जन्म को हारो। साधो मारग वाम० ॥८॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज 'पनजी मुखड़े बोल' की। ताल कैरवा ॥

शिव और हम नित एक रूप है, शिव नहीं न्यारो रे; मित्र(४) हमारो रे ॥टेर॥
जब तक जाल अविद्या फैली, तब तक जीव विचारो रे।
जाल अविद्या दूर करी जब, शुद्ध निहारो रे। मित्र हमारो रे० ॥ १ ॥
जब तक जीव भाव नहीं मिटियो, उड्यो न भरम अन्धारो रे।
जीव भाव मिट ब्रह्म भयो जद, परम उजारो रे। मित्र हमारो रे० ॥ २ ॥
आज काल को मित्र नहीं है, आदि अनादि प्यारो रे।
जीव अहंकार मिट्यो जद तन सूँ, लागत प्यारो रे। मित्र हमारो रे० ॥३॥
भंग तमाखू पी पी सुलफा, क्या तुम शिव को चितारो रे।
शिव पद(५) तुम से दूर रह जासी, नरक द्वारो रे। मित्र हमारो रे० ॥४॥
मान कहे थे मानो मित्रो, अब तो आँख उघाड़ो रे।
चारूँ वेद पुकार कहे, मानक(६) मत हारो रे। मित्र हमारो रे० ॥५॥

॥ सवैया ॥

गुरुदेव बने सिर हाथ धरे अपने शिष्य से फिर कपट चलावे।
अन्तर और ने बाहर और ही आप डुबे और शिष्य डुबावे।
ऐसे जो भूल न भेटो गुरु तुम भेटो जबे कि खरो पत आवे।
मान कहे बिन जान कियो गुरु अन्त समय फिर वह पछतावे ॥

॥ सवैया ॥

देवहुनाथ को शीश दियो हम खूब तरह उन्हें पहिले बजाये।
खोट न देखी रती उनमें तबही चरणों बिच शीश नमाये।
चाहे जैसे हो बजाय लिये हम खोटे खरे कई बोल सुनाये।
क्षत्रि के पूत सो चूकें कबे हम मान कहे सब भरम उड़ाये ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह सतगुरु मिल्या, लिया मैं ढोल बजाय।

१—शनीचर, २—प्रतिपदा=अद्वैत, ३—द्वितिया=द्वैत, ४—जीव ब्रह्म की एकता।
५—ब्राह्मी स्थिति, ६—मनुष्य जन्म।

मन मन्दिर बैठाविया, पलक न बाहर जाय ॥
जाजम ढाली जुगत सूं, मन बुद्धि चित अहङ्कार ।
चारों पावतल दाबिया, बैठा संत विचार ॥
गम केरी गादी करी, तुरिये कियो तखत्त ।
मान गुरयूँ टीकियो, कियो जो आतम रत्त ॥
टीको काढ्यो तत्त्व सूँ, शिष्य यूँ शीश नवाय ।
शीश दियो सब कुछ दियो, अब कुछ देवण नाँय ॥
पाँच चोरां ने पकड़िया, पकड़ने कीया साध ।
मानसिंह दुःख अब मिट्यो, करता बाद विवाद ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज बाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

सो साधू सत मानिये, समता सहज समावे ।
अपणो रूप सब में लखे, राग न द्वेष बढावे जी ॥ टेर ॥
करम करे अकरता रहे, दुःख सुख रतीय न माने ।
पीड़ पराई आपणी, दूजो भेद न आणे जी ॥ १ ॥
करतब करणो समझ के, सब कुछ कर लेवे ।
नीच करम स्वपने ना करे, ज्याँ सूँ टालो देवे जी ॥ २ ॥
करम करे सो योगिया, निकमा रतिय न रहवे ।
अपणे योग्य सबको लखे, सब मैं सम होय केहवे जी ॥ ३ ॥
सो साधू मेरे प्राण है, जग माहीं भल आवे ।
स्वाँग धार जग ना ठगे, अपणो काम दिखावे जी ॥ ४ ॥
पर उपकारी संत है, ज्याँरा चरण पुजावे ।
वाँरो चरणोदक लेत ही, उनके सम हो जावे जी ॥ ५ ॥
धोय चरण करूँ आरती, झिग मिग जोत जगाऊँ ।
पाँचो बाती जग रही, सन्मुख दरसण पाऊँ जी ॥ ६ ॥
देवनाथ ऐसे संत हैं, गुरु कृष्ण अवतारा ।
मानसिंह अर्जुन हुवा, सो निज शिष्य तुम्हारा जी ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

चरण ही धोवन धोय कहे सब प्रेम को नीर कोई नहीं लावे ।
प्रेम के नीर से धोवे जो पाद जो सो पय पीय हृदय शुद्ध थावे ।

प्रेम भी हो उर स्वारथ हो नहीं शीतलता जरणा जल थावे।
मान कहे सोई धोय चरण चरणामृत पीये वही संत कहावे ॥

॥ सवैया ॥

प्रेम पयोधि मँगाय तहाँ जिन माँय मधुरता मिश्री मिलाई।
जरणा जल से शुद्ध धोय लिये पद फिर करणी की केसर चढ़ाई।
सुरत शिला ले शील को चन्दन समता हाथ उन्हें घुटवाई।
मान कहे अस पूज गुरु पद ले उन आज्ञा को शीश चढ़ाई ॥

॥ सवैया ॥

पास में देव और दूर गये हम पास के देव को दीन दुराई।
भूल करी अस भारी अति हम और ही और में टाट कुटाई।
पहिले ही जान पिछान कियो नहीं मान सबे यों ही शान गमाई।
देव समान ही देव भये अब देव रहे हमते भिन्न नाँई ॥

॥ कवित्त ॥

गम हू को कीनो घृत पंच तत्व दीपक लीन, ता बिच ज्ञान को प्रकाश जो दिखायो है। पंच विषय बाती कर ताहि में जगन लग्यो, करके विवेक दोऊ हाथ में उठायो है। कृष्णरूप गुरु व्यापक सब बीच नित, अर्जुन जीव रूप हाथ आरती सजायो है। तत्व बोध भयो तब टूट गई आपदा सब, मान सिंह सहज यों स्वरूप में समायो है ॥

॥ सवैया ॥

मान कहा तुम जुल्म करे उन मोक्ष स्वरूप को फेर बुलावे।
कृष्ण ही मोक्ष और मोक्ष थे अर्जुन काहे को धर योनि वे आवे।
शब्द सदा अनेक अमर हैं जो कोई पढ़े अजहू तिर जावे।
देवहु नाथ विचार करे शुद्ध कृष्ण स्वरूप में सहज समावे ॥

॥ सवैया ॥

बूझो कही नहीं साच कहूँ मैं वेद ने ग्रन्थ ये साफ सुनावे।
धर्म घटे अधर्म बढ़े तबही अवतार धरे हरि आवे।
इनमें इचरज कहा तुम मानिये सर्व भूतेश तो कृष्ण कहावे।
ज्ञानी सदा है कृष्ण स्वरूप अज्ञानी सोही अर्जुन बन जावे।
मान अन्देश करो न दयानिधि या बिच संशय जरा नहीं आवे।
हो तुम कृष्ण और अर्जुन हूँ मैं कृष्ण की गीता यह साफ सुनावे ॥

॥ सवैया ॥

ज्ञानी सदा नित श्रेष्ट ही है यह वेद और ग्रन्थों में साख सुनाई ।
आगे भी श्रेष्ट थे श्रेष्ट अभी यहाँ पर ज्ञानी कोऊ पावत नाँई ।
जो भी मिले सब स्वारथिये उनमें कुछ श्रेष्टता नाँय दिखाई ।
कोऊ तन पूजत पूजत धन को स्वारथ की सब पूजा मँगाई ।
मन की पूजा तो आप कही तुम कृष्ण के रूप से भिन्न हो नाँई ।
मान कहे मैं मान लई अर्जुन बनके यह पूजा चढ़ाई ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग--मलार, तर्ज वाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

तुम हो कृष्ण संशय नहीं, वेर ही वेर पुकारूँ ।
वेद वक्ता कोई पूछ लो, कहते हिम्मत न हारूँ जी ॥ टेर ॥
गुरु नाम है श्रेष्ठ जन, श्रेष्ट एक ब्रह्म कहावे ।
ब्रह्म लखे तेहि ब्रह्म है, कृष्ण स्वरूप दिखावे जी ॥ १ ॥
पाँच पचीसाँ सूँ परे लखे, सब ने सम कर राखे ।
कृष्ण अर्थ यह सिद्ध है, गर्गाचार्य यों भाखे जी ॥ २ ॥
कथन करे सोई कृष्ण है, यह ही सिद्धान्त हमारा ।
वेद व्यास को देख लो, माने कृष्ण अवतारा ॥ ३ ॥
अर्ज करे सोई 'अर्जु' है, गुरू से 'जन' होय पूछे ।
आरतता उरमें नहीं, तो फिर क्यों गुरु पूजे जी ॥ ४ ॥
कला कौशल मेरे नाथजी, जीवन के आधारा ।
मानसिंह परमाण से, मैं हूँ शिष्य तुम्हारा जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल दीपचन्दी ॥

नमो गुरुदेव गुसाँई; चरण में, नमो गुरुदेव गुसाँई ।
बार बार करूँ वन्दन थाँने, राखूँ म्हारे हिरदे रे माँई । चरण में० ॥ टेर ॥
गो अतीत स्वामी इन्द्रिन के, वेद ग्रन्थ सब गाई ।
हो अपार प्रभु पार न पावे, शेष रटत थक जाई । चरण में नमो गुरु० ॥१॥
मन मन्दिर में आप विराजो, पूजूँ प्रेम सदाई ।
ध्यान धूप और पुष्प प्रीति के, ज्ञान सुगंधी आई । चरण में नमो गुरु० ॥२॥
पशु पक्षी ते टर्‌यो मैं कर्म कर, मानुष देह धराई ।
मानुष ते तुम कीन देवता, यह गुण भूलूँ नाँई । चरण में नमो गुरु० ॥३॥
नित्य विराजो दूर न जावो, थाँ बिन सरसी नाँई ।

मान कहे गुरुदेव कृपानिधि, मेरे तो आप सहाई। चरण में नमो गुरु० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "चैत के रसिये" की। ताल दीपचन्दी ॥

नमो जी नमो सतगुरु स्वामी ॥टेर॥
जीव उबारण जग माँय आया; सत् उपदेश शिष्याँ ने सुणाया;
मेट दिवी म्हाँरे मनड़े री खामी। नमो जी नमो० ॥ १ ॥
जीव जीव कह सकल बँधाया; असली मारग कोई ना समझाया;
अब के मिल्या हो म्हारा अन्तर्यामी। नमो जी नमो० ॥ २ ॥
ब्रह्म भेद गुरु अबके दीयो; तुम्हरे प्रताप अखण्ड अमी पीयो;
भल आया ओ म्हारा नाथ नमामी। नमो जी नमो० ॥ ३ ॥
मान कहे म्हारो मन समझायो; असली रूप लख मस्त बनायो;
मिट गई मनड़े री आदत निकामी। नमो जी नमो० ॥ ४ ॥

॥ गाना ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी 'चैत के रसिये' की। ताल कैरवा।

गुरु माफ करो मैं सेवक थाँरो ॥ टेर ॥
जाण बड़ा थाँरी शरणे आयो; भवसागर में अति दुःख पायो।
दीन जान प्रभु अब तो उबारो। माफ करो मैं सेवक थाँरो ॥ १ ॥
मेरो कसूर कठा तक गाऊँ; जो गाऊँ तो मन शरमाऊँ।
कीन गुनाह मैं अनन्त अपारो। माफ करो मैं सेवक थाँरो ॥२॥
पोला पन्थ में खूब फँसायो; आतम तत्त्व किणी न बतायो।
जिण पकड्यो जिण मार्‌यो हि मार्‌यो। माफ करो० ॥ ३ ॥
अब तो सुनो गुरुदेव गुसाँई; हाथ गह्यो अब छोड़जो नाई।
छोड़ दियो तो बह जाऊँ भव धारो। माफ करो० ॥ ४ ॥
मान कहे हो म्हारा अन्तर्यामी; आप समान कर हो मोहे स्वामी।
ब्रह्म मिलाय के भरम निवारो। माफ करो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती। ताल रूपक ॥

अवगुण गारे हमहि हैं, प्रभु गुण के ग्राहक आप हो।
गुण अवगुण मत देखो मेरे, हरो त्रीये ताप हो ॥ टेर ॥
आप सेती करूँ विनती, जपूँ हरदम जाप हो।
जान बालक भूल बकसो, गुना कीजे माफ हो ॥ १ ॥

हम जो जीव तो तुमहि ब्रह्म हो, नित्य माई बाप हो ।
बाप बेटो एक कर लो, दूर होय सन्ताप हो ।। २ ।।
भलो बुरो तोई आपको, अब करो सवदा साफ हो ।
दोय को अब एक करलो, सह्यो न जाय कलाप हो ।। ३ ।।
देवनाथ को हाथ लीयो, जपत भया अजाप हो ।
मान कहे मन मान्यो मेरो, जपूँ मेरो जाप हो ।। ४ ।।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "खेलण दो गिणगोर" की । ताल दीपचन्दी ॥

ले चालो उण देश(१), सायब(२) म्हाँने ले चालो उण देश ।
होजी म्हारा दीनबन्धु घनश्याम(३); प्रभु जी म्हांने ले चालो० ।। टेर ।।
भटक भटक दुःख पाय, प्रभु जी म्हे भटक भटक दुःख पाय ।
होजी म्हाँने किण हूँ न दिवी थाँरो राय । सायब म्हाँने ले चलो ।।१।।
पंथापंथ फिराय, प्रभु जी जग पंथापंथ फिराय ।
होजी मैं तो दिया है थाँ ने बिसराय । सायब म्हाँने ले चालो० ।।२।।
पत्थर पाथर पूज, प्रभु जी मैं तो पत्थर पाथर पूज ।
होजी मैं तो खोई है तुम्हारी सूझ । सायब म्हाँने ले चालो० ।।३।।
दोऊँ कर जोड़ पुकार, प्रभु जी थाँने दोऊँ कर जोड़ पुकार ।
होजी म्हाँने लेवो इण भव सूँ उबार । सायब म्हाँने ले चालो० ।।४।।
मान कहे सुनो नाथ, अर्ज म्हारी मान कहे सुनो नाथ ।
होजी म्हारो पकड़यो तो छोड़ो मत हाथ । सायब म्हाँने ले चालो ।।५।।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "खेलण दो गिणगोर" की । ताल दीपचन्दी ॥

मत मन में घबराय, शिष्य तू मत मन में घबराय ।
हाँरे थाँने देऊँला देश दिखाय; शिष्य तू मत मन में० ।। टेर ।।
शूर वीर मन रह, शिष्य तू शूर वीर मन रह ।
हाँरे तू तो हिम्मत हार मत बैठ । शिष्य तू मत मन में० ।। १ ।।
तेरो पिया तुझ माँय, शिष्य लख तेरो पिया तुझ माँय ।
हाँरे शिष्य आतम रूप लखाय । शिष्य तू मत मन में० ।। २ ।।

१—आत्मानुभव, २—सद्गुरु, ३—कृपालु गुरुदेव ।

जीव ब्रह्म दोऊँ एक, शिष्य लख जीव ब्रह्म दोऊँ एक।
हाँरे शिष्य कर जोवो आतम विवेक। शिष्य तू मत मन में० ॥ ३ ॥
हिम्मत हुती सिर लीन, शिष्य मेरी हिम्मत हुती सिर लीन।
हाँरे शिष्य छोडण को कौल न कीन। शिष्य तू मत मन में० ॥ ४ ॥
तारण रो प्रण मोय, शिष्य जीव तारण रो प्रण मोय।
हाँरे शिष्य क्यों कर छोडूँला तोय। शिष्य तू मत मन में० ॥५॥
मान कहे रंग तोय, नाथ जी मान कहे रंग तोय।
हाँरे लोगों गुरु हो तो ऐसा होय। शिष्य तू मत मन में० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड। ताल दादरा ॥

मद(१) छकियाँ ने न छोड़; ए म्हारी सुघड़ कलाली(२),
हे मतवाली, माँगे जितो मद(३) पाय ॥ टेर ॥
जो मदवा ने उत्तर देसी, तो मद पीवे नाँय।
धरिया रहसी थाँरा सगला, फिर पीछे पछताय; ए म्हारी सुघड़० ॥१॥
बिन मदवा कुण माँगसी ए, हिम्मत किणी री नाँय।
मर जीवाँ(४) हो सो ओ मद पीवे, जीवतड़ा(५) मर जाय; ए म्हारी सुघड़० ॥२॥
और तो कुछ नहीं देवसी रे, काटने दे शिर(६) मोल।
शीश लियो पीछे क्या तू माँगे, पाय शराब(७) अतोल; ए म्हारी सुघड़० ॥३॥
महर करो म्हारी सुघड़ कलाली, और न आवे दाय।
मान कहे मैं तेरा रसिया(८), अब दूजो किण ने ध्याय, ए म्हारी सुघड़० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कलाली" की। ताल धीमा कैरवा ॥

चालो रे मदवा सोहन शिखर दरबार हो मस्ताना।
उठे सुरत कलाली सूँ मदड़ो(९) पीयलो हो राज ॥ टेर ॥
पावणो होय तो घर बैठाँ ने पाय हे कलाली(१०)।
म्हें चालाँ नहीं नौकर थाँरे बाप रा हो राज ॥१॥
मानो रे मदवा(११) हठ ने कर दो दूर हो मस्ताना।

१—आत्म-ज्ञान का जिज्ञासु, २—ज्ञानी सद्गुरु, ३—आत्म-ज्ञान, ४—देहाभिमान से रहित, ५—देहाभिमानी, ६—देहाभिमान, ७—आत्म-ज्ञान, ८—भक्त, ९—आत्मज्ञान, १०—सतगुरु, ११—जिज्ञासु।

कोई हठ ने राख्यो तो मद नहीं पावसाँ हो राज ॥२॥
ओ हठ म्हारो अब तो छूटे नाँय हे कलाली।
कोई पावे तो पीयाँ नहीं तो मदड़ो रहण दो हो राज ॥३॥

लेलो लेलो सोहन शिखर आनन्द हो मस्ताना।
कोई गिगन(१) मण्डल रो दुस्तर खेलणो हो राज ॥ ४ ॥
थोड़ो तो मदड़ो घर बैठाँ ने पाय हे कलाली।
कोई आछो लागो तो उण घर चलसाँ हो राज ॥ ५ ॥
हँसिया हंसिया सत्गुरु सैन चलाय हो मस्ताना।
कोई हठ तो नहीं छूटे ओ राजवी(२) तणो हो राज ॥ ६ ॥
नहीं है थाँसूँ सोहन शिखर कोई दूर हो मस्ताना।
कोई नीचाँ सूँ मन ने ऊपर खैंच लो हो राज ॥ ७ ॥
नींचो गिरियो आश्रम वर्ण रे माँय हो मस्ताना।
ओ तो चर्म दृष्टि में मनड़ो उलझियो हो राज ॥ ८ ॥
करलो करलो अहं ब्रह्म रो भाव हो मस्ताना।
कोई ओई रे शिखर में ऊँचो खेलणो हो राज ॥ ९ ॥
भली करी म्हाँने दियो जो साच बताय हे कलाली।
मैं तो मारग शिखर रो दूजो जाणतो हो राज ॥ १० ॥
अब तू म्हाँने प्याला(३) किताई भर पाय हे कलाली।
अब तो तू कहसी जठेई चालसाँ हो राज ॥ ११ ॥
पग सूँ चलावे तो देवाँ न आगे पाँव हे कलाली।
कोई बिन पग चलावे फेर चढ़ जावसाँ हो राज ॥ १२ ॥
बात सुणी तो हँसी है सुघड़ कलाल हो मस्ताना।
कोई मिलियो मस्तानो मदवो मानसिंह हो राज ॥ १३ ॥
थाँ सी म्हाँने मिली न और कलाल हे कलाली।
म्हाँने बरजत बरजत ने मदड़ो पाय दियो हो राज ॥ १४ ॥
नहीं भूले थाँरो मानसिंह एहसान हे कलाली।
कोई ओरूँ मिलजो म्हाँने सत्गुरु नाथ जी हो राज ॥१५॥

१—ब्राह्मी स्थिति, २—क्षत्री वीर, ३—उपदेश।

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

वाह वाह मद(१) पान तुम्हारा, नाथजी वाह वाह मद पान तुम्हारा है ॥टेर॥
जगत पीये सो यह मद नाँही, यह मद जग से न्यारा; नाथजी वाह वाह० ॥१॥
उण मद से तो इज्जत हनन हो, यह मद भव से तारा; नाथजी वाह वाह० ॥२॥
उण मद से तो लाखों मर गये, इनसे अनन्त उबारा; नाथजी वाह वाह० ॥३॥
उण मद में मिथ्या अहङ्कार हो, सत् अहङ्कार इण धारा, नाथजी वाह वाह० ॥४॥
इण मद को तो विभव भी चाहिए, सिर साटे यह प्यारा; नाथजी वाह वाह० ॥५॥
देवनाथ गुरु मिले मद छकिया, मान जात बलिहारा; नाथजी वाह वाह० ॥६॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध मन से सारङ्ग करे, दिवस पहर मध्यान्ह।
गुणिजन विविध विचार से, करहु राग को ज्ञान॥
सारङ्ग सुत(२) सारङ्ग(३) रटे, तब ही सारङ्ग(४) आय।
मानसिंह सारङ्ग(५) बिना, सब रङ्ग(६) निकमा(७) थाय॥
सारङ्ग(८) रङ्ग(९) सारङ्ग(१०) लखे, और लखे नहिं कोय।
मानसिंह सारङ्ग(११) लख्याँ, सारङ्ग(१२) रूप ही होय॥
स्याह(१३) रङ्ग को मेट दे, सह(१४) रङ्ग में मिल जाय।
सह रङ्ग मिलियाँ सब मिले, एकहू रहसी नाँय॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग-लूर । ताल कैरवा ॥

माया बड़ी नखराली; हो नाथ(१५) थाँरी, माया बड़ी नखराली ॥ टेर ॥
सुर जन मुनि जन पकड़न कारन, बहुतक मन में धारी । हो नाथ० ॥ १ ॥
थाँने छोड़ नहीं दूजों सूँ पतीजे, कईयोंरी श्यान बिगाड़ी । हो नाथ० ॥ २ ॥
जालम जबर महा छलगीरी, मिलने दे जावे आ तारी । हो नाथ० ॥ ३ ॥
इणरो नखरो ओ तो निभे आप सूँ, औरों रे नहीं रेवण वाली । हो नाथ० ॥ ४ ॥
मानसिंह कहे नाथ सुनो अब, कीजे सहाय हमारी । हो नाथ० ॥ ५ ॥

१—आत्म-ज्ञान, २—जीवात्मा, ३—परमात्मा, ४—आत्मज्ञान, ५—आत्मज्ञान, ६—जीवन, ७—निरर्थक, ८—परमात्मा, ९—स्थिति, १०—विरहनी जिज्ञासु वृत्ति रूपी स्त्री, ११—परमात्मा, १२—परमात्मा, १३—अज्ञान का काला रङ्ग, १४—एकता का भाव, १५—परमात्मा रूपी सद्गुरु।

|| गान ||

|| राग सारङ्ग-लूर । ताल कैरवा ||

माया ब्रह्म भिन्न कहा माने; हो मान अजू, माया ब्रह्म भिन्न कहा माने ।
तू सो मैं और मैं सोही तू है, माया छिपी कब छाने । हो मान अजू० || टेर ||
किनको नखरो और ठगे यह किनको, दोय दीखत क्यों थाने । हो० || १ ||
जुदा हुता जांने ठग्या और ठगाया, पड़िया अविद्या रे पाने । हो० || २ ||
न्यारो रह्यो तो यह तोही को ठगसी, बात जाहिर जग जाने । हो० || ३ ||
भोंदू को ठगत बार नहीं लागे, बुधिवान् न ठगाने । हो० || ४ ||
देवनाथ कहे मानसिंह सुन, भेद भरम मत आने । हो० || ५ ||

प्रश्न

|| दोहा ||

मान कहे हो नाथ जी, जो भोंदू जीव ठगाय ।
तो ब्रह्मा विष्णु महेश से, वे क्यों भोंदू रह जाय ||

उत्तर

|| दोहा ||

रे नृपति चालाक तू, चातुर चपल प्रवीन ।
कहां की ला कहाँ पर धरी, तैं समय न जावन दीन ||

|| सवैया ||

माया ही खेल करे सगरे और माया ही आपते आप ठगाई ।
माया ही विष्णु और माया है ब्रह्मा माया ही शङ्कर आप बन आई ।
माया ही ब्रह्म स्वरूप बनी फिर ना कोई ठगी न किन्ही से ठगाई ।
देवनाथ कहे मान सुनो यों ब्रह्म विभू बिच जाय समाई ||

|| दोहा ||

मानसिंह संसार में, सुनता निकमो झौड़ ।
भली करी आ नाथ जी, दिवी अविद्या तोड़ ||

|| कवित्त ||

ब्रह्मा और विष्णु महादेव नहीं जीते माया, शृंगी और पराशर माया हू ते घबराये हैं । नारद शुकदेव आदि गोरख से ज्ञानी जन, नाथ मछन्दर माया बीच में फँसाये हैं। सुन सुन यह झौड़ निकमो हुए हैरान हम, हिम्मत को

हार बैठा आलसी कहाये हैं। देवनाथ हाथ धरत करी पहिचान मान, देह अभिमान भंड फोड़ के गिराये हैं॥

॥ कवित्त ॥

माया न भिन्न भिन्न ब्रह्म कहूँ जान्यो आज, माया हू जान्यो हम ब्रह्म को स्वरूप है। माया और जीव ब्रह्म उपाधि तीनों यह, तीन कर देखे वो पड़े भव-कूप है। तीन एक एक तीन एक रस जान्यो सदा, भिन्नता मिटी तो सब मेरो हीज रूप है। कहे राव मानसिंह सुनो संसार सगरी, आप जान लियो फिर मिटी त्रिविध धूप है॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल केरवा ॥

मान वचन

क्यों कीनो क्यों वाह वाह, गिरधर क्यों कीनो क्यों वाह वाह॥ टेर॥
तू ही अनेक एक तू कहिये, फिर न्यारो कहाँ पावा।
गोपी कौन भोग करे किनते, देखो भरम भुलावा। गिरिधर क्यों कीनो०॥ १॥
नहीं कोई पाण्डव कुरु नहीं कोई, तो गीता कौन सुनावा।
आपहि पढ़े सुने फिर आपहि, तो क्यों परिश्रम उठावा। गिरिधर क्यों०॥ २॥
कर्म कुकर्म नहीं है दोनों, क्यों फिर जुदा बनावा।
आपहि करे भरे फिर आपही, क्यों ये प्रपञ्च चलावा। गिरिधर०॥ ३॥
ये तो बात नहीं मन भाई, अरुझन बीच फँसावा।
मान कहे गुरु देवनाथ सुनो, क्यों फिर भरम भुलावा। गिरिधर०॥ ४॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल केरवा ॥

गुरु वचन

जो कीयो सो कीयो, मान हम जो कीयो सो कीयो।
जो कुछ कियो मेरी सब इच्छा, तोको दुःख कहा दीयो। मान हम०॥ टेर॥

मेरे कियो कहा दुःख मोको, खोल सकूँ मैं सीयो ।
मेरो बन्ध्यो तुम्हें क्या इनकी, मैं मेरो भर पीयो । मान हम जो० ॥ १ ॥
तू मैं मैं तूँ दोय जब दरसे, दुःख प्रतीत यों हूयो ।
मुझमें तुझ तुझ में मुझ मिल ले, तो सब दुःख दूर गइयो । मान० ॥ २ ॥
सब कुछ है और कुछ भी नहीं है, यों करके लख लीयो ।
देवनाथ कहे मानसिंह सुन, क्यों उलटो दुःख सहियो । मान हम० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

मान वचन

यह क्या मौज तुम्हारी, नाथजी यह क्या मौज तुम्हारी ॥ टेर ॥
फैंके पत्थर आप शिर माँडे, वे समझो मूरखारी ।
आप बिगाड़ आप क्यों रोवे, हँसी आत है भारी । नाथजी यह क्या ॥ १ ॥
अपनी फाँसी बँधे आपही, हा हा करे किलकारी ।
अपनी जेल आप क्यों भोगे, ये क्या समझ तुम्हारी । नाथजी यह क्या० ॥ २ ॥
खोटा करे आप फिर भुगते, क्यों सहे दुःख अपारी ।
ऐसी मौज मोय नहीं चहिए, उलटी मति बिचारी । नाथजी यह० ॥ ३ ॥
ठीक कहो कुछ आय समझ में, फिर छोड़ेंगे लारी ।
मान कहे गुरु देवनाथ सुनो, लगी आपसे यारी । नाथजी यह क्या० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

गुरु वचन

यह उलझन क्या मानी, मान तैंने ये उलझन क्या मानी ।
शीश और पत्थर जुदा कहाँ दोनों, वृथा वाद क्या ठानी । मान तैंने० ॥ टेर ॥
कहाँ है पत्थर कौन फिर फैंके, काको चढ़ी दीवानी ।
कहाँ रक्त कौन के आवे, मुझ स्वरूप ओलखानी । मान तैंने यह० ॥ १ ॥

भास(१) आभास(२) और महाभास(३) ये, सबही झूठ पिछानी।
दोनों महाभास में मिल गये, तो नहिं आन न जानी। मान तैंने यह० ॥ २ ॥
पत्थर शीश सभी ये कल्पित, आखिर कोई न आनी।
तेरी सत्ता सबी में व्यापक, काहे को तुम अकुलानी। मान तैंने यह० ॥ ३ ॥
है तू यह सब मरजी तेरी, दोय दिनन की कहानी।
देवनाथ कहे मानसिंह सुन, मत मन कीजे गिलानी। मान तैंने यह० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार। ताल दीपचन्दी ॥

मान वचन

रूप वर्ण बिन क्या लखे, ऐसा देव कुण ध्यावे।
नाम नहीं जाको क्या रटे, क्यों भ्रम कूप गिरावे जी ॥ टेर ॥
गुड़ गुड़ कह्याँ मुख मीठा नहीं, मुख में स्वाद न आवे।
ऐसो नीरस यह ब्रह्म है, हमको नहीं भावे जी ॥ १ ॥
प्यास मिटे पीये नीर को, नहिं तर प्राण गमावे।
नीर नीर कह्याँ प्यास ना मिटे, झूठो भरम बतावे जी ॥ २ ॥
सूने भवन जाय क्या करे, वहाँ कछु लेना न देना।
ऐसो नीरस ब्रह्म आपको, अब तुम हमको न कहना जी ॥ ३ ॥
यातें तो जीव जग भलो, या में आनन्द आवे।
अन्धविश्वास में कुण पड़े, बाताँ हि ब्रह्म मिलावे जी ॥ ४ ॥
मान कहे सुनो नाथ जी, खाली मत बहकावो।
रस होय तो ब्रह्म लेवसाँ, सूको दूर हटावो जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार। ताल दीपचन्दी ॥

गुरु वचन

तेरे रूप तू ही आप है, दूजो नहीं कोई।

१—जगत, २—जीव, ३—ब्रह्म।

अपणो नाम पहचान ले, सुमरण सहजाँ होई जी ॥ टेर ॥
मीठा खारा तोसे भिन्न नहीं, तू ही रस ने रसैया।
तू ही तो स्वाद तू ही लेत है, न्यारा किण तेय कहियाजी ॥ १ ॥
देश ग्राम कोई है नहीं, है तो तुम माँय भरिया।
रस ने नीरस तू ही आप हैं, सब रस तोमें धरियाजी ॥ २ ॥
आनन्द विक्षेप जो भिन्न कहाँ, क्यों ते भिन्न कर मान्या।
तोही ते आनन्द भयो, दुःख तैं आपहि ठान्या जी ॥ ३ ॥
भर्म साच तेरो है तूही, जिण विधि है त्यों रहिये।
तू ही तो कूप तू ही गिर रह्यो, इणा में विपत्ति नहीं है जी ॥ ४ ॥
तू ही तो जीव ईश जगत है, तू ही है खेल खिलारी।
तू ही तो खेल होय खेलतो, तो में रचना सारी जी ॥ ५ ॥
जीव ब्रह्म जग चाहे सो, लखले निज मन माँई।
उलटा ने सीधा सीधा उलट दो, माने दुःख नहीं काई जी ॥ ६ ॥
कुण तो सूका ने हरिया होया, किण में रस नाँई।
नाथ कहे सुण मानसिंह, यह क्यां पोल चलाई जी ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

सिंहनी के गर्भ हूंते श्वान नहीं पैदा होत, सिंहनी के सुत सदा सिंह ही कहाये हैं। सिंहनी के जाये को कोई श्वान हू न कहत कभी, चाहे हो कैसा ही पर सिंह ही बताये हैं। ऐसे ही जीव जो ईश्वर अंश कहत तुम, ईश्वर है सिंह तो श्वान कैसे जाये हैं। कहे राव मानसिंह भरम की है बात यह, ईश जीव माया यह एक ही कहाये हैं ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंजे" के गीतों की। ताल कैरवा ॥

मत भूल जीव वण, आदि अनादि पूरण ब्रह्म है। आदि अनादि पूरण ब्रह्म है, ए हाँ हाँ हाँ हाँ; मत भूल जीव वण आदि अनादि पूरण ब्रह्म है ॥ टेर ॥

जीव कहे कद जनमियो सरे किण दिन भयो अवतार;
हाँ हाँ जीव कहे कद जनमियो सरे० ।
जो मरियो तो कहाँ गयो सरे अचरज मोय अपार;
हाँ हाँ जो मरियो तो कहाँ गयो सरे० ।
असंख्य जुगाँ सूँ चल रयो सरे, आपही माने हार रे ।
मत भूल जीव बण० ॥ १ ॥
जो जनम्यो तो सही कहो स थारा कुण है मा और बाप;
हाँ हाँ जो जनम्यो तो सही कहो स० ।
जिण दिन सूँ सृष्टि रची सरे उण सूँ ही पहिला आप;
हाँ हाँ जिण दिन सूँ सृष्टि रची सरे० ।
जीव जीव बक बावरें स कोई, निकमी सहे सन्ताप रे ।
मत भूल जीव बण० ॥ २ ॥
जीव जीव बकतो फिरे स थारी किसड़ी कहिये जात;
हाँ हाँ जीव जीव बकतो फिरे स० ।
अपणा आप विचार ले स तू क्यों नहीं मेटे रात;
हाँ हाँ अपणा आप विचार ले स० ।
रे मतिहीन क्यों भूलियो सरे, गुड़ गुड़ कह विष खात रे ।
मत भूल जीव बण० ॥ ३ ॥
तू ही स्वर्ग तू ही नरक है सरे तू ही इन्द्र तू ही देव;
हां हां तू ही स्वर्ग तू ही नरक है सरे० ।
ब्रह्मा विष्णु महेश तू ही सरे तू ही करत है सेव;
हाँ हाँ ब्रह्म विष्णु महेश तू ही सरे० ।
तू ही तुझको जाणले सरे, आतम अचल अभेव रे ।
मत भूल जीव बण० ॥ ४ ॥
तू ही जड़ चेतन तू ही सरे स्थावर जङ्गम सोय;

हां हां तू ही जड़ चेतन तू ही सरे०।
तेरे सिवाय दूजो नहीं सरे होयो न कभी होय;
हाँ हां तेरे सिवाय दूजो नहीं सरे०।
वेद ग्रन्थ ने जोयलें सरे, न्यारो कहे न कोय रे।
मत भूल जीव बण०॥ ५॥
देवनाथ समरथ मिल्या स जिन दीनो नाथ बणाय,
हां हां देवनाथ समरथ मिल्या स०।
महान् नाथ सब सृष्टि को सरे होय अनाथ बलाय,
हां हां महान् नाथ सब सृष्टि को सरे०।
मानसिंह जब सिंह है सरे, भेड़ संग कुण जाय रे।
मत भूल जीव बण०॥ ६॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंजे" के गीतों की। ताल कैरवा ॥

आ खड़ी रे महल(१) में, मन में हुलसी रे सुरता सुन्दरी।
मन में हुलसी रे सुरता सुन्दरी, ए हां हां हां हाँ। आ खड़ी रे महल में० ॥टेर॥
खोल किवाड़ी(२) महल री स आ निरखे अपणो पीव(३); हां हां खोल किवाड़ी०।
कहे सो केवल ब्रह्म है स क्या आगे कोई है जीव; हां हां कहे सो केवल०।
जीव जीव भेला हुया स कोई न्यारो रहसी पीव; हां हां जीव जीव भेला०।
फिर कद मिलसो पीव सूँ सरे, यों ही रह जासी जीव रे; आ खड़ी० ॥ १॥
देखण गई आ पीव ने सरे रही पिव माँय मिलाय; हां हां देखण गई आ०।
हिम गल्यो पाणी भयो सरे जाब देण कुण आय; हाँ हाँ हिम गल्यो पाणी०।
ना कोई जीव न ब्रह्म है स उठे एको एक कहाय; हाँ हाँ ना कोई जीव न०।
अपनो आपही आप है स उठें, दूजो नहिं दरसाय रे; आ खड़ी० ॥ २॥
मैं ही जीव मैं ही ब्रह्म हूँ सरे दूजो भरम लियो मान, हाँ हाँ मैं ही जीव मैं ही०।

१—आत्मज्ञान, २—अन्तःकरण, ३—आत्मा।

मेरी सत्ता सब जगत है सरे दूजो कोई न जान; हाँ हाँ मेरी सत्ता सब० ।
सब में मेरो हि रूप है सरे दीखे नहीं कोई आन; हाँ हाँ सब में मेरो रूप० ।
चार वेद सब पढ़ लिया स मैं, पढ़या अठारह पुरान रे; आ खड़ी० ॥ ३ ॥
देवनाथ री महर सूँ स मैं असली लियो पहचान; हाँ हाँ देवनाथ री महर० ।
कृपा करी म्हारे नाथजी स म्हाँने दीनी निज की जान; हाँ हाँ कृपा करी म्हारे० ।
अपनो जान उबारियो स गुरु राख्यो सिर अहसान; हाँ हाँ अपनो जान० ॥
मानसिंह भूले नहीं स थारो, करे जीवन भर गान रे; आ खड़ी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंजे" के गीतों की । ताल कैरवा ॥

गुरु वचन

नृप भयो रे बावरो, किनकी अहसानी तू फिर कौन है ।
किनकी अहसानी तू फिर कौन है ए हाँ हाँ हाँ-हाँ । नृप भयो रे० ॥ टेर ॥
गुरु शिष्य तो जब तक हुता स तेरे हुतो जीव रो भाव; हाँ हाँ गुरु शिष्य तो० ।
ब्रह्म भयो गुरु शिष्य नहीं सरे एक रो होत अभाव; हाँ हाँ ब्रह्म भयो० ।
जैसो तन तेरो बन्यो सरे ऐसो हि मेरो बनाव; हाँ हाँ जैसो तन० ।
ए पानी का बुदबुदा सरे, इनको कहा चहाव रे । नृप भयो रे० ॥१॥

शिष्य वचन

गुरुदेव गुसाँई, उतरे नहीं सिर सूँ थाँरो भार हो ।
उतरे नहीं सिर सूँ थाँरो भार हो ; ए हाँ हाँ हाँ हाँ । गुरुदेव गुसाँई० ॥ टेर ॥
जन्म अनेकाँ मैं फिर्‌यो स म्हाने कोईयन दियो बताय; हाँ हाँ जन्म अनेकाँ० ।
जो मैं आपे जाणतो स तो पहिने जाण्यो नाँय; हाँ हाँ जो मैं आपे० ।
आप मिल्याँ ही जाणियो स म्हाने मारग दियो दिखाय; हाँ हाँ आप मिल्याँ० ।
कहो गुण कैसे भूलिये सरे, मन सूँ भूल्यो न जाय हो । गुरुदेव गुसाँई० ॥१॥

गुरु वचन

भाव रखे तू देह रो स शिष्य फिर लारे रह जाय; हाँ हाँ भाव रखे तू० ।

हाड़ माँस रो पूतलो स शिष्य या सूँ न प्रेम बढ़ाय; हाँ हाँ हाड़ माँस रो० ।
मैं तू तू मैं एक हाँ सरे दूजो समझे नाँय; हाँ हाँ मैं तू तू मैं० ।
दूजो समझियाँ दुःख हुवे स शिष्य, नहीं तू ब्रह्म कहाय रे । नृप भयो० ॥२॥

शिष्य वचन

जो गुरु तन नहीं होवतो स ओ ज्ञान कहाँ ते आय; हाँ हाँ जो गुरु तन० ।
चम दृष्टि सेवा करूँ स मैं मिल्यो रहूँ तुम माँय; हाँ हाँ चम दृष्टि० ।
प्रथा बनी रहे जगत की सरे गुरु को भाव न जाय; हाँ हाँ प्रथा बनी० ।
अन्तस में दोऊँ एक हाँ सरे, तत्त्व स्वरूप कहाय हो । गुरुदेव गुसाँई० ॥३॥

गुरु वचन

सुन नृप तू साची कहे स यामैं झूठ कहे कछु नांय; हाँ हाँ सुन नृप० ।
इणी प्रथा ने राखतां सरे प्रथा घणी बढ़ जाय; हाँ हाँ इणी प्रथा ने० ।
धर्म ओट के बीच में स ए चोट घणा सिर खाय; हां हां धर्म ओट के० ।
तू नृप शिष्य परवीण है सरे, कहा तुम्हें समझाय रे । नृप भयो० ॥३॥

शिष्य वचन

नाथ सो माई बाप है सरे गुण अवगुण कछु नांय; हां हां नाथ सो माई० ।
अवगुण को देखूँ नहीं स मैं गुण गुण लेऊँ उठाय; हां हां अवगुण को० ।
अवगुण अपना भुगतसी सरे मोको नहीं भुगताय; हां हां अवगुण अपना० ।
नाथ कियो सो सही है स मेरे, ये धारण मन मांय हो । गुरुदेव गुसांई० ॥४॥

गुरु-वचन

रे नृप तू आछो भयो सरे अजहू रह गयो भूल; हां हां रे नृप तू० ।
मैं सोनो दियो सोलवों स तू डारे कङ्कर धूल; हां हां मैं सोनो दियो० ।
माने ते मरजी तेरी स शिष्य अन्धविश्वास न भूल; हां हां माने तो मरजी० ।
देवनाथ कहे मानसिंह सुण, सहसी दुःख री शूल रे । नृप भयो० ॥४॥

शिष्य वचन

दुःख सुख चाहे कुछ भी सहो स मैं प्रण कियो छोड़ूँ नांय; हां हां दुःख सुख० ।

प्राण जाय तो जाइये सरे सिंह घास नहीं खाय; हां हां प्राण जाय तो० ।
मैं सुधरयो इण भेष सूँ सरे सो अब खण्डू नांय; हां हां मैं सुधरयो० ।
मान कहे हो नाथ जी सरे, रहूँ नाथ शरणाय हो । गुरुदेव गसांई० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंजे" के गीतों की । ताल कैरवा ॥

हे म्हारी सुघड़ कलारी(१) प्याला(२) मस्तांने(३) भर पाय दे ।
प्याला मस्तांने भर पाय दे; ए हां हां हां हां । हे म्हारी० ॥ टेर ॥
इण मन रा महुआ करो सरे ज्ञान लेवो गुड़ गाल; हां हां इण मन रा० ।
तनड़े रो मटको करो सरे ब्रह्म अगन को जाल; हां हां तनड़े रो० ।
बंकनाल(४) से उलट के सरे या विधि मद को निकाल; हां हां बंकनाल० ।
प्रेम पियूष हम मद पिये सरे, हैं मस्तों के लाल । हे म्हारी सुघड़० ॥१॥
इण प्याले में छक रया सरे कोईयक महान सुजान; हाँहाँ इण प्याले ०में ।
यह प्याला जिन जिन पिया सरे पाया पद निर्वान; हाँ हाँ यह प्याला० ।
ध्रु प्रह्लाद शुकदेव जी सरे गोरख कबीर गुणवान; हाँ हाँ ध्रु प्रह्लाद० ।
पी प्याला खुद मस्ती का सरे, लिया ब्रह्म रस ज्ञान । हे म्हारी सुघड़ ॥२॥
आवागमन में भटकतां सरे प्याला पिया अनेक; हाँ हाँ आवागमन में० ।
अब हम सबको त्याग के सरे पिया जो प्याला एक; हाँ हाँ अब हम सबको० ।
निज स्वरूप का मद पिये सरे, गह सतगुरु की टेक; हाँ हाँ निज स्वरूप का० ।
कर विचार उर में लख्यो स मैं, आप स्वरूप अलेख । हे म्हारी सुघड़० ॥३॥
अगम निगम की बाट से स हम जाने चाहत हैं दूर; हाँ हाँ अगम निगम० ।
निज स्वरूप को देख के सरे करैं सबन को चूर; हाँ हाँ निज स्वरूप को० ।
ब्रह्म रतन को छोड़ के स हम क्यों गहें कंकर धूर; हाँ हाँ ब्रह्म रतन को० ।
निज मद में अलमस्त हैं स हम, करें काल का चूर । हे म्हारी सुघड़० ॥४॥
देवनाथ को कर गह्यो स हम सदा रहें भरपूर; हाँ हाँ देवनाथ को०

१—वृत्ति; २—आत्म-ज्ञान, ३—जिज्ञासु जीवात्मा, ४—अविद्या ।

तिसिर मिट्यो अब सुख भयो स उर ऊगो ज्ञान को सूर; हाँ हाँ तिमिर० ।
जीवन्मुक्ति पायली स अब मुक्ति रहत मजूर; हाँ हाँ जीवन मुक्ति० ।
मान महान को रूप है स यह, सब जग मेरो नूर । हे म्हारी सुघड़० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज वाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

मान वचन

अरज करूँ हो म्हारा नाथ जी, म्हारी अरजी सुणिये ।
ब्रह्म ज्ञान कैड़ो आप रो, उणरी गाथा गुणिये जी ॥ टेर ॥

गुरु वचन

वाह रे वा शिष्य सूरवां, क्षत्राणी जायो ।
रीत अनादि ना तजी, भल तूँ जग में आयोजी ॥टेर॥
भेद कहूँ मैं निज ब्रह्म रो, पहिला एक सुण भाई ।
ब्रह्म ज्ञान धारण कठिन है, मीठी खीर है नाँई जी ॥१॥

मान वचन

दुःख सुख सूँ म्हें नहिं डराँ, डरता तो क्षत्री क्यों होया ।
प्राण राखों नित हाथ में, काल देख मन रोया जी ॥२॥
रण बंके रजपूत हैं, नाम सुण अरि घबरावे ।
काल सूतो नित ओजके, जाको नींद न आवे जी ॥३॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

बंका सीधा ही नहीं, नहीं शमशेर सूँ काम ।
मानसिंह सीधो रहे, तो परसे आतम राम ॥
वो मरणो कुछ और है, यह मरणो कुछ और ।
इण मरणे तो वो मरे, जिण लियो चित चोर ॥
सुण्यो मुण्यो ब्रह्मज्ञान तें, गुण्यो न उर में कोय ।
अब गुणनो सीखाय दूं, सरब सुखी तू होय ॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

ऐसी कृपा अब कीजिये, सब सुख मिले घर मांय।
जप तप मैं कछु ना करूँ, दुःख देखूँला नांय॥

गान का अन्तरा

नीरस ज्ञान सुणसूँ नहीं, यह पैला सुण लीजे।
रस हुवे तो आनन्द आवे, नहिं तो चुप कर लीजे जी॥

गुरु वचन

रसना चटोरी है आपरी, नित उठ रस ने चावे।
श्रवण जबर चाटुक अति, रस बिन और न भावे जी॥५॥
विष अमृत भेलो हुवे, छांट ने न्यारो कीजे।
हम तो देवणहार हैं, मन भावे सो लीजे जी॥६॥

मान वचन

विष अमृत भेलो पीवता, थांरे पास क्यों आता।
छांट पावण ने तो गुरु किया, ओ तो पैलाई पी जाता जी॥७॥

गुरु वचन

देख चतुरता मान री, नाथ मन में हँसियाया।
शिष्य तो बहुत हम मूँडिया, गुरु शिष्य अब ही पाया जी॥८॥

मान वचन

यह मत कहो मेरे नाथ जी, तुम हो अन्तर्यामी।
क्षत्री पूत हम अड़क हैं, मेटो सब मम खामी जी॥९॥

गुरु वचन

धीर धरो नर मानसी, व्याकुल नहीं होना।
गुरु तो होना ऐसे शिष्य का, मूरख से मुफ्त में रोना जी॥१०॥

शिष्य तो कड़वे ही होत हैं, गुरु मीठा कर लेवे ।
इनको फिकर नहीं मानसी, भली बुरी सब सहवे जी ॥११॥

मान वचन

साची कहूँ हो म्हारा नाथ जी, सिंह और नृपति दोई ।
लाख जतन कर क्षीजिये, यांने ज्ञान न होई जी ॥१२॥

गुरु वचन

सिंह क्षत्री सीधा घणा, यांने सर कर लेवां ।
नहीं सर होवे तो हम नाथ क्या, अनाथ ही रहेवां जी ॥१३॥

॥ दोहा ॥

मान अति राजी भयो, सुन सतगुरु के वैन ।
कही सो ये कर छोड़सी, अब पावेंगे चैन ॥

गुरु वचन

गान का अन्तरा

कहो नृपति क्या चाहत हो, सो मोय खोल सुनावो
कौन कमी तो में रही, सो अब हमसे पावो जी ॥ १४ ॥

मान वचन

जीव ब्रह्म क्यों दोय है, क्यों कर होवे एकताई ।
कहाँ जाय दोनों मिले, ये गम देवो बताई जी ॥ १५ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

यह तो जरा सी बात है, या में दुस्तर नाँय ।
जीव भाव ने पलट दे, तो तूही ब्रह्म कहाय ॥

मान वचन

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

तुम्हें तो सहज दीखता है, हमें नहीं सहज आता है ॥ टेर ॥
हमें वो ऐसा लगता है, ब्रह्म कोई गाँव है न्यारा ।

आप कहते तूही तो ब्रह्म है, हँसा इसका जो आता है ॥ १ ॥
अगर वो सहज ही होता, तो आप से आप मिल जाता।
न जाने गुप्त कितना है, खबर मुजको न पाता है ॥ २ ॥
कोई कहे चौथे असमाँ पर, कोई सतलोक बताते हैं।
कोई कहे चीर सागर में, मेरा दिल यों गभराता है ॥ ३ ॥
कहाँ को ढूँढने जावें, पता नहीं है कोई उसका।
कृपा करके बता दोगे, तुमरा क्या बिगड़ता है ॥ ४ ॥
कोई कहे गोकुल के बन में, खड़ा गैयाँ चराता है।
चौरासी कोस में ढूँढा, मगर वो कहीं न पाता है ॥ ५ ॥
त्याग वैराग्य में कोई कहे, फिरे जङ्गलों में धारे भेष।
मरे हम भूख के मारे, नजर वो कहीं न आता है ॥ ६ ॥
सुनो अब नाथ जी मेरी, गमावो वक्त न हाथों से ॥
मान अब शरण में आया, जीव क्यों रह के जाता है ॥ ७ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

क्यों अकुलावे मानसिंह, पलटो अपना भाव।
जीव कहत अब ब्रह्म कहो, है इतनो ही चाव ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

कहने ही मात्र से ब्रह्म बने प्रभु यह तुमतो अब ठीक बताई।
कहने से ही ब्रह्म बने इनमें कुछ विपत उठावन नाँई।
कई तीर्थ उपवास किये और नाना भांति विपत्ति उठाई।
अब तो सहज बतावत हो यह पहिले ऐसो बतायो क्यों नाँई।
बात ही बात में छोड़ूँ नहीं ऐसे विश्वास नहीं मन माँई।
मान कहे महाराज सुनो तुम चत्री के पाने पड़े अब आई।

गुरु वचन

॥ चौपाई ॥

तन से पलट पलट मन से ही। बचन पलट ब्रह्म लख उर तेही ॥
तू तो सब कुछ जाने नरेशू। औरन खण्ड करे अन्देशू ॥
पर उपकार करण के ताँई। तुम ये जाण कर गोष्ठी चलाई ॥

॥ दोहा ॥

बात सुनी यह नाथ की, हँस बोले तब राव।
जैसा कुछ है समझलो, कह दीजे ब्रह्म भाव ॥

॥ गान ॥

॥ राग झिंझोटी, बहरे तवील। ताल नकटा दादरा ॥

गुरु वचन

तू है जो अनादि ब्रह्म सदा, नृप भूल गयो जद जीव भयो।
तेरो जो स्वरूप सबी जग है, तू तो तोही को तोय भूलाय रयो ॥ १ ॥
तू आपकी भूल मिटाय दहे, फिर नाँ तो आयो और नाँय गयो।
जब आपमें आप समाय गयो, तब दोय को खोय के एक भयो ॥ २ ॥
मूढ़ तू ही तो ब्राह्मण क्षत्री बन्यो, और तू ही तो वैश्य को भाव कियो।
फिर तू ही तो शूद्रपनो धरके, और तू ही तो सबहू को दास भयो ॥ ३ ॥
तुम मान सचेत रहो मन में, अब आप में आप दिखाय रह्यो।
ऐसे नाथ को हाथ गह्यो चित सूँ, उनके चरणों बिच शीश दियो ॥ ४ ॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

मैं भूल्यो अब मोयको, तो क्यों कर भूल्यो नाथ।
आप आपको भूले क्यों, यही हाँसी मोये आत ॥

गुरु वचन

जैसे सर्प हो जेवड़ी, सीप ही रूपा होय।
ऐसे भूल्यो मानसिंह, चिन्ता करो न कोय ॥

मान वचन

कछुक गुरु कछु तेज हो, रजू सर्प तब पाय।
मेरे घोर अन्धेर है, क्यों कर वो दरसाय॥

गुरु वचन

बिलकुल अन्धियारो नहीं, है जो पदारथ ज्ञान।
निज स्वरूप को भूल ग्यो, सर्प ही व्यापे मान॥

॥ गान ॥

॥ राग झिंझोटी, वहरे तवील। ताल नकटा दादरा॥

मान वचन

अब भर्म उड़ाय भली करिये, प्रभु शरण तुमारी मैं आय पड़्यो॥ टेर॥
कारण कौन यह तिमिर भयो, और शुद्ध स्वरूप को भूल गयो।
जब नित्य प्रकाशी क्यों मंद भयो; अब शरण तुमारी मैं आय पड़्यो॥ १॥
नित्य अच्युत वो कलंकी क्यों, यह भेद बताय देवो सगरो।
पहिले ब्रह्म हो तो कैसे जीव भयो; अब शरण तुमारी० ॥२॥
नाथ को साथ किम्रो अब तो, प्रभु मेट देवो मन को झगरो।
तुम गुप्त न नेक रखो हमसे अब शरण तुमारी० ॥४॥
मान कहे कर जोड़ दोई, जो चमा करिये जन जान मोई।
यह जाति स्वभाव न छूटत है; अब शरण तुमारी० ॥४॥

गुरु वचन

॥ गान ॥

॥ राग झिंझोटी वहरे तवील। ताल नकटा दादरा॥

मान अजान नहीं अब तू, क्यों जान अजान दिखावत है॥ टेर॥
मेरा हमेशा ही काम यही कोई शिष्य यहाँ पूछन आवत है।
अपनो करणो है जो काम सदा, फिर क्यों मन में घबरावत है॥ १॥
काम करे न डरे मन में, चाहे केतिक वार पूछन चावे।

साधु हुए समता के लिये, फिर कारण कौन क्रोध आवे ॥ २ ॥
तेरे जिसो नहीं पूछनहार, तो मेरे जिसो नहीं बतलावे ।
डरने की बात कौन नृपति, सब अपनो है काम सो दिखलावे ॥ ३ ॥
देवहुनाथ कहे दिल से, चाहे केतिही वार ले पूछ हमें ।
नृप तू ही है तू ही है तू ही सदा, नृप हम तुम एक स्वरूप मिले ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह कहे नाथजी, अजहूँ भेद दरसाय ।
यह गूँगे गुड़ कह दियो, मैं तो समझ्यो नाँय ॥
गुरु कीने मैं जोय के, लीने खूब बजाय ।
कामी क्रोधी लालची, मैं भी करतो नाँय ॥
क्रोधी तो हम ही घणे, हैं नाहर की जात ।
तुम सो दीनदयाल हो, जिनसे लियो सिर हाथ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

देव कियो तोय मानसिंह, पशु बणे क्यों लाल ।
सब में एक स्वरूप है, यह कर देखो ख्याल ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

जब एक स्वरूप बताय रहे जब एक हँसे और एक क्यों रोवे ।
एक तो मौज उड़ाय रयो और एक कहो कङ्कर क्यों सोवे ।
एक तो राज करे जग को और एक जो भूख मरत इम जोवे ।
मान कहे किम एक लखें दीखत प्रत्यक्ष यह द्वैतक दो हैं ॥

गुरु वचन

॥ गान के अन्तरा ॥

मूल अविद्या री काढ़ दे, जीव जीव मिटावे ।
घट तज परगट ओलखो, तब निज निजरा आवेजी ॥ १६ ॥

मान वचन

दर्द होय जब घट माँहीं, माँयले नें दुःख काँई होवे ।
घाव लगे तो तन में लगे, माँय बैठो वो क्यों रोवे जी ।। १७ ।।

गुरु वचन

वो तो रोवे ने हँसे नहीं, सहजे आनन्द रूपा ।
उनकी सत्ता सूँ प्राण यह, ओलखे दुःख को स्वरूपा जी ।। १८ ।।

मान वचन

जब तक आतम देह में, तब तक हा हा चिल्लावें ।
देह छोड़ बाहर नीकसे, फिर कुछ नाँय सुनावे जी ।। १९ ।।
देह ने प्राण तो पड़्या रेवे, आत्मा इकेलो जावे ।
फिर क्यों नहीं बोले वो नाथ जी, यह तो सब योंही रह जावे जी ।।२०।।

गुरु वचन

निकल्यो जिणने पहचानियो, वो है तेरो तू रूपा ।
सगले जिकर ने छोड़ दे, केवल शुद्ध स्वरूपा जी ।। २१ ।।

मान वचन

यूँ तो कह्या सूँ नहीं छूटसो, आगे भेद बतावो ।
ओ दुःख सुख कुण भोगवे, अब मत नाथ छिपावो जी ।।२२।।

गुरु वचन

सब से तू तुजसे है सबी, सब में है तू रलिया ।
तेरे सिवाय कोई है नहीं, थाँसूँ कोई नहीं टलिया जी ।।२३।।

मान वचन

।। दोहा ।।

मैं हूँ मैं हूँ मैं ही हूँ, यह कई बार कह दीन ।
पण क्यों कर हूँ मैं नाथजी, या की न निश्चय कीन ।।
देह हूँ या प्राण हूँ,या हूँ सूक्ष्म शरीर ।
या कारण या लिंग हूँ, समझ कहो गुरू पीर ।।

गुरु वचन

तू ही देह तू ही प्राण है, तू है सूक्ष्म शरीर।
तू ही कारण तू ही लिंग है, समझ मान मति धीर॥

मान वचन

॥ कवित्त ॥

देह और प्राण हमी भिन्न भिन्न कारण कौन, हमी हैं सूक्ष्म तो जुदा क्यों कहाये हैं। हम ही कारण और लिंग शरीर हम, दुःख सुख कारण कौन के दरसाये हैं। कहे राव मानसिंह गुप्त हू न राखो नाथ, प्रगट कहे से कई जीव पार धाये हैं। लगे न खर्च कोई खजाना न खूटे यहाँ, घर में अनन्त धन क्यों ना लुटाये हैं॥

गुरु वचन

॥तर्ज वाणी की। ताल कैरवा॥

नरपति धन धन बुद्धि तुम्हारी होजी। परहित काज कमर कसी साची, धन धरियो अवतारो रे, नरपति धन धन बुद्धि तुम्हारी होजी॥ टेर॥
अब सुण भेद कहूं तने साचो, एक एक कर न्यारी होजी।
हठ कर पूछे क्यों मैं छिपाऊँ, मिले नहीं इसड़ो व्यौपारी रे। नरपति०॥१॥
अग्नि में तेज पृथ्वी में गन्धता, जल में तू ही शीतलाई।
पवन में स्पर्श आकाश शून्यता, देखो विवेक विचारी रे। नरपति०॥२॥
प्राणमय होय प्रवेश सब तन में, अन्नमय शक्ति तुम्हारी होजी।
मनोमय होय चलावे सबको, यूँ कर सृष्टि निहारी रे। नरपति०॥३॥
ज्ञानमय होय सब ज्ञान करे तू, ओलखे न्यारी न्यारी होजी।
होय विज्ञानमय जद सुखिया, मिट जाय दुविधा सारी रे। नरपति०॥४॥
आनन्दमय यूँ पाँचवों तू है, सगरी बात उघारी होजी॥
आगे कहूं सो समझ नरेशू, देखो विवेक विचारी रे। नरपति०॥५॥
मनन कियो जद मन भयो तू ही, चितवन चितता धारी होजी।
सत्य असत्य विवेक कियो तैं, तो बुद्धि नाम निहारी रे। नरपति०॥६॥

अहंता बीच आयो जद देख्यो, अहंकार दुःखकारी होजी।
पाँच और चार एक तूही है, कही सूक्ष्मता सारी रे। नरपति ० ॥ ७ ॥
सूक्ष्म ते अब सुन ले कारण, सही सही सहज बताऊँ होजी ।
लिंग शरीर कहन मात्र है, उनको क्या दरसाऊँ रे। नरपति। ० ॥ ८ ॥
पिछला अब कर अगला तीनों, उपजे बासना माँही होजी।
जाग्रत सुपन और सुषुप्ति, यह सब कारण माँही रे। नरपति ० ॥ ६ ॥
स्वप्न में स्वप्न रचे सो तू है, सूक्ष्म शयन करायो होजी।
जाग्रत माँय जाग के बोल्यो, दोनों रो अनुभव सुनायो रे। नरपति ० ॥१०॥
सूक्ष्म वृत्ति हिले जो अन्तर, सो है सूक्ष्म शरीरा होजी।
देवनाथ कहे फिर कछु बोलो, चुप मत होय मति धीरा रे। नरपति ० ॥११॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

स्थूल सूक्ष्म कारण तिहूं, दिये हमें समझाय।
तदपि अजहू शंका रही, दीजे नाथ बताय ॥
कौन श्रुति और वृत्ति है, उपवृत्ति है कौन।
इनकी कैसे निवृत्ति, रहो नाथ नहिं मौन ॥

गुरु वचन

॥ चौपाई ॥

रे नृप तू है रसिया भारी। पीवत छके न वृत्ति तिहारी ॥
अब ले सहज तोय भेद सुनाऊँ। तोसे गुप्त न राखनो चाऊँ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्जे "एली"। ताल कैरवा ॥

अब सुनिये नराधिपति देव, बात कहूं खोल के रे बाला। सुनिये नराधि०॥टेर॥
सुरत करे सो सुरता कहिये, वृत्ति लेवे पिछाण; बाला सुरत करे सो० ॥१॥
उपवृत्ति सो आत्मा तेरी, और कोई नहीं मान। बात कहूं खोल के रे० ॥१॥
सुरती सोई इन्द्रियन में रेवे, वृत्ति रेवे माँय; बाला सुरत सोई० ।

सुरती तो पहिचान करावे, वृत्ति लेवे भेद जनाय। बात कहूँ० ॥२॥
सुरती वृत्ति दोनों को दृष्टा, उपवृत्ति आनन्द; बाला सुरती०।
चौथी अवस्था तुरिये माँही, निशि दिन रहत स्वच्छन्द। बात कहूँ० ॥३॥
अब क्या बूझे बूझ नरेशू, विलम्ब करो मत कोय; बाला अब क्या०।
तू पूछत जो नहिं अलसावे, आलस न आवे मोय। बात कहूँ० ॥४॥

मान वचन

दोहा

बूझण को जागा नहीं, अब भेद रयो नहीं नेक।
पण बात कहूँ मैं नाथ जी, संशय रही मन एक॥
एक एकलो आत्मा, जिणरे चार मुकाम।
न्यारो न्यारो क्यों कर रहे; कहिये भेद तमाम॥

गुरु वचन

चारों माँही एक है, एकण माँही चार।
वो चारूँ ही आप है, कीजे मान विचार॥

मान वचन

ये तो तुम फिर नई कही, उलझन डारी और।
एक चार कैसे बने, माने कहीं मन मोर॥
क्या चारन वहूँ टुक्कड़े, क्यों कर चारन माँय।
कृपा करो कहो नाथजी, संशय देहू मिटाय॥

गुरु वचन

जब जाग्रत में रहत है, जग्रत सुपने आय।
सुपन सूँ होय सुषुप्ति, फिर जाग्रत में जाय॥
दोनों को आनन्द कहे, रहे तीसरी माँय।
चौथी बीच में जायके, आनन्द दुःख दोऊ नाँय॥

मान वचन

क्या चौथी कहीं दूर है, चढणो है आसमान।
सो भी हमें बताइये, अब मत राखो गौन॥

गुरु वचन

नहीं चढ़णो री पैड़ियाँ, घाटी कहिये न कोय।
नहीं उडणो आकाश में, असली निश्चय होय॥

भानवचन

जाग्रत सूँ सुपने गयो, सुपन सुषुमि माँय।
इन में पहिले नहीं हुतो, कहाँ थो कहाँ से जाय॥
तुम कहते हो नित्य है, व्यापक रग रग माँय।
कहाँ से आयो कहाँ गयो, संशय देहु मिटाय॥

गुरु वचन

॥ गान का अन्तरा ॥

जाली जाल चूके नहीं, निकले तो फँसावे।
ज्ञान कतरनी हाथ है, काट के दूर हटावे जी॥ २४॥
नहीं तो गयो ने आयो नहीं, है नित एक रस भरिया।
समय समय परभाव से, खेल न्यारा न्यारा करिया जी॥ २५॥
यों तू ओलख निज रूप ने, सही सही समझायो।
भरम रयो तो फिर काढले, अवसर ऐसो आयो जी॥ २६॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

कौन भरम अब रहत है, दीनो भरम उडाय।
मान कहे हो नाथ जी, सही दियो समझाय॥
सङ्ग कियो जब नाथ रो, फिर क्यों रहे अनाथ।
जिण में ही देव जो नाथ है, लिये देव के हाथ॥

गुरु वचन

॥ सवैया ॥

बात कही समझाय सभी पण तू मत गुम्र में राखजे भाई।
मेरो तो भार उतार दियो अब भार दियो तेरे सिर ताँई।

मेरो तो भार दियो तुझको और तेरो जो भार हम लीन उठाई।
मेरे तो भार को प्रगट करे तू तेरो भार जो देऊँ जराई।
देवहु नाथ कहे सुन मान ये याद रखे अपने मन माँई।
जो तू गुप्त में राख दियो बदलो लेऊँ तोहि में छोड़हु नाँई॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

एती कहो तुम काहे को नाथ जो गुप्त रखूँ क्यों पूछन चाऊँ।
यही कारण मैं वार हि वार यह झटके आन तुमारे जो खाऊँ।
झटके हैं नहीं सदके हैं मेरे इन कारण खावत लाज न लाऊँ।
मन में है मेरे एकलो न चलूँ मैं साथ मेरे सब जगत ले जाऊँ॥

॥ कवित्त ॥

प्राणी प्राणी मात्र में ब्रह्म को उपदेश करूँ, जीव जीव भाव को जगा खोय डारूँ मैं। मेरो वश पहुँचे नाथ ब्रह्म रूप करूँ जगत, एक ही स्वरूप ह सब में निहारूँ मैं। सृष्टि को नियम सो तोड़ हू न सकूं मैं, मुझते तिरे इतं जीव पार तारूँ मैं। कहे राव मानसिंह अति तो कहा कहूं, रति रति कहं सो ग्रन्थ लिख डारूँ मैं॥

॥ गान का अन्तरा ॥

मान कहे हो म्हारा नाथ जी, लेऊँ मैं आण तुम्हारी।
तिरिया जिता तो जीव तारसूँ, यही प्रतिज्ञा हमारी जी॥ २७॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मूँदड़ी के डंके" की। ताल कैरवा॥

भगवत् नारद को समझावे, ये ही निज ज्ञान है रे॥ टेर॥
समझ कर देखो जी ऋषिराज, सब है मेरो जग यह साज,
इससे करता हूँ सब काज; फिर भी नहीं किसका मोहताज। येही०॥१
नारद कहीं आय नहीं जाय, सब में रूप मेरो तू पाय,

दिल से देवो भेद मिटाय; जिण सूँ जन्म मरण मिट जाय। ये ही० ॥ २ ॥
नारद माया ब्रह्म न दोय, ब्रह्म और माया एक ही जोय,
न्यारो रह्यां सरे नहीं कोय; इसड़ी भूल भरमना खोय। ये ही निज० ॥ ३ ॥
तू मन ब्रह्मा सुत मत मान, मन में दासी पुत्र मत जान,
ब्रह्मा तुझसे भिन्न नहीं आन; तजदे द्वैत अविद्या टान। ये ही निज० ॥ ४ ॥
मन में ब्रह्मा सुत अभिमान, जिनसे है यह खैंचा तान,
अब तो करो दूर अज्ञान; जिनसे सहजे हो कल्याण। ये ही निज० ॥ ५ ॥
धर के देवनाथ अवतार, आये भू पर दूजी बार,
करणे मान को भव जल पार; लीनी जीवित मोक्ष सुधार। ये ही निज० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मूँदड़ी के डंके" की। ताल केरवा ॥

मिलिया सतगुरु समधी मोय, भली करी आय के रे ॥ टेर ॥
धर कर नाना रूप अनेक, गिनती करूँ कहा नहीं लेख;
जिण म्हारे मारी रेख पर मेख(१)। भली करी आय के रे ॥ १ ॥
खोये जन्म कुमारी(२) अनन्त, जिनको गिनत न आवे अन्त;
हम तो भटके पोल के पन्थ। भली करी आय के रे ॥ २ ॥
अब के जुड़ग्यो असल सूँ ब्याव(३), म्हारे मन में घणो उछाव;
देख्यो दिन-दिन दूणो चाव। भली करी आय के रे ॥ ३ ॥
दियो म्हाँने कर सूं कर पकड़ाय(४), पिया रो दीनो रूप बताय;
मिल गई अपने पिव सूं जाय। भली करी आय के रे ॥ ४ ॥
रही मैं भटक भटक दिन खोय, मिल्यो नहीं जोड़ी रो वर कोय;
कहो सखी कैसे सम्बन्ध होय। भली करी आय के रे ॥ ५ ॥
मिल गयो जोड़ो रूप स्वरूप, देखियो मेरो ही रूप अनूप;

१—कर्म बन्धन काटे, २—अज्ञानवस्था, ३—आत्मज्ञान, ४—जीव ब्रह्म की एकता का ज्ञान।

मिट गई तीनों ताप की धूप। भली करी आय के रे ॥ ६ ॥
समधो देवनाथ मस्तान, दीयो जीवन मोक्ष को दान;
ज्याँरो रिण भूले नहीं मान। भली करी आय के रे ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे मित्रों सुनो, कही है बीती सोय।
ब्याही सुरत सुहागिनी, अब क्वाँरी रही न कोय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की। ताल कैरवा ॥

म्हारी नींद उडाई, नाथ मिलियाँ सूँ किया सनाथ रे ॥ टेर ॥
ढूंढत ढूंढत म्हे फिरया स म्हांने मिल्यो नहीं ब्रह्म ज्ञान।
ना साचा सतगुरु मिल्या स म्हारे लाग्यो न उर में बान।
मठ मँढ़ियां सब हेरिया सरे सब ही दीखी दुकान रे। म्हारी नींद ॥ १ ॥
हेरत हेरत हारिया सरे बैठ गया घर मांय।
सूतां ने आण जगाविया सरे कर पकड़े ने उठाय।
मैं चातक ज्यों तरसता सरे प्यासों ने पाणी पाय रे। म्हारी नींद ॥ २ ॥
दूजा दावा टूटग्या सरे भयो तत्त्व रो ज्ञान।
ब्रह्म रूप म्हारा नाथजी स म्हांने कर लियो आप समान।
जन्म मरण सब मिट गया स म्हारो लग्यो नाथ से ध्यान रे। म्हारी नींद ॥
देवनाथ के हाथ से स म्हारी बिगड़ी गई है सुधार।
मानसिंह निश्चय भई स अब सहज हुआ भव पार।
ऐसो आप में देखियो सरे मोय रूप संसार रे। म्हारी नींद० ॥ ४ ॥



॥ गान ॥

॥ तर्ज " राजन का सूवा रे " की। ताल कैरवा ॥

म्हाँने कृष्ण(१) मिल्या हो, नाथ्यो मन मोहन इण मन नाग ने ॥ टेर ॥
नाग मेरो सबसे बुरो स ज्याँरे पाँच नागणी(२) संग ।
हृदय रो नीर(३) बिगाड़ियो सरे कालो कियो है कलंक।
सुध जल इणमें कस रहे स वो खेले माँय भुजंग रे । म्हाँने कृष्ण मिल्या । १।
संत सखी संग ग्वालिया स इण दिया सब ने छिटकाय।
हृदय कालिंदी में कूदिया सरे पलक जेज नहीं लाय ।
सूतो नाग जगा लियो सरे मन में डराया नाँय रे। म्हाँने कृष्ण० ॥ २ ॥
कुमति नागिनी कड़क के सरे कड़वा वैण सुणाय।
मानी एक नहीं नाथ जी स यांने डाट दिवी पल माँय ।
पकड़ पूँछ(४) ने नाग जगायो, युद्ध करण री चाय रे।म्हाँने कृष्ण० ॥ ३॥
घणा दिवस थाँने भया स थे दीयो नीर बिगाड़ ।
अब तो हृदय तज सज्जन रो स कोई दुर्जन हृदय जाय ।
जबरदस्ती सूँ पकड़ ने नाथ्यो परवा कीनी नाँय रे। म्हाँने कृष्ण० ॥ ४ ॥
नाग नाथ ने बाहिर आया मीठी बीण सुनाय ।
कालो मिट आछो भयो स यों निर्मल नीर बहाय।
जीव जहर तो गल गयो स अब ब्रह्म अमी प्रगटाय रे। म्हाँने कृष्ण० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण सा सरे मान है दास हमेश।
यूँ कर निश्चय जाणली सरे लिया नाग उपदेश ।
यूँ मन नाग ने नाथ लो स क्या कथा सुणो थे हमेश रे। म्हाँने कृष्ण ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज " मारवाड़ी डंके " की। ताल कैरवा ॥

नाथ शरण में नाथ समान, मेट दियो मन रो अभिमान ॥ टेर ॥

१--सद्गुरु, २—इन्द्रियां, ३— विवेक, ४—वृति।

सब जग नाथ प्रतीत जो होय; नाथ सिवाय न दूजो कोय।
टूट गयो मन रो अज्ञान। नाथ शरण में ॥ १ ॥
नाथ आदि और नाथ है अन्त; नाथ गुणिन में है गुणवन्त।
नाथ रूप को कियो है ज्ञान। नाथ० ॥ २ ॥
जल थल नभ पृथ्वी में जोय; पवन और अग्नि में सोय।
नाथ बिना है खाली कौन। नाथ० ॥ ३ ॥
नाथ हाथ धर कियो सनाथ, मेट दिवी तिरगुण की रात।
अपने रूप को लियो पिछान। नाथ० ॥ ४ ॥
मानसिंह सर्वज्ञ है सोय; नाथ बिना नहीं सृष्टि कोय।
क्या जाने नर मूढ़ अजान। नाथ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

सत् गुरु मिलिया भयो रे आनन्द; छूट गये सब काल के फन्द ॥ टेर ॥
भेटत भागा भरम अन्धार; जिण सूं मिट गया द्वैत विकार।
बन्ध मिटाय भये निर्बन्ध। छूट गये सब काल के फन्द ॥ १ ॥
रस्ता बहुत में फिरिया अनेक; सत् गुरु मिलताँ पायो एक।
उर बिच ऊगो ब्रह्म को चंद। छूट गये० ॥ २ ॥
ब्रह्म दरस भयो अन्तर माँय; कुण म्हारे दरसण करवा जाय॥
दूर गये मेरे दुःख द्वंद। छूट गये० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु मिले दयाल; जिन मिलताँ मोये कीनो निहाल।
आँख छताँ क्यूं मान रहे अन्ध। छूट गये० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

सतगुरु ऐसी कृपा जो कीन; आतम तत्व की बूटी दीन ॥ टेर ॥
कुण घोटे कुण बाहर जाय, कुण छाणन रो कष्ट उठाय।

नित्य स्वच्छ और साफ दीन मोये, वो बूटी हित चित कर पीन।

आत्म तत्त्व की ॥ १ ॥

सत्य असत्य को कियो विचार; दियो विवेक गलन पर डार।

साफ भई ऐसी बूटी मेरी, पीताँ भयो जो काल आधीन। आत्म तत्त्व की० ॥ २ ॥

पीकर बूटी भये मस्तान; नहीं उतरे अब आतम ज्ञान।

चारूँ वरण मेरे एक समान है, बजी अद्वैत की आछी बीन। आत्म० ॥ ३ ॥

जो ऐसी बूटी को पाय; उनको शंभु(१) तुरत मिल जाय।

काल को भी महाकाल कहाय, मत पीवो यह भंग मलीन। आत्म ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु मिले सुजान; शिवजी प्रसन्न भये कृपा निधान।

मान कहे मैं लियो है जान, अब नहीं पीऊँ यह भंग मतिहीन। आत्म० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की । ताल कैरवा ॥

गो अतीत सब में गोपाल; तन धारी सब ही हैं ग्वाल ॥ टेर ॥

पास रहे और जाने नाँय; तिमिर(२) दोष ते पिछाने नाँय।

दिन दिन फँसे जगत के जाल। तन धारी० ॥ १ ॥

इण तन में जो लियो विचार; मन माँयले ने लीनो मार।

पलट गये अन्तर के ख्याल। तन धारी० ॥ २ ॥

तन में न जोवे बाहर जाय; बाहिर फिरे ज्याँने दीखे नाँय

गुन्ड मोल में लुटावे माल; तन धारी० ॥ ३ ॥

मान नाथ जी दियो सुझाय; अब मेरी बाहर जाय बलाय।

सब में एक ही रूप है लाल। तन धारी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डंके" की। ताल कैरवा ॥

म्हारा सतगुरु स्वामी, सूती जगाई सुख(३) भर नींद से ॥ टेर ॥

१—आत्मा, २—अज्ञानान्धकार, ३—मोह-निद्रा,

सुख से सोई, निद्रा खोई, जाग के जोई; सूती जगाई सुख भर नींद से ॥ १ ॥
बैन(१) बजाई, नींद उड़ाई, चट चेताई; सूती जगाई सुख भर नींद से ॥ २ ॥
जागी पाया, पीव(२) मिलाया, निकट ही आया; सूती जगाई सुख भर नींद ॥ ३ ॥
सुपने(३) माँई, अति दुःख पाई, अब के आई; सूती जगाई सुख भर नींद ॥ ४ ॥
निन्द्रा सुख मान्यो, यूँ ही हठ ठान्यो, नहिं मन जाग्यो; सूती जगाई ॥ ५ ॥
टूटी आसा, भ्रम की फासा, सहज निवासा; सूती जगाई सुख भर नींद ॥ ६ ॥
नाथ न आता, जमपुर(४) जाता, यूँ ही दुःख पाता; सूती जगाई सुख ॥ ७ ॥
मान अकेला, गुरु न चेला, मेट झमेला; सूती जगाई सुख भर नींद से ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डङ्के" की । ताल कैरवा ॥

पिया(५) थाँ सूँ सम्बन्ध आदि सदाई हो ।
भूली जिण सूँ न्यारी भई मैं(६) दुःख पाई हो ॥ टेर ॥

जीव जीव को जाल बिछायो, असली तत्त्व मोये नाँय बतायो ;
हीरां री गाँठ गमाई हो । पिया थाँ सूँ ॥ १ ॥
चारूँ धामा, ग्राम ही ग्रामा, भटकी तमामा ;
कोई न दरसण पाई हो । पिया० ॥ २ ॥
सद्गुरु आया, देश दिखाया, फेर मिलाया ;
टूटोड़ी जोड़ी है सगाई हो । पिया० ॥ ३ ॥
मिलते न नाथा, यूँ ही बह जाता, लाज गुमाता,
मान गयोड़ी लाज आई हो । पिया० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डङ्के" की । ताल कैरवा ॥

आज म्हारे निज सूँ जुड़ी है सगाई रे ।
नातो ऐड़ो, अवर जुड़्यो कभी नाँई रे ॥ टेर ॥

१—उपदेश, २—आत्मा, ३—मनोराज्य, ४—जन्म-मरण का चक्कर ।
५—आत्मा, ६—वृत्ति'

सुरता नारी, भई पिव प्यारी, सुखिया भारी ; अब दुःख सुपने नाँई रे।
आज म्हारे० ॥ १ ॥
सास हमारी, समता नारी, लागे प्यारी ; जिण म्हांने प्रीतम से मिलाई रे।
आज म्हारे० ॥ २ ॥
सुसर हमारा, ज्ञान है प्यारा, सब से न्यारा ; जिण म्हांने पार लगाई रे।
आज म्हारे० ॥ ३ ॥
गयो अज्ञाना, उड़्यो अभिमाना, लाग्यो ध्याना ; आप में आप समाई रे।
आज म्हारे० ॥ ४ ॥
व्याह रचायो, यूँ वर पायो, जन्म न आयो ; एको ही एक मिलाई रे।
आज म्हारे० ॥ ५ ॥
ज़िण से जाई(१), उन्हीं को व्याही(२), इचरज आई ; दूजो न वर दरसाई रे।
आज म्हारे० ॥ ६ ॥
सत्गुरु बापू, मेट संतापू, आप में आपू ; दूजो दीखे नाँई रे।
आज म्हारे० ॥ ७ ॥
कहे यूँ मानं, अब न अजानं, लियो निज ज्ञानं ; देवनाथ में समाई रे।
आज म्हारे० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "पन्ने" की । ताल दीपचन्दी ॥

वा वा हो म्हारा नाथजी, साचो श्याम मिलायो हो ॥ टेर ॥
सूती हुती सुख(३) नींद में, ज्ञान चंग बजायो हो।
हेलो(४) कर बतलावियो, पीया नजरे मिलायो(५) हो । वा वा हो म्हारा०॥१॥
मैं तो जाण्यो के दूर है, ओ तो पास में पायो हो।
चितरो चैत म्हारो सूधर्‌यो, पिया बैन(६) सुनायो हो । वा वा हो म्हारा०॥२॥
काशी मथुरा द्वारिका, फिर फिर खूब ठगायो हो।

१—आत्मा से स्फुरना, २—आत्मा में लय होना।
३—मोह-निद्रा, ४—उपदेश देकर, ५—आत्मानुभव, ६—सोहं शब्द,

सत् गुरु मिल्या ने समझियो, सहजे आनन्द आयो हो। वा वा हो०॥३॥
चौथे (१) नगर में पहूँचिया, नहीं पैंडो करायो हो।
मारग सुगम दियो नाथजी, म्हाँने सैनी समझायो हो। वा वा हो म्हारा०॥४॥
अमर सुहागिन (२) सुरता भई, जो दुहाग न आयो हो।
मानकहे म्हारे सुख भयो, पिया ने कण्ठ(३)लगायो हो। वा वा हो म्हारा०॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज डंका "सखीजी ने वरजण आया" की। ताल कैरवा॥

वा वा नाथ निज रूप तुम्हारो; क्या कहूँ मन में लागे प्यारो।
कहूँ मैं किम कर वचन न आवे, वेद थाक गये चारो; कहा विरद हमारो।
वा वा नाथ०। टे०

थाके जहाँ पर वचन विलास। केवल एक रूप विश्वास।
क्या गुण वरणूँ अनन्त गुणा हो, तेरो है रूप जग सारो; किण सूँ नहीं
न्यारो। वा वा नाथ० ॥१॥

गम कहूँ तो अगम है सोय। अगम कहूँ सहजे गम होय।
गम और अगम के अन्तर बाहर, मध्य तेरो ही उजियारो; तू है इक सारो।
वा वा नाथ० ॥२॥

और लख्यो जद और बतायो। तुझ में मिल्यो तो कुछ नहीं पायो।
खोजी में खोज समाय गयो जद, मिट गयो खोजण हारो; सब खोज हमारो
वा वा नाथ० ॥ ३ ॥

देव नाथ गुरु कियो सनाथ। मानसिंह को पकड़्यो हाथ।
हाथ पकड़ के ले लियो निज में, जगत पड़ी मखमारो: मैं नित मतवारो।
वा वा नाथ० ॥४॥

१—तुरीयावस्था, २—जन्म मरण से रहित ज्ञानावस्था, ३—आत्मानुभव।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पपैया" की । ताल कैरवा ॥

नाथजी तो निज में पाया रे। म्हाँरो उड़ग्यो तिमिर अज्ञान; आप में आप समाया रे ॥ टेर ॥

करम के फन्द हटाया रे । जनम और मरण मिटाया रे।
दियो म्हाँने "तत्त्वमसि" निज ज्ञान; आप में आप समाया रे ॥१॥
मिटी सब रात अन्धारी रे । पिये री सुरत निहारी रे ।
म्हारे दिल में ऊगो भाण; आप में आप समाया रे ॥ २ ॥
नाथ अमृत बरसाया रे । जिसे नहीं पीत अघाया रे ।
मैं तो पियो धाप मद पान; आप में आप समाया रे ॥ ३ ॥
नाथ जी रे रूप हो रहिया रे । मिथ्या को भाव तज दइया रे ।
म्हारे खुल रही अन्तर खान; आप में आप समाया रे ॥ ४ ॥
नाथ ने पल नहीं भूलाँजी । कृपा सूँ सुख में भूलाँजी ।
म्हारो मिट्यो मान अभिमान; आप में आप समाया रे ॥ ५ ॥
मिल्या म्हाँने देव स्वरूपी नाथ । दिखा गो जोत ब्रह्म रूप जात ।
अब म्हारो मिट्यो आन और जान । आप में आप समाया रे ॥ ६ ॥
नाथ जी भलो कियो अहसान । मेट दी पोल की खैंचा तान ।
थाँरो क्यों गुण भूले मान । आप में आप समाया रे ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पपैया" की । ताल कैरवा ॥

नाथ निज अमर हमारे जी ।
ये तो मरें ने जन्में नाँय, जासूं मोये लागे प्यारे जी ॥ टेर ॥
जाणो मत देह भाव से नाथ। नाथ हैं पूर्ण ब्रह्म सनाथ।

जिकाँरो वेद अनन्त गुण गात; जासू म्हाँने लागे प्यारे जी ॥ १ ॥
नात(१) को शब्द यह स्पष्ट बतात । गयो नहीं तो फिर कैसे आत ।
यासे नित रहे जगत के माँय; जासूं म्हाँने लागे प्यारे जी ॥ २ ॥
यदि ये जनम मरण में आत । कहते फिर इनको क्यों ये नात ।
मोय मन रही प्रतीती आय; जासू म्हाँने लागे प्यारे जी ॥
मान निज अर्थ को जोयाजी । नाथ के रूप में सोयाजी ।
नहीं लाख बात अब आय, जासूं म्हाँने लागे प्यारे जी ॥ ४ ॥

॥दोहा ॥

मानसिंह संसार में, मौड़ी(२) पड़ी पिछाण ।
सत्संगी मिलिया नहीं, मिल्या स्वार्थी आन ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार । ताल तिताला ॥

हमारे मन गुरु पद बहुत सनेह ॥ टेर ॥
गुरु पद नेह अवर नहीं दूजो, बरसत प्रेम को मेह ।
शील सनेह नीर में भीज्यो, धुपी करम की खेह । हमारे० ॥ १ ॥
तीन(३) पाद यह माया माँहि, याँ सूँ बैर न नेह ।
चौथा पाद गुरु निज कहिये, ता में मिलके रहे । हमारे० ॥ २ ॥
गुरु पद में जो मिले हैं ज्ञानी, फिर ना जन्म धरे ।
मानसिंह फिर भय है कौन को, निश दिन निडर फिरे । हमारे० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु तुरिये पद में, तहां नित शिष्य रहे ।
मानसिंह यह भाव गुरु पद को, पलक न दूर रहे । हमारे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

सत् गुरु मिलिया आय; भली ए म्हारे आज सावणिये री तीज(४) ॥ टेर

१—न-आत=न आने वाला, २—देर से, ३—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति । ४—शुभ

सत् गुरु मिलिया प्रेम सूँ रे, बोयो शबद रो बीज।
विरह री बादलिया झुक रही रे म्हारे, चमकी ज्ञान के री बीज।
भली ए म्हारे० ॥ १ ॥

सुरता ऊभी गोखड़े(१) रे, रही विरह बिच भीज।
थर(२) थर कंपे प्रीतम(३) डर(४) लीनी, डर लीनी प्रीतम रींझ(५)।
भली ए म्हारे० ॥ २ ॥

जीव ब्रह्म जद एक कथा जद, मन म्हारो गयो पतीज।
हम प्रीतम दोऊँ झूझिया(६) रे, ज्यूँ बादल(७) में बीज(८)।
भली ए म्हारे० ॥ ३ ॥

देवनाथ सा पीव मिल्या रे, जिनको संग हम कीन।
मान कहे एसो सावण(९) आयो, होय रही पिय(१०) बिच लीन।
भली ए म्हारे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-मलार; तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की। ताल दीपचन्दी ॥

मिली ए म्हाँने राम(११) रँगीली कलाल(१२)। मद(१३) पियो कोई हरिजन(१४) लाल;
मिली ए म्हाँने० ॥ टेर ॥

ओ मद पीवे कोई मद(१५) छकिया, मन माँहे होय दलाल(१६)।
शीश(१७) उतारत देर नहीं ज्याँ रे, नाँव सुण्यो डरे काल। मिली ए म्हाँने०॥१॥

ओ मद पीवे सो मुड़दा(१८) कहिये, आवे नहीं जम रो जाल(१९)।
अपणे रूप सूँ पलक न न्यारो, हरदम राखे ख्याल। मिली ए म्हाँने०॥ २ ॥

आतो कलाली जालम(२०) घणी रे, पेहलाई माँगे लाल(२१)।

१—जिज्ञासा, २—प्रेमातुर ३—सद्गुरु, ४—निज शिष्य बनाया, ५—प्रसन्न हो कर, ६—शंका समाधान, ७—अज्ञानांधकार, ८—ज्ञान का प्रकाश, ९—आत्म-ज्ञान-श्रवण, १०—आत्मा, ११—आत्मानुभवी, १२—सद्गुरु, १३—आत्मज्ञान, १४—जिज्ञासु, १५—विषयों से तृप्त; अपने में सन्तुष्ट, १६—अनासक्त, १७—देहाभिमान, १८—देहाभिमान से रहित, १९—जन्म-मरण का जंजाल, २०—जबरदस्त, २१—जीवभाव।

पलक उधार करे नहीं कबहूँ, क्यों कर लेवाँ चित्त टाळ । मिली ए म्हाँने० ॥३॥
देवनाथ गुरु असल कलाली, भूपन के भूपाल ।
मान गरीब थाँरे द्वारे आयो, अब कृपा कीजे कृपाल । मिली ए म्हाँने० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग-मलार, तर्ज "पणियारी" की । ताल कैरवा ॥

चाली म्हारी सुरता गिगन(१) मण्डल में, रात(२) दिवस गिरणाई(३) रे ॥टेर॥
सोहन शिखिर(४) में चमकी(५) बीजली, गिगन घटा(६) चढ़ आई रे ।
मधुर मधुर धुन बोले पपैया(७), बैरण नींद(८) उडाई रे ॥ १ ॥
चितरे चौक में झूलो(९) माँड्यो, झूले तीज(१०) सवाई(११) रे ।
पाँच(१२) पचीस(१३) तीस सँग सखियाँ, सुन्दर शोभा पाई रे ॥ २ ॥
समता रो हार पीव(१४) पहरायो, सुगन्ध(१५) भई जग माँई रे ।
प्रेम पुष्प म्हारा कबहू न सूके, नित चौसर हरियाई रे ॥ ३ ॥
ओहं सोहं लागा झकोरा, झूलो चढ्यो नभ(१६) माँई रे ।
मैं डरती प्रीतमजी(१७) ने पकड़्या, छोडूँ तो गिर जाई रे ॥ ४ ॥
देवनाथ चौमास के रसिया(१८), मैं थाँसूँ कम नाँई रे ।
मानसिंह कहे आनन्द माँय रेणो, म्हारे तो सावण (१९) सदाई रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज "पणियारी" की । ताल कैरवा ॥

धीमे(२०) बरस(२१) म्हारा मेहा(२२) पानी(२३), म्हाँने(२४) अति डर(२५) आवे रे ॥टेर॥

१—उच्चस्थिति, २—सदा, ३—प्रफुल्लित, ४—बुद्धि, ५—प्रकाश, ६—आत्मज्ञान, ७—ज्ञानोपदेश देने वाला, ८—मोहनिद्रा, ९—विचार, शंका समाधान, १०—सुरता, ११—उमङ्ग से, १२—इन्द्रियाँ, १३—प्रकृतियाँ, १४—सद्गुरु, —सर्वात्म भाव, १६—ब्राह्मी स्थिति, १७—सद्गुरु, १८—चारों अवस्थाओं का स्वामी भाव से भोक्ता, १९—आत्मनुभव की तरी, २०—आहिस्ते, २१—उपदेश दो, २२—सद्गुरु, २३—उपदेश, २४—वृत्ति, २५—घबड़ाहट,

प्रीतम(१) तो परदेश(२) बसब है, कुण म्हाँसूँ प्रेम बढावे रे।
सारंग(३) सुनत सारंग(४) यों बोल्यो, सारंग(५) मन धड़कावें रे॥ १ ॥
आधी सारंग(६) मध्य माँय ने, सारंग(७) यूँ सूँसावे रे।
इत सारंग(८) निकलत अँखियन ते, सारंग(९) होश भूलावे रे॥ २ ॥
सारंगसुत(१०) तो छिप्यो सारंग(११) में, सारंग(१२) नहीं दरसावे रे।
विरहन सारंग(१३) सारंग(१४) धोखे, स्याहरंग(१५) ले मर जावें रे॥ ३ ॥
उडरे सारंग(१६) जहाँ मेरो सारंग(१७), सारंग(१८) देने बुलावे रे।
मान कहे तेरो तुझ में ही सारंग(१९), स्याह रंग क्यों न हटावे रे॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मानसिंहजी का प्रश्न ॥

जो थी पुतली लवण की, सागर रही मिलाय।
पलट बैन केवे नहीं, किम कर ज्ञान सुनाय॥
कही यों सन्त कबीर ने, सुनिये श्री महाराज।
संशय सभी मिटाइये, जद यह सरही काज॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की ताल कैरवा॥

शिष्य अब, क्यों सुलझ्यो उलझावे होजी। बुद्धिमान विचार करो उर,

१—आत्मा, २—अदृश्य=दूर, ३—सद्गुरु उपदेश रूपी गरजना, ४—जिज्ञासु रूपी मोर, ५—वृत्ति रूपी स्त्री, ६—अज्ञानान्धकार रूपी रात, ७—काल रूपी सर्प, ८—काजल (रोने का भाव) ९—वृत्ति रूपी स्त्री १०—जीवात्मा, ११—अज्ञानान्धकार रूपी रात, १२—परमात्मा, १३—वृत्ति रूपी स्त्री, १४—परमात्मा, १५—पाखण्ड रूपी अफीम, १६—मन रूपी हंस, १७—परमात्मा, १८—विचार रूपी मोती, १९—परमात्मा।

उलटो क्यों अर्थ लगावे रे शिष्य अब, क्यों सुलझ्यो उलझावे हो जी ।।टेर।।
जीव भाव सो पुतली लवण की, जग के कर्म कमावे हो जी ।
जीव भाव अब ब्रह्म में गल गयो, पलट फेर नहीं आवे रे । शिष्य अब० ।।१।।
यों न जाण हम मिट गये तन से, मूक रूप होय जावे हो जी ।
ज्ञान समुद्र अज्ञान ज्ञान भयो, भाव अभाव मिटावे रे । शिष्य अब० ।। २ ।।
जो वे कबीर मूक होय जाता, तो कुण शब्द सुणावे हो जी ।
वाणी बिना शब्द नहीं निकले, गूँगा क्यों कर बतावे रे । शिष्य अब० ।। ३ ।।
जग माँहे गूँगा फिरत बहुत सा ज्यांने, कयों नहीं ज्ञानी बतावे हो जी ।
बोलत नाँय सैनी सूँ समझे, मूरख कह बतलावे रे । शिष्य अब० ।। ४ ।।
जीव भाव जिते घणो ही भभके, अप्रिय शब्द सुणावे हो जी ।
ब्रह्मरूप हो आतम मुख बोले, सो जग रे समझ नहीं आवे रे । शिष्य० ।। ५ ।।
जग री समझ तो मिट गयो सगलो, फेर जनम नहीं पावे हो जी ।
देवनाथ कहे फेर पूछ शिष्य, कहत कभी न घबरावें रे । शिष्य अब० ।। ६ ।।

।। गान ।।

।। राग माँड । ताल दादरा ।।

मानसिंह जी का प्रश्न

म्हारा नाथजी आवो, शंका मिटावो, अरज सुणो दीनानाथ ।। टेर ।।
राजयोग तो सगलो कह्यो, हठयोग ना गाय ।
राजयोग ही जो जग में होतो, तो क्यों हठयोग बताय जी । म्हारा नाथ० ।।१।।

गुरु वचन

नृप ठीक सुनाई, राजी मन माँई, दुःख मोहे कछु नाँय ।। टेर ।।
है हठयोग करणी जबराई, झूठ नहीं इण माँय ।
इण हठयोग ने उलटो ले लियो, जिण सूँ सब दुःख पाय रे । नृप ठीक० ।।१।।
जबरा घणा ए विषय जगत रा, सहजे रुकसी नाँय ।
प्राण अपान एक कर सन्धि, खैंच ठिकाणे लाय रे । नृप ठीक० ।। २ ।।

॥ मान वचन ॥

क्या मैं इड़ा पिंगला साधूँ, क्या लेऊँ श्वास रुकाय।
रेचक पूरक कर लूँ कुम्भक, लेऊँ श्वास चढाय जी। म्हारा नाथ जी० ॥ ४ ॥

॥ गुरु वचन ॥

इड़ा पिंगला श्वासा ने रोक्याँ, तन तो स्थिर हो जाय।
रेचक पूरक कुम्भक कीयाँ, मन स्थिर होसी नाँय रे। नृप ठीक० ॥ ५ ॥
पान अपान की जानो सन्धि, कर ब्रह्म जीव ने एक।
सहजे सूर अभय घर ऊगे, टल जावे लिखिया लेख रे। नृप ठीक० ॥ ६ ॥

॥ मान वचन ॥

क्या मैं मूल अडाण को बान्धूँ, नाभि कमल उलटाय।
कर कुम्भक वैराट चढ़ाऊँ, दशवें द्वार पै जाय जी। म्हारा नाथजी० ॥ ७ ॥

॥ गुरु वचन ॥

मूल अडाण सूँ कुछ नहीं होसी, कारज सरसी नाँय।
द्वादश सूँ दशवें पर जावो, पण मनतो नाँय रुकाय रे। नृप ठीक० ॥ ८ ॥
मूल अडाण बान्धो निश्चय रो, आतम है सब माँय।
नाभी विवेक री जोयलो रे, तो सायब मिल जाय रे। नृप ठीक० ॥ ९ ॥
जग सूँ उलट उलटावो दसाँ ने, मुख्य तूँ ही है द्वार।
यूँ दश में स्थिर होय ने रहवो, तो सहजे उतरसो पार रे। नृप ठीक०॥ १० ॥

मान वचन

कुण्डली छेदन काहे को करणो, क्यों मुद्रा को कीन।
सो यह सत्य बताओ स्वामी, तुम सर्वज्ञ प्रवीन जी। म्हारा नाथ जी ॥ १० ॥

गुरु वचन

गाँठ अविद्या री तुम छेदो, नागिनी बुद्धि जगाय।
शब्द श्वासा ने ब्रह्म स्थित कर ले, फिर तूँ आवे नाँय रे। नृप ठीक० ॥ ११ ॥
खिचरी मुद्रा ज्ञान सूँ साधो, ब्रह्मानन्द मद पाय।
ओ मद तो तन छूट्यों सूँ मिटसी, ओ मद मिटसी नाँय रे। नृप ठीक०॥ १२ ॥

मान वचन

नेती धोती सब कोई साधे, अन्तःकरण शुद्ध होय।
सो हम स्वामी कैसे साधें, सही बताओ मोय जी। म्हारा नाथ जी० ॥ १३॥

गुरु वचन

जगत् विषय सूँ निवृत्त होणो, लेणा पाप धुवाय।
सतगुरु शब्दाँ री नेती धोती, मन धुर साफ़ हो जाय रे। नृप ठीक०॥ १४॥

मान वचन

अजरी ने बजरी कई सिध साधे, कर कर मन में उछाव।
आप कहो तो वही हम साधें, कौन है इनको भाव जी। म्हारा नाथजी०॥ १५॥

गुरु वचन

तू ही अजर है और तू ही बजर है, चाले बजर भी नाँय।
ऐसी अजरी बजरी साधो तो, काल कभी नहीं खाय रे। नृप ठींक० ॥ १६॥
तुम तो बुद्धिमान् नरेशू, तोमें कमी कुछ नाँय।
परहित कारण पूछत हो तुम, राजी घणो मैं मन माँय रे। नृप ठीक०॥ १७॥

मान वचन

पुत्र चाहे हो कितनो ही समझू, पितु को पूछन अधिकार।
साख बड़ों की लाग जावे तो, मान लेवे संसार जी। म्हारा नाथ जी० ॥ १८
म्हाँने तो गुरु पहिले दीनो, इण विद्या रो दान।
यह अहसानी कदेई नहीं भूले, जब तक जग में मान जी। म्हारा नाथ०॥ १९

गुरु वचन

अब तक है अहसानी नृपति, तैं कछु साध्यो नाँय।
ओ हठयोग कियो फिर न्यारो, रह गयो धूल के माँय रे। नृप ठीक॥ २०

मान वचन

जब तक तन है तब तक स्वामी, सेवक को है भाव।
आतम तुम हम एक हैं दोनूँ, इण में संशय कछु नाँय जी। म्हारा० ॥ २१

॥ गुरु वचन ॥

माने तो भूपति मौज तिहारी, दोष मो में कछु नाँय।
अन्धविश्वास ऊमर भर रहसी, तो सुपने ही नाँय छुड़ाय रे। नृप० ॥ २२ ॥

॥ मान वचन ॥

विधना तो हमें मानुष कीनो, आप कियो देव समान।
देव सूँ अपणो रूप कर लीनो, तो क्यों कर भूले मान जी। म्हारा० ॥ २३ ॥

॥ गुरु वचन ॥

मनोमय प्राणमय परतीती, तब तक मानुष सोय।
ज्ञान विज्ञान सूँ देव बण्यो तूँ, आनन्द आप ही होय रे। नृप० ॥ २४ ॥
मेरे समान बरजणियो नाहीं, और हठ नहीं तेरे समान।
देवनाथ कहे यही हठयोग है, देवो योग मिलाय रे। नृप ठीक० ॥ २५ ॥

॥ मान वचन ॥

अन्तर को हठ मेट दियो मैं, ऊपर मेटूँ नाँय।
मान कहे महाराज न बरजो, राखो चरणाँ माँयजी। म्हारा० ॥ २६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

कृपा कर नाथ बतावो, कौन सो पर उपकार॥ टेर॥
जग तो माया और सुत की भूखी, कहाँ से देऊँ मैं लाय।
दौड़ दौड़ के पूछत मोको, पल एक छोड़े नाँय। कृपा कर० ॥ १ ॥
दुनिया ढूँढे वचन सिद्ध को, क्यों कर होय विश्वास।
सिद्धि रिद्धि तो पाखण्ड तुम कहवो, कैसे करूँ मैं अभ्यास। कृपा कर० ॥२॥
दुनिया चावे सब रस भोगा, कैसे करुँ मैं तइयार।
सो सब रीत मोय समझावो, जासूँ तिरे भव पार। कृपा कर० ॥ ३ ॥
नाथ को साथ कियाँ नहीं मिलसी, तो मिले कौन के द्वार।
मानसिंह कहे सुनो हो नाथजी, भूलूँ नहीं आभार। कृपा कर० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

मान मत व्याकुल होय सुन, पर उपकार की रीत ॥ टेर ॥

तूँ है राजा ईश रूप नित, लख मन नीत अनीत ।

भली बुरी सोच अपने मन, बुरी सूँ रेवो वपरीत । मान मत० ॥ १ ॥

दीन जनों की सेवा कीजे, सेवा कर शुद्ध नीत ।

अपनो स्वरूप सकल बिच जानो, तो लवोला जग जीत । मान मत० ॥ २ ॥

गोरख कबीर सा सन्त सूरमा, सुत माया को न दीत ।

बाड़ा बन्दी पैर पुजावत, गावत स्वारथ के गीत । मान मत ० ॥ ३ ॥

तेरे सुत तोये दुःख जब दीनो, कोई सिद्ध सुख क्यों न कीत ।

सुख दुःख सगरे होने सो होवें, मत हो मन भयभीत । मान मत ० ॥ ४ ॥

आत्म निरोध कियो जब हमने, तेरे मन की कह दीत ।

ऐसा सिद्ध मैं तोको बनाऊँ, ईण कारण मग लीत । मान मत ० ॥ ५ ॥

राम और कृष्ण थे पर उपकारी, गावत गुण जो पुनीत ।

राजा युधिष्ठिर और विक्रम से, वाँ पुरुषाँ री लख नीत । मान मत ० ॥ ६ ॥

ज्याँरा नाँव पूजीजे जगत में, पर उपकार जो कीत ।

देवनाथ कहे मानसिंह सुन, सह तन ऊषण शीत । मान मत ० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल कैरवा ॥

पार भवसिन्धु लगावे रे, उण गुरु सूं कर हेत ॥ टेर ॥

गुरु में न दोष दोष शिष्य माँह, ज्ञान समझ नहीं लेत ।

अन्धविश्वास त्रास सहे जम री, रतन मिलावे रेत । पार भवसिन्धु० ॥ १ ॥

बिना परख के पास क्यूँ जावे, क्यूँ अपणो सिर देत ।

पारख परख पछे सिर देवे, सदा सन्त जन कहत । पार भवसिन्धु ० ॥ २ ॥

साचा मिलियाँ सैन देवे साची, अवगुण सब हर लेत ।

देवनाथ कहे मानसिंह सुण, खोय मत केशर खेत । पार भवसिन्धु ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ धुन "बख्तूजी" की । ताल कैरवा ॥

घणी खमा म्हाँ रे सतगुरु री बलिहारी रे, अरे हाँ रे मैं बलिहारी रे।
जिण कीनो ब्रह्म विचारी रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ १ ॥
घणी खमा म्हाँ ने किया ब्रह्म निर्वाणी रे, अरे हाँ रे किया नर्वाणी रे।
नहीं होवे मृतक निशाणी; रे जियो म्हारा लाल जी ॥ २ ॥
घणी खमा इण देह रो भाव मिटायो रे, अरे हाँ रे भाव मिटायो रे।
म्हाँ ने ब्रह्म रूप दरसायो रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ३ ॥
घणी खमा अब के निज आनन्द आयो रे, अरे हाँ रे आनन्द आयो रे।
मनड़े रो भरम मिटायो रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ४ ॥
घणी खमा गुरु देवनाथ निज ज्ञानी रे, अरे हाँ रे नाथ निज ज्ञानी रे।
ज्याँ सूँ सुरत मान री मानी रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ धुन "बखतूजी" की । ताल कैरवा ॥

अगम कूए पर सुरता जल ने आई रे, अरे हाँ रे सुरता आई रे।
उठे सत गुरु सैन चलाई रे, जियो म्हारा लाल जी ॥ १ ॥
तू है गैली इतने दिवस ठगाई रे, अरे हाँ रे दिवस ठगाई रे।
थे तो प्रीतम जाण्यो नाँई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ २ ॥
फिर फिर बाहर नाहक श्यान गमाई रे, अरे हाँ रे श्यान गमाई रे।
ठगन के संग ठगाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ३ ॥
इण राशी ग्रह के बीच में मोय फँसाई रे, अरे हाँ रे मोय फँसाई रे।
मैं सुपने न निकलन पाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ४ ॥
ब्रह्म जनेऊ देवनाथ पहराई रे, अरे हाँ रे नाथ पहराई रे।
इण पोल से मोय बचाई रे, जियो म्हारा लाल जी ॥ ५ ॥
मानसिंह यूँ सही बात कह गाई रे, अरे हाँ रे बात कह गाई रे।
जो बीती सो समझाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

अब हम प्रेम पियाला पिया ॥ टेर ॥
सत् गुरु कृपा करी जब हम पर, कर्म बंध हर लीया ।
बंध गये निर्बन्ध भये हम, फेर जन्म नहीं लीया ॥ १ ॥
पहिले तो बाण बहुत से मारे, जो मारे सोई सहिया ।
जनम् जनम् के दरद मिटाये, सतगुरु वैद जो भईया ॥ २ ॥
पीवत प्याला चढ़ गई मस्ती, पहिले मुवा फिर जीया ।
मानकहे गुरुदेव की भेट में, शीश काट धर दीया ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

क्या करुँ कर नहीं जानूँ ; विनय प्रभु, क्या करूँ कर नहीं जानूँ ।
हूं मैं अजानजान नहीं मोमें, जाते वृथा हठ ठानूँ । विनय प्रभु० ॥ टेर ॥
करूँ मैं गुनाह पर माफ करो तुम, यह अहसान मन मानूँ ।
बार बार मैं पूछत हूँ तुम्हें, झूठी हठ यूँ ठानूँ । विनय प्रभु० ॥ १ ॥
जो दुःख सुख अब कहूँ फिर किणने, तुम से अवर न जानूँ ।
मुझ सो ढीठ ज्ञानी कहाँ तुमसो, जिनसे दर्द बखानूँ । विनय प्रभु० ॥ २ ॥
रंगड़ के सुत बोली कड़ी मेरी, जाने पत्थर बरसानूँ ।
तुमसे बज्र मिले कब हमको, फिर किनसे टकरानूँ । विनय प्रभु० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु नाथ मान के, आपे में पहचानूँ ।
दीनबन्धु तुम मैं हूँ दीन प्रभु, पार करो भगवानूँ । विनय प्रभु० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिलावल । ताल धमाल ॥

भाग भला नाथ भेटिया होजी; दीया भरम उडाय ।
पाया पियाला साधो प्रेम रा होजी; छिक रया निज रे माँय । भाग भला० ॥ टे
नाथ रो साथ सुहावियो होजी; दिया म्हाँने भव सूँ तार ।

अन्तर उजालो होय रह्यो होजी; सन्मुख भया रे दीदार । भाग भला० ॥ १ ॥
नाथ मिल्या आनन्द भया होजी; मिट गया द्वैत विकार ।
एक रूप उर ओलख्यो होजी; सोई निज सब को आधार । भाग भला० ॥ २ ॥
नाथ साथ नहीं होवतो होजी; भव में यूँ ही बह जात
संग कियो म्हारे नाथ रो होजी; जाताँ रो पकड़्यो हाथ। भाग भला० ॥ ३ ॥
वान फट्या ज्यूँ मन फाड़ियो होजी; आतम रूप समाय।
अपणी आतम जाणी जगत में होजी; सोई निज आप केवाय। भाग भला० ॥४॥
इसड़ा मिल्या म्हाँने नाथ जी होजी; मिलग्रा देव स्वरूप ।
नाँव जिस ई गुण नीसर्या होजी; महा भूपन के भूप। भाग भला० ॥ ५ ॥
दाम वाम चित्त में बसे होजी; ऊपर कहे शिव राम ।
साध नहीं साकट खरा होजी; जासूँ राजी नहीं राम । भाग भला० ॥ ६ ॥
चेला चेली चित्त अटकिया होजी; के चित्त मठ मन्दिर माँय ।
त्याग्याँ रो यूँ ही नाम है होजी; गृहियाँ सूँ आगे जाय । भाग भला० ॥ ७ ॥
साधु असाधु दोऊ कया होजी; दीना साफ बताय।
मानसिंह कहे समझलो होजी; भेटो बजाय बजाय । भाग भला० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विलावल । ताल धमाल ॥

ओलूड़ी आवे हो म्हारे नाथ री होजी; कद मिलो दीन दयाल ।
बीछड़ियाँ अब कद मिलो होजी; पल पल आवो म्हाँने याद ॥ टेर ॥
दरसण कियाँ दुःख जावतो होजी; भेट्याँ भागत अंधार ।
याद करूँ गुण नाथ रा होजी; फिर धर आवो अवतार । ओलूड़ी० ॥ १ ॥
गुण सिमरूँ हियो ऊमटे होजी; नैणाँ ढलकत नीर ।
धृक् धृक् विधना बावरी होजी; क्यों हरे संत भव पीर । ओलूड़ी० ॥ २ ॥
साकट साधू है एक सा होजी; करे एक सो ही काम ।
साकट मिलताँ दुःख देवे होजी; बिछड़ताँ ए लेवे प्राण । ओलूड़ी० ॥ ३ ॥

इसड़ो जाणुँ तो प्रीति क्यों करु होजी; काहे को करूँ रे सनेह।
बीछड़ियाँ ए दुःख देयजो होजी; इसड़ाँ रो नाम न लेह। ओरूड़ो० ॥४॥
त्रिगुणा का चहिये हता होजी; सुनवे को उपदेश।
मान कहे और पधारजो होजी, सुन शिष्य को आदेश। ओरूड़ी ॥५॥

॥ मान ॥

॥ राग देश। ताल दीपचन्दी ॥

सैयाँ ऐसा हरिजन ध्यावो ए। दरशण कियाँ दुरमत हर लेवे,
ऐड़ा संत बधावो ए॥ टेर॥

धीमो चाल बोल ज्याँरा धीमा, सीतल कहावो ए।
सीतल नयन देखत अमी बरसे, ज्याँरा दरसण पावो ए।। १॥
आँटा चलत काग ज्यूँ करड़ा, ज्याँ सूँ दूर रहावो ए।
छल भरया बोल नैण विष भरिया, ज्याँने दूर पलावो ए॥ २॥
भेष हंस रो चाल बुगलों री, ज्याँरे निकट न जावो ए।
कनक कटारी कुण खाय कलेजे, बस यूँ समजावो ए॥ ३॥
सब गुण होय ने अवगुण एक होय, ता खोल बतावो ए।
जो अवलछ को मेट सके नहीं, तो मुँह न लगावो ए॥ ४॥
सब गुण सम्पन्न होवे संत सीधा, वाँने सीस नवावो ए।
अपणो रूप सकल में जाणे, वाँरे बेकयाँ बिक जावो ए॥ ५॥
साधू भाव रखो मन अपणे, दूर न हटावो ए।
पारख करण में जौहरी बण रेवो, फिर धोखो न खावो ए॥ ६॥
देवनाथ गुरु जौहरी मेरा, जिन परख बतावो ए।
मानसिंह अब हीरा बिणजूँ, घण चोट चढ़ावो ए॥ ७॥

॥ दोहा ॥

सारंग राग सुहावनी, जिणमें होवे नूर।
बात होय ब्रह्मज्ञान री, तो मन करले मंजूर॥

पाँच(१) सखी भेली भई, गावे सारंग तूर।
चौथे(२) पद पर बैठके, पलक न रेवे दूर॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग तूर। ताल कैरवा॥

हेजी मैं तो सुगणा(३) ही संत बधाया हे माय;
नुगणा(४) जीवाँ रो अठे क्या करूँ ॥ टेर॥
म्हारो तो घर(५) सजनी अजब साँकड़ो(६)।
हेजी अठे नुगणा धूम मचावे हे माय। नुगणाँ० ॥ १॥
म्हारे तो घर में हेली पाँच सहेली(७)।
हेजी ए तो पांचो सूँ किणी ने भरमावे हे माय। नुगणाँ० ॥ २॥
म्हारे तो घर में हेलो रतन(८) खजानो।
हेजी ए तो नुगणाई भरम धसावे हे माय। नुगणाँ० ॥ ३॥
सन्त सुपातर आवो घणेरा।
हेजी ज्याँ ने देख्याँ हो जीव सुख पावे हे माय। नुगणाँ० ॥ ४॥
देवनाथ जैसा सन्त सुज्ञानी।
हेजी म्हारो ज्याँ सूँ मन हरषावे हे माय। नुगणाँ० ॥ ५॥
मानसिंह नित शरण सन्तों री।
हेजी म्हाँने नुगणाँ सूँ डर आवे हे माय। नुगणाँ० ॥ ६॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग तूर। ताल कैरवा॥

हेजी म्हाँने पियाजी(९) री सैज(१०) मन भावे हे माय;
पीयाजी री सैज्याँ म्हे जास्याँ॥ टेर॥
मन बुद्धि चित्त अहङ्कार चार संग।

१—पाँच प्रकार की वृत्ति, २—तुरीयावस्था, ३—श्रेष्ठाचारी, ४—पाखण्डी
५—अन्तःकरण, ६—सूक्ष्म, ७—इन्द्रियाँ, ८—विचार, ९—आत्मा, १०—आत्मज्ञान।

हेजी म्हाँने चार बोलाऊ(१) सुहावे हे माय । पियाजी री० ॥ १॥

श्रवण मनन निदिध्यासन करके ।

हेजी म्हे तो सीधे ही माग चल जास्याँ हे माय । पियाजी० ॥ २॥

निज निश्चय रो सुरमो सार्‌यो ।

हेजी म्हे तो एकता रो तिलक चढास्याँ हे माय । पियाजी ॥ ३॥

पूरण प्रेम री पाटीं पाड़ी ।

हेजी म्हे तो निर्भय नथली लगास्याँ हे माय । पियाजी री० ॥ ४॥

हित रो हार ने मेंहदी दया री ।

हेजी म्हे तो करुणा रा कंगण धरास्याँ हे माय । पियाजी० ॥ ५॥

ज्ञान वैराग बाजूबन्द बांध्या ।

हेजी म्हे तो चूपाँ निगम जड़ास्याँ हे माय । पियाजी री० ॥ ६॥

चित्त केरी चूड़्याँ ने बींटी भाव री ।

हेजी म्हे तो पुणची प्रीत पैरास्याँ हे माय । पियाजी री० ॥ ७॥

जरणा रा झांझर नाम नेवर्‌याँ ।

हेजी म्हे तो समता शृंगार सजास्याँ हे माय । पियाजी री० ॥ ८॥

पहर ओढ कर जास्याँ सासरे(२) ।

हेजी फिर पलट पीहर(३) नहीं आंस्याँ हे माय । पियाजी० ॥ ९॥

काम क्रोध पेहरायत ऊभा ।

हेजी म्हे तो याँ सूँ नाँहि डरास्याँ हे माय । पियाजी री० ॥ १०॥

चौथी(४) मेड़ी पीव म्हारो पौढ़े ।

हेजी वाँने सूताँ ने जाय जगास्याँ हे माय । पियाजी री० ॥ ११॥

प्रीतम(५) प्यारी(६) और प्यारी ही प्रीतम ।

हेजी उठे एक होय रल जास्याँ हे माय । पियाजी री० ॥ १२॥

देवनाथ पिया मानसिंह के ।

हेजी म्हे तो यों पतिव्रत निभास्याँ हे माय । पियाजी री० ॥ १३॥

३—साथ पहुंचाने वाले, ४—आत्मस्थिति, ५—अज्ञानावस्था, ६—तुरियावस्था
५—आत्मा, ६—वृत्ति ।

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी थे तो कुब्जा रे महलाँ मत जवो रसिया; म्हारे आवो ॥ टेर ॥

कुबध कूबरी कुबध करेला । माल तुम्हारो मुफत हरेला ।

हेजी थे तो इण सूँ दूर रहावो रसिया; म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ १ ॥

ज्ञान गुलाल केसर करुणा री । सन्मुख होय मारो पिचकारी ।

हेजी म्हारे प्रेम रो रंग बरसावो रसिया; म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ २ ॥

सुमति रुक्मणी राह नित जोवे । आप बिना वो अकेली न सोहवे ।

हेजी इण चाकर सूँ चित्त मत लावो रसिया; म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥३॥

असली नार महल में ठाढ़ी । अवराँ सूँ प्रीत करो मत गाढ़ी ।

हेजी तुम नाहक लोग हँसावो रसिया; म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ ४ ॥

मान कहे मानो पिया मेरे । तुम मेरे और हम हैं तेरे ।

हेजी तुम आदि सनातन लावो रसिया; म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग-लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी मैं तो वृत्ति री अम्ब पुजाई हे माय;

इण विधि पायो म्हारे श्याम ने ॥ टेर ॥

ना कोई देवल पत्थर घसिया ।

हेजी मैं तो घर बैठाँ ही गम पाई हे माय । इण विधि० ॥ १ ॥

'मैं' मद भैंसा आगे दीना ।

हेजी वाँपर ज्ञान की खड़ग चलाई हे माय । इण विधि० ॥ २ ॥

शीश कमल को फूल चढ़ायो ।

हेजी ओ तो कबहूं कुम्हलत नाई हे माय । इण विधि० ॥ ३ ॥

वृत्ति निरोध कियाँ शिव पायो ।

हेजी म्हारे और तो चहिए नाँई हे माय । इण विधि० ॥ ४ ॥

शील सन्तोष विप्र दोय बैठा ।

हेजी जिके "ब्रह्मास्मि" धुन गाई हे माय। इण विधि॰ ॥५॥

"तत्त्वमसि" मद पायो अम्ब ने।

हेजी याको पीताँ ही मस्त बनाई हे माय। इण विधि॰ ॥६॥

छाय नशे विच खुश भई अम्बे।

हेजी म्हाँने ब्रह्म तत्त्व दरसाई हे माय। इण विधि॰ ॥७॥

इच्छा रूप वृत्ति प्रकटी ब्रह्म में।

हेजी ईण ने जिण सूँ मैं मात बताई हे माय। इण विधि॰ ॥८॥

देवनाथ गुरु सुघड़ पुजारी।

हेजी जिण मान ने जुगति सुणाई हे माय। इण विधि॰ ॥९॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग, तर्ज फागण के 'लूर' की। ताल कैरवा ॥

हाँरे आनन्द आयो रे, सतगुरु जी म्हारे रङ्ग(१) बरसायो रे; आनन्द आयो॰॥टे॰

पाँच(२) पचीस(३) मिली सब नारी झौड़ा झौड़ लगायो रे।

ज्ञान को चङ्ग ध्यान सूँ खड़क्यो मङ्गल गायो रे। आनन्द आयो रे॰ ॥१॥

सूती नींद(४) जाग गई कईयक बंसी(५) शोर मचायो रे।

ऊर्द्ध बङ्क(६) की कुञ्ज गलिन में खेल रचायो रे। आनन्द आयो रे॰ ॥२॥

काम क्रोध मद लोभ मोह एनो सुणताँ ही उठ धायो रे॰ ॥ २ ॥

क्या जाणूँ उण कौन गलिन में मुखड़ो छिपायो रे। आनन्द आयो रे॰ ॥३॥

देवनाथ गुरु कृपा करी जद ऐसो फाग खेलायो रे।

मान ब्रह्माण्ड चौक में बैठो गयो न आयो रे। आनन्द आयो रे॰ ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग, तर्ज फागण के 'लूर' की। ताल कैरवा ॥

अरे हाँरे दूजो नाँई रे, आतम है जग में एक गुसाँई रे; दूजो नाँई ॥ टेर ॥

पढ़ पढ़ भया हैरान बात सब एक हि एक बताई रे।

१—ज्ञानोपदेश, २—इन्द्रियाँ, ३-प्रकृतियाँ, ४-मोह-निद्रा, ५-शब्द, ६-ब्रह्माकार वृत्ति।

एक सिवाय कह्यो नहीं दूजो यह दरसाई रे। दूजो नाँई रे० ॥ १ ॥
माया ब्रह्म ब्रह्म है मा।। माया ब्रह्म री छाँई रे।
ज्यों प्रतिबिंब सूरज रो दीखे सूर्य कहाई रे॥ दूजो नाँई रे० ॥ २ ॥
वेद ग्रन्थ उपनिषद् सारा एक उणी ने गाई रे।
साँख्य योग भी देखो उणी ने सिद्ध बताई रे। दूजो नाँई रे० ॥ ३ ॥
जोगी जती सती सन्यासी आतम ही बतलाई रे।
मारण जारण और उचाटन आतम माँई रे। दूजो नाँई रे० ॥ ४ ॥
जन्तर मन्तर और वशीकर्ण चाहे जितना पढ़ाई रे।
जिनको आतम निश्चय है उनको डर नाँई रे। दूजो नाँई रे० ॥ ५ ॥
एक मिल्यो दूजो क्यों ध्यावो लो प्रण मन रे माँई रे।
मानसिंह गुरुदेव कृपा कर एक बताई रे। दूजो नाँई रे० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग, तज फागण के "लूर" की। ताल कैरवा ॥

हाँरे अजब खिलारी रे, आ खेल रही संग सुरता प्यारी रे; अजब० ॥ टेर ॥
जगत चौक में खेल मण्ड्यो है एक पुरुष सब नारी रे।
एक पुरुष अनेक रूप जग दीखे सारी रे। अजब० ॥ १ ॥
साज छत्तीस बजे इण जग में रुण झुण झुण झुणकारी रे।
आपहि बैठ बजाय रह्यो ऐसो गुणकारी रे। अजब० ॥ २ ॥
उण रसियेने वोहीज जाणे सही ज्ञान पिचकारी रे।
सन्मुख खेले पर क्या जाणे नार गँवारी रे। अजब० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद बिगड़ी बात सुधारी रे।
मानसिंह को काढ़ लियो बहताँ भवधारी रे। अजब० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग, तर्ज फागण के "लूर" की। ताल कैरवा ॥

वा वा पिया बुलावे रे,

सखी चाल उणी रे देश पिया तोय फाग(१) खेलावे रे; पिया० ॥ दे
देह अभिमान दूर अब मेलों जब प्रीतम मिल जावे रे।
देह तणे अभिमान माँय क्यूँ श्यान गुमावे रे। पिया बुलावे रे० ॥ १ ॥
दिन दश रो पीहर(२) में रेहणो यहाँ क्यूँ रींझ रहावे रे।
पाँचूँ(३) पूरा शत्रु कहिये आँख लड़ावे रे। पिया बुलावे रे० ॥ २ ॥
याँ पर पुरुषाँ प्रीति करो ना भवजल में बह जावे रे।
जो पतिवरता नार कहीजे पिया मिलावे रे। पिया बुलावे रे० ॥ ३ ॥
आतम देव अखण्ड अविनाशी तेरो पीव कहावे रे।
मान कहे अब मान बावरी क्यों तू ठगावे रे। पिया बुलावे रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "व्रज के रसिया" की। ताल कैरवा ॥

अब मेरी मानी(४) सुरता नार, पिया(५) ने खूब रिझायो हे ॥ टेर ॥
प्रीतम रींझ मेरे घर आयो रे। ज्ञान लगाय अज्ञान मिटायो रे।
प्रीतम रींझ मेरे घर आयो। ज्ञान लगाय अज्ञान मिटायो।
उड़्यो दूर अज्ञान प्रेम को प्यालो पायो रे। अब मेरी मानी० ॥ १ ॥
प्रीतम रींझ के बैन बजायो रे। बज्यो बैन सब के मन भायो रे।
प्रीतम रींझ के बैन बजायो। बज्यो बैन सब के मन भायो।
काल फौज गई दूर सहज में सहज समायो रे। अब मेरी मानी० ॥ २ ॥
दोय दोय को दूर भगायो रे। एक रूप सब में दरसायो रे।
दोय दोय को दूर भगायो। एक रूप सब में दरसायो।
दोय को पड़दो दूर गयो जब एक लखायो रे। अब मेरी मानी० ॥ ३ ॥
भूल हती जिते खूब फिरायो रे। भूल मिटी जद भरम गमायो रे।
भूल हती जिते खूब फिरायो। भूल मिटी जद भरम भगायो।
ज्ञान भान उर ऊग गयो तब तिमिर मिटायो रे। अब मेरी मानी० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु गोद उठायो रे। इण नेणाँ दीदार दिखायो रे।

१—आनन्द, २—शरीर भाव, ३—पाँच विषय। ४—मननशील, ५—आत्मा।

देवनाथ गुरु गोद बठायो। इण नेणाँ दीदार दिखायो।
मान भयो आनन्द आप में आप समायो रे। अब मेरी मानी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "व्रज के रसिया" की। ताल कैरवा ॥

व्रज में खेल रह्यो गोपाल, ग्वाल संग मंगल गावे रे। टेर ॥
पांच पचीस ग्वाल संग मांई रे। गो अतीत गोपाल गोसांई रे।
पाँच पचीस ग्वाल संग माँई। गो अतीत गोपाल गोसाँई।
विश्व रूपी यह व्रज इसी में बैन बजावे रे। व्रज में खेल० ॥ १ ॥
नाड़ी नव ने बहत्तर कोठा रे। बंक नाल यह सुन्दर ओटा रे।
नाड़ी नव ने बहत्तर कोठा। बंक नाल यह सुन्दर ओटा।
गुप्त नाड़ी की कुंज गलिन में खेल खेलावे रे। व्रज में खेल० ॥ २ ॥
वृत्ति राधे बसत उर माँई रे। बार बार कर नाच नचाई रे।
वृत्ति राधे बसत उर माँई। बार बार कर नाच नचाई।
नाच रह्यो गोपाल प्रेम सूँ तारी बजावे रे। व्रज में खेल० ॥ ३ ॥
देवनाथ ऐसो कृष्ण बतायो रे। नित्य है अमर गयो नहीं आयो रे।
देवनाथ ऐसो कृष्ण बतायो। नित अमर गयो नहीं आयो।
मान कृष्ण कहाँ ढूँढण जावें घरहि मिलावे रे। व्रज में खेल० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "व्रज के रसिये" की। ताल कैरवा ॥

नरेशू सब में सुन्दर श्याम, बात यह मानी किम जावे ॥ टेर ॥
मित्र क्यों भूल पड़्यो अज्ञान, अजानो जान छताँ होवे ॥ टेर ॥
तुम कहते हो सब में व्यापक कैसे चित आवे।
पृथक पृथक यह दीखत है जग न्यारो दरसावे। नरेशू सब में० ॥ १ ॥
कर विचार तू अपने मन में कौन हँसे रोवे।
पृथक पृथक यह जिनको दीखे मोह निशा सोवे। मित्र क्यो० ॥ २ ॥

एक ही एक तो दोय भये क्यों अचरज यह आवे ।
दोय होय विस्तार बढ़ायो क्यों यह दुःख पावे । नरेशू सब में० ॥ ३ ॥
कब तो एक था कब दो हूवा क्या था क्या होवे ।
जैसा है तैसा ही है वह भ्रम क्यों ना खोवे । मित्र क्यों ॥ ४ ॥
प्रलय महा प्रलय क्यों लिखा सब झूठ कही जावे ।
यदि यह झूठी बात होय तब लिखनो क्यों चावे । नरेशू सब में० ॥ ५ ॥
खेले खेल मदारी आपे खेलत मन मोहे ।
अपनो खेल जी चाहे समेट ले बन्हे कहत को है । मित्र क्यों० ॥ ६ ॥
ऐसो मदारी फिर है न्यारो न्यारो रह जावे ।
वही मदारी हमें बतावो पकड़ घराँ लावें । नरेशू सब में० ॥ ७ ॥
तूँ ही खेल और तूँ ही मदारी तू ही हँसे रोवे ।
मान कहे कवि बंक सुनो तुम किनको क्या जोवे । मित्र क्यों० ॥ ८ ॥
तुम नरेश हो जाली जबरे जीत्यो किम जावे ।
वेद वक्ता मानो अज ही आयो ऐसे दरसावे । नरेशू सब में० ॥ ९ ॥
उलट पलट कई बार उलटियो फरक नहीं लावे ।
मानों काँटे बीच तुली फिर रतियन घट जावे । नरेशू सब में ॥ १० ॥
कितनी बेर फेर कर पूछ्यो ना तू झुँझलावे ।
बंक कहे चत्राणी पय को नाहिन लजावे । नरेशू सब में० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

तर्ज "व्रज के रसिया" की । ताल कैरवा ॥

करलो भक्ति अपने रूप की, जिसमें आनन्द पावोगे ॥ टेर ॥
बार बार को भटक भटकते यों मर जावोगे ।
इसमें हाथ कछू नहीं आवे रतन गमावोगे ।
पाँचूँ विषय चोर है संग में माल लुटावोगे । करलो भक्ति० ॥ १ ॥

जो इस मन के रहे आधीन तो श्यान गमावोगे।
यह मन है लुच्चा जो अक्ल का धोखा खावोगे।
सतगुरु संग रखो नित अपने मौज उड़ावोगे। करलो भक्ति० ॥ २ ॥
ज्ञान अग्नि उर बीच जगाकर लाय चेतावोगे।
पाँचू विषय प्रबल यह कहिये इन्हें जलावोगे।
पाँचू विषय खाक जब हूए सहज समावोगे। करलो भक्ति० ॥ ३ ॥
दक्षनाथ गुरु सही दियो अब क्यों अटकावोगे।
ज्ञान रतन को जान लियो अब क्या ले जावोगे।
ऐसे तुम भी जानो तो सुख से सो जावोगे। करले भक्ति० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

भक्ति भक्ति सब ही कहे, भक्ति करे न कोय।
जो सच्ची भक्ति करे, तो भगवत् जुदा न होय॥
मानसिंह संसार में, स्वाँग से भक्ति न होय।
भक्ति करे तो सहज कर, स्वाँग न साजो कोय॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग-मलार, तर्ज वाणी की। ताल दीपचन्दी ॥

नींद उड़ाई म्हारे नाथ जी, ज्ञान रो ढोल बजायो।
घोर निद्रा सूँ किसो जागतो, करके दया उठायो जी ॥ टेर ॥
ज्ञान विज्ञान लखाविया, साची बात सुनाई।
पोल गली सूँ काढ़ियो, सीधी राह बताई जी ॥ १ ॥
ज्ञान ग्रन्थ सुनिया बहुत सा, त्याग ही त्याग बखाण्यो।
कृपा करी म्हारे नाथजी, अब के त्याग पिछाण्यो जी ॥ २ ॥
असली आनन्द ने भूलग्या, नकली में भरमायो।
सूको ब्रह्म ही ब्रह्म बकया, ऊँडी खाड गिरायो जी ॥ ३ ॥
असली आनद की मालुम भई, सहज स्वरूप हमारा।
मैरा जग जग मैं ही तो हूँ, मुझ से जग नहिं न्यारा जी ॥ ४ ॥

मेरा यह सब खेल है, मैं ही भया हूँ मदारी ।
मैं ही तो देखणहार हूँ, ऐसा अजब खिलारी जी ॥ ५ ॥
उपनिषद् एक शत आठ में, यही है गीत सुनायो ।
"तुही है तुही है तुही है" दूजो ब्रह्म कहाँ से आयो जी ॥ ६ ॥
आही कही म्हाँने नाथजी, घट में खोज लगायो ।
पट खोल परगट देखियो, मान शुद्ध समायो जी ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग । ताल तिताला ॥

करी हम सुफल कमाई, देखो ऐसी करी हम सुफल कमाई ॥ टेर ॥
पूरव कर्म के रहता भरोसे, तो देता बात गुमाई ।
पूरव कर्म सूँ तो मिलग्यो मानुष तनु, कर पुरुषारथ पाई ॥ १ ॥
सुण सुण कथा धार्‍यो नहीं उर में, इतसे सुनी निकलाई ।
वाचनहार की जिह्वा घिस गई, पुस्तक आप घिसाई ॥ २ ॥
वाचन हार तो मिलिया स्वार्थी, हम पण समझत नाँई ।
व्रत उपवास में ऊमर खोई, असली चीज गुमाई ॥ ३ ॥
व्रत कथा सुन महातम सुणिया, बातों रा विवाण उड़ाई ।
क्रोड़ाँ अर्ब तो तिरता बताया, पर निजरा में एक न आई ॥ ४ ॥
सुन सुन मोक्ष रा महल ए नेड़ा, कथा जो खूब बचाई ।
श्रोता ने वक्ता दोनोई डूबा, वाने तारनियो कोई नाँई ॥ ५ ॥
महातम अध्याय म्हारे आडा न आया, डूब्या गहरे जल माँई ।
म्हे तो डूब्या ज्यारी परवा नाही; गुरू लिये साथ डुबाई ॥ ६ ॥
बहुत जतन सूँ मोको मिलियो, फेर भी सँभल्या नाँई ।
नाथ को हाथ धरत ही चेत्या, अनन्त भानु दर्साई ॥ ७ ॥
वकता ही सूता श्रोता ही सूता, कहो किम पार तिराई ।
जगतड़ा सूताँ ने मिलिया, चाबक चोट चखाई ॥ ८ ॥

भेज्यो तने निज रूप ओळखने, अलुझ्यो अलुझाड़े रे माँई।
ऐसी आवाज सुनी कानों सूँ, थर थर रह्यो कम्पाई ॥ ६ ॥
मान कहे जो पीछे कह आयो, ऐसी कोऊ करजो नाँई।
जागतड़ा गुरु जोय ने कीजो, तारत जेज न लाई ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह या जगत में, और मस्ती सब धूर।
खुद रमती सो मस्ति है, है हमको मंजूर ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

वाह वाह जगे हम वाह वाह जगे; इस नींद(१) से यारो हम वाह वाह जगे ॥टेर॥
न किसी ने हमको जगाया था; सब स्वारथ शाकी पिलाया था।
इस मोह मद में बहकाया था; अब वाह वाह जगे हम० ॥ १ ॥
स्वारथ शाकी को दूर किया; दिल के परदे को चूर किया।
अपने आपको हम मंजूर किया; अब वाह वाह जगे हम० ॥ २ ॥
असली मस्तों(२) के पास गये; उस यार(३) की हम तलाश गये।
सब मन के होश(४) हवास गये; अब वाह वाह जगे हम० ॥ ३ ॥
मान मिटाया मैल(५) सबी; पहुंचे बेहद के महल(६) जबी।
यह छूट गई दुःख गैल तबी; अब वाह वाह जगे हम० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

खूब मिले जी खूब मिले, अब खूब मिले जी खूब मिले।
यारों(७) की यारी में खूब मिले; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ टेर ॥
जिस यार(८) को ढूँढने जाते थे; हम जगह जगह भटकाते थे।

१—मोह-निद्रा, २—ज्ञानी पुरुष, ३—आत्मा, ४—चपलता, ५—द्वैत-विकार, ६—आत्मस्थिति, ७—आत्मज्ञानी लोग, ८—आत्मा।

हम नाना कष्ट उठाते थे; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ १ ॥
हम फिर फिर के हैरान हुए; उन्हें ढूँढते हम परेशान हुए।
अब अपने आप मस्तान हुए; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ २ ॥
सब दूर ही दूर बताते थे; नहीं बात कोई समझाते थे।
यों बहुत से मारे जाते थे; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ३ ॥
दिल का परदा जब दूर हुआ; जुदाई का नाता चूर हुआ।
मैं अपने आप मंजूर(१) हुआ; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ४ ॥
भाग भले जब नाथ मिले; पूरण पुरुषों के साथ मिले।
कहे मान हम एक ही जात मिले; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल करवा ॥

पाय लिया अब पाय लिया, जिसे ढूँढते थे उसे पाय लिया ॥ टेर ॥
अब आना और जाना कुछ न रहा; अब यार(२) जुदाई कुछ न रहा।
मैं तो अपने आपसे आप मिला। अब पाय लिया अब ० ॥ १ ॥
पाया दिल के महखाने(३); अब दिल की बात तो दिल जाने।
हम मान लिया न किसकी माने। अब पाय लिया ० ॥ २ ॥
मानोगे तो तुम आवोगे; नहीं तो मेरा क्या ले जावोगे।
निज तत्व से दूर रह जावोगे। अब पाय लिया० ॥ ३ ॥
हम अपना हुक्म उठावेंगे; नहीं और के हुक्म से जावेंगे।
कहे मान फेर नहीं आवेंगे। अब पाय लिया० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

हम पीते ही प्याला(४) चुपचाप हुए ॥ टेर ॥
इस प्याले में अजब रस देखा; कि पीते ही दिल से साफ हुए ॥ १ ॥
मन के उद्धम मिटे अब सब ही; हम जपते जपते अजाप हुए ॥ २ ॥

१—जीव ब्रह्म की एकता, २—परमात्मा, ३—दिल के अन्दर, ४—गुरु उपदेश।

और और का भरम मिटा सब; अब हम अपने आप हुए ॥ ३ ॥
मान कहे गुरु देवनाथ से; नित्य सुखी निर्ताप हुए ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

ताया हुआ घृत(१) नाँय पिया उन छाछ(२) पिवी है ऊमर सारी।
नाँय पिये कहा स्वाद लखे बिन स्वाद लखे बिन जात वृथारी।
छाछ ही को यह घृत्त कहें देखो जो भूल पड़ी मन भारी।
घृत्त तो देखो घृत्त रहे और छाछ जो देखो वो छाछ विचारी।
घृत्त की होड जो छाछ करे जब छाछ ही क्यों न पिये जग सारी।
मान तो छाछ को नाँय पिये घृत दियो हमें गुरुदेव निकारी ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

हम मस्तान हैं बाँके; साधो हम मस्तान हैं बाँके।
हमरी मस्ती हमी से लागी; ना हम राम खुदा के। साधो हम० ॥ टेर ॥
हम में जगत जगत में हम हैं; क्यों अब इत उत झाँके।
सभी विश्व में एक बराबर; तोल लिया बिना काँटे। साधो० ॥ १ ॥
ना कोई गया नहीं कोई आया; ना कोई जाया कहा के।
अपनी मस्ती आपसे जोई; अवर नहीं क्या भाखे। साधो० ॥ २ ॥
देवनाथ गुरु नाथ मान के; राग द्वेष नहीं राखे।
मानसिंह अब किनका धोखा; हैं ब्रह्म मद में पाके। साधो० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

रहा कुछ भी नहीं, अब कुछ भी नहीं।
हम अपने आपही आप रहे; रहा कुछ भी नहीं, अब कुछ भी नहीं ॥ टेर ॥

१—आत्मज्ञान, २—भेदवाद के उपदेश।

जब हम ढूँढने जाते थे, तब नई नई बातें लाते थे;
कुछ घर की होत कह आते थे। रहा कुछ० ॥ १ ॥
औरों की मान हैरान हुवे, हम ज्ञान छने अज्ञान हुवे;
ऐसे फिर फिर मुफ्त परेशान हुवे। रहा कुछ० ॥ २ ॥
हम सबको मिटाते आये हैं, हम घर को जलाते आये हैं;
हम दुःख सुख पाते आये हैं। रहा कुछ० ॥ ३ ॥
हम अपने बन्ध को तोड़ा है, बन्धवानों से मुख मोड़ा है;
यह भरम का भंडा फोड़ा है। रहा कुछ० ॥ ४ ॥
मान मान मन मान गया, अब मान न कोई अपमान रहा;
जब मान ने अपना मान लिया। रहा कुछ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

खूब खुशी जी खूब खुशी, अब खूब खुशी जी खूब खुशी ॥ टेर ॥
मिटना था वो मिटाय दिया, और मिलना था वो मिलाय दिया;
जिसे देखना था वो दिखाय दिया। अब खूब खुशी जी० ॥ १ ॥
अब ना कोई मेरा रहा, और मैं न किसी का चेरा रहा;
अब नहीं फिरना नहीं फेरा रहा। अब खूब खुशी जी० ॥ २ ॥
नहीं बुड्ढा नहीं बाला रहा, नहीं कोई पिता नहीं लाला रहा;
अब नहीं गोरा नहीं काला रहा। अब खूब खुशी जी० ॥ ३ ॥
नाहिं किसी का मेला रहा, ना कोई किसका झमेला रहा;
मैं अपना आप अलबेला रहा। अब खूब खुशी जी० ॥ ४ ॥
मान नहीं अपमान नहीं, और ना कोई खैंचा तान रही;
तू मान किसी की शान नहीं। अब खूब खुशी जी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

जहाँ के हैं हम जहाँ के हैं, क्या पूछो हमें हम जहाँ के हैं ॥ टेर ।

सब ही देश हमारा है, हमसे कोई देश न न्यारा है;
हम वहाँ के हैं हम यहाँ के हैं। क्या पूछो हमें हम जहाँ के हैं॥ १॥
कौनसा देश बताऊँ मैं, और कौनसा भेष ठहराऊँ मैं;
हम सहजे रूप खुदा के हैं। क्या पूछो० ॥ २ ॥
सब में हम भर पूरा, हैं हैं निकट के निकट न दूरा है;
हम ना तिरछे ना बाँके हैं। क्या पूछो० ॥ ३ ॥
हम ही राम खुदा ही है, हमसे इतर कोई नाँही है;
हम रहते आदि सदा के हैं। क्या पूछो० ॥ ४ ॥
कबीर ने हमको पूछ लिया, बन आई सो हमने उत्तर दिया;
हम भेद न रखें छिपा के हैं। क्या पूछो० ॥ ५ ॥
फिर संशय हो तो कह दीजे, कहूँ जामें शंक मती कीजे;
तुम पूछो हम कहें समझा के हैं। क्या पूछो० ॥ ६ ॥
गुरु देवनाथ समझाया है, कहे मान सभी में समाया है;
हम तो के हैं न तहाँ के हैं। क्या० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी टोडी। ताल तिताला ॥

रसिक(१) होय सोई पावे, यह रस रसिक होय सोई पावें।
बिना रसिक यह हाथ न आवे, यों ही पड़े रह जावें। यह रस० ॥ टेर ॥
बड़े बड़े उपनिषद् पढ़ पढ़, खाली खेत रहावे।
वेद के सूत्र ये नित सुरझावें, खुद अरुझे रह जावें। यह रस० ॥ १ ॥
दिन में चार चार भोग लगावत, उलटे ही जाल फँसावें।
जीमणहार तो आप कहीजे, झूठे ही और बतावे। यह रस० ॥ २ ॥
इच्छा में जगत् जगत् में इच्छा, इच्छा ही ब्रह्म कहावे।

१—विश्व-प्रेमी।

ब्रह्म न होय तो इच्छा कवन की, रवि बिन तेज न आवे। यह रस० ॥ ३ ॥
रसिया होय सो मम वाक्यों को, सुनत मस्त हो जावे।
बिन रसियों को लगत अटपटे, पत्थरों ही शीश नमावे। यह रस० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, बिगड़्यो स्वाँग सुधरावे।
मानसिंह इन पोल पन्थ में, भूल स्वप्न नहीं जावे। यह रस० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती गरबे की। ताल कव्वाली ॥

कोई रसिया(१) होवे सो ओ रस पी सके रे जी।
दुःखियाँ(२) रे आवे नहीं काम। कोई रसिया० ॥ टेर ॥
कोई रसियाँ रे भेला तो रसिया आ मिले रे जी।
रसियाँ ने मिले विश्राम। कोई० ॥ १ ॥
कोई मूरख क्या जाने गम बापड़ा रे जी।
ए तो विषयाँ तणाँ रे गुलाम। कोई० ॥ २ ॥
कोई रसियाँ रे बिना तो ओ मद(३) कूण पिये रे जी।
काट ने देणो सिर(४) दान। कोई० ॥ ३ ॥
कोइ मूवाँ स्वर्ग ने मैं तो क्या करूँ रे जी
म्हारो जीवत स्वर्ग माँहि धाम। कोई० ॥ ४ ॥
कोई मान केवे साची सहो रे जी। मेरो तो मैं हो हूँ निज श्याम। कोई०॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "जले" की। ताल कैरवा ॥

म्हारे मन में सदाई आनन्द सुख जोया रे, दुःख रतीयन होय;
म्हारे मन में सदाई आनन्द सुख जोया रे लाल ॥ १ ॥
बहुत जन्म तक भरम नींद माँय सोया रे, अब सोवें न कोय; बहुत० ॥ २ ॥
कोटि भान उजियारा(५) अन्दर होया रे, जासूँ माणक(६) पोय; कोटि० ॥ ३ ॥

१—विश्व प्रेमी, २—जगत से द्वेष करने वाले, ३—आत्मज्ञान, ४—देहाभिमान, ५—ज्ञान का प्रकाश, ६—सत असत् का विवेक।

पाँच(१) चार(२) ने पकड़ पकड़ ने मोया(३) रे, निज घर(४) अब जोय; पाँच० ॥४॥
देवनाथ गुरु हाथ गह लिया मोय रे, सब भ्रम दिया खोय; देवनाथ० ॥ ५ ॥
मानसिंह अब नाँय हँसे नहीं रोय रे, निज में निज जोय; मानसिंह० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

सइयाँ ए म्हारी धिन आजूणो धिन भाग, राम म्हारे उर प्रकटायो ए ॥ टेर ॥
दशरथ प्रेम अयोध्या तुरियेए; सइयाँ ए म्हारी ब्रह्म हवन तहाँ कीन,
सतगुरु म्हारा आय ने करायो हे ॥ १ ॥
सम सुमित्रा सुमति कौशल्या ए; सइयाँ ए म्हारी कुमति कैकई नार,
तीनोई मिल वर ऐसो पायो हे ॥ २ ॥
सतगुरु अत्रि हवन ऐसो किनो ए; सइयाँ ए म्हारी शब्द हवी म्हाँने पाय,
पीताँ ही मदमस्त बणायो हे ॥ ३ ॥
ज्ञान भरत ने वैराग्य लक्ष्मण है ए; सइयाँ ए म्हारी शत्रुघ्न है विवेक,
विचार सो राम कहायो हे ॥ ४ ॥
ब्रह्म पुत्र यूँ विचार राम है ए; सइयाँ ए म्हारी जीव जीव ने छोड़,
असल निज रूप बतायो हे ॥ ५ ॥
देवनाथ ऐसा राम मिलाया ए; सइयाँ ए म्हारी मान मिल्यो हरि माँय,
कहीं मैं गयो न आयो हे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सइयाँ ए म्हारी घर बैठाँ आयो घनश्याम, बुलावण कुण म्हारे जावे ए ॥ टेर ॥
फिरी मैं बुलावण जद नहीं आयो ए; सइयाँ ए म्हारी खोज्यो मैं आतमराम,
दूजो म्हारे निजर न आयो ए ॥ १ ॥
बाहर श्याम रो मने काँई करनो ए; सइयाँ ए म्हारी आसी घर रो काम,

१—इन्द्रियाँ, २—अन्तःकरण, ३—वश किया, ४—अपना स्वरूप।

बाहिर म्हारे कुण भटकावे ए ॥ २ ॥

कुटुम्ब(१) हमारो कह्यो नहीं माने ए; सइयाँ ए म्हारी करे न भौलायो(२) काम,

याँ ने अब कौन भौलावे(२) ए ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु श्याम स्वरूपी ए; सइयाँ ए म्हारो मान कियो उर में धाम,

काढ्यो ही नहीं बाहर जावे ए ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

जो निज को जिन जान लियो निज जान लियो फिर ना भटकावे।
न्यारो रयो निज से जन मूरख न्यारे ही न्यारे में स्यान गमावे।
न्यारो नहीं तू नेक कहीं सब जगत तिहारो हि रूप कहावे।
मान कहे अभिमान तजो तब महान रूप में जाय समावे॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

हुए नौकर के हम ठाकुर; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ टेर ॥

थे हम तो पहिले ही ठाकुर, मगर नौकर बने बैठे ।
मिला जब रूप निज मेरा; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ १ ॥

बजाये बहुत से घण्टे, करी थी सेवा ऊमर भर ।
लगे जब अपनी सेवा में; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ २ ॥

उघाड़े पाट मन्दिर के, जो अपने रूप को देखा ।
सबी जग में मैं व्यापक हूँ; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ३ ॥

न थे हम ठाकुर के नौकर, बनें नौकर पुजारी के ।
सँभाला आप अपने को; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ४ ॥

पुजारी थे वो माया के, पुजारी भी न सच्चे थे ।

१—मनसहित इन्द्रियों का समूह, २—आत्मानुभव की अयोग्यता, ३—... पर निर्भर रहना ।

मिले सच्चे पुजारी तो; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ५ ॥
देव गुरु नाथ हैं मेरे, पुजारी आत्म ठाकुर के ।
मिला है मान उनही में; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

उगाया सूर अपने में; मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ टेर ॥
माया की ओट से देखा, उजाला चन्द सा दीखा ।
खोल जोया जो परदे को; मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ १ ॥
निशा मोह जाल की मेटी, भरम को दूर जा पटका ।
निकल गई गन्दगी दिल से; मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ २ ॥
रूप था सूर्य ही मेरा, मगर मैं चन्द हो दीखा ।
अविद्या शैल था बिच में; मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ ३ ॥
किया जब चूर शैलों को, तो अपने आप सा पाया ।
मैं ही था रूप वो मेरा; मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ ४ ॥
मिले जब नाथजो हमको, अनाथ फिर किस लिये रहना ।
मान सब आप अपना है; मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी-टोडी । ताल तिताला ॥

जो देखूँ सो मेरा, मित्रो जो देखूँ सो मेरा ।
शत्रु मित्र होय फिर किनके दोय न रखे नियेरा ॥ टेर ॥
मैं ही तो स्वामी सेवक मैं ही हूँ, मेरा सबही तमासा ।
मैं मुझ को जब भूल गया तब, रहे अन्धविश्वासा । मित्रो जो देखूँ० ॥ १ ॥
राज करूँ और लेप न लागे, ये सब खेल हमारा ।
हमही खेल खिलारी हम हैं; फिर हमही आधारा । मित्रो जो देखूँ० ॥ २ ॥

मोते विश्व भिन्न कब कहिये, भिन्न कहे सो कूड़ा।
मेरी गम को वो जन पावे, काट शीश धरे दूरा। मित्रो जो देखूँ० ॥ ३॥
शत्रु आय कहा मेरो लेवे, लेवे तो कहा टूटे।
देवनाथ दिया अमर खजाना, मान कभी नहीं खूटे। मित्रो जो देखूँ० ॥ ४॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

मूरत सुंदर हमारी साधो, मूरत सुंदर हमारी रे ॥ टेर ॥
सभी विश्व में मूरत मेरी, ना कोई धरी न धारी रे।
नहीं कोई खाली मंदिर ऐसो, ना कोई भिन्न पुजारी रे। मूरत० ॥ १ ॥
मेरा घड़िया मैं क्या पूजूँ, मैं ही हूँ घड़नेहारी रे।
जो चाहे सो घड़ दिखलाऊँ, ये सब खुशी हमारी रे। मूरत० ॥ २ ॥
मैं ही जीव प्रकृति मैं हूँ, मैं ही पुरुष और नारी रे।
मैं ही मेरा खुला और बंधा, दूजो नाँहि निहारी रे। मूरत० ॥ ३ ॥
मेरा दर्शन करूँ मैं हि नित, मैं ही देव अवतारी रे।
चर और अचर सभी में मैं हूँ, मैं ही एकरस सुखकारी रे। मूरत० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, भरम धूड़ को झाड़ी रे।
मान महान् रूप जब होयो तो, मिट गई द्वैत विकारी रे। मूरत० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

लीला सभी हमारी सन्तो, लीला सभी हमारी रे ॥ टेर ॥
लीला करूँ रहूँ फिर न्यारो, ऐसो खेल खिलारी रे।
भोगूँ भोग सहज में सबही, फिर भी रहूँ ब्रह्मचारी रे। लीला सभी० ॥ १॥
हमही देव दैत्य हम कहिये, हम सृष्टि आधारी रे।
सृष्टि रूप हम ही फिर कहिये, है तरंग जग सारी रे। लीला० ॥ २॥
चेतन हम हम ही जड़ कहिये, त्यागे द्वैत विकारी रे।
ऊँच ने नीच एक नहीं मेरे, नहीं पुरुष नहीं नारी रे। लीला० ॥ ३॥

ईश्वर जीव प्रकृति ये तीनों, झूठे ही झगड़ा डारी रे।
दोनों छोड़ एक कर दीना, नहीं प्रीतम नहीं प्यारी रे। लीला० ॥ ४ ॥
नाथ स्वरूप सकल जग कहिये, वेद और ग्रन्थ पुकारी रे।
मान कहे कोई नाथ से न्यारो, ताहि समझ मति हारी रे। लीला ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये" की। ताल कैरवा ॥

मन धर्म अधर्म विचार जद सुख पावे रे॥ टेर॥
धर्म बीच अधर्म बने, सो कुकरम कर्म निवार। जद सुख पावे रे॥ १ ॥
धर्म अधर्म विचार करे, कहे नीति शास्त्र पुकार। जद०॥ २ ॥
मुनि बशिष्ठ और मनु कह्यो, कोई देखो स्मृति उघार। जद० ॥ ३ ॥
पुन्य किये कहीं पाप बने, कहीं पाप से पुन्य अपार। जद० ॥ ४ ॥
अन्ध कूप में नाहिं पड़ो, नहीं खाओ जम री मार। जद० ॥ ५ ॥
स्वार्थी अर्थ बिगाड़ दियो, कुछ कीजे विवेक विचार। जद० ॥ ६ ॥
मान कहे यह नीति सही, यों चलिये खाँडा धार। जद० ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

तुम हो नरेश और देत कष्ट सब ही को, कौनसा धर्म यह नीति कहा विचारी है। रात दिवस देखूँ मैं सोच कर बात यही, समझ में न आई कुछ नीति यह तुमारी है। दोषी को दण्ड देत बने रहो ज्ञानी फिर, उनको भी देखो एक आत्मा निहारी है। कहे कवि बांकीदास मेटो हो संशय की प्यास, कौन शास्त्र ग्रन्थ की जो नीति यह धारी है॥

॥ कवित्त ॥

रे रे सुन बंक कुछ ख्याल तो करो मन, नीति ग्रन्थ देख बात समझ में न आई है। नीति यों साफ कहत दुष्ट को दीजे दण्ड, सोई नीति कृष्णचन्द्र पारथ समझाई है। उनसे न लोपूँ पैंड कृष्णचन्द्र कही सो भरूँ, गीता न सत्य नीति मोय दरसाई है। सब कुछ करें और रहत नित अकर्ता हम,

कर्तव्य कर्म अपनो पालन को चाई है। कहे राव मानसिंह बड़न को कहनो मान, जैसी कृष्ण कही तैसी राह मैं बताई है। बड़न को लोपे कहनो ताकी दुर्गति होत, वेद और ग्रन्थ शास्त्र सही समझाई है ॥

॥ कवित्त ॥

सज्जन को देहे दण्ड और शेर को छोड़ दे, हिंसक वो जीव कई जीवन को मारेगो। तातें यह काम है उजाड़ दे पहिले उनको, उन्हें छोड़यो जीवतो तो नगर को उजारेगो। ज्ञानिन की रीति यही स्थिति नित एक रहे, नीति और अनीति हर वक्त वो विचारेगो। कहे राव मानसिंह फर्क हू न आन जामें, ऐसो ज्ञानी आप तिरे औरन को तारेगो ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की। ताल कैरवा ॥

साधो भाई साचे ज्ञानी सोई हो जी।
करत व्यवहार लाचार न होवे, नहीं हँसे नहीं रोई ॥ टेर ॥
सब कुछ करे कर्त्तव्य लख अपनो, जिण सूँ दुःख नहीं होई हो जी।
ऊठत बैठत जागत सोवत, सुरत आप माँय पोई ॥ १ ॥
मुख बाचाल बाताँ बहु भाखे, निज आतम नहिं जोई हो जी।
बाताँ करे भरम नहिं खोयो, डूबत नाव डुबोई ॥ २ ॥
भेष न धरे जगत नहीं छोड़े, दुःख दुविधा ने खोई हो जी।
मानसिंह सोई मित्र हमारा, भीख न माँगे कोई ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग, तर्ज वाणी की। ताल कैरवा ॥

साधो भाई बिगड़ी(१) लैन हमारी रे।
सबसे अलग लैन है मेरी, सबसे ही करत किनारी रे ॥ टेर ॥

१—अज्ञानी लोगों की समझ से बाहर।

मुड़दों(१) से बोलूँ जिन्दों(२) से नाहीं, यह उलटी मति धारी रे।
मुड़दे ही समझो मित्र हमारे, जिन्दे हैं दुश्मन भारी रे ॥ १ ॥
चोरों(३) से प्रेम अरु शाह(४) से लड़ाई, इस में ही आनन्द अपारी रे।
चोर नगर(५) में निवास हमारो, वहाँ न चले साहुकारी(६) रे ॥ २ ॥
शत्रु(७) जिनको मित्र जो कीना, मित्र(८) दिया ललकारी रे।
राजा(९) को पकड़ कैद माँहि मेल्यो, देखो सुमति विचारी रे ॥ ३ ॥
बाप(१०) ने भ्रात(११) सभी ने मारया, रोने लगी महतारी(१२) रे।
हाहाकार जो मोय न सुहाग्रो, उनको भी पकड़ निकारी रे ॥ ४ ॥
बिगड़ याँ(१३)के पास बिगड़ या ही बैठे, सुधर याँ(१४)री कौन चिकारी(१५)रे।
देवनाथ गुरु बिगड़े मिलिया, मानसिंह लियो धारी रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग, तर्ज वाणी की। ताल कैरवा ॥

साधो मेरे बिगड़े(१६) सो योगी(१७) होई रे।
बिगड़ बिगड़ के ऐसा बिगड़े, पास न(१८) बैठे कोई रे ॥ टेर ॥
भेष ने दरशन धरूँ नहीं सिर पर, यह सब बन्धन सोई रे।
होय निर्बन्ध आनन्द सूँ बिचरे, अलमस्ताना होई रे ॥ १ ॥
जोगी होवणो और रहणो सुधरियो(१९), बात बणे नहीं दोई रे।

१—देहाभिमान से रहित, २—देहाभिमानी, ३—असुरी सम्पत्ति हरने वाले सद्गुरु, ४—आसुरी सम्पत्ति वाले, ५—विवेक, ६—आसुरी सम्पत्ति, ७—ज्ञान, ८—द्वैतविकार, ९—अहंकार, १०—अज्ञान, ११—मान, मोह, लोभ आदि, १२—आशा, १३—लौकिक बन्धनों से स्वतन्त्र, १४—लौकिक मर्यादाओं के बन्धनों में रहने वाले, १५—ताकत, १६—अज्ञानी लोगों के माने हुए अन्धविश्वासों की मर्यादाओं के बन्धनों से स्वतन्त्र, १७—आत्म-ज्ञानी १८—अज्ञानी जनसमुदाय का परहेज । १९—लौकिक मर्यादाओं और अन्धविश्वासों में अलूझा रहने वाला ।

या तो बिगड़ो या योगी न होईये, वान कहें शुद्ध सोई रे ॥ २ ॥
नहीं कोई कर्म क्रिया ने धरम कोई, एक आचार ने जोई रे।
सबसे श्रेष्ठ(१) कनिष्ठ(२) रहे वह, भेदाभेद न कोई रे ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु सबसे बिगड्या, उनही बिगाड़्यो मोई रे।
मानसिंह कहे देश(३) बिगड़्याँ रे, सुधर्‍या बसे(४) नहीं कोई रे ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

वंक वचन

वंक कहे नृप मान सुनो अबतो कर यह चूप बात तुम्हारी।
भंग शराब पियाँ विन बावरे कैसे भये नृप हाँसो यह भारी।
आई बको बरजे न रहो यह सही न जावत शब्द कटारी।
वंक कहे हे नरेश सुनो अस बात कहो सुधरे जग सारी ॥

॥ सवैया ॥

मान वचन

जग है ही नहीं सुधरे फिर को बिगड़्यो हि नहीं सुधरे कहा भाई।
यह बिगड़्यो सुधर्‍यो तोहि दीखत मेरी तो दृष्टि में आवत नाँई।
मेरो हि रूप यह जगत सभी और मैं ही रहूँ इस जगत के माँई।
ताल(५) के देखे तो जगत मैं ही हूँ जगत मो तें कछु भिन्न है नाँई।
मान कहे मैं बिगाड़ी नहीं और नाँहि सुधारन को दुःख पाई।
है बिगड़ी सुधरी सब कहन की ये जग ब्रह्म को रूप सदाई ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज वाणी की। ताल कैरवा ॥

साधो भाई थोड़े में मत घबरावो होजी।
इतने ही डरिया तो आगे क्या मिलसी, ज्यूँ के त्यूँ रह जावो ॥ टे॰ ॥

१—भेद रहित, २—निराभिमानी, ३—स्थिति, ४—रहना ५—जाँच।

शूर बीर चले सिंह को मारण, धाक ही से डर जावो होजी।
होय न शिकार आवो घर खाली, जग में हाँसो करवावो ॥ १ ॥
सिंह शिकार तो जब ही होसी, मारो और मर जावो होजी।
जिन्दा रह्या तो सिंह घर लावो, मरिया तो वीर कहावो ॥ २ ॥
सिंह(१) शिकार वोही नर खेले, सिंह(२) होय अड़ जाओ होजी।
धाक(३) सूँ डरो फ़तेह क्या करसो, स्वाँगी साध कहाओ ॥ ३ ॥
वाचक ब्रह्म करो मत बाताँ, नाहक श्यान गमावो होजी।
मानसिंह कोई सिंह बनो तो, विकट जङ्गल(४) बिच धावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावारी । ताल दीपचन्दी ॥

मत कहो न्यारो न्यारो, इण जोगिये(५) ने मत कहो न्यारो न्यारो ॥ टेर ॥
न्यारो कह्यो तो मिलसी नाँहि, जोगी आधार तिहारो।
उण जोगिये विना कुछ भी नहीं हैं, जोगी जगत उजियारो ॥ १ ॥
उण जोगिये रे जोगण(६) अनादि, फिर जोगी है अखण्ड कँवारो(७)।
जोगण संग में जुगत सूँ रहवे, जगत रचायो है सारो ॥ २ ॥
जोगी कुमारो और जोगण कुमारी(८), कभी न करत व्यभिचारो(९)।
भेला(१०) रहे और भींटत(११) नाँहि, जोगी बड़ो छन्दगारो(१२) ॥ ३ ॥
जो जोगी ने देखे न जोगण, चैन न पात लिगारो।
एक पलक भर पलटे नाँहि, दोनों में प्रेम अपारो ॥ ४ ॥
जोगण जोगी में प्रेम अखण्डित, कबहुँ न टूटे तारो।
जो यह प्रेम टूट खण्डित होवे, तो खेल बिखर जावे सारो ॥ ५ ॥

१—देहाङ्कार, २—निर्भय, ३—विधि निषेध के रोचक भयानक वाक्य, ४—निन्दा स्तुति से अविचलित स्थिति, ५—आत्मा, ६—इच्छा या प्रकृति, ७—निर्लिप्त, ८—शुद्धप्रकृति, ९—अन्यथा भाव, १०—अनन्य भाव, ११—निर्लिप्त, १२—योगैश्वर्य अर्थात् जगत रचना का कौशल।

जो जोगी ने देखणो होवे, मनोयोग चित धारो ।
योग जुड़याँ बिना जोगी न मिलसी, मिटसी न भरम अन्धारो ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु देख जोगी ने, पकड़्यो हाथ हमारो ।
मानसिंह जद जोगी में मिल गये, जोगी रूप जग सारो ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावारी । ताल दीरचन्दी ॥

नहीं त्यागी घरबारी, जोगी नहीं त्यागी घरबारी ।
कहूँ घरबारी तो घर कहूँ नाहिं, त्यागी कहूँ तो जग सारी ॥ टेर ॥
त्यागी रहे और गृहस्थ सब भोगे, जोगी जबर खिलारी ।
गृह बन्धन में आवे न जोगी, जोगिये री कुदरत न्यारी ॥ १ ॥
कहन सुनन तो कछु न बने ओ, जालम जुलमी अपारी ।
घर में बैठो काम करे सगला, फेर रहे ब्रह्मचारी ॥ २ ॥
नित नवयौवन रहे ओ जोगी, कबहूँ न वृद्धपन धारी ।
सबसे रसियो सुन्दर जोगी, सबसे ही सुन्दर नारी ॥ ३ ॥
नहीं है आलसी और काम करे नहीं, यह गति अगम अपारी ।
सुत अरु सुता अगणित हैं इनके, गृहस्थ बड़ो बलकारी ॥ ४ ॥
देवनाथ मोहे जोगी बतायो, उण जोगिये री बलिहारी ।
मानसिंह जद जोगी जोयो, मिट गई भ्रमना सारी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

बंक वचन

बंक कहे भूपति सुनो, वो जोगी है कौन ।
न्यारो खोल बताइये, मत रहिये तुम मौन ॥
को फिर उनकी जोगिनी, गृहस्थ कौन से कीन ।
ब्रह्मचारी कैसे रह्यो, भूपति कहो प्रवीन ॥

कौन सुता और कौन सुत, कहाँ गृह भवन निवास।
भूपति भेद उघारि कहो, भगे अन्धविश्वास ॥
गुप्त गुप्त कह जावोगे, तो करही अर्थ अनेक।
असली अलगो रेवसी, बढ़सी नकली भेष ॥

मान वचन

बंक यह बात है बाँकड़ी, सभी खबर है तोय।
तो फिर तू पूछे हमें, गुप्त रही है कोय॥

बंक वचन

बंक कहे भूपति सुनो, हमें खबर जो होय।
तो भी तुम कह दीजिये, दाम न लागे कोय॥
जाएूँ राज रईस तुम, कहत परिश्रम होय।
भली होय सब जगत की, भरम भूत दो खोय॥
गोरख और कबीर ने, यह उलझी रख दीन।
अति न्यारी खेंचन लगे, खेंच रहे मतिहीन॥
न्यारी न्यारी बीच में, असली खबर नहीं होय।
को नकली असली कवन, जीव रहे सब सोय॥
कृपा भवन करके कृपा, कर हो कृपा को रूप।
को न्यारो भेलो कवन, भेद कहो भू भूप॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

भेद कहूँ तत् सारो, ज्ञानी भेद कहूँ तत् सारो ॥ टेर ॥
सूक्ष्म इच्छा आदि ब्रह्म की, है जिनको पिय प्यारो।
इनसे ही उठत समावत इनमें, यह है खेल अपारो। ज्ञानी भेद० ॥ १ ॥
संगम करे तो यह पुत्री है इनकी, होवे बहुत बिगारो।
संगम किये छोड़े नहीं पाश्री, जिए सूँ रहवे न्यारो। ज्ञानी भेद० ॥ २ ॥

आदि प्रेम सो किम कर छूटे, कर उर गहन विचारो ।
यह ग्रह बन्धन जग को रचता, खेलत खेल खिलारो । ज्ञानी भेद० ॥ ३ ॥
जड़ चेतन सब पुत्र और पुत्री, आप पिता बलकारो ।
यथायोग्य सब ही को देवे, अपणो तेज उजारो । ज्ञानी भेद० ॥ ४ ॥
नित है नयो वो नाँहि पुराणो, जन्मे न मरणे हारे ।
ईच्छा नई है न होत पुराणी, जोड़ मिलो हद भारो । ज्ञानी भेद० ॥ ५ ॥
ऐसो गृहस्थ कियो इण जोगी, फिर वो रह गयो क्वाँरो ।
जोगण कुमारो कहो कब परणी, वेद कहे यूँ चारो । ज्ञानी भेद० ॥ ६ ॥
नहीं जग विनस्यो नहीं जग उपज्यो, अखण्ड चल्ले इक धारो ।
करण हार मौजूद खड़ो है, इण जग को आधारो । ज्ञानी भेद० ॥ ७ ॥
मान कहे कवि गुण ज्ञानी, मिट गयो भरम तिहारो ।
शंक न रखिये खोल कर पूछो, हम और बतावन त्यारो । ज्ञानी भेद० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग कानड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

है कहताँ तो लाज म्हाँने आवे । नहीं जो कहूँ तो कह्यो नहीं जावे ॥ टेर ॥
है कह दूँ तो पतो नहीं भाई । रूप रंग कछु खोजहू नाँई ।
याही ते कहताँ लछन लगावे ॥ १ ॥
नहीं जो कहूँ तो जग मिट जावे । जो नहीं है तो कुण खेल रचावे ।
जिण री आदि अन्त नहीं पावे ॥ २ ॥
है जद कहूँ म्हाँने न्यारो दिखावे । नहीं है कहूँ जद नहीं दरसावे ।
याके मध्य अब चुप ही रहावे ॥ ३ ॥
है नहीं है यह दोनों मिटावो । इसके बीच में हम हैं यह पावो ।
अपने आपको क्या दरसावे ॥ ४ ॥
वेदव्यास भाष्य जद कीनो । नेति कहे मुख चुप कर लीनो ।
इण रे भरम सूँ जगत बही जावे ॥ ५ ॥

ता पर कृष्ण ऐसो सहायक आयो। सर्वभूतात्मक तत्त्व बतायो।
जिण ने खोज्याँ सूँ भरम मिट जावे ॥ ६ ॥
नहीं जो होवे तो सर्वभूतात्म नाँई। है तो जब नहीं है कह्यो किम जाई।
कृष्ण वाक्य कोई मिटे न मिटावे ॥ ७ ॥
देवनाथ गुरु घर अवतारा। मेट्यो सकल दुःख द्वन्द हमारा।
मान अभय पद बीच समावे ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग कानड़ा। ताल दीपचन्दी ॥

क्यों बन जाऊँ और रहूँ मैं उदासी। आठों पहर रूप अविनाशी ॥ टेर ॥
सुत पितु बन्धु छोड़ क्यों देऊँ। इनमें दुःख क्या क्यों दुःख लेऊँ।
सब ही तो यह मेरी राशी। क्यों बन० ॥ १ ॥
घर घर भीख काहे को माँगू। भिक्षुक हो क्यों जग को जाँचूँ।
गृहस्थ छते हूँ शुध संन्यासी। क्यों बन० ॥ २ ॥
मेरे कर्म करम तो मैं हूँ। मैं ही करूँ ने फल मैं मेरा लेऊँ।
काहे को रखूँ दिल दुविधा फाँसी। क्यों बन० ॥ ३ ॥
सब में मैं और सब मेरे माँही। बन पहाड़ में मैं खाली नाँही।
वृथा ही अरि सुन करे यह हाँसी। क्यों बन० ॥ ४ ॥
मान कहे ऐसा योग मिलाया। कृष्ण कृपा कर्मयोगी बनाया।
स्वतः तेज हूँ सब में प्रकाशी। क्यों बन० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तज बाणी की। ताल दीपचन्दी ॥

नित्य आनन्द रहूँ सदा, क्यों मैं रहूँ रे उदासी।
कर्म काठ कोयला किया, एसो सहज संन्यासी जी ॥ टेर ॥
कर्म करूँ और लागे नही, दुःख सुख व्यापे न मोई।
सहज समाधी में हुय रयो, आतम सुख होई जी ॥ १ ॥

त्याग ग्रहण मेरे है नहीं, है सो है निज मेरा।
आण जाण फिर कौन सो, सब में मैं निज हेरा जी ॥ २ ॥
काम सवी करता बनूँ, फिर भी रहूँ मैं अकरता।
आप आपनो काम है, किनको दुःख भरता जी ॥ ३ ॥
बाहर ढूँढ्यों क्या मिले, मिलसी घर माँई।
घर में खोजे जिके क्यों फिरे, पायो निज साँई जी ॥ ४ ॥
कबहू राम कब कृष्ण कहे, कबहू ब्रह्मा महेशा।
वेश्या सुत ज्यों वे रेवसी, किनको बाप मनेशा जी ॥ ५ ॥
कबहूँ बदरी और द्वारका, रामेश्वर काशी।
वेश्या के पति कौन है, ऐसा हाल हो जासी जी ॥ ६ ॥
कबहू गंग जमुना न्हावे, अड़सठ तीरथ धावे।
एक एक की आश में, घर को देव गमावे जी ॥ ७ ॥
गोकुल गयो मथुरा गयो, फिरियो कोस चौरासी।
जन्म मरण तो ना मिट्यो, लागी जमड़े री फाँसी जी ॥ ८ ॥
चार धाम अड़सठ तीर्थो, सब में टाट कुटाई।
आगे सूँ आगे कहता रह्या, आगो किणी ना मिटाई जी ॥ ९ ॥
सब में धका हम खाविया, कर कर व्रत उपासी।
देवनाथ समरथ मिल्या, देख्यो ब्रह्म प्रकासी जी ॥ १० ॥
मानसिंह जद ओलख्यो, उपजी मन हाँसी।
गजब कियो दुःख पावियो, मेरो मैं सुख रासी जी ॥ ११ ॥

बंक वचन

॥ दोहा ॥

बंक कहे सुन मानसी, मत कर "मैं" अहंकार।
हरिण्यकशपु और रावण से, गये थे इण में मार ॥

मान वचन

॥ कवित्त ॥

भूलो रे भूलो वंक नाम को लजावे यार, वाँकी बात सोच क्यों तू बात करे गैली है । रावण और हरिण्यकशपु देह अभिमानी थे, उनकी और मेरी देख एक कहा शैली है । कृष्ण कह्यो "मैं हूँ मैं" उनको न मारे कोई, मैं तो वही कृष्णचन्द्र की मत ले ली है । कहे राव मानसिंह बाँके विचार देख, तैंने जो कही वह तो बात रही पहली है ॥

॥ दोहा ॥

नाश करण सो ना कियो, कियो आपनों नाश ।
मानसिंह सुख बेच के, दुःख में कियो निवास ॥

॥ दोहा ॥

लेख लेख सबही कहे, पण लिखिया मिल्या न कोय ।
किण लिखिया किण बाचिया, याकी संशय मोय ॥

॥ कवित्त ॥

केते मतिमंद अन्ध ऐसी बनाय कहत, कुंकुम के अक्षर जो लिलाट में लिखाये हैं । पर काहू न बाच जोयो कहन ही कहन कहत, गप्प को चलान और बात कुछ बनाये है । अजब सी भाषा अटपटी न जात पढ़ी, ऐसी कह कह करके पोल को छिपाये है । कहे राव मानसिंह लिखिया न पढ़िया कोऊ, पुरुषार्थ से करे जो कुछ भी बन जावे है ।

॥ गान ॥

॥राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

छड़ाये बन्ध सब दिल के, हुवे निर्बन्ध सब लायक ॥ टेर ॥
पूर्व कर्मों के बन्धन को, पढ़ पढ़ के हार दी हिम्मत ।
सुना कि मेट सकता है, मिटा के हुवे सब लायक ॥ १ ॥

पूरब के आसरे रहते, तो कुछ भी कर न सकते थे ।
दिखाया काम कर अपना, दिखा के हुवे सब लायक ॥ २ ॥
सुना है वेद शास्त्रों में, पूरब कर्मों की कर ज्वाला ।
जला के खाक कर दीया, जला के हुवे सब लायक ॥ ३ ॥
लिखा है भाल में अपने, पूर्व कर्मों का कुछ लेखन ।
मिटाया धोखा सब येही, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ४ ॥
इधर तो कर्म करते हैं, इधर वो पूर्व होता है ।
लिखेंगे अब क्या होकर वो, मिटाकर हुवे सब लायक ॥ ५॥
अभी जो चोरी करते हैं, करी और हो चुकी पूरब ।
कैद क्यों आज जाता है, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ६ ॥
अगर शंसय रही है तो, देख लो आज ही करके ।
इधर विष खाय और मर जाय, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ७ ॥
अगर जो पूर्व में होता, जहर विष का ही क्यों आता ।
मिटाए बन्द सब दुःख के, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ७ ॥
मान यह जान ले दिल में, लिखा नहीं लिखते हैं कहीं पै ।
सर्व में है प्रभू व्यापक, देख के हुवे सब लायक ॥ ६ ॥

बंक वचन
॥ सवैया ॥

बंक कहे नर राज सुनो तुम पूर्व काल में क्या बतलाई ।
रोमही रोम अंजनी सुत के फिर राम को अंकित कैसे लिखाई ।
लिखे पढ़े तुम मिथ्या करो तब झूठ है बात यह कैसे सुनाई ।
हमको भरम फसावत हो यह जाली ने जाल जो कैसे बिछाई ॥

मान वचन
॥ सवैया ॥

मेरी संग करी तुमने कवि गहरे पानी में पैठ न न्हायो ।
ऊपर अर्थ को देख लियो तैं अन्तर नाँय कछु सरुजायो ।

शस्त्र से चीरो नहीं हृदय नहीं रोम उखाड़ के रूप दिखायो।
मान कहे कवि बंक सुनो उन बुद्धि प्रकाश से तेज दिखायो॥

मान वचन

॥ कवित्त ॥

हृदय में संकुचित हतो कह्यो न प्रकट उन, आज सबे विस्मित जान प्रगट सुनायो है। कह्यो हनुमान समर्थन कियो रामचन्द्र, बन्दर और भरत आदि सबको समझायो है। ऐसे मत जान बंक हनुमान चीर्यो हृदय, अरे हृदय जो चीरत तो प्राण कस रहायो है। कहे राव मानसिंह सिंहन को करी संग, भारी तैं जुल्म कीन भेड़ सो रहायो है॥

शिक्षा और चेतावनी

॥ दोहा ॥

मान(१) मान सखी मान कहे, मान(२) करो मत कोय।
इसी मान के बीच में, दीन्ह रोकड़ा(३) खोय॥

॥ कुण्डलियाँ ॥

मान मान को मेट के, मान मान कुछ मान।
मानसिंह मान्यों नहीं, तो होसी मोटी हान।
होसी मोटी हान, खबर करलो घर माँही।
कहाँ खोजण ने जाय, खोज्याँ कद बाहर पाई।
अजहू मन में मान ले, मत तू करड़ी तान।
मान मान को मेट के, मान मान कुछ मान॥

॥ सवैया ॥

मान(४) में ब्राह्मण क्षत्री बन्यो और मान में वैश्य और शूद्र कहायो।
मान में आप जो ऊँचो चढ़्यो और मान हि मान में नीचो गिरायो।

१—समझ, २—अभिमान, ३—आत्मानुभव, ४—देहाभिमान।

जो इण मान को दूर करे तो मान(१) महान्(२) को रूप लखायो।
मान मिट्यो तो महान् भयो फिर मान(३) कहीं तू गयो नहीं आयो॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

अब अभिमान निवारो प्यारी(४), अब अभिमान निवारो ॥ टेर ॥
रूठे श्याम(५) होयगी खोटी, कोई भाव(६) न पूछे तिहारो।
कबकी खड़ो यों गरज(७) करें हम(८), उतरे न मान(९) अपारो। प्यारी०॥ १॥
मान मान में महान्(१०) हारसी(११), पड़त जन्म में छारो।
ताते तू अभिमान छोड़ दे, परस लहे पिव प्यारो। प्यारी० ॥ २ ॥
तेरे मान में मान(१२) उतरसी, करले समझ विचारो।
इतनो मान काम को नाँहि, लागत अवगुन कारो। प्यारी० ॥ ३ ॥
सतगुरु कृष्ण मान को पाये, अब धूल मान पै डारो।
मानसिंह निर्मान होय के, महान् रूप निहारो। प्यारी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

खटके मान(१३) तिहारो राधे(१४), खटके मान तिहारो ए ॥ टेर ॥
मान मान में कही न मानी, काम बिगाड़्यो सारो ए।
यह तेरो मान काम क्या आवे, रूस(१५) गयो पिव प्यारो ए। खटके० ॥ १॥
जा दिन से तैं मान न छोड़्यो, मान उतर(१६) गयो सारो ए।
माधव(१७) तो मथुरा(१८) को धाये, क्या अब हाल हमारो(१९) ए। खटके० ॥२॥

१—निश्चय मान कर, २—आत्मा, ३—कविताकार, ४—मन की वृत्ति, ५—आत्म-विमुखता, ६—सत्ता, ७—समझावें, ८—बुद्धि, ९—देहाभिमान, १०—आत्मा, ११—विमुख होगी, १२—सतअहङ्कार, १३—दूसरों से पृथकता का व्यक्तित्व का अभिमान, १४—वृत्ति, १५—आत्म-विमुख हो गई, १६—अधोगति हो गई, १७—आत्मा, १८—अज्ञान,अवस्था, १९—मन और इन्द्रिय आदि सूक्ष्म शरीर के अवयव

बहुत जतन से पाये गिरधर(१), फिर यह काम बिगारो(२) ए।
प्रेम(३) हार सो टूट्यो सजनी, बिखर गयो रस(४) न्यारो ए। खटके० ॥ ३ ॥
ऐसो मान कभी नहीं कीजे, देखो समझ विचारो ए।
ऐसो पीव फेर कब मिलसी, हाल सुने को थारो ए। खटके० ॥ ४ ॥
नाम तेरो वृषभानु सुता(५) है, तो पण रह्यो अन्धारो ए।
प्रेम छोड़ तैं मान गह्यो क्यों, पड़ी अकल में छारो ए। खटके० ॥ ५ ॥
वह तो वक्त(६) मान में खोई, अब न मिले पिव प्यारो ए।
अब पछताये क्या हो प्यारी, काम उलट गयो सारो ए। खटके० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु हाथ गह्यो जब, परगट कीन उजियारो ए।
मान कहे अब धूल मान पर, महान(७) मिल्यो हमारो ए। खटके० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती। ताल कैरवा ॥

उठ सखी(८) क्या सोवे आली, घर आये गिरधारी(९) रे॥ टेर ॥
क्या वृन्दावन के वन ढूँढे, यहाँ ही खड़े बिहारी रे।
नीन्द(१०) उड़ाय मिलो गिरधर से, लेवहु छबी निहारी रे। उठ सखी० ॥ १ ॥
जब तू जावे(११) वह नहीं आवे, रह न्यारी की न्यारी रे।
अब वह(१२) आये तू नहीं उठे, कैसी भूल तुम्हारी रे। उठ सखी० ॥ २ ॥
या अवसर(१३) में जो नहीं मिलसी, विकट पन्थ है भारी रे।
और तो अवसर कोई न दीखे, फिर बहसी भवधारी(१४) रे। उठ सखी० ॥ ३ ॥
इतनो मान(१५) करे तू काहे, देखले समझ विचारी रे।

१—ज्ञान के साधनों से परमात्मा को जानना, २—देह अभिमान के कारण फिर से गिरावट, ३—सर्वात्म भाव, ४—आत्मानन्द, ५—आत्मरूपी सूर्य की इच्छा रूपी पुत्री, ६—ज्ञान प्राप्त करने की अवस्था, ७—आत्मा, ८—वृत्ति, ९—आत्मानन्द, १०—मोह-निद्रा, ११—विषयों की तरफ दौड़ना, १२—आत्मज्ञान देनेवाले सद्गुरु, १३—मनुष्य-जन्म, १४—बार बार जन्म मरण के चक्कर, १५—देहाभिमान।

अपने पीव(१) से मान क्या सजनी(२), पीव मिल्यो ब्रह्मचारी(३) रे ।॥ ४॥
मान मान में महान(४) गमासी, कोई पूछ न करे तिहारी रे ।
मान कहे री मान सुन्दरी, देवो मान निवारी रे । उठ सखी० ॥ ५॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

हरि तो जागे तू ही सोवे, जिण सूँ दुःख पावे ।
आप हू न जाने मूढ़, भूल में रहावे ॥ टेर ॥
अपनी नीन्द नाँय खुले, घण्टा कहा बजावे ।
अपनी नीन्द उड़ाय दे तो, प्रगट दरस पावे । हरि० ॥ १ ॥
औरों दोष मुफ्त देत, आपनो छिपावे ।
विश्वपति व्यापक सदा, उन्हें कहा जगावे । हरि० ॥ २ ॥
अन्तरपट खोल जरा, दूर ना रहावे ।
मन के मन्दिर सुन्दर श्याम, कहाँ ढूँढण जावे । हरि० ॥ ३ ॥
देवनाथ हाथ गहे, भूल को मिटावे ।
मान कहे मान जरा, भूल के विष खावे । हरि० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

घूँघट(५) पट खोल राधे(६), मोहन(७) मन्दिर(८) आयो ॥ टेर ॥
बाहिर मन्दिर खोज हारी, कुछ न थाह पायो ।
मन्दिर के पट(९) खुले पड़े, झालो दे बुलायो । घूँघट पट० ॥ १ ॥
वृत्ति मेरी राधे बनी, भ्रम सब भगायो ।
मान यूँ आनन्द भयो, कृष्ण को रिझायो । घूँघट पट० ॥ २ ॥

१—आत्मा' २—वृत्ति, ३—निर्लिप्त, ४—आत्मा का आनन्द । ५—अज्ञान का पड़दा, ६—वृत्ति, ७—आत्मा, ८—घट में, ९—शरीर के नव दरवाज़े,

|| गान ||

|| राग प्रभाती दादरा ||

वाह वाह प्रेम(१) तेरो राधे(२), वाह वाह प्रेम तेरो || टेर ||
भलो प्रेम कीन प्यारी, पीव(३) अपनो हेरो।
पिया पाय कहीं न जाय, मिट्यो सब यह फेरो(४) । वाह वाह० || १ ||
राखे पिया को जतन करके, नैनन(५) के नेड़ो।
आठू पहर पास रहे, अन्तर्गत(६) हेरो । वाह वाह० || २ ||
सह(७) ब्रजनारी मिली प्यारी, पीव के संग(८) घेरो।
राग(९) रागिनी सुन्दर गावे, स्वर है चहूँ फेरो । वाह वाह० || ३ ||
देवनाथ हाथ गह्यो, मान चरण चेरो।
दरसण दुःख दूर कीन, मिल्यो कृष्ण(१०) मेरो । वाह वाह० || ४ ||

|| गान ||

|| राग प्रभाती । ताल दादरा ||

लाज(११) तणो साज सजनी, साँवरे(१२) निभायो || टेर ||
घणां दिवस लाज खोई, कछु न हाथ आयो।
माधव विहारी(१३) मिले, दुःख यह मिटायो । लाज तणो० || १ ||
मैं तो जान्यो दूर मिलहिं, बहुत निकट पायो।
भूल करके नहीं जोयो, पास में गमायो । लाज तणो० || २ ||
मैं कुमारी(१४) वह ब्रह्मचारी(१५), योग क्या मिलायो।
ऐसो योग(१६) अबके मिल्यो, जियरा सुख पायो । लाज तणो० || ३ ||

१—सर्वात्मा भाव, २—वृत्ति, ३—आत्मा, ४—बार बार जन्म मरण, ५—विचार रूपी नेत्र, ६—अपने में, ७—इन्द्रियों का समूह, ८—निजानन्द में एकत्र होना, ९—सोहंशब्द, १०—अपना स्वरूप, ११—देहाभिमान की फजीहत से बचना, १२—आत्म स्थिति, १३—सर्वव्यापक आत्मा, १४—ब्रह्म की आदि इच्छा, १५—निर्लिप्त, १६—एकत्व भाव में जुड़ना।

बहुत बहुत जन्म धरे, यौवन(१) यों गुमायो ।
मिले सो व्यभिचारी(२) मिले, पीव ना बतायो । लाज तणो० ॥ ४ ॥
देवनाथ हाथ गह, पीव को पकड़ायो ।
मान कहे मान्यो मन, मान(३) को मिटायो । लाज० तणो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल कैरवा ॥

घट के कपट पट तोड़ो ए, म्हारी सुरता प्यारी; घट के कपट पट तोड़ो ए ॥टे
यह जो कपट पट दूर न करहो, कदे य न मिलसी थारो जोड़ो(४) ए । म्हारी० ॥१
जो गिरधर सूँ मिलणो ह्वेतो, पाँच(५) पचीसाँ(६) सूँ मुख मोड़ो ए । म्हारी० ॥२
घट पट टूट मैदान होयकर, सब मिट जाचेला फोड़ो ए । म्हारी० ॥ ३
मान कहे घर में लख गोविन्द, इत उत काहे को दौड़ो ए । म्हारी० ॥ ४

॥ गान ॥

॥ राग श्याम-कल्याण । ताल तिताला ॥

काहे को सोती राचे(७) गोरी, अब घर खोल(८) ॥ टेर ।
सूती तोय अब नींद(९) कैसे आवे; बाज रयो है ढोल(१०) । कहे को० ॥ १
हेरी बावरी मान(११) कियो क्यों; हँस गिरधर से बोल(१२) । काहे को० ॥ २
यों सोते तेरो मान घटत है; निकल जायगी पोल । काहे को० ॥ ३
मानसिंह कहे प्रेम रस ऐसो; क्यों नहीं पीवत अतोल । काहे को० ॥ ४

॥ गान ॥

॥ राग श्याम-कल्याण । ताल तिताला ॥

गिरधारी प्यारे वारी तोपे, वारी घनश्याम ॥ टेर ॥

१—ज्ञान प्राप्त करने की अवस्था, २—भेद-भाव के सम्प्रदायिक लोग, ३—देहाभिमा
४—आत्मा, ५—विषय, ६—प्रकृतियाँ, ७—वृत्ति, ८—विचार कर, ९—मोह-निद्र
१०—आत्मज्ञानी पुरुषों के सदुपदेश, ११—व्यक्तित्व का अहङ्कार, १२—एकता
अनुभव कर ।

वारी वेद व्यास को वारी सुखदेव को; जिन लियो है तत्त्वज्ञान। गिर० ॥ १ ॥
विश्वगिरी हम ग्वाल और गोपी; तुम हो बचाये तमाम। गिरधारी० ॥ २ ॥
आदि इच्छा वृत्ति राधिका; व्यापक सुन्दर श्याम। गिरधारी० ॥ ३ ॥
मनसिंह लख भाव जो ऐसो; कर प्रभु में विश्राम। गिरधारी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खम्माच। ताल दादरा ॥

जाग एरी जाग सखी(१), सोयाँ पिया(२) जात(३) है ॥ टेर ॥
ऐसे मौके नाँय सोय, देगी रतन(४) हाथ खोय।
पीछे ही सिर धुन के रोय, आत नहीं पिया हाथ है। जाग एरी० ॥ १ ॥
देख दिवस चढ़(५) आय, बावरी रही लिटाय(६)।
पोल बीच रही फँसाय; उठ न अब तो रात(७) है। जाग एरी० ॥ २ ॥
जिनको अपने समझे सैन(८), वो न तुझे देंगे चैन।
मुफ्त में लगाये नैन(९), ये ठगके तुमको खात है। जाग एरी० ॥ ३ ॥
कहते तुमको जगत त्याग, इनकी मत सीख लाग।
खेलें ये तो स्वार्थ फाग, तू ही मारी जात(१०) है। जाग एरी० ॥ ४ ॥
देवनाथ हाथ गहे, तेरो रूप तोय दहे।
मान सुख क्यों न लहे, जान जहर खात है। जाग एरी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खम्माच। ताल तिताला ॥

देखो हाय(११) हाय बीच, यार (१२) हू को खोय(१३) बैठें।
भूल के भरम जाल, खोयो सब अपनो माल(१४)।

१—मन की वृत्ति, २—आत्मा, ३—आत्मज्ञान शून्य रहना, ४—उमर, ५—मनुष्य-जन्म, ६—मोह-निन्द्रा में पडे रहना, ७—पशु-पक्षी आदि मूढ योनि, ८—साम्प्रदायिक उपदेश देकर शुभचिन्तक बनने वाले स्वार्थी लोग, ९—प्रेम किया, १०—अज्ञान में जीवन गुमाना, ११—खैंचातानी, १२—आत्मा, १३—भूल गये, १४—उमर।

भूल गई घर को ख्याल(१)। यार हू को खोय० ॥ टेर॥

जोवे जाको जोयो नाँय, मोती(२) मेरो पोयो नाँय।
विश्वास हू जो होयो नाँय। यार हू को खोय बैठे। देखो हाय हाय० ॥ १ ॥
इत है जग की हाय हाय, यामें सुणने देहे नाँय।
इत हाय स्वार्थी यह। यार हू को खोय बैठे। देखो हाय हाय० ॥ २ ॥
मान को अज्ञान दूर, होयो जब ऊगो सूर(३)।
मिले जब अपनो नूर। यार हू को खोय बैठे। देखो हाय हाय० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "लाल केस्या" की। ताल धीमा कैरवा ॥

म्हारी सुरत सुहागण जाग जाग जाग अब जाग हे।
ए म्हारी सुरता प्यारी; पीयोजी बुलावे अमर(४) महल में हे ॥ टेर ॥
सैयाँ(५) म्हारी नहीं जाणाँ म्हे प्रीतम केरो गाँव हे। हे सैयाँ म्हारी;
किसड़े मारग सूँ उण घर जावसाँ हे ॥ १ ॥
सुरता प्यारी अगम (६) निगम(७) है प्रीतम केरो देश हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
चाले तो ले चालूँ उण देश में हे ॥ ६ ॥
सैयाँ म्हारी कितनो चलणो कोस एक दस कोस हे। हे सैयाँ म्हारी;
किती रे मजलों पर उण रो गाँय है हे ॥ ३ ॥
सुरता प्यारी नहिं कोई कहिये कोस एक दस कोस हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
खोजे तो मिलसी ओ प्रीतम पास में हे ॥ ४ ॥
सैयाँ म्हारी बिन जाण्याँ म्हे कैसे करसों प्रीत हे। हे सैयाँ म्हारी,
म्हाँने कोई ने मिलावे अमर पीव(८) सूँ हे ॥ ५ ॥
सुरता प्यारी चाले तो ले चालूँ म्हारे साथ हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
पड़दो तोड़ ने भेंटो पीव सूँ हे ॥ ६ ॥

१—अपना स्वरूप, २—विचार, ३—ज्ञान, ४—आत्म-स्थिति, ५—निश्चया-त्मिका बुद्धि, ६-७—इन्द्रियाँ और मनकी पहुँच से परे, ८—आत्मा।

सुरता प्यारी पहुँची पहुँची सत्गुरुजी रे पास हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
खोली तो किवाड़ी अमर महल री हे ॥ ७ ॥
सैयाँ म्हारी मिलिया मिलया देवनाथ गुरुदेव हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
मान जो निरखे रे अपणे पीव ने हे ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "लाल केस्या" की। ताल धीमा कैरवा ॥

सुरता प्यारी मत डरपो थे अपणे मन रे नाँय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
आवो नी आवो थे अमर(१) महल में हे ॥ टेर ॥
लाल केस्या(२) थाँ सूँ म्हारे कहो कदरो आ प्रीत रे। हो म्हारा लाल केस्या;
साधुड़ाँ(३) साथे थे इण घर आविया हो ॥ १ ॥
सुरता प्यारी थारे म्हारे घणाँ दिनाँ सूँ प्रीत हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
तू ही तो छोड़ने मिल गई जगत में हे ॥ २ ॥
लाल केस्या म्हे तो थाँने सुप्ने जाणों नाँय रे। हो म्हारा लाल कैस्या;
किसड़ी जागा में दोई आपाँ मिल्या हो ॥ ३ ॥
सुरता प्यारी प्रीत आपणे आज काल री नाँय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी,
अनन्ताँ जन्माँ सूँ थारे साथ में हे ॥ ४ ॥
लाल केस्या टल्या साथ सूँ आपां कहो किण काज रे। हो म्हारा लाल केस्या;
किणने छुड़ाया आपों ने संग सूँ हो ॥ ५ ॥
सुरता प्यारी कियो कियो थे विषय भोग सूँ प्यार हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
इसड़े रे कारण मूँ थाँने छोड़ दी हे ॥ ६ ॥
लाल केस्या अब मैं थाँ सूँ प्रीत लगाऊँ नाँय रे। हो म्हारा लाल केस्या;
प्रीत करूँ ने फिर थे छोड़ दो हो ॥ ७ ॥
सुरता प्यारी आव आव अब थाँने छोड़ूँ नाँय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
आदि प्रीत ने पाछी जोड़सों हे ॥ ८ ॥

१—आत्मा-स्थिति, २—आत्मा, ३—ज्ञानी पुरुष।

लाल केस्या कुण अब थाँरो मानेला इतबार रे। हो म्हारा लाल केस्या;
पुरुषाँ सूँ प्रीत मैं करती डर रही हो ॥ ९ ॥
सुरता प्यारी ऐड़ा म्हाँने पुरुष मूढ़ मत जाण हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
मैं ही तो रचायो सारे जगत ने हे ॥ १० ॥
लाल केस्या थाँरो म्हाँने नहीं आवे विश्वास रे। हो म्हारा लाल केस्या;
पहला छोड़ी ज्यूँ फिर म्हाँने छोड़ दो हो ॥ ११ ॥
सुरता प्यारी नहीं मैं छोड़ी फिर भी छोड़ूँ नाँय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
तू ही ने अलूजी जाय ने जगत में हे ॥ १२ ॥
लाल केस्या जद म्हाँने थारो होवे इतबार रे ॥ हो म्हारा लाल केस्या;
सत्गुरु तो आवे ने देवे साकशी(१) हो ॥ १३ ॥
सुरता प्यारी सत्गुरु मिल गया आय नें म्हारे माँय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
न्यारा तो नहीं फिर किण री साकशी हे ॥ १४ ॥
लाल केस्या काँई है आ थारी आदू जात रे। हो म्हारा लाल केस्या;
किसड़े रे गढ़ाँ रा थे हो राजवी हो ॥ १५ ॥
सुरता प्यारी आदि अनादि ब्रह्म है म्हारी जात हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
अखिल ब्रह्मण्ड रा म्हे तो राजवी हे ॥ १६ ॥
लाल केस्या कुण है थारा माय बाप भाई बन्धु रे। हो म्हारा लाल केस्या;
किसड़ी रे न्याती रा कहीजो सारसा(२) हो ॥ १७ ॥
सुरता प्यारी माय बाप सब जग है भाई बन्धु हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
अखिल जगत तो म्हारी न्यात है हे ॥ १८ ॥
लाल केस्या इसड़ो वर म्हारे मन में दाय न आय रे। हो म्हारा लाल केस्या;
जाति पाँति सूँ हीण ने क्या कराँ हो ॥ १९ ॥
सुरता प्यारी विश्व जिको है सगली म्हारी जात हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;

१—गवाही, २—शामिल।

आवे तो मिलाऊँ म्हारी जात में हे ॥ २० ॥

लाल केस्या साच कहो म्हांने सार सार समझाय रे। हो म्हारा लाल केस्या;
थारी बोली में मैं समझी नहीं हो ॥ २१ ॥

सुरता प्यारी आतम है ओ सबी जगत रे माँय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
आतम तो केवे सो म्हाँने जाणले हे ॥ २२ ॥

सुरता प्यारी भेद बतायो देवनाथ मस्तान हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
ओई रे अमरपुर रो महल है हे ॥ २३ ॥

लाल केस्या जाणी जाणी असल आपरी जात रे। हो म्हारा लाल केस्या;
बाहर जोवत ने घर में आ मिल्या हो ॥ २४ ॥

लाल केस्या अब नहीं है थाँने बाहर ढूँढण रो काम रे। हो म्हारा लाल केस्या;
घर में मिलिया अब बाहिर कुण फिरे हो ॥ २५ ॥

सन्तो म्हारा छोड़ो छोड़ो जग री झूठ दुकान(१) रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
सूको(२) ने ओ ब्रह्म थाँरो फेंक दो हो ॥ २६ ॥

सन्तो म्हारा लाल केसियो प्राणों रो अधार रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
नीरस ने ब्रह्म थाँरो अलगो राखजो हो ॥ २७ ॥

सन्तो म्हारा लाल केसियो रसमय(३) जगरो अधार रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
सूके लकड़े ने म्हे तो क्या करां हो ॥ २८ ॥

सन्तो म्हारा नहीं ओ भावे लकड़(४) सो वेदान्त रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
म्हारो तो ब्रह्म ओ जग में खेल रयो हो ॥ २९ ॥

सन्तो म्हारा मिलिया मिलिया देवनाथ मस्तान(५) रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
जिण ने मिलाया असली पीव ने हो ॥ ३० ॥

१—वाचक ब्रह्म की सम्प्रदाय, २—जगत से अलग निर्गुण, ३—सगुण अथवा सब रसों और गुणों का भोक्ता पुरुष, ४—सूखा, नीरस, जगत का त्याग करने वाला, ५—आत्मज्ञानी।

सन्तो म्हारा गावे गावे मानसिंह राइठोड़(१) रे। है कोई सन्तो म्हारा;
राह(२) ने लखिया(३) म्हे 'राइठोड़ी' (४) भया हो ॥ ३१ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "लाल केस्या" की। ताल कैरवा ॥

लाल(५) केस्या समझ समझ तू अपणे मन रे माँय रे।
हो म्हारा लाल केस्या; समझे जिकेई नर सूरवाँ रे ॥ टेर ॥
लाल केस्या अणसमझयाँ ने होसी कष्ट अपार रे।
हो म्हारा लाल केस्या; समझया जिके तो पार हो जावसी रे ॥ १ ॥
लाल केस्या अटक्या सो नर रह गया अधबिच माँय रे।
हो म्हारा लाल केस्या; अपणे तो सीधे मग सूँ चालणो रे ॥ २ ॥
लाल केस्या समझे ज्याँने देवो सही समझाय रे।
हो म्हारा लाल केस्या; नहीं तो सकझे ज्याँने अलगा जाणदो रे ॥ ३ ॥
लाल केस्या जब तक रहणो इण जगड़े रे माँय रे।
हो म्हारा लाल केस्या; चाले जिकाँने संग ले चालणो ॥ ४ ॥
लाल केस्या हर दम रहणो मन में लाल गुलाल रे।
हो म्हारा लाल केस्या; काले ने करमों रे नेड़ो न जावणो रे ॥ ५ ॥
लाल केस्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र कोई होय रे।
हो म्हारा लाल केस्या; आवे जिकाँने तो करलों आपसा रे ॥ ६ ॥
लाल केस्या करदों करदों असल गाय रो सिंह रे।
हो म्हारा लाल केस्या; शस्त्र बाँधे रे जम रे बारणे रे ॥ ७ ॥
लाल केस्या कदे न आवे जम दूतों सूँ हार रे।
हो म्हारा लाल केस्या; शीश उतार ने लड़े चौक में रे ॥ ८ ॥

१— राठोड़ राजपूत अथवा सत्य मारग को जानने वाला, २—सत्य मा[रग]
३—जाना ४—सत्य मारग में स्थित, ५—जिज्ञासु मन।

लाल केस्या लड़िया लड़िया जनक और शुकदेव रे।
हो म्हारा लाल केस्या; गोरख लड़िया ने लड़िया भरथरी रे ॥ ९ ॥
लाल केस्या लड़िया लड़िया कबीर और रविदास रे।
हो म्हारा लाल केस्या; पीपे मारयो रे पैलो मरचो रे ॥ १० ॥
लाल केस्या आई आई अबके अपणी वार रे।
हो म्हारा लाल केस्या; अबके हारया तो फिर नहीं जीतणों रे ॥ ११ ॥
लाल केस्या ऊभा ऊभा आपां मोक्ष रे द्वार रे।
हो म्हारा लाल केस्या; अबके चूका तो फिर कब अवसाँ रे ॥ १२ ॥
लाल केस्या तोड़ो तोड़ो हद बेहद रो मोड़ रे।
हो म्हारा लाल केस्या; चढ़ ने शिखर गढ़ ने भेलदो है ॥ १३ ॥
लाल केस्या फिरताँ फिरताँ हुई मोकली वार रे।
हो म्हारा लाल केस्या; अबके आया रे असली मोरचे रे ॥ १४ ॥
लाल केस्या काम क्रोध मद लोभ ने राखो त्यार रे।
हो म्हारा लाल केस्या; ज्ञान होली में इणने बाल दो रे ॥ १५ ॥
लाल केस्या ऊगे ऊगे शम समता रो सूर रे।
हो म्हारा लाल केस्या; जिणने जाणो होली परभात सों रे ॥ १६ ॥
लाल केस्या पायो पायो देवनाथ सूँ ज्ञान रे।
हो म्हारा लाल केस्या; नाथ न मिलता तो यूँ ही रह जावता रे ॥ १७ ॥
लाल केस्या मानसिंह यूँ हरदम लाल सुरंग रे।
हो म्हारा लाल केस्या; फिर कोई आवे तो करलूँ म्हाँ जिसा रे ॥ १८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "गूजर" की । ताल कैरवा ॥

हाँ ए सुरता सूताँ सरसी नाँय; अब उठ जागो ए ॥ टेर ॥
सूती रही तू जन्म अनेक। अब तो कीजे समझ विवेक।
हाँ ए सुरता भरम कूप ने त्याग; अब उठ जागो ए ॥ १ ॥

मनुष्य देह सो यह आनन्द । इनमें रहणो होय निर्वन्ध ।
हाँ ए सुरता बन्ध ने तोड़ बगाय, अब उठ० ॥ २ ॥
बहुत जन्म तैं लीवी नींद । अब क्या सोवे मुढ मति हीन ।
हाँ ए सुरता मौज अमोल ना गुमाय, अब उठ० ॥ ३ ॥
देवनाथ सत् गुरु समझाय । मनुषा तन के मोरचे आय ।
हाँ ए सुरता भाग हीन सोई जाय, अब उठ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "गूजर की । ताल कैरवा ॥

हाँ ए सुरता भल भल जागी(१) तू तो आज, पिया भल पायो ए ॥ टेर ॥
हाँ ए सुरता भेद भरम ने भाँग, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता रही रे भलाँई तू जाग, पिया भल पायो ए ॥ १ ॥
हाँ ए सुरता प्रेम पियालो मस्तान, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता पीते ही पिया लियो जान, पिया भल पायो ए ॥ २ ॥
हाँ ए सुरता तोड़्यो तोड़्यो द्वैत विकार, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता उपज्यो ब्रह्म विचार, पिया भल पायो ए ॥ ३ ॥
हाँ ए सुरता दूर गयो है अभिमान, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता जद भयो उर निज ज्ञान, पिया भल पायो ए ॥ ४ ॥
हाँ ए सुरता गावे नृपति यूँ मान, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता दियो अमी(२) खूब छाण, पिया भल पायो ए ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मारवाड़ी "गूजर" की । ताल कैरवा ॥

हाँ ए सुरता निज आतम थारो पीव, ज्याँने क्यूँ भूली ए ॥ टेर ॥
हाँ ए सुरता गावे ज्याँने वेद पुराण, ज्याँने क्यूँ भूली ए ।

१—सँभली, २—ज्ञानामृत ।

हाँ ए सुरता रट स्या गुणीजन महान, ज्याँने क्यूँ भूली ए ॥ १ ॥
हाँ ए सुरता अरध(१) उरध(२) बिच जोय, ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता मन ममता ने-परी खोय, ज्याँने क्यूँ भूली ए॥ २ ॥
हाँ ए सुरता अष्ट कमल(३) को छेद; ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता निज मन करले भेद, ज्याँने क्यूँ भूली ए॥ ३ ॥
हाँ ए सुरता बाहर क्यूँ भटकाय, ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता घर में ओलख मिल जाय, ज्याँने क्यूँ भूली ए॥ ४ ॥
हाँ ए सुरता दियो सत्गुरु प्यालो पाय, ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता फिर क्यूँ रही उलझाय; ज्याँने क्यूँ भूली ए॥ ५ ॥
हाँ ए सुरता मिल्या गुरुदेव मस्तान; ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता निर्भय ओलख पद मान; ज्याँने क्यूँ भूली ए॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारग, तर्ज "बीजा सोरठ" की। ताल दीपचन्दी ॥

भई है सुरता बावरी(४) रे इणने निज पिया(५) सूझत नाँय ॥ टेर ॥
मद(६) में छकी(७) सुरता सुन्दरी रे बाला निज पिया दियो बिसराय।
अवराँ ने पूछत फिरे रे म्हारो कोईयक पीव बताय। भई है० ॥ १ ॥
एक अविद्या छाकटी(८) रे इणने बाताँ(९) में लिवी बिलमाय।
पाँच(१०) पचीसों(११) रे मेल सूँ रे आतो छक रही मदड़े रे माँय। भई है० ॥ २ ॥
मदड़ो विषय रो पावियो रे इणने दियो रे होश बिसराय।
प्रीव करी मनड़े तणी आतो दिन दिन कर्म कमाय। भई है० ॥ ३ ॥
मनवे रे सँग सैलाँ(१२) करे रे आतो घड़ी पल ठहरे नाँय।
इण साकट(१३) रे पाने(१४) पड़ी रे अबतो दियो है रतन(१५) लुटाय। भई० ॥४॥

१-२—ऊपर, नीचे सर्वत्र, ३—अष्ट प्रकार की प्रकृति ४—मोहित, ५—आत्मा, ६—विषय, ७—भरी ८—चालाक, ९—रोचक, भयानक वचन, १० इन्द्रियाँ, ११—प्रकृतियाँ १२—दौड़ती रहे, १३—बदमाश, १४—सङ्ग किया, १५—ऊमर।

जोवन(१) थकाँ तो सुरता नहीं लखी रे आतो रही रे विषय में लिपटाय।
पिंजर(२) हो गया जोजरा(३) रे इणने तोई मन छोड़े नाँय। भई है० ॥५॥
मरे जनमे और फिर मरे रे आतो भटक भटक दुःख पाय।
साकट रे पाने पड़ी रे इणने सुखड़ो कठा सूँ आय। भई है० ॥ ६॥
जन्म अनन्ताँ भोगिया रे इणने अजहूँ तृप्ति नहिं पाय।
किण सूँ ही हटकी ना रहे रे आतो दौड़ी विषय बिच जाय। भई है० ॥ ७॥
ज्ञान पिता ने छोड़ियो इणतो चारों भ्रात(४) छिटकाय।
विद्या उर में है नहीं रे इणने किण विध श्याम मिलाय। भई है० ॥ ८॥
सत्गुरु मिलिया सूरमाँ रे इणने कर ललकार बुलाय।
बात(५) कहे दोरी लगे इणरे बात समझ नहीं आय। भई है० ॥ ६॥
भिन्न भिन्न कर समझा रह्या रे इणने कई परमाण सुणाय।
लाख जतन किया मान रे रे वाँ तो लिवी है सुरत समझाय। भई है० ॥ १०॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मावराड़ी "रुण झुणिये" की। ताल कैरवा ॥

प्यारी (६) सूताँ सरसी नाँय, नींद(७) उड़ाय परी।
प्यारी सूताँ दूर(८) रह जाय, नींद उड़ाय परी ॥ टेर ॥
प्यारी रही घणा दिन नींद में तैं मानी नहीं।
तू अबे ही समझ मन माँय, नीन्द उड़ाय परी ॥ १ ॥
प्यारी एक वार तने क्या कहूँ कहूँ घड़ी घड़ी।
ओ वक्त अमोलक जाय, नींद उड़ाय परी ॥ २ ॥
प्यारी क्यों विष खावे बावरी तज अमर(९) जड़ी।
ज्याने लेत अमर होय जाय, नींद उड़ाय परी ॥ ३ ॥

१—ज्ञान-प्राप्ति की युवा अवस्था, २—शरीर, ३—बुढ़ापे से जरजर, ४—सम, सन्तोष, विचार और सत्सङ्ग, ५—सद्उपदेश, ६—मन की वृत्ति, ७—मोह निद्रा, ८—आत्मा से अलग, ९—आत्मानन्द।

प्यारी आँख(१) खोल के देख जरा क्या खड़ी खड़ी।
तू प्रीतम रूप समाय, नीन्द उड़ाय परी ॥ ४ ॥
प्यारी देवनाथ को सङ्ग कियाँ नित हरी हरी।
तू कबहू सूखे नाँय, नीन्द उड़ाय परी ॥ ५ ॥
प्यारी मान कहे री बावरी अभिमान भरी।
तने फिर कई मिलसी नाँय, नीन्द उड़ाय परी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "रूण झुणिये" की। ताल कैरवा ॥

आओ आओ म्हारी सुरता नार; पिया से मिल रहणो।
अब करो चौगणो प्यार; पिया से मिल रहणो ॥ टेर ॥
प्यारी स्वार्थियों(२) रे फन्द में अब क्यों वेणो।
याँने दूर करो दिरकार(३); पिया से मिल० ॥ १ ॥
प्यारी मारग मिलियो आछो(४) ऊजड़(५) क्यों बहणो।
क्यों बहो काँटा री धार; पिया से मिल० ॥ २ ॥
प्यारी ओ दुःखड़ो स्वारथ तणो सिर क्यों सहणो।
अब तुरत उतारो भार; पिया से मिल० ॥ ३ ॥
प्यारी पन्थापन्थ री पोल में सिर क्यों देणो।
प्यारी क्यों डूबे मझधार; पिया से मिल० ॥ ४ ॥
प्यारी भलो समागम नाथ रो सो क्या कहणो।
ए तो मिल्या कृष्ण अवतार; पिया से० ॥ ५ ॥
प्यारी मान कहे एरी मान परी चित्त में लेणो।
फिर मरे न दूजी बार; पिया से० ॥ ६ ॥

१—विचार रूपी नेत्र, २—भेदवादी साम्प्रदायिक लोग, ३—धिक्कार, ४—ज्ञान-मारग, ५—साम्प्रदायिक अन्धविश्वास।

|| गान ||

|| तर्ज मारवाड़ी "रुण झुणिये" की । ताल कैरवा ||

प्यारी(१) अब तो पीहर(२) ने त्याग; चालो सासरिये(३) ||टेर||
प्रेम प्याला यहाँ ना मिले; मिले सासरिये ।
प्यारी धर उर में वैराग; चालो सासरिये || १ ||
खैंच तांण में बहुत फस्या; चालो सासरिये ।
उठे कबहु न होय दुहाग(४); चालो सासरिये || २ ||
पर पुरुषों(५) प्रीति नाँय करो; चालो सासरिये ।
उठे होवे अमर सुहाग(६); चालो सासरिये || ३ ||
करम करम तू क्या रोवे; चालो सासरिये ।
अब मेट करम रो दाग(७); चालो सासरिये ||४ ||
देवनाथ गुरू आन मिल्या; चालो सासरिये ।
अब जगे मान के भाग; चालो सासरिये || ५ ||

|| गान ||

|| तर्ज मारवाड़ी "रुण झुणिये" की । ताल कैरवा ||

मन भावे मदनगोपाल, गिरधर बनवारी || टेर ||
सब बन माँये खेल रयो ओ बनवारी । ओ कर रयो खेल अपार, गि० ||१||
अन्धविश्वासी भूल न जाणे बनवारी । ओ सबको है करतार, गि० ||२||
विश्व गिरि कर पैं धर्यो इन बनवारी । ओ खेल रयो संसार, गि० ||३||
भूल भरम सूँ न्यारो रहे ओ बनवारी । ओ सब में मेरो लाल, गि० ||४||
विश्व बगीचो बाय रयो ओ बनवारी । ज्या में क्यारा खुल्या अपार, गि० ||५||
देवनाथ गुरु साँची कही मिल्यो बनवारी । अब मान एक आधार, गि० ||६||

१—मन की वृत्ति, २—देहाध्यास, ३—आत्मज्ञान, ४—दुःख, ५—भेदवादी कर्मकाण्डी लोग, ६—नित्यानन्द, ७—कर्मों का मैल ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की । ताल कैरवा ॥

मान मान म्हारी सुरत सुहागण मती विषय बिच भूल,
उण घर चाल परी ॥ टेर ॥
तीन लोक में फिरी भटकती किण ही न तोय मिलायो हरी ।
जो तू म्हारे कहणो करले तो जेज न एक घड़ी । उण घर चाल परी ॥ १ ॥
जिण जिण पास गई तू सुरता, उण उण थाँ में कुबध करी ।
म्हारे साथ अब आवे तो थाँने पाऊँ अमर जड़ी । उण घर चाल परी ॥ २ ॥
नहीं तो साचा सत गुरु मिलिया, नहीं वृत्ति नारी सुधरी ।
जाण्याँ बिना कैसे मारग पावे, फिर रही गली गली । उण घर चाल परी ॥ ३ ॥
खान विषय रो पान विषय रो, चाल विषय री मान परी ।
सत गुरु बिना अब कौन छुड़ावे, उलटी बँधी पड़ी । उण घर चाल परी ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु सज्जन मिलिया, बात सुधार दिवी बिगरी ।
मान कहे कोई आवो तो तारूँ, देऊँ प्रेम डगरी । उण घर चाल परी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार तर्ज "वाणी" की । ताल दीपचन्दी ॥

चाल सुहागण सुन्दरी(१), थाँने पीव(२) बुलावे ।
ही तू घणा दिन बाव(३) रे, अब क्यूँ श्यान गुमावे जी ॥ टेर ॥
चंचल चपलता ने छोड़ दे, फिर बण जा तू सैणी ।
कटु(४) बचनाँ ने परहरो, होय तू कोकिल(५) बैणी जी । चाल० ॥ १ ॥
असली आनन्द उण देश(६) में, जठे थारो प्रीतम प्यारो ।
शहर(७) रयाँ सूँ मिलसी नहीं, रहसी थाँ सूँ न्यारो जी । चाल० ॥ २ ॥
हद मङ्गल होय रया; तू क्यों आनन्द खोवे ।

१—मन की वृत्ति, २—आत्मा, ३—अज्ञान में, ४—राग-द्वेष, ५—प्रेम में पगी हुई, ६—आत्म-ज्ञान, ७—अज्ञान की दशा ।

चाल पीयाजी री सैज(१) में, क्यों तू अकेली(२) सोवे जी । चाल० ॥ ३ ॥
देवनाथ मिलिया पारखी, थाँने निज परखावे(३) ।
परखण री तो हिम्मत नहीं, परख्योड़ा(४) नाँय उठावे जी । चाल० ॥ ४ ॥
मान कहे री मान बावरी, फेर मौको नहीं आवे ।
आयोड़ो अवसर जो चूकसी, भवजल गहरो कहावे जी । चाल० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सजनी(५) ए प्यारी समता रो प्यालो पीव, जिके सूँ थाँने आनन्द आवे हे ॥टेर॥
द्वैत विकार घणा दिन पीयो ए । सजनी ए थाँरो दुःख पायो जासूँ जीव,
करमाँ सूँ कोई न छुड़ावे हे ॥ १ ॥
हरष शोक सब सम कर जाणो ए । सजनी ए म्हारी जद मिलसी थाँरो पीव(६)
पिया बीच सहज समावे हे ॥ २ ॥
थारो तत्त्व(७) तत्त्व में तू है ए । सजनी ए म्हारी होय जावो तत्त्व के रूप,
काल फिर नाँय सतावे हे ॥ ३ ॥
नारी न पुरुष पुरुष नहीं नारी ए । सजनी ए म्हारी देह तणो तज भाव,
एक रस सबने खेलावे हे ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मदवा(८) रसिया ए । सजनी ए म्हारी मान के मन घणो चाव
मान ने दूर हटावे हे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सईयाँ ए म्हारी चालो चालो जमना रे तीर, माधवजी सूँ प्रेम लगास्याँ ए ॥टेर॥
गम केरी गोकुल सुरधनी मथुरा ए । सईयाँ ए म्हारी खेलत श्याम शरीर,
जिकाँ रो थाँने दरस दिखास्याँ ए ॥ १ ॥

१—एकता का ज्ञान, २—पृथकता का भाव, ३—अनुभव करावे, ४—आत्मानुभ ज्ञानी पुरुषों के वचन, ५—मन की वृत्ति, ६—आत्मा, ७—आत्मा, ८—आत्म ज्ञानरूपीमद पिलाने वाला ।

मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ग्वालिया ए । सईयाँ ए म्हारी श्याम हरे भव पीर,
जिकाँरा थाँने वैण सुणास्याँ ए ॥ २ ॥
जरणा केरी जमना नदी है ए । सईयाँ ए म्हारी वेवे वेवे समता रो नीर,
माधव सङ्ग हिल मिल न्हास्याँ ए ॥ ३ ॥
सत्गुरु चतुर मिल्या मोये ऐसा ए । सईयाँ ए म्हारी पलट पलट कराँ बात,
ज्ञान रस माल उड़ास्याँ ए ॥ ४ ॥
मान केवे म्हारो कहणो मानो ए । सईयाँ ए म्हारी पाऊँ मैं ब्रह्म रस खीर,
पोल से पृथक बचास्याँ ए ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तज "निहालदे" की । ताल दीपचन्दी ॥

सुरता गोरी अब तो जगाले(१) थारे पीव(२) ने हो राज ॥ टेर ॥
क्या जोवे सुरता सुन्दरी ए, थारो पिया सूतो(३) घर माँय ।
तू तो फिरे बाहर भटकती ए, थारे कहो किम निजराँ आय ।
कहो किम निजराँ आय; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥१॥
पन्थापन्थ री भौड़ में ए, रही निज पिया ने भूल ।
आनन्द हिन्डोरो छोड़ियो ए, दुःख भूले रही भूल ।
दुःख भूले रही भूल; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥२॥
जो तू चाहे ब्रह्म भूलणो ए, तो साचो सत्गुरु भेट ।
पन्थापन्थी थाँने मारसी ए, ए कदे न ले जावे थाँने ठेठ ।
कदे न ले जावे थाँने ठेठ; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥३॥
देवनाथ निष्पक्ष है ए, म्हारो कर पकड़्यो मजबूत ।
मान बुरो नहीं तो होवती ए, पकड़ लेता जमदूत(४) ।
पकड़ लेता जमदूत; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥४॥

१—जानले, २—आत्मा, ३—अदृश्य, ४—कर्मों के बन्धन ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डंके" की । ताल कैरवा ॥

हठ(१) छोड़ बावरी(२), थाँने मिलाऊँ पिव प्यारो ए।
पर घर मत जावो, घर में मिलाऊँ गिरधर थारो ए ॥ टेर ॥
घर को मन्दिर(३) तैं ढक लीनो, दौड़ दौड़ चित बाहर दीनो।
जिण सूँ नाराज अपारो ए। हठ छोड़० ॥ १ ॥
उमापति और रमापति कहे, दौड़ दौड़ दुःख सिर बहुत ही सहे।
अब यह दुःखड़ो निवारो ए। हठ छोड़० ॥ २ ॥
नित ए खोले नित जड़वावे, बतलायाँ कछु नाँय सुणावे।
या सूँ रयो पिव न्यारो ए। हठ छोड़० ॥ ३ ॥
ऊँचे स्वर गावो, निरत दिखावो, विनय सुनावो।
उत्तर न देत लिगारो ए। हठ छोड़० ॥ ४ ॥
खण्ड न मण्डा, देव अखण्डा, तजो पाखण्डा।
रतन(४) मुफ़त मत हारो ए। हठ छोड़० ॥ ५ ॥
मान पिछाना, भग्यो अज्ञाना, ऊग्यो भाना(५)।
क्यों अब दीपक बारो(६) ए। हठ छोड़० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डंके" की । ताल कैरवा ॥

आवो आवो म्हारी सुरता, थाँने मिलावाँ पिव(७) थारो ए।
जिण सूँ ओ, जन्म मरण मिटे सारो ए ॥ टेर ॥
खूब फिराई, तोय भटकाई, दुःख तू पाई।
ज्ञान पिलाऊँ अमी प्यारो ए। आवो आवो ॥ १ ॥

१—अन्धविश्वास, २—वृत्ति, ३—अन्तःकरण, ४—मनुष्य जन्म, ५—सूर्य, ६—आरती करना, ७—आत्मा।

विषय में लागी, रह गई आगी, अब ही जागी।
सत् गुरु मिल्यो मतवारो ए। आवो आवो० ॥ २ ॥
छोड़ सम्बन्धी(१), न्यारी बन्धी, हो रही अन्धी।
उर बिच छायो अन्धियारो ए। आवो आवो० ॥ ३ ॥
नित रङ्ग भीनी, रहे नवीनी, आतम चीनी।
चीने तो दुख मिटे थारो ए। आवो आवो० ॥ ४ ॥
देव दयाला, करी कृपाला, कर दियो न्याला।
मान सुधारयो कर्म सारो ए। आवो आवो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डंके" की। ताल कैरवा ॥

चालो सैयाँ(२), सैज्याँ(३) अलबेला(४) जी री चालो हे।
तुरिये(५) पद में, अमर(६) रहो ने नित मालो(७) हे ॥ टेर ॥
बिन थंभाँ(८) बिन महल(९) चिणाया, बिन बरणो(१०) का महल सजाया।
पीव कहीजे मतवालो(११) हे। चालो सैयाँ० ॥ १ ॥
बरस्यो मेहा(१२), अजब सनेहा, पीव विदेहा(१३)
सगले ही जग सूँ निरालो हे। चालो सैयाँ० ॥ २ ॥
देवनाथ गुरु मेरे स्वामी, अन्तर्यामी।
मान उतारयो कर्म कालो(१४) हे। चालो सैयाँ० ॥३॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डंके" की। ताल कैरवा ॥

आओ म्हारी सैयाँ(१५), रसियोई(१६) राम(१७) रीझावो(१८) रे।

१—अपना आप=आत्मा, २—मन की वृत्ति, ३—एकता का अनुभव, ४—आत्मा, ५—आत्म-स्थिति, ६—अविनाशी, ७—मस्त, ८—निराधार, ९—स्थिति, १०—वर्णनातीत, ११—आनन्द-स्वरूप, १२—प्रेम, १३—देह भाव से अलिप्त, १४—राग-द्वेष युक्त, १५—मन की वृत्ति, १६—सब रसों का भोक्ता=स्वामी, १७—सबै में रमने वाला आत्मा, १८—आत्म-प्रसन्नता।

गावो म्हारी सैयाँ, ब्रह्म आनन्द गुण गावो रे ।। टेर ।।
मन सुख पावे, प्रीतम आवे, गले(१) लगावे;
जन्म मरण सूँ छूट जावो रे । आवो म्हारी० ।। १ ।।
सब में बोले, हँसता(२) डोले, पड़दे ने खोले;
गुरुमुख होय मिल जावो रे । आवो म्हारी० ।। २ ।।
पिया रसीलो, अजब रँगीलो, सब गुण शीलो;
सबही के माँय समावो रे । आवो म्हारी० ।। ३ ।।
मीठी(३) गावो, राम रिझावो, पिया मिलावो;
अजर अमर हुय जावो रे । आवो म्हारी० ।। ४ ।।
देवहूनाथा, पकड़्यो हाथा, कियो सनाथा(४);
राख्यो बहजाता गुण गावो रे । आवो म्हारी० ।। ५ ।।
मान नवेली(५), रही न अकेली(६), नित अलवेली(७),
अमर सुहाग(८) सजावो रे । आवो म्हारी० ।। ६ ।।

।। गान ।।

।। तर्ज "मारवाड़ी गाली के डंके" की । ताल कैरवा ।।

रे मन मेरा, आतम तत्त्व पछाणो रे ।
जिण सूँ, मिट जाय आणो ने जाणो रे ।। टेर ।।
आतम पावो, भरम मिटावो, मौज उड़ावो;
मिट जावे जम रो धींगाणो(९) रे । मन मेरा० ।। १ ।।
निर्भय हो जावो, जन्म न पावो, सहज समावो;
अपनो ही रूप जग जाणो रे । मन मेरा० ।। २ ।।
यह संसारा, रूप तुमारा, नहीं कोई न्यारा;

१—एकता का अनुभव करना, २—आनन्द-स्वरूप, ३—प्रेमयुक्त, ४—आप; अंतः- करण आदि का स्वामी, ५—नित्य शुद्ध, ६—अलग, ७—... ८—आत्माकार, ९—जबरदस्ती ।

भूल के झूठी हठ ठाणो रे । मन मेरा० ॥ ३ ॥
मत मन मोवो, दुविधा खोवो, ब्रह्म में सोचो;
जब निज रूप ओलखाना रे । मन मेरा० ॥ ४ ॥
सत् गुरु साथा, भयो सनाथा(१), पकड़्यो हाथा;
भवजल बहत बचाना रे । मन मेरा० ॥ ५ ॥
कहे यों मानं, डछ्यो अभिमानं, भयो पिछानं;
पियो अमी(२) नित छाना(३) रे । मन मेरा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के ढंके "सगीजी ने वरजण आया" की । ताल कैरवा ॥

हाँ चलो सखी देश हमारे । जहाँ मिले निज प्रीतम प्यारे ।
घणा दिवस रही दूर पिया से, माज़ मुफ्त में हारे; चल देश हमारे ॥ टेर ॥
चार चकोर ले अपने साथ । सत् गुरु अपने सिर धर हाथ ।
पार करे यामें संशय न करनो, लाखों ही पार उतारे; करदे भव पारे । हाँ० ॥१॥
अजब खिलारी है घनश्याम । सब में पूरण आतमराम ।
पास रह्यो पण भूल गई तू, बाहर पड़ी झख मारे; सिर मार तुम्हारे । हाँ० ॥२॥
कूड़ो करे तू देह अहंकार । तुझसी है को मूढ़ गँवार ।
जीवन रतन ने खोय विषयन में, पीछे कहा सिर मारे; माणिक को हारे । हाँ० ॥३॥
करो सत् गुरु शब्दों विश्वास । तजदे प्यारी विषय की आस ।
मान कहे री मान बावरी, क्यों नहिं नैन निहारे; ब्रह्म नाँहि विचारे । हाँ० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के ढंके "सगीजी ने वरजण आया" की । ताल कैरवा ॥

हाँ निरख निज रूप तिहारो । सब घट सुन्दर श्याम पियारो ।
भरम नींद देवो खोय बावरी, जनम सुफल होवे थारो । निज रूप ति० ॥ टेर ॥
आदि अमर अविनाशी देव । जिणरी करत जगत सब सेव ।

१—अपना आप, अंतःकरण आदि का स्वामी, २—ज्ञानामृत, ३—विचार पूर्वक ।

आप खेलावे आप ही खेले, खेल रूप है प्यारो; माधव मतवालो। हाँ० ॥१॥
क्यों हो रही विष रस मस्तान। प्यारी दूर करो अज्ञान।
जाण बूझ विष कदे न खाओ, मत होय मरण तैयारो; अब भरम निवारो। हाँ० ॥२॥
क्यों बाहर भटके तू नार। तेरो दरसण तुझ में त्यार।
मन मन्दिर में आय सुन्दरी, मिट जावे भरम अन्धारो; नहीं आवे कारो। हाँ० ॥३॥
नर नारी सुनलो सब कोय। वृत्ति ने घर लावो जोय।
मानसिंह जद वृत्ति माने, दुःख मिट जावे सारो; नहीं रहवे न्यारो। हाँ० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के ढंके "सगीजी ने वरजण आया" की। ताल केरवा ॥

हाँ समझ निज मारग आवो। ऊजड़ पन्थ कोई मत जावो।
ऊजड़ जावे ज्याँने अति दुःख होवे, कहूँ सो हिरदे में लावो;
मन मत बिसरावो। हाँ समझ ॥ टेर ॥
भरम भूल को देवो मिटाय। मानुष जन्म सफल होय जाय।
समझ बूझ कर कहो क्या कारण, जहर डली मुख खावो;
मरणो क्यों चावो। हाँ समझ० ॥ १ ॥
त्याग त्याग की सुन कर बात। मत कोई मन होवो हैरान।
त्याग त्याग को करलो जगत में, त्यागी असल कहावो;
पाछा नहीं आवो। हाँ समझ० ॥ २ ॥
तन रंग के मन रंग चढ़ाय। मन रँगिया फिर बुद्धि रँगाय।
यूँ कर रंगले सो सुख पावे, सहज पार होय जावो;
जद दर्शन पावो। हाँ समझ० ॥ ३ ॥
जो तन मन दोनूँ रँग जाय। वस्त्र रंगे नहिं परवाह नाँय।
असल सन्यासी होय जगत में, आप तिरो ने तिरावो;
जद नाम कमावो। हाँ समझ० ॥ ४ ॥
कईयक वार प्रमाण सुणाय। फिर भी कहूँ नहीं रखूँ छिपाय।

मन रँगिया है सन्त अनन्तों, ज्याँरी शरण में जावो;
निभय होय जावो। हाँ समझ० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु असली सन्त। जिण दीनो मोहे सीधो पन्थ।
पगडँडी ने त्याग परे री, सीधी सड़क सिधावो;
जद सहज समावो। हाँ समझ० ॥ ६ ॥
मानसिंह उण पन्थ सूँ प्यार। जिण ने गावे वेद जो चार।
नेति नेति कहे अनन्त गुणा है, गुण में गुण मिल जावो;
फिर ना दरसावो। हाँ समज० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंजे" के गीतों की। ताल कैरवा ॥

अब मान बावरी(१), चालो पीयाजी(२) रे देश(३) रे।
चालो पीयाजी रे देश रे ए हाँ हाँ हाँ हाँ। अब मान बावरी० ॥ टेर ॥
देश चलो प्रीतम तणे स थाँरो जन्म मरण मिट जाय; हाँ हाँ देश चालो।
अमर पिया ने पावसो स थाँने काल कदे नहिं खाय; हाँ हाँ अमर पिया ने०।
जन्म मरण में भटकताँ स थाँने, कई दिन गया बिताय;
हे अब मान बावरी, चालो पियाजी रे० ॥ १ ॥
नहीं चालूँ प्रीतम, जाण्याँ बिन थाँरो किसड़ो देश हो।
जाण्याँ बिन थाँरो किसड़ो देश हो, ए हाँ हाँ हाँ हाँ। नहीं चालूँ प्रीतम ॥ टेर ॥
कौन देश क्या गाँव है स कोई किसड़ो मारग जाय; हाँ हाँ कौन देश।
कौन दिशा में चालणो स बाला पहले देवो बताय; हाँ हाँ कौन दिशा में।
बिन गम बिन मैं ना चलूँ सरे, बाहर निकलूँ नाँय; हो नहीं चालूँ प्रीतम० ॥२॥
एक पैंड चलणो नहीं सरे नहीं मारग को काम; हाँ हाँ एक पैंड चलणो०।
तेरो तुझ में पीव है सरे परगट आतम राम; हाँ हाँ तेरो तुझ में पीव।
तू तो भूली बावरी सरे, रही क्यों विषय गुलाम; हे अब मान बावरी० ॥३॥

१—मन की वृत्ति, २—आत्मा, ३—स्थिति।

इसड़ी बात थे क्या केवो स बाला म्हाँने अचरज आय; हाँ हाँ इसड़ी बात थे०।
नेड़ो घणो बताविओ स बाला पहले जाण्यो नाँय; हाँ हाँ नेड़ो घणो०।
भटक भटक मैं हारगी सरे, जिण सूँ डर मन आय; हो नहीं चालूँ०॥ ४॥
अब समझी तो उठ चलो स प्यारी जागी जभी परभात; हाँ हाँ अब समझ०।
अब तो तोय जगाय दीस प्यारी फिर क्यों वक्त गमात; हाँ हाँ अब तो तोय०।
अब जागत सूती रही तो थाँने, ओ आनन्द नहीं आत; हे अब मान०॥ ५॥
चट से सुरता जाग गी सरे जागत ही मगलीन; हाँ हाँ चट से सुरता जाग०।
पीव देख राजी भई स उण प्रेम पियालो पीन; हाँ हाँ पीव देख राजी०।
देखत ही आनन्द भया स उठे, बाजी अनहद(१) बीन; हे अब मान०॥ ६॥
देख पिया रे रूप ने स इण दियो होश(२) बिसराय; हाँ हाँ देख पिया रे०।
पिव प्यारी की गम नहीं सरे रंगी प्रेम रंग माँय; हाँ हाँ पिव प्यारी की०।
पीव जीव भया एकसा स वहाँ, दूजो दीखे नाँय: हे अब मान०॥ ७॥
देवनाथ सा गुरु मिले स जद देवे पीव मिलाय; हाँ हाँ देवनाथ सा०।
इण विध देखे पीव ने स ज्याँ रे काल निकट नहिं आय; हाँ हाँ इण विध०।
मानसिंह निर्भय भयो स म्हारे, भरम रयो कछु नाँय; हे अब मान बावरी०॥ ८॥

॥ गान ॥

मानसिंह वो रट(३) रटी, सौ रट न्यारी होय।
उण रट ने जो कोई रटे, सौ रट(४) देवे खोय॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

मिले थाँने रँगीलो(५) ज़लो(६); चालो(७) तो आली(८) मिले थाँने रँगीलो ज़लो०।
तू तो फिरे आली विषया रस में। पियो थारो रहे एकलो(९)। चालो तो०॥१॥

१—सोहं ध्वनि, २—भेद मात्र रहति, ३—आत्मज्ञान की जिज्ञासा, ४—सब उपासना कर्मकाण्डादि, ५—जगत का खिलारी, ६—आत्मा, ७—विचार, ८—मन की वृत्ति, ९—इन्द्रियातीत।

इण तो विषय में आली दुःख पावेली । नहीं थारो होवेलो भलो । चालो० ॥२॥
भूल मत बावरी प्रीतम मिलसी । देखो देखो निज बँगलो(१) । चालो० ॥३॥
मानसिंह गुरु देवनाथ कहे । अब तुम एक हो मिलो । चालो तो आली० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

प्यारी ए चाल सखी उण देश(२), अठे तू क्या करे ।
प्यारी ए कर सत्गुरुजी रो साथ, जगत सूँ क्या डरे ॥ टेर ॥
प्यारी ए नहीं कोई कोस दस कोस, मंजल पर चालणो ।
प्यारी ए मन सीधो कर लेय, पिया(३) संग मालणो(४) ॥ १ ॥
प्यारी ए कहे तोहे जग ने छोड़, याँ री मानो मती ।
प्यारी ए घर ही में घर हेर, जीवत करले गती(५) ॥ २ ॥
प्यारी ए बिन पग चलणो है पन्थ, देह बिना(६) मिल रहो ।
प्यारी ए जब प्रीतम(७) मिल जाय, बात मन री कहो ॥ ३ ॥
प्यारी ए नहीं धरणो संन्यास, भेष करणो नहीं ।
प्यारी ए गृहस्थ छताँ संन्यास, जम सूँ डरणो नहीं ॥ ४ ॥
प्यारी ए पग सूँ चलाय ले जाय, ज्याँ ने गुरु ना मानिये ।
प्यारी ए देवे त्याग उपदेश, पाखण्डी जानिये ॥ ५ ॥
प्यारी ए देवनाथ को साथ, संन्यास ऐसो लियो ।
प्यारी ए मान लखी गम(८) गुंज, पियाजी सूँ मिल रयो ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

प्यारी ए अवर न दूजा कोय, विनय अपनी आप से ।
प्यारी ए अपणो ही आप विचार, बचो तिहूँ ताप से ॥ टेर ॥

१—अन्तर्मुख वृत, २—आत्म-स्थिति, ३—आत्मा, ४—एकता का अनुभव, ५—जीवन-मुक्ति, ६—सूक्ष्म-विचार से, ७—आत्मज्ञानी गुरु, ८—गुप्त रहस्य ।

प्यारी ए अपणो आप गई भूल, असंगल होत है।
प्यारी ए सुख तो रह गयो दूर, दुःख में रोत है॥ १ ॥
प्यारी ए अपणे आपको जोयके मंगल गाइये।
प्यारी ए कभी न अमंगल होय, सोई सुख पाइये॥ २ ॥
प्यारी ए यह जग मंगल रूप, असंगल ना कोई।
प्यारी ए आप अमंगल होय, नींद माँहे तू सोई॥ ३ ॥
प्यारी ए अब परी नीन्द उड़ाय, पिया ने देखिये।
प्यारी ए करम रेख ने मेट, अलख घर पेखिये॥ ४ ॥
प्यारी ए मानसिंह कहे नार, भूल तज दीजिये।
प्यारी ए सब घट आतमदेव, पूजा यही कीजिये॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूआ रे" की। ताल कैरवा ॥

आवो आवो म्हारी सुरता, पियाजी(१) बुलावे अमर महल(२) में॥ टेर॥
घाटी पैंड चढणो नहीं सरे नहिं उडणो आकाश।
जो तुमे मिलणो पीव सूँ सरे तोड़ अन्धविश्वास।
अपणो रूप विचारसी स जद मिटसी जग री आस रे। आवो आवो० ॥ १ ॥
एक ज्ञान वैराग दूसरो तीजो समझ विचार।
चौथो लेवो विवेक ने सरे नौकर कहिये चार।
सोच आप में आपरी सरे यह भ्रम दूर निवार रे। आवो आवो० ॥ २ ॥
वो प्रीतम इसड़ो नहीं स जासे मिल न्यारी रह जाय।
जो मिलसी तू पीव सूँ स जद एकोएक समाय।
जीव ब्रह्म दोऊ एक हुवा जद दूजो दीखे नाँय रे। आवो आवो० ॥ ३ ॥
अबतो पड़दा तोड़दे सरे दूर करो अज्ञान।

१—आत्मा, २—निज स्वरूप।

हुए अज्ञान के बीच में स तुम खोयो रतन(१) महाँन्(२)।
सबही जग में भटकती सरे नहीं पायो कल्याण रे। आवो आवो० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरुदेव ने सरे मोक्ष मोय बिच दीन।
मान जभी मन मानियो स जब वृत्ति को स्थिर कीन।
आनन्द जब मोको भयो सरे भयो काल आधीन रे। आवो आवो० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की। ताल कैरवा ॥

क्यों भई बावरी(३), पी (४) पा(५) पा पी(६) सो पापी(७) होत है॥ टेर॥
पापी(८) ढूँढत मैं फिर्यो स कोई पापी(९) मिल्यो न कोय।
पापी(१०) सूँ मिलनो मुझे स कोई पाप(११) करम ने जोय।
बिन पापी(१२) बोलूँ नहीं स कोई मुँह न लगाऊँ कोय रे। क्यों भई बावरी० ॥१॥
सब जग यूँ पापी(१३) कहे सरे म्हाँने अचरज आय।
पाप्याँ(१४) सूँ म्हारे प्रीत घणी सरे पापी(१५) मिले जो नाँय।
जो कोई पापी(१६) मिले तो मोये पाप(१७) करण समझाय रे। क्यों भई बावरी० ॥२॥
जो कोई पापी(१८) मिलाय दे स मैं गुण थाँरो भूलूँ नाँय।
पाप(१९) माँहि वे पुन(२०) करे सरे ऐसे वीर मिलाय।
वाँवीराँ सूँ जा मिलें स म्हाँने असली पाप(२१) कराय(२२) रे। क्यों भई बावरी०
पापी (२३) गोरख कबीर है सरे पापी(२४) भरथरी होय।
देवनाथ पापी(२५) मिल्या सरे कीनो पापी(२६) मोय।
मानसिंह पापी(२७) भयो स जद जीवत स्वर्ग में सोय रे। क्यों भई बावरी० ॥४॥

१—मनुष्य-जन्म, २—उत्तम, ३—मन की वृत्ति, ४—ज्ञानामृत स्वयं पी, ५—दूसरों को भी पिला, ६—ज्ञानामृत प्राप्त कर के, ७-८-९-१०-१२-१४-१५-१६—अज्ञान का नाश करने रूपी पाप करने वाला अथवा ज्ञानामृत दूसरों पाकर स्वयं पीने वाला, ११—अज्ञान का नाश करना, १३—बुरे कर्म करने वाला, १७—अज्ञान का नाश करना, १८-२३-२४-२५-२६-२७—अज्ञान का नाश करने रूपी पाप करने वाला अथवा ज्ञानामृत दूसरों के पाकर स्वयं पीने वाला, १९—दूसरों के अज्ञान का नाश करके, २०—हित करना, २१—परमात्मा, २२अनुभव करना।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की । ताल कैरवा ॥

म्हाने कौण जगाई रे, सूती होती मैं सारंग(१) नींद में ॥ टेर ॥
सूती सारंग नींद में सरे सारंग(२) दियो जगाय ।
सारंग(३) सूँ सारंग(४) सुणी सरे सारंग(५) निजर न आय ।
सारंग(६) ढूँढ सारंग(७) थकोस म्हाँने सारंग(८) कोई मिलाय रे । म्हाँने॥१॥
सारंग(९) ध्वनि सारंग(१०) सुणी सरे दियो हृदय(११) ने तोड़ ।
सारंग(१२) सूँ मोय मारके सरे(१३) सारंग गयो मुख मोड़ ।
अब कोई सारंग(१४) मिलाय दे सरे सारंग(१५) कहूं कर जोड़(१६) रे । म्हाँने०॥२॥
इण सारंग(१७) के प्रेम में स सखी मोय स्याहरंग कीन ।
ओ सारंग(१८) कैसे मिले सरे सारंग(१९) ने तज दीन ।
तज के सारंग(२०) गात है स ओ मधुर बजावे बीन रे । म्हाँने०॥३॥
सारंग(२१) की सुन बीनती स पिया सारंग(२२) मिलिये आय ।
बिछड़्यों सारंग(२३) सुख नहीं स म्हाँसूँ मिलकर सारंग(२४) गाय ।
मानसिंह कहे आप बिना म्हाँने जग ओ नाँय सुहाय रे । म्हाँने०॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "पन्ने" की । ताल दीपचन्दी ॥

चालो म्हारी सुरता सुन्दरी , पिया सूँ प्रेम लगास्याँ ए ॥ टेर ॥
काल फोज आवे नहीं, निर्भय मौज उड़ास्याँ ए ।
अमर पियाजी ने पावस्याँ, नित मंगल गास्याँ ए । चालो म्हारी० ॥ १ ॥
जीव जीव में भटकिया, अब जीव मिटास्याँ ए ।

१—अज्ञान रूपी रात, २-३—सद्गुरु रूपी ईस्वर, ४—सद्गुरु के उपदेश रूपी सारंग राग, ५-६-८-१३-१४-१७-१८-२२-२३—परमात्मा' ७-१०-१५-१९-२१—वृत्ति रूपी स्त्री, ९—ओंकार रूपी शंख-ध्वनि, ११—दिल, १२—शब्द रूपी बाण, १६—अति नम्र होकर, २०—ओंकार रूपी शंख, २४—सोहं शब्द रूपी सारंग राग

रूप देख निज आपरो, सहजे हि सहज समास्याँ ए। चालो म्हारी० ॥ २ ॥
जीव ब्रह्म जब एक भया, फिर आस्याँ न जास्याँ ए।
प्रीतम प्यारी न्यारी नहीं, जल में तरंग रलास्याँ ए। चालो म्हारी० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरुदेव है, ज्याँने अर्ज सुणास्याँ ए।
मान मिल्या निज रूप में, ऐसो नेह दिखास्याँ ए। चालो म्हारी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "पन्ने" की। ताल दीपचन्दी ॥

सुरता म्हारी बावरी, पिया(१) पुत्र(२) कैसो कीनो ए॥ टेर॥
उपजी आदि तू ब्रह्म सूँ, ब्रह्म अजहू न चीनो ए।
जीव जीव के झौड़ में, ब्रह्म खोय कैसे दीनो ए। सुरता म्हारी० ॥ १ ॥
सुनो सत्गुरु सोहन, नहीं म्हाँने भेद बतायो हो ॥ टेर ॥
मैं जिण जिण ने पूछियो, जीव हि जीव सुनायो हो।
ईश्वर थाँ सूँ दूर है, येही भेद जनायो हो। सुनो सत्गुरु० ॥ २ ॥
तू ही जीव तू ही ब्रह्म है, और तू ही है माया ए।
थाँ सूँ ब्रह्म कोई भिन्न नहीं, यह वेदों में गाया ए। सुरता म्हारी० ॥ ३ ॥
मो ईश्वर में भेद है, क्यों कर एक कहावे हो।
एक है तो फिर न्यारो क्यूँ, म्हाँनें हाँसी ये आवे हो। सुनो सत्गुरु०॥४॥
अपने भरम सूँ न्यारो कहे, थाँने अवर बहकाई ए।
जीव समझ पुत्र आपणो, इण सूँ बात गमाई ए। सुरता म्हारी० ॥ ५ ॥
जीव तो म्हारे साथ में, ईश्वर म्हाँ सूँ न्यारो हो।
थे कहो दोनों एक है, कैसे होय उजारो हो। सुणो सत्गुरु० ॥ ६ ॥
गीता भागवत् सब सुणी, ईश्वर ही गायो हो।
आप मिल्या म्हाँने इसा, ईश्वर एक बतायो हो। सुणो सत्गुरु० ॥ ७ ॥
जीव और ब्रह्म जो कृष्णजी, सब एक बतायो ए।

१ब्रह्म, २—जीव।

अर्थ बिगाड़्यो इण स्वारथियाँ, सगलो जगत डुबायो ए। सुरता म्हारी०॥८॥
गीता सूँ पहिले वशिष्ठजी, जिन नित्य ही गायो ए।
एक तू एक तू एक है, नहीं दोय बतायो ए। सुरता म्हारी० ॥ ९ ॥
ब्रह्म वाक्य चारों कहे, तेरो तू ही कहायो ए।
शंकर लिख्यो निज भाष्य में, अपनो आप बतायो ए। सुरता म्हारी०॥१०॥
जनक लख्यो शुकमुनि लख्यो, और व्यास लख लीनो ए।
गोरख कबीर और भरथरी, जिन ब्रह्म मद पीनो ए। सुरता म्हारी० ॥११॥
नाथ कहे सुण बालका, यह भ्रम दूर भगावो हो।
तोड़ अज्ञान की भींत को, मैदान में आवो हो। सुरता म्हारी० ॥ १२ ॥
इतनो कयो ने मान चमकियो, ब्रह्म अग्नि जागी हो।
ब्रह्म तेज उर जागियो, भ्रमना सब ही भागी हो। सुनो सत्गुरु० ॥ १३ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "एली" की। ताल कैरवा ॥

रावल(१) रम(२) रयो माँय, खोज्याँ(३) बिना कैसे मिले म्हारी एली ॥ टेर॥
बाहर रावल फिरे पूछती, घर(४) में जोवे नाँय।
जो तू अपने घर में जोयले, बाहर क्यूँ भटकांय। खोज्याँ बिना० ॥ १ ॥
इण रावल ने जुगत(५) सूँ जोवे, तो घर में ही मिल जाय।
ओ रावलियो सब सूँ जबरो, परगट में नहीं आय। खोज्याँ बिना० ॥ २ ॥
गहरा तंबूर मंजीर बजावे, रावल मिले न कोय।
बिन रावल री निश्चय कीयाँ, चाहे तो गाय चाहे रोय। खोज्याँ बिना०॥३॥
सारी रात भर जुमा जागवे, चूरमियाँ रा चोर।
विषय वासना गई न मन से, कर रया पाप करोड़। खोज्याँ बिना० ॥ ४ ॥
सुन्दर नारी देखत प्यारी, गावत गला मरोड़।
यूँ गायाँ सूँ नफो न होसी, मिलसी नरकपुर ठौड़। खोज्याँ बिना० ॥ ५ ॥

१—आत्मा, २—व्याप रहा, ३—जिज्ञासा, ४—अपने आप में ५—विचार से।

देवनाथ गुरु दया करी जद, मन समझायो मोर।
मानसिंह मन मान गयो रे, पिव पायो एक ही ठौड़। खोड्याँ बिना० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "एली" की। ताल कैरवा ॥

ओ रावल(१) अनन्त अपार, सकल घट रम रयो रे बाला ॥ टेर ॥
अन्दर रावल बाहिर रावल, रावल सब घट सोय।
इण रावल ने जो नर परखे, रावल रूप ही होय। सकल घट रम रयो० ॥ १ ॥
ऊपर(२) रावल उर नहिं रावल, किम कर रावल पाय।
रावल(३) होय रावल ने खोजे, रावल में मिल जाय। सकल घट० ॥ २ ॥
हम भी रावल तुम भी रावल, रावल विश्व स्वरूप।
इण रावल सूँ न्यारो कोई, दीखत है नहीं रूप। सकल घट० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु पूरा रावल, रावल दियो दिखाय।
मान मान अभिमान गयो जद, रावल बीच समाय(४)। सकल घट० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सिन्धवी, तर्ज "हेली" की। ताल कैरवा ॥

छाँण छाँण(५) अमी(६) पीवणो; अणछाण्यो(७) मत पीव; म्हारी हेली ए।
छाँण छाँण० ॥ टेर ॥
गोरख कबीरा संत सो; छाँण ने दियो है पिलाय; म्हारी हेली ए।
भाग्य हीन सो नहीं पिये; अणछाण्याँ पर जाय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥ १ ॥
जनक पियो अमी छाँण के; सुखदेव छाँण के पाय; म्हारी हेली ए।
पियो वशिष्ठ मुनि छाँण के; रामचन्द्र को पाय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥ २ ॥
व्यास जुगती(८) कर छाँणियो; कचरो(९) रती न रहाय; म्हारी हेली ए।
कृष्ण पायो अर्जुन पियो, साफ पियो मल नाँय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥ ३ ॥

१—आत्मा, २—स्वांगी साधु, ३—ज्ञानवान्, ४—स्वरूप की एकता, ५—गहरे विचारपूर्वक, ६—ज्ञानामृत, ७—अंन्ध-विश्वास, ८—अच्छी तरह, ९—द्वैतभाव।

इण मतवादी झकोलियो(१); कड़दो(२) कियो निपट्ट;(३) म्हारी हेली ए।
जीव असंख्य डुबोईया; पायो कीच अघट्ट(४); म्हारी हेली ए। छाँण० ॥४
कई विष्णु मत चालिया; केता देवी मत जान; म्हारी हेली ए।
केताक जैन और बौद्ध है; कर कर खैंचा तान; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥५
देवनाथ सर्वज्ञ है; दियो सर्वज्ञ बताय; म्हारी हेली ए।
मान जगत् जग मान में; पड़दा दीखे नाँय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥६

॥ गान ॥

॥ राग सिन्धवी, तर्ज "हेली" की । ताल कैरवा ॥

छाँण(५) अमी(६) जुगती केऊँ; वेदो युक्त बताय; म्हारी हेली ए। छाँण अमी० ॥टे
तन केरी मटकी करो; बुद्धि गलना होय; म्हारी हेली ए।
प्रेम अमीरस छाँण लो; मज़(७) फिर आय न कोय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥१
आतम भाव जल छाँणियो; प्रेम री होसी तलाश; म्हारी हेली ए।
वृत्ति पणिहारी भर रही; कर कर समझ प्रकाश; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥२
जगत ताल सरवर भर्थो; कमी है नीर को नाँय; म्हारी हेली ए।
अन्धविश्वासी जाणे नहीं; भूल के खालो जाय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥३
जो अमी पिये सोई अमर है; जिनके यम डर नाँय; म्हारी हेली ए।
नित्य अमर फिर क्या मरे; कर निश्चय मन माँय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥४
देवनाथ गुरु भेटिया; समझ ने दियो है छणाय; म्हारी हेली ए।
मान पिये अमी छाँण के; कचरो(८) पिये रे बलाय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥५

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

अब तुम मौज करो री(९) । काहु के डर नाँहि डरो री; अब तुम० ॥ टेर॥
नाथ(१०) को साथ कियो मैं सुन्दर(११), दूर गई झकझोरी(१२)।

१—मैला किया, २—भेदवाद की सम्प्रदायों के कर्म काण्ड, ३—अत्यन्त, ४—गहरा
५-६— पूर्ण विचार पूर्वक ज्ञान प्राप्त कर, ७—द्वैत भाव, ८—भेदवाद के साम्प्रदायिक
कर्मकाण्ड, ९—सुरता को उपदेश; १०—सद्गुरु, ११—सुरता, १२—जन्म-मरण

और रंग अब कछु न चढ़ेगो; पक्के(१) रंग बिच बोरी,
करे अब कौन ठठोरी। अब० ॥ १ ॥
कच्चे (२) रंग से बच गईं सुन्दर, धिन धिन सूर (३) ऊगो री।
अब तो रंग असल आय लागो; पिया (४) प्रेम बिच बोरी,
मची जम (५) सूँ बरजोरी। अव ० ॥ २ ॥
जब नादानी (६) समझी नाहीं, होती अज्ञान में छोरी।
अब पतिव्रता नार भई सैणी; जैसे चन्द्र चकोरी,
असल प्रीतम की गोरी। अब ० ॥ ३ ॥
देवनाथ को साथ कियो तब, मिट गई दुविधा(७) मोरी।
हम ही पीव हमी अब नारी; दूजो भाव मिट थोरी,
मान अस होरी(८) होरी। अब० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की। ताल दीपचन्दी ॥

देख्यो जोगीड़े(९)रो रूप; बिलमी(१०) ए सुरता, देख्यो जोगीड़े रो रूप(११) ।।टेर।।
ओ जोगी सब जग सूँई न्यारो, सगले जग रो स्वरूप।
चारूँ वेद ही थाकिया रे बाला, ओ है भूपन को भूप। बिलमी ए० ॥ १ ॥
इण जोगीड़े रो देश(१२) निरालो, नहीं छाया नहीं धूप।
जो जावे सोई अमृत(१३) पीवे, भरिया अमी(१४) रा कूप। बिलमी ए० ॥ २ ॥
महिमा अनंत अन्त कब आवे, महिमा ही अजब अनूप।
मानसिंह ऐसो जोगियो रे बाला, मिल गयो इनके स्वरूप। बिलमी ए० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की। ताल दीपचन्दी ॥

अब तुम उठो उठो रे लाल; नींदड़ली(१५) सूँ, उठो उठो रे म्हारा लाल।

१—स्वरूप की एकता, २—देहाभिमान, ३—ज्ञान, ४—आत्मा, ५—कर्मबन्धन, ६—अज्ञानावस्था, ७—अविद्या, ८—स्वरूप में स्थित, ९—आत्मा, १०—आनन्दित, ११—जगत् ब्रह्म की एकता, १२—स्थिति, १३—आत्मानन्द, १४—आनन्दामृत, ९—मोह निद्रा।

थाँरे सिर पर नाचे वैरी काल, नींदड़ली सूँ उठो उठो रे लाल ॥ टेर॥
पुरुषारथ ने हारियाँ रे, नहीं मिलसी गोपाल ।
जो भली चाहो आपणी थे, राखो निज रो ख्याल । नींदड़ली सूँ० ॥ १॥
दीन जनाँरी सेवा कीजे, छोड़ो मन सूँ कुचाल ।
मंदिर जाय वृत्ति विषय बिच, पड़ेला जम रा भाल । नींदड़ली सूँ० ॥ २॥
जड़ सेवा में जड़ होय उलझ्या, कूड़ी बजाई ताल ।
चेतन सेवा कीन नहीं तुम, पड़सो ऊँड़ी गाल(१) । नींदड़ली सूँ० ॥ ३॥
देवनाथ गुरु महर करी यह, मोको कियो निहाल ।
मानसिंह कोई आछा दिन आया, याँ सूँ दियो चित्त टाल । नींदड़ली सूँ० ॥ ४॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरियें" की । ताल दीपचन्दी ॥

अब मन होय सचेत; मना रे मेरा पाखण्ड पणे ने छोड़ ॥ टेर ॥
बहोत दिवस यामें शीश कुटायो, अब इण सूँ मुख मोड़ ।
नहीं तो इण में मार्यो जासी, लूटेला कान मरोड़ । मना रे मेरा० ॥ १॥
वार बार इण संग में भटक्यो, रही नित दौड़ादौड़ ।
अब तो इणने दूर कर प्यारे, भरम हंडिया ने फोड़ । मना रे मेरा० ॥ २॥
जप तप मंत्र बहुत सा जपिया, अब दूर ही सूँ कर जोड़ ।
मान कहे रे बहुत दिन लूट्यो, अब कोई पकड़ो और । मना रे मेरा० ॥ ३॥

॥ दोहा ॥

राग आसावरी जब करे, वरीय रूप जब होय ।
भ्रम अरि अपनो मारले, सुख सज्या में सोय ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

आस(२) दूर कर कीजे; आसावरी आस(२) दूर कर कीजे ।

१—खाड, २—अपने आपसे भिन्न दूसरों पर निर्भर रहना ।

जो यह आसा माने नहीं तो, घोट(१) छान(२) कर पीजे। आसावरी आस० ॥टेर॥
चूर चूर आसा को होवें, फिर न कभी उलझीजे।
आस मिटी निरास भये जब, निर्भय पिया सूँ मिल लीजे। आसावरी० ॥ १ ॥
आसा मद को उलट(३) कर पीजे, सुख भर सदा रहीजे।
ऊलटी आस सीधो कर लेवे, सब दुःख दूर हरीजे। आसावरी० ॥ २ ॥
कोमल तीव्र छाँट कर न्यारे, समझ समझ स्वर दीजे।
अर्ध तीव्र मधु स्वर करके, तार बजे सुन लीजे। आसावरी० ॥ ३ ॥
किनकी आस कौन रह्यो न्यारो, जग मम रूप लखीजे।
मानसिंह यह सुन्दर रागिनी, ज्ञान प्रभात उचरीजे। आसावरी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी। ताल दीपचन्दी ॥

आसावरी गाय न जाने कोई।
जो आसा(४) को अरि(५) बन गावे, वह नर सुख से सोई(६)। आसावरी ॥टेर॥
बिन अरि भयाँ बिन अरि(७) नहीं डटसी, कर युद्ध देखो कोई।
मारे अरि और आप न मारे, जड़ा मूल देवे खोई। आसावरी० ॥ १ ॥
कोई जोगिया कोई माँड कर, आस किणी नहीं खोई।
स्वर तारन बिच अर्थ भूल गये, गाय गाय उमर बिगोई। आसावरी० ॥ २ ॥
जो आसा को अरि बन जावे, फिर आसा नहीं होई।
मानसिंह मैं मेरा हूँ नित, जड़ चेतन रह्यो पोई। आसावरी० ॥ ३ ॥

१—बुद्धि रूपी शिला पर घोटना, २—विचार रूपी गलन से छानना, ३—अपने आपको परिपूर्ण समझ कर आत्म-निर्भर होना, ४—अपने से भिन्न दूसरों पर निर्भर रहना व दूसरों की आस करना, ५—आत्म-निर्भर, ६—आनन्द माने, ७—काम क्रोधादि विकार।

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

साधो म्हाँने नार(१) मिली अलबेली(२) ।
पास पिया(३) पहिचाण्या नाँही, भोंदू रही है अकेली(४) ॥ टेर ॥
भोंदू आप संगी(५) मतलबिया, भूल लुटाई है थैली(६) ।
बरजाँ बहुत बरजी नहीं माने, होय रही मद(७) माँहे गैली । साधो० ॥ १ ॥
खावे मार नहीं पण चेते, दूणी मार सहेली ।
यहाँ भी मार मार पड़े वहाँ भी, पीछे ही रोवेली । साधो० ॥ २ ॥
माल मसखरा(८) खाय मौज सूँ, ऐसी कौन मिलेली ।
भरम भाँग में खबर पड़े नहीं, पीछे खबर पड़ेली । साधो० ॥ ३ ॥
देवनाथ समझाई साचो, अजहू ना समझेली ।
मान कहे री मान बावरी, पीछे बिरत पड़ेली । साधो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ गजल । ताल रूपक ॥

पास जिसको ढूँढ़ना, कैसी हँसी की बात है ।
जागते सोये पड़े, कैसी हँसी की बात है ॥ १ ॥
जो कोई सोते पड़े, उनको जगावे आय कर ।
जागते घुर्रा रहे, कैसी हँसी की बात है ॥ २ ॥
रात दिन पढ़ते पढ़ाते, "ब्रह्मास्मि" मंत्र को ।
तोते ज्यों पढ़ कर रहे, कैसी हँसी की बात है ॥ ३ ॥
कहते जो करते नहीं, सब ही मिलावे धूल में ।
मिसरी भावे खाना कङ्कर, क्या हँसी की बात है ॥ ४ ॥
इस तरह काजी भी कहते, खुदा है सबके जिस्म में ।

१—बुद्धि, २—बेसमझ, ३—आत्मा, ४—अलग, ५—पाखण्डी सत्संगी, ६—आयु, ७—विषय-सुख, ८—पाखण्डी गुरु ।

फिर बताते चौथे आस्माँ, क्या हँसी की बात है ॥ ५ ॥
मान कहे अब तक भी मानो, कहदो अनलहक मुँह से तुम ।
दीपक छते रहना अन्धेरे, क्या हँसी की बात है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सुआ रे" की। ताल कैरवा ॥

म्हाँने घणी सुहावे रे, बाजे मोहन(१) री मीठी बंसुरी(२) ॥ टेर ॥
राग छतीसूँ गा रह्यो स न्याँरी न्यारी न्यारी तान ।
कब तक कहें हम थक गये सरे थक गये वेद पुरान ।
पार कोई पावे नहीं सरे खोज रह्या गुणवान रे । म्हाँने घणी सुहावे० ॥१॥
मालकोश और दीपक भैरव गात राग हिंडोर ।
श्री राग स्वर सब में बोले मेघ राग सुख जोर ।
आप बजावे गा रह्यो सरे तान उपज कर शोर रे । म्हाँने घणी सुहावे० ॥२॥
कुण गोकुल री गलियाँ भटके कुण म्हारे मथुरा जाय ।
वृन्दावन की कुंज-गली में कुण म्हारें गोता खाय ।
सभी रूप गिरिधारी दीखे सब ही बैन बजाय रे । म्हाँने घणी० ॥ ३ ॥
पंच धातु(३) की बंसुरी सरे दश(४) स्वर है इण माँय ।
समझ होय तो परख लो सरे नहीं तर मत भटकाय ।
भटक भटक दुःख पावसो सरे कृष्ण मिलेला नाँय रे । म्हाँने घणी० ॥४॥
वो तो मिट गये कृष्णजी स वो रास भी गयो मिटाय ।
कृष्ण ब्रह्म को रूप है सरे अखण्ड रयो जग माँय ।
खेले खेल खिला रयो स कोई न्यारो ना दरसाय रे । म्हाँने घणी० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु मेहर करी मैं भूलूँ नहीं अहसान ।
भर्म सूँ बाहर निकालियो सरे कहे भूप यूँ मान ।
मनड़े रा धोखा(५) मिट्या स कोई लियो रूप पहचान रे । म्हाँने घणी ॥६॥

१—आत्मा, २—शरीर, ३—पाँच तत्त्व, ४—दश इन्द्रिरूपी द्वार, ५—भ्रम ।

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

मना रे मेरा अब तो जूने घर(१) चाल, उठे गयाँ आनन्द आवे रे ॥टेर॥

तू जाने जग घर है मेरो रे; मना रे मेरा कवल(२) पूरो होय जाय,
घड़ी एक रहन न पावे रे। मना रे० ॥ १॥

ज्याँ ने तू अपना संगी जाणे रे; मना रे मेरा कोईयन करसी साथ,
पैलाई याँने क्यों न छिटकावे रे। मना रे० ॥ २॥

शत्रु ने मित्र दोनों ने तज दे रे; मना रे मेरा जग सब आतम रूप,
ओलखियाँ दुःख मिट जावे रे। मना रे० ॥ ३॥

शत्रु मित्र कर दिन दिन बँधियो रे; मना रे मेरा बन गयो ब्रह्म सूँ जीव,
दिनो दिन नीचो जावे रे। मना रे० ॥ ४॥

देवनाथ गुरु कर तेरो पकड़्यो रे; मना रे मेरा मान त्याग अज्ञान,
नाथ जी नित समझावे रे। मना रे० ॥ ५॥

॥ गान ॥

राग मंडल। ताल दीपचन्दी ॥

मनारे मेरा मग(३) लूटे ठगनी पाँच(४), जिन्हों सूँ अपनो माल बचावो रे ॥टेर॥

मोह सारंग(५) उन अंजन कीनो रे; मना रे मेरा सारंग(६) सुन्दर होय,
सारंग सूँ मुखड़ो टलावो रे। मना रे० ॥ १॥

तीन गुणाँ की नथली पैरी रे; मना रे मेरा दम्भ दधि सुत(७) नथ माँय,
देखने मती लुभावो रे। मना रे० ॥ २॥

कश्यप सुत(८) दधि सुत(९) सब हार्‌या रे; मना रे मेरा रवि सुतापति(१०) गयो हार,
तेरी अब कौन कहावो रे। मना रे० ॥ ३॥

हिमसुता पति(११) हार्‌यो इनसे रे; मना रे मेरा शक्र(१२) रयो जो भुलाय,

---

१—मारग, २—इन्द्रियाँ, ३—आत्म-ज्ञान, ४—काजल, ५—इन्द्रिय स्त्री,
६—परमात्मा, ७—मोती, ८-सूरज, ९-चन्द्रमा, १०कृष्ण, ११-महादेव, १२-इं

जिको इनसूँ ऊँचो न आवो रे। मना रे० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु शर(१) मोये दीनो रे; मना रे मेरा पाणि(२) जो सारंग(३)
पकड़, मान यूँ तीर चलावो रे। मना रे० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज "वाणी" की। ताल दीपचन्दी ॥

सोच समझ मन बावरे, निज सात्विक गुण धारो।
दुर्गुण दूर निवारिये, केवल ब्रह्म विचारो जी ॥ टेर ॥
बातों तजो रे परब्रह्म री, करणो सोई कीजे।
बातों सूँ आनन्द नहीं ऊपजे, साची सुन लीजे जी ॥ १ ॥
कौन करे कुण भोगवे, खेल बातों रो नाँही।
करणो रा फल त्यार है, समझो मन रे माँही जी ॥ २ ॥
कुकर्मों सू वंचित रहे, शुभ कर्म करावे।
सो ज्ञानी साचा जाणिये, सुपने दुःख नहिं पावे जी ॥ ३ ॥
इसड़े आनन्द ने छोड़ियो, जद भारत दुःख पावे।
पोल पुराण में पच रया, देश रसातल जावे जी ॥ ४ ॥
मान कहे अजहूँ मान लो, डूबत नैया ने तारो।
मृत संजीवनी(४) पीयलो, मरता प्राण उबारो जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मूँदड़ी के डंके" की। ताल कैरवा ॥

कर मन दुष्कर्मों को त्याग, यही निज त्याग है रे ॥ टेर ॥
पहिले कर्म कुकर्म को छान, इनमें सत्य असत्य है कौन;
जो कुछ सत्य दिखे सोई मान। यही निज त्याग है रे ॥ १ ॥
मेटो विषय वास की राग, करले कुकर्मों सूँ वैराग;

१—शब्द रूपी तीर, २—निश्चय रूपी हाथ, ३—विचार रूपी धनुष। ४—आत्मज्ञान।

मिट जावे जन्म मरण को दाग। यही निज० ॥ २ ॥
जाणो वन पहाड़ नहिं कोय, त्याग यह घर बैठाँई होय;
सहज में बींध के मोती पोय। यही निज० ॥ ३ ॥
जो कोई यूँ संन्यासी होय, इनको कर्म लगे नहीं कोय;
वो तो नहीं हँसे ना रोय। यही निज० ॥ ४ ॥
पहिले हम भी लेत संन्यास, करते खूब जगत की हास;
देखत दुश्मन खूब तमास। यही निज० ॥ ५ ॥
मिले गुरु देवनाथ भगवान्, दिया मोय असली आतम ज्ञान;
जीत लिया सहजे पद निर्वाण। यही निज० ॥ ६ ॥
गुरु से ज्ञान अमीरस पाय, दियो है मन को भरम मिटाय;
मान यों महान के बीच समाय। यही निज० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

प्रश्न

वंक कहे हो मानसी, कैसी कही ये बात।
ज्ञानी के अरि मित्र को, यह मोहे हाँसी आत ॥

उत्तर

कृष्ण जिसे ज्ञानी नहीं, शिष्य न पारथ समान।
अरिन हिंसन के कारणे, हरी दियो तत्त्व ज्ञान ॥
अर्जुन तो तैयार था, लेने को संन्यास।
कृष्ण नहीं लेने दियो, फेर बढ़ायो साहस ॥
शत्रु मित्र नहीं मानते, तो किये क्यों अठारह अध्याय।
मगज पचाई क्यों करी, क्यों दियो जगत बहकाय।
पापी सो है अरि सदा, साम्यवादी है मित्त।
वंक तजो बाँकाई अब, राड़ करो मत नित्त ॥

मैं ऐसा भोंदू नहीं, कि कुछ कह कुछ कह देय।
कृष्ण वाक्य ही जानिये, इनमें ना सन्देह॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की। ताल कैरवा ॥

साधो भाई हिंस अहिंस निहारो होजी।
अहिंसा बिच होत है हिंसा, तिनको दूर निवारो रे; साधो भाई० ॥ टेर ॥
पुन विच पाप पाप बिच पुन है, करलो समझ विचारो होजी।
पुन और पाप एक मत जाणो, बिलग बिलग कर डारो रे। साधो भाई० ॥ १ ॥
मर मर भूख ताप देवो तन को, बढ़ रयो पाप अपारो होजी।
मुक्त करण मनुष्य तन लीनो, क्षुधा तृषा बिच हारो रे। साधो भाई० ॥ २ ॥
इन्द्री धर्म रुके नहीं रोक्या, इनकी गर्दन मारो होजी।
रोम रोम बिच है निज आतम, सूत्र ही खोज निहारो रे। साधो भाई० ॥ ३ ॥
राखो मौन छाण जल पीवो; मन माँयलो न सुधारो होजी।
पक्षापक्ष मिटी नहीं मन से, मिट्यो न भर्म अन्धारो रे। साधो भाई० ॥ ४ ॥
हेतु विचार काज करें जग में, होवे पुन अपारो होजी।
जीव अनन्त उमर भर तारे, सदुपदेश प्रचारो रे। साधो भाई० ॥ ५ ॥
जुगति सूँ जोय जैन मत झीणो, मत आडम्बर धारो होजी।
बिन जोयाँ बिन यों ही रह गये, रतन जन्म ने हारो रे। साधो० ॥ ६ ॥
मेरे तो सब ही बरोबर कहिये, नहीं मीठो नहीं खारो होजी।
पक्षापक्ष में बह जावोगे, जिनसे फिकर तुम्हारो रे। साधो० ॥ ७ ॥
सब ही मत में मैं हूँ व्यापक, सब ही मत है हमारो होजी।
मानसिंह सर्वज्ञ सबी में, जड़ चेतन इक सारो रे। साधो० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग, तर्ज "वाणी" की। ताल कैरवा ॥

वीरा म्हारा, वाँ सूँ नरम क्यूँ रहिये।
निवे जिकाँ सूँ दूणो निवणो, दुष्टाँ ने दण्ड दईये। वीरा म्हारा० ॥ टेर ॥

परहित करे डरे श्री हरि सूँ, ज्याँने दुःख नहीं दईये ।
अवर बिगाड़ सुधारे अपनो, ज्यांरो विश्वास न लईये ॥ १ ॥
आप तो रेवे बजर सूँ करड़ा, कड़वा वचन कहीये ।
मूरख अन्ध कदेई नहीं माने, ज्यांरो दुःख क्यों सहिये ॥ २ ॥
हरिण्याक्ष हरिणकश्यप रावण कंसा, दुष्ट आत्मा कहिये ।
ज्यांने दण्ड देव खुद दीयो, अकल ठिकाणे भई है ॥ ३ ॥
राम और कृष्ण दुःख नहीं सहियो, आपे क्यों दुःख सहिये ।
दुष्टों ने दण्ड सेवा सज्जनों री, इण में दोष नहीं है ॥ ४ ॥
पर दुःख हर्ष शोक होय सुख में, कामी ने क्रोधी कहिये ।
मानसिंह इसड़ा दुष्टाँ ने, खालो न जावण दईये ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

केल जिसा जन झुकत रहे पर अन्त में और ही और कहावे ।
वे निवता सबही सूँ बुरा ज्याँरे अन्तर को कोई भेद न पावे ।
वाँ निवताँ सूँ ऐसा निवो कि जाय उन्हीं के माँय मिलावे ।
मान कहे जस काम पड़े हैं मरद वही करके दिखलावे ॥

॥ सवैया ॥

वक्त पड़े जब खूब निवे और फेर इसी मन में करड़ाई ।
वो नर-समझो मरद नहीं जिनके मन में हो इसी शिटलाई ।
देख लेवो उनको दिल में कोई काम पड़े उनसे जब भाई ।
मान कहे रे मरदन की तो पारख हो इक बोल के माँई ॥

॥ गान ॥

॥ राग गोरी । ताल कैरवा ॥

साचो गृहस्थ संभावो, समझ कर साचो गृहस्थ संभावो ॥ टेर ॥
गिरह बन्धी छोड़ मगरूरी, निज घर अपने आवो ।
पर धन धूल पाप पर नारी, पोल पन्थ मत जावो । समझ० ॥ १ ॥

पर पीड़ा अपनी सी जानो, बस कछु रहे तो मिटावो।
पेट तो भरे जो खर कूकर भी, ऐसे मत रह जावो। समझ०॥ २॥
खर और श्वान विषय यही भोगत, तुम कहा अधिक कहावो।
एक नारी और धन दोऊँ में, मत तुम ध्यान गमावो। समझ०॥ ३॥
अजगर मगर मजूरी करे कहा, पड़े पड़े अन्न पावो।
अजगर मगर में कौन कसर है, क्यों नहीं सुकृत कमावो। समझ०॥ ४॥
घर घर में सहयोग योग रहे, जीते ही स्वर्ग कमावो।
मानसिंह मैं गृहस्थ कह्यो साचो, मरजी होय तो आवो। समझ०॥ ५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

सेवा से जो मिले अमर फल सब कोई पावो रे; करन सेवा चित चावो॥ टेर॥
सेवा जब की थी हनुमान। उसने पाया उत्तम ज्ञान।
ऐसी सेवा कर करके भव से तिर जावो रे। करन सेवा चित चावो०॥ १॥
सेवा में अर्जुन था सुज्ञान। जिनके कृष्ण बन गये रथवान।
मत सोवो अब जान के सेवा सुकृत कमावो रे। करन सेवा०॥ २॥
या सेवा ज्ञानिन की होय। पोल पन्थिन की करो न कोय।
सेवा सेवा के माँय मुफ्त मत माल लुटावो रे। करन सेवा०॥ ३॥
मन्दिर मन्दिर में सिर मार। हो जावोगे तुम लाचार।
चाहे ऊमर भर पड़े यूँ ही तुम घण्टे बजावो रे। करन सेवा०॥ ४॥
गो विप्रों की सेवा होय। ब्रह्म निष्ठा लो विप्र कोई जोय।
मीन मेख मकर कुंभ बतावे उन्हें दूर हटावो रे। करन सेवा०॥ ५॥
देवनाथ गुरु मिले गुणवान। जिनने दिया सेवा का विधान।
मान मान को छोड़ सच्चे सेवक बन जावो रे। करन सेवा०॥ ६॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकौंस। ताल तिताला ॥

मन सुमरन कर बिन स्वर रे।
स्वर वाणी से होय परे नित, तो तू रहत निडर रे॥ टेर॥

तुझसे जगत जगत से तू नाँ, ऐसी निश्चय कर रे।
ईश्वर जीव प्रकृति एक कर, फिर तू निर्भय विचर रे। मन सुमरन० ॥ १॥
परा पश्यन्ती और मध्यमा, वेखरी थाना थिर रे।
च्यार ही एक एक कर च्यारूं, सहजे ही जीत समर रे। मन सुमरन० ॥ २॥
माया तू और ब्रह्म तू ही है, तू ही जीव अजर रे।
मान तेरा तूँ है सब माँहि, द्वितीय दुःख दूर हर रे। मन सुमरन० ॥ ३॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

नाम रटे जाको अर्थ विचार। जद उतरे भव परले पार ॥ टेर ॥
बक बक ऊमर दीवी खोय। अर्थ विचार सक्यो नहिं कोय।
घर में रह गयो घोर अन्धार(१)। नाम रटे० ॥ १ ॥
रटता गया कछु आयो न अन्त। गाँव मिल्यो नहीं लम्बो पंथ(२)।
लूट लियो बिच में बटपाड़(३)। नाम रटे० ॥ २ ॥
राम कहे से सरे न काम। बक्याँ बक्याँ नहीं मिले आराम।
बक बक ऊमर देवोला हार। नाम रटे० ॥ ३ ॥
राम रमे सर्बे घट माँय। राम शब्द यही अर्थ बताय।
देखो घट के पट को उघार। नाम रटे० ॥ ४ ॥
दूजो अर्थ कहूँ सुन जान। राम "मैं" हूँ कोई और न मान।
देखो श्रुति और स्मृति संभार। नाम रटे० ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवत वासुदेव। कहत करे नहीं करन की सेव।
जगे जगे फिरते सिर मार। नाम रटे० ॥ ६ ॥
वो मैं हूँ नित शुद्ध स्वरूप। सभी विश्व में एक ही रूप।
सब वस्तु है मेरे आधार। नाम रटे० ॥ ७ ॥
कइ जन विष्णु रटे निज नाम। विश्व सभी में मेरा धाम।

१—अज्ञान, २—पन्थापन्थ के झगड़े, ३—द्वैतविकार रूपी लुटेरे।

जहाँ देखो मैं वारापार। नाम रटे० ॥ ८ ॥
कोई रटते हैं शंभु महेश। सब भूतों में सम हूं हमेश।
यूँ कल्याण स्वरूप निहार। नाम रटे० ॥ ९ ॥
कई दत्त गोरख धरते ध्यान। गो अतीत मैं हूँ गुणवान।
दत्तचित्त को हूँ प्रेरणहार। नाम रटे० ॥ १० ॥
कई रटते हैं नाम अरिहन्त। मन अरि जाको लखे न पंथ।
मन बुद्धि चित पर है असवार। नाम रटे० ॥ ११ ॥
देवनाथ को कीनो साथ। अर्थ बतायो हाथो (१) हाथ।
मान निकल झगड़े से बार। नाम रटे० ॥ १२ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

दूर करो दिल द्वैत विकार। जद पावो दिल में दीदार (२) ॥ टेर ॥
दौड़ दौड़ मत बाहिर जाय। दिल को पकड़ ठिकाने लाय।
मिट जावे कर्मों री मार। जद पावो० ॥ १ ॥
माला हज़ार चाहे फेर लो लाख। इण सूँ न मिलसी आतम साख।
आखिर फेरत बैठोला हार। जद पावो० ॥ २ ॥
निज में वृत्ती देवो लगाय। वो माला फिर छूटे नाँय।
मिट जावे सगलोई घोर अन्धार(३)। जद पावो० ॥ ३ ॥
निज वृत्ती का धागा होय। श्रुति स्मृति मणका पोय।
तत्त्वमसि यह शब्द उचार, जद पावो० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरू कीन सहाय। जिन निज माला दिवी बताय।
मान यह फेर रह्यो हर बार। जद पावो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये" की। ताल कैरवा ॥

रट गो रक्षक(४) गोपाल, किसको ध्यावे रे ॥ टेर ॥

१—साक्षात्कार, २—आत्म-दर्शन, ३—अज्ञान, ४—इन्द्रियों का स्वामी।

छोटा बड़ा नहीं कोई; सब ही रूप एक होई।
यह त्याग झूठ को जाल। किसको ध्यावे रे॥ १॥
मथुरा वृन्दावन भटक्यों; तो भी मन यह ना हटक्यो।
कर खरच तूँ भयो कंगाल। किसको ध्यावे रे॥ २॥
तेरो तैं जोयो नहीं; जब तूँ तेरो होयो नहीं।
तैं तो खोई मुफ्त में लाल(१)। किसको ध्यावे रे॥ ३॥
नो इन्द्रिय में व्यापक है; एक पलक नहीं दूर रहे।
ओ करे सबन की पाल। किसको ध्यावे रे॥ ४॥
मान अज्ञान को दूर करो; गुण्डन गोल में मती मरो।
ओ दौड़्यो आवे काल। किसको ध्यावे रे।॥ ५॥

॥ सवैया ॥

कोई कहे वह गौवन की और ग्वालन की प्रतिपाल करावे।
अन्य कहा कोई पशु व मनुष्य कहा उनसे कुछ वैर कमावे।
दोयन की वह सहाय करे तो ईश्वर को क्यों नाम धरावे।
ईश पणो तो निभे जब ही सामान्य सभी को सहायक आवे।
कहा तो गाय और अश्व कहा चींटी परयंत जो एक दिखावे।
मान कहे तब ही हम माने वरना ईश इसो नहीं भावे॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये" की। ताल केरवा ॥

वंक वचन

नृप कहिये बात सँभार, नहीं तो अटकोगे॥ टेर॥
चोर साह में एक रह्यो; क्यों खाय चोर है मार। नहीं तो० ॥ १॥
चोर करे चोरी जभी; जब पकड़े क्यों सहुकार। नहीं तो० ॥ २॥
फल दोयन के क्यों है जुदा; यह अचरज आय अपार। नहीं तो० ॥ ३॥

१—आत्मा।

हँस सिंह है जीव इसा; फिर दरसे क्यों द्वैकार। नहीं तो० ॥ ४ ॥
हंस सोई मोती चुगे; सिंह खाय जीव क्यों मार। नहीं तो० ॥ ५ ॥
वंक कहे हो नराधिपति; हम क्यों तेरे भिखियार। नहीं तो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये की"। ताल कैरवा ॥

मान वचन

कहि चातुर चपल प्रवीन, कब तक हम कहवें ॥ टेर ॥
देह के हैं व्यवहार यही; मुझ में लेश विकार नहीं।
यूँ मूरख होत आधीन। कब तक० ॥ १ ॥
ब्रह्म मुझ यह नहीं कह्यो; कार्य कर्ता कह दियो।
जस साज बजी तस बीन। कब तक० ॥ २ ॥
ठाम ठाम तस भयो गुण है; या में ब्रह्म को दोष कुण है।
यह नहिं जाने मति हीन। कब तक० ॥ ३ ॥
यह तो बात जबही बने; अपने स्वरूप को रूप ठने।
हो एकता बीच में लीन। कब तक० ॥ ४ ॥
देवनाथ को साथ कियो; इण अपने समान सनाथ कियो।
लियो मान सत्य निज चीन। कब तक० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये की"। ताल कैरवा ॥

मन चेत चेत अब चेत, दिन एड़ा जावे ॥ टेर ॥
मनुष्य जन्म सो दिन ऊगो; ओ जेज नहीं ऊगो पूगो।
ओ खाली रहसी खेत। दिन एड़ा जावे ॥ १ ॥
आतम दरसण कर भाई; ऐसो अवसर फिर नाँई।
मत नाँख केसर में रेत। दिन एड़ा जावे ॥ २ ॥
अपनी भली जो तू चावे; तो आतम तत्त्व क्यों नहीं पावे ॥
कर अपणे आप सूँ हेत। दिन एड़ा जावे ॥ ३ ॥

सत् संगत कर सुख पावे; साची बात हिरदे लावे ।
ओ माने जद मन प्रेत । दिन एड़ा जावे ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी; द्वन्द जगत की दूर हरी ।
अब मान भयो रंग स्वेत । दिन एड़ा जावे ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "इंके,, की । ताल कैरवा ॥

मत सोवो रे भरम केरी नींद(१); अब उठ जागो रे ॥ टेर ॥
नींद नींद में उमर खोई, जाए ने जाल बिछायो रे ।
रतन(२) हाथ में आयोड़ो खोयो, तुम सम मूर्ख न पायो रे ।
हाँ रतन ने दियो गमाय । तो अब फिर बो कैसे पाय ।
तू तो अजहू भूल ने त्याग; अब उठ जागो रे ॥ १ ॥
वाताँ ब्रह्म हाथ नहीं आवे, कर निश्चय जद पावो रे ।
निश्चय कीवी भरम सब भागा, मन माँयले ने समझावो रे ।
मन समझाय ने आतम पाय । भेद भरम ने देवो मिटाय ।
अपने आप सूँ लाग; अब उठ जागो रे ॥ २ ॥
घर बन माँय एक सो दीसे, इतर नजर नहीं आवे रे ।
गृहस्थ सन्यस्त भेद नहीं जाणे, वे नर ब्रह्म पद पावे रे ।
जिन ब्रह्मपद ने लियो है पाय । निज स्वरूप ओलख्यो उर माँय ।
उनको है अमर सुहाग; अब उठ जागो रे ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, सूताँ मोय जगायो रे ।
प्यारी प्रीतम प्रीतम प्यारी, एको एक लखायो रे ।
पिव प्यारी दोऊँ एक मिलाय । मान भर्म सब दियो है भगाय ।
खेल रह्यो है ब्रह्म फाग; अब उठ जागो रे ॥ ४ ॥

१—मोह- निद्रा, २—मनुष्य- जन्म ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "इंके" की। ताल कैरवा ॥

पियो पियो रे अमीरस (१) आय; फेर कद पीसो रे ॥ टेर ॥
भाग जगे कोई हरिजन पाय। निस्प्रेही होय अमी पिलाय।
अब तुम होवो रे अचाय(२); फेर कद पीसो रे ॥ १ ॥
सबसे ऊँचो आतम ज्ञान। जिनको धरो सभी जन ध्यान।
अमर होय सुख पाय; फेर कद पीसो रे ॥ २ ॥
जग में जीणो है दिन चार। मत तुम खावो विषय की मार।
इण माँहे श्यान गमाय; फेर कद पीसो रे ॥ ३ ॥
खर कूंकर में पियो न जाय। ऐसी स्वतन्त्रता वहाँ न पाय।
परवश मार जो खाय; फेर कद पीसो रे ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु तोय पिलाय। फिट है मूरख पियो न जाय।
मान अजहू शर्माय; फेर कद पीसो रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "इंके" की। ताल कैरवा ॥

करदो करदो भरम ने दूर; पीया निज पावोगे ॥ टेर ॥
भरम कूप में उलझो नाँय। इनमें उलझयाँ नहीं सुख पाय।
पहिले से रहिये यांसे दूर; पीया निज पावोगे ॥ १ ॥
पोल पन्थ को अन्त भी नाँय। दुगुना तिगुना जाल बिछाय।
छिप जावे अपनो नूर; पीया निज पावोगे ॥ २ ॥
जंतर मंतर तंतर माँय्। ग्रह गोचर और राशी दिखाय।
पहले ही करदे मग दूर; पीया निज पावोगे ॥ ३ ॥
मुनि वशिष्ठ और व्यास महान्। शुकमुनि से पूजो गुणवान्।
कपटिन के डारो दूर से धूर; पीया निज पावोगे ॥ ४ ॥

१—आत्म-ज्ञान, २—कामना से रहित।

देवनाथ गुरु संत सुजान। पाये ब्रह्मनिष्ठा गुण खान।
मान लख्यो है हाल हजूर; पीया निज पाओगे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की। ताल कैरवा ॥

तोड़ो तोड़ो रे भरमना रो बन्ध; निज प्रभु ध्यावो रे ॥ टेर ॥
क्यों काशी मथुरा में जाय। दिल में देखो देव मिलाय।
अपने आप बिच खोज; सहजे हि पावो रे। तोड़ो तोड़ो० ॥ १ ॥
बन्ध तोड़ प्रहलाद बुलायो। आतम रूप खंभ में आयो।
अन्धविश्वास ने छोड़; प्रकट दिखावो रे। तोड़ो तोड़ो० ॥ २ ॥
निर्बन्ध होय रटे केई साध। जिनके मिट गये वाद विवाद।
हो गये आतम रूप; सहज समाओ रे। तोड़ो तोड़ो० ॥ ३ ॥
मानसिंह निर्बन्ध फञ्ज जान। देवनाथ मिले कृष्ण समान।
जीवन मोक्ष पहिचान; आय नहीं जाओ रे। तोड़ो तोड़ो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की। ताल कैरवा ॥

चालो चालो अमर घर आय; दरसण पास्याँ ए ॥ टेर ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल में नाँहि। अमरपुरो है अपने माँहि।
ब्रह्म पद माँहि कीजे वास; दरसण ॥ १ ॥
कोई कहे क्षीर सागर के माँय। कोई तीजे चौथे बतलाय।
ए तो झूठो देवे विश्वास; दरसण० ॥ २ ॥
जगन्नाथ रामेश्वर जाय। बद्रीनाथ द्वारिका धाय।
भटक बहुत देखी त्रास; दरसण० ॥ ३ ॥
साची निश्चय जिनके होय। इत उत को भटके नहिं कोय।
टूट जाय सब आस; दरसण० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिले सुजान। ज्ञान गंग न्हाये निर्वाण।
मान निज रूप प्रकाश; दरसण० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पी प्याला नित प्रेम का, पियो न प्याला भंग।
इण सूँ तो मस्तान हो, इण से बावरो अंग॥
शिव बूँटी मुख से कहो, कहताँ शरम न आय।
नहीं बूँटी कल्याण की, बूँटी है दुःखदाय॥
शिव(१) बूँटी सज्जन पिये, जो मरे न जन्मे कोय।
थे तो घास बन को पियो, मूढ़ मति दी खोय॥
मानसिंह कहे मानलो, शिव बूँटी दूँ पाय।
फेर जन्म धरसो नहीं, शिव(२) में शुद्ध समाय॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैती रसिये" की। ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे जहर(३) रस पीओ रसिया(४) ॥ टेर ॥
हो रसियाजी म्हारे(५) संग अब चालो।
गुरु गम(६) मगन होय मग(७) झालो। काँई रे० ॥ १ ॥
हो रसियाजी थाँने ब्रह्म रस पाऊँ।
विषया रस सूँ मरत बचाऊँ। काँई रे० ॥ २ ॥
विष ने अमी रस दोई घर माँही।
विष रस पीयो अमी छेड़्यो ही नाँही। काँई रे० ॥ ३ ॥
अमृत रस री तो कूँची(८) गमाई।
जहर पियो मौत सिर पर आई। काँई रे० ॥ ४ ॥
कूँची ना मिले तो अब ताला(९) तोड़ावो।
छताँ अमी जहर मत खावो। काँई रे० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु ताला खुलाया। मानसिंह रस पी सुख पाया। काँई रे० ॥ ६ ॥

१—आत्मज्ञान, २—आत्मा, ३—विषय, ४—जीव, ५—निश्चयात्मिका बुद्धि, ६—उपदेश, ७—ज्ञान-मार्ग, ८—पहिचान, ९—साम्प्रदायिक हठधर्मी।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे कुपन्थ पन्थ जावो रसिया ॥ टेर ॥
पन्थ कुपन्थ ने दूर हटावो । सोवन शिखर री पैड़ी आवो ।
कुमता रे घर काँई नित जावो । काँई रे कुपन्थ० ॥ १ ॥
कुमता नारी करेई नही थाँरी । बालम मानो कही अब म्हारी ।
मानो कही तो सहज तिर जावो । काँई रे कुपन्थ० ॥ २ ॥
सुमता नार कहे पतिव्रर्ता । तोड़ दिवी थे कुमत सूँ डरता ।
तोड़ी तो बालम फिर जोड़ मिलावो । काँई रे कुपन्थ० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु चतुर विज्ञानी । मान कहे पिया जो नहीं मानी ।
हमके चूका तो फेरुँ पिछतावो । काँई रे कुपन्थ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे इसो हठ लियो रसिया ॥ टेर ॥
इण हठ में तो सकल गुमाई । रतन खान थाँरे हाथ न आई ।
सुख ने तज्यो दुःख लीयो जी रसिया । काँई रे इसो० ॥ १ ॥
अजू हठ छोड़ो तो भव तिर जावो । ब्रह्म आनन्द में सहजे समावो ।
रात दिवस जहर पीयोजी रसिया । काँई रे० ॥ २ ॥
मनुष्य जन्म माँय थे अब आया । जीवन अजहू वृथा ही गमाया ।
धूल जिसो जग में जीयोजी रसिया । काँई रे० ॥ ३ ॥
पक्षापक्ष को दूर परावो । अपनो आनन्द आप माँय पावो ।
सुख तज दुःख क्यों सीयोजी रसिया । काँई रे० ॥ ४ ॥
मानसिंह आनन्द निज मेरो । नाथ कृपा सूँ अन्तःकरण हेरो ।
मान अभय पद लीयोजी रसिया । काँई रे० ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

कीजे मान विचार नित, पलक न खाली खोय ।
वक्त विचारन की यही, अवर नं मिलसी कोय ।
अवर न मिलसी कोय जन्म सब नीचा पावे ।
इन्द्र सुरेन्द्र ही होय, तभी यह सुख नहिं आवे ।
बीज भबूके देखने, भट पट मोती पोय ।
कीजे मान विचार नित, पलक न खाली खोय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की । ताल कैरवा ॥

घणा जतन सूँ मिल्यो है मौको(१) भूल न जावो रे; रूप निज पावो रे ॥टेर॥
जगत बिषय तो बहुत दिन भोगे तत्त्व(२) विषय दरसावो रे ।
जगत विषय ने जग कर राखो निज में आवो रे । रूप० ॥ १ ॥
जगत विषय तो फिर भी त्यार है खर कूकर जहाँ जावो रे ।
मनुष्य जन्म देवाँ ने दुर्लभ मती गमावो रे । रूप० ॥ २ ॥
और सन्ताँ री दे दे ओपमा अपणो माल गुमावो रे ।
दूजा कमायो ज्याँरो थाँ ने काँई थे ही कमावो रे । रूप० ॥ ३ ॥
वे तो सन्त हुशियार रया ने थे क्यूँ घर(३) ने लुटावो रे ।
वाँ तो चोराँ(४) ने पकड़ कूटिया थे शस्त्र संभावो रे । रूप० ॥४॥
और सन्ताँ रो जीवन पढ़ पढ़ भोला मत रह जावो रे ।
वाँ जो कमाया सुख सूँ खाया थे भूखा रहावो रे । रूप० ॥ ५ ॥
स्वर्ग और अपवर्ग फिरो चाहे देवलोक फिर आवो रे ।
मनुष्य जन्म में तत्त्वज्ञान ऐसो कहीं न पावो रे । रूप० ॥ ५ ॥
मान कहे अब कही मानलो सदा सुखी बन जावो रे ।
इण पर भी डूबण री मरजी तो शिला बन्धावो रे । रूप० ॥ ७ ॥

१—मनुष्य-जन्म, २—आत्मा, ३—आत्मानन्द, ४—काम-क्रोध आदि, ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की । ताल कैरवा ॥

सोय मती मन मूढ़ नीन्द(१) अब चलो आतम देश; चुपके चाल परो ॥ टेर॥
पग(२) बिन पन्थ(३) माग(४) बिन मारग बिना पंख बिन उडणो(५) रे।
घर(६) बिन अधर आकाश नहीं जहाँ निर्मल सुन्दर भेष(७)। चुपके०॥ १॥
मारग में है डाकू(८) घणेरा लूट लूट धन(९) खावे रे।
वाँरे जाल फँस्यो क्यों मूरख ले सतगुरु उपदेश । चुपके चाल० ॥ २॥
हरदम राख वैराग बोलाऊ(१०) जिणसूँ चोर न आवे रे।
ओ घर(११) अपणो कदे न समझो ओ सगलो परदेश(१२)। चुपके चाल०॥ ३॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के निज घर मोय बतायो रे।
मानसिंह निज रूप मिल्यो जब मिट गयो राग और द्वेष। चुपके चाल॥ ४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "सैन म्हारा रे" की । ताल कैरवा ॥

सजनो म्हारा रे चालो रे चालो निज देश(१३) में रे।
सजनो म्हारा रे सूताँ सूताँ सरसी नाँय, लाल म्हारा रे;
समझ लेवो नी मन माँयने रे ॥ टेर ॥
सजनो म्हारा रे समझया जिकेई नर सूरवाँ रे।
सजनो म्हारा रे पाँच(१४) पचीस(१५) किया चूर, लाल म्हारा हे; समझ० ॥ १॥
सजनो म्हारा रे पश्चम(१६) पुरी सूँ घोड़ो(१६) छोड़ियो रे।

१—मोह-निद्रा, २—स्थूल कर्म-काण्ड, ३—ज्ञान मारग में चलना, ४—पगडंडी रूप सामप्रदायिक रीति-रिवाज, ५—स्थूल इन्द्रियों की पहुंच से परे, केवल सूक्ष्म अन्तःकरण का विषय। ६—किसी प्रमाण पर निर्भर न रहने वाला—स्वयं संवेद्य, ७—सच्चिदानन्द स्वरूप, ८—द्वैत भाव के विकार, ९—आयु, १०—रखवाला, ११—अज्ञानावस्था, १२—आत्म-विमुखता, १३—आत्म-स्थिति, १४—विषय, १५—प्रकृतियाँ, १६—अज्ञानावस्था, १७—मन ।

सजनो म्हारा रे मारी मारी प्रारब्धाँ री सेन(१) लाल म्हारा रे; समझ ॥ २ ॥
सजनो म्हारा रे चालोनी पूरब(२) पुर रे गाँव में रे।
सजनो म्हारा रे रेवोनी पूरबिया(३) होय, लाल म्हारा रे; समझ० ॥ ३ ॥
सजनो म्हारा रे ज्ञान उजालो घट में करो रे।
सजनो म्हारा रे करदो करदो संचित ४) ज्याँरो नाश, लाल म्हारा रे; सम०॥४॥
सजनो म्हारा रे मन मजबूती ने झेलिये रे।
सजनो म्हारा रे कीजे कीजे शुद्ध क्रियमाण (५), लाल म्हारा रे; समझ० ॥५॥
सजनो म्हारा रे नहीं तो करो नहीं भोगवो रे।
सजनो म्हारा रे रहणो रहणो कर्म अकर्म सूँ बार, लाल म्हारा रे; समझ० ॥६॥
सजनो म्हारा रे देवनाथ गति देवसा रे।
सजनो म्हारा रे ज्याँरे संग मान भयो देव, लाल म्हारा-रे; समझ० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग पूरबी । ताल तिताला ॥

मत हो मन तू जग ते हैरान ॥ टेर ॥
तेरो कहा बिगारत जग यह, अपनो रूप सब जगत जान । मत० ॥ १ ॥
जग ते हार कहाँ जायगो, ठौर न दीखत कोई और आन । मत० ॥ २ ॥
मिथ्या ही मिथ्या कहे उन्हें पूछो, तुम जगते कब बार जान । मत० ॥ ३ ॥
भिन्न कहे तो अलग क्यों न जावे, वसे आय क्यूँ जग में ठान । मत० ॥ ४ ॥
मानसिंह तू आप जगत है, तेरे सिवा फिर जगत कौन । मत० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मुलतानी । ताल ध्रुपद ॥

गुनि जन गुन गाय गाय, गाय नाँय रहिये;
गाय रहे दुःख होय, दुर्मति त्याग दहिये ॥ टेर ॥
आदि सिंह बनत गाय, सोच तो यही है;

१—प्रारब्धों के भोग, २—आत्म-ज्ञान, ३—आत्म-ज्ञानी, ४—पिछले किये हुए संचित कर्म, ५—वर्तमान में होने वाले कर्म।

जान बूझ दुःख लेत, सोचत नहीं है। गुनि जन० ॥ १ ॥
मानसिंह गाय त्याग, एक रंग सहज लाग;
मूढ़ नींद सेति जाग, सुलझै होय रहिये। गुनि जन० ॥ २ ॥
माने मन जीव होय, ब्रह्म मान जीव खोय;
मान तू महान् जोय, सीधे मग वहिये। गुनि जन० ॥ ३ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मान कहे अब मांन मन, बिन माने सुख नाँय।
मन माने निज मन बने, फेर काल नहीं खाय।
फेर काल नहीं खाय, काल को काल कहावे।
काल विचारो कौन, जिको फिर खावन आवे।
मरण मारण से रहे परे, सो निज रूप समाय।
मान कहे अब मान मन, बिन मान्याँ सुख नाँय॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज चैत के गीत "बामण का नन्दलाल" की। ताल कैरवा ॥

कही मानो रे कही मानो, अपने रूप ने आप जानो ॥ टेर ॥
बहुतक वेर कहीं समझाय। फेर कहूँ जो बुद्धि में आय।
छान छान के फेर छानो। अपने रूप ने आप जानो ॥ १ ॥
दीखत मात्र यह है संसार। इनको जरा कुछ करो विचार।
तत्त्व दृष्टि मन में आनो। अपने रूप० ॥ २ ॥
सबसे मिल कर करो व्यवहार। एक रूप लख आरो पार।
वृथा ही वाद हठ मत ठानो। अपने रूप० ॥ ३ ॥
तत्त्व दृष्टि से धरलो ध्यान। जद जग दीखे आप समान।
खोज करो तो अन्तर जानो। अपने रूप० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कही सुजान। मान सही कर लीवी मान।
गाई है जैसे वेद पुराण। अपने रूप० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज चैत के गीत "बामण का नन्दलाला" की । ताल कैरवा ॥

हद रंग आयो रे हद रंग आयो । खुद मस्ती प्यालो पायो ॥ टेर ॥
मदवा सतगुरु मिल गया नाथ । भलो कियां मदवाँ रो साथ ।
प्रेम राग सूं सदाईं गायो । खुद मस्ती प्यालो पायो ॥ १ ॥
समझी वृत्ति सुरत कलार । शब्द छाँण मद करत तैयार ।
पीताँ ही अखण्ड तत्त्व दरसायो । खुद मस्ती० ॥ २ ॥
पहिले प्याले पड़ी पिछाण । धरयो पावड़ी पर पग जाण ।
गुण प्रीतम रो हद गायो । खुद मस्ती० ॥ ३ ॥
दूजे प्याले ऊगो चन्द । तत्त्व शब्द रो मिल्यो आनन्द ।
जग रो रंग सब बिसरायो । खुद मस्ती० ॥ ४ ॥
तीजे प्याले उपज्यो सार । प्यारी कीन पिया सूँ प्यार ।
आनन्द चौगणो सो दरसायो । खुद मस्ती० ॥ ५ ॥
चौथे प्याले मान्या च्यार । चोर जिके हो गया साहूकार ।
गुप्त गयो धन अब पायो । खुद मस्ती० ॥ ६ ॥
प्याले पाँचवें निर्भय कीन । पाँच पचीस भया आधीन ।
बेखटके डर बिसरायो । खुद मस्ती० ॥ ७ ॥
छट्ठे प्याले मद छक होय । शंक काल री रही न कोय ।
काल विचारो मुझ से घबरायो । खुद मस्ती० ॥ ८ ॥
प्याला सातवाँ पीयत सोय । जिणसूँ पिये रा दरसण होय ।
ओ तो अवसर अब के ही आयो । खुद मस्ती० ॥ ९ ॥
प्यालो आठवों पियाजी रे हाथ । भलो बण्यो है अधिको साथ ।
इसड़ो आनन्द किम जाय गायो । खुद मस्ती० ॥ १० ॥
पीते ही प्याला हुवा गलतान । नहीं मान और नहीं अपमान ।
पिव प्यारी एक रूप ध्यायो । खुद मस्ती० ॥ ११ ॥

नाथ मिल्या ते कियो आनन्द । मेट दियो सब द्वैत को फन्द ।
मान एक जग सब पायो । खुद मस्ती० ॥ १२ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज चैत के गीत "बामण का नन्दलाला" की । ताल कैरवा ॥

मन सुख पायो रे मन सुख पायो । निज स्वरूप नित दरसायो ॥ टेर ॥
मिट गयो मन से मन अमान । अब नहीं मन में खैंचा तान ।
शुद्ध स्वरूप नित ही ध्यायों । निज स्वरूप० ॥ १ ॥
जीव ब्रह्म अब रह्या न कोय । ज्यूँ है ज्यूँ निज आप ही होय ।
म्हाँने त्रिविध ताप नहीं आयो । निज स्वरूप० ॥ २ ॥
गुणातीत तिरगुण है नाँय । फिर भी है सब गुण के माँय ।
सगुण निगुण गुण नित गायो । निज स्वरूप० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरू नित्य आनन्द । जिण दीनो म्हाँने आतम पन्थ ।
मान लख्यो सुख अब पायो । निज स्वरूप० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूआ रे" को । ताल कैरवा ॥

क्या ग्रन्थ सुनावो, अपनी नहीं माने ज्याँने त्याग दो ॥ टेर ॥
आप परिश्रम अति करो सरे ए नहीं धारे कोय ।
बिन धार्‌याँ बिन कैसे तिरसी आवे अचरज मोय ।
इतको कही इत काढ़दी सरे वृथा परिश्रम होय रे । क्या ग्रन्थ० ॥ १ ॥
कवि क्यो अकुलावे पढ़ताँ पढताँ ए कोई दिन धारसी ॥ टेर ॥
ए मग को छोड़े नहीं सरे छोड़े नहीं स्वभाव ।
तो हम अपनो क्यूँ छोड़े दें सरे कर्त्तव्य कर्म को भाव ।
हूम जबरे या ये जबरे हैं कैसे होसी न्याव रे । कवि क्यों० ॥ २ ॥
आपाँ न समझ्या सहज में सरे खाई बहुत दिन मार ।

ए कद सहजे समझसी सरे आरत जीव विचार।
धीरे धीरे होवसी स ए भवसागर से पार रे। कवि क्यो० ॥ ३ ॥
आप जिसा कितनाक हैं स थे समझ्या सैनी माँय।
पलट्या एक दम पलक में स थाँने जेज लगी कुछ नाँय।
थाँरी होड ए कद करे सरे म्हाँ सूँ सही न जाय रे। क्या ग्रन्थ० ॥ ४ ॥
अनन्त जन्म सूँ सूधर्या स कवि एक जन्म मैं नाँय।
फिर नहीं मिलता नाथजी सरे बह जाता भव माँय।
नाथ को साथ मिल्यो चन्दन सो चन्दन लियो बनाय रे। कवि क्यों० ॥ ५ ॥
चन्दन को ए संग करे सरे कुलछ री लसणी माँय।
याँ सूँ चन्दन डरतो रेवे स ए लछण देवे लगाय।
जिण सूँ थे डरता रेवो स रे तासूँ कहूँ समझाय रे। क्या ग्रन्थ० ॥ ६ ॥
सत्गुरु बूँटी वा दिवी स म्हे लसण शुद्ध बणाय।
शुद्ध कराँ कर पाक ने सरे सभी जगत ज्याँने खाय।
ब्राह्मण वैश्य भी सेवले स ज्याँने खबर पड़े कछु नाँय रे। कवि क्यों० ॥ ७ ॥
दुर्गन्धि तो उड़ावसो स वाँरे उर में तमोगुण वास।
इणने कैसे निकालसो सरे कहिये प्रगट प्रकास।
जब तक तामस जाय नहीं रे होयो न कर्म रो नास रे। क्या ग्रन्थ० ॥ ८ ॥
तामस उल्टो फेरेसाँ सरे करके सत् अहङ्कार।
ब्राह्मण क्षत्री अब करे स फिर करे आतम अहङ्कार।
मेरो रूप जगत सभी सरे यूँ म्हे लेवाँ विचार रे। कवि क्यों० ॥ ९ ॥
लसण पणो अब मिट गयो सरे चनण समान ही होय।
कहे कवि क्या शंका रही स तू उत्तर दे अब मोय।
मानसिंह कहे मत डटो सरे लाभ चौगुणो होय रे। कवि क्यों० ॥ १० ॥
तुम तो ईश स्वरूप हो सरे धर आये अवतार।
मनुष्य तुम्हें क्या कह सके स तुम हो अति वारापार।
बंक जो महिमा कब तक गावे शेष भी जावे हार रे। क्या ग्रन्थ० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥राग झिंझोटी । ताल तिताला ॥

जिसे ढूँढ़ने को गये वही हम पाया है ॥ टेर ॥

काशी केदार गये, गया हरद्वार गये ।

चारू धाम फिरे पर कहीं न मिलाया है ॥ १ ॥

पण्डितन को खूब बूझा, तो भी नहीं मारग सूझा ।

स्वार्थ के लिये हमें और ही बताया है ॥ २ ॥

प्रेत जो शिला सराई, ब्रह्म कपाली सराई ।

पोल के विप्रन को खूब दान जो दिलाया है ॥ ३ ॥

जैसे हैं विप्र यह, तैसे ही सन्यासी सोई ।

त्याग त्याग कहके लाखों भिक्षुक बनाया है ॥ ४ ॥

सन्यासी न समझो इन्हें, समझो सत्यानाशी तुम ।

एक दो नहीं ये लाखों घर, जो डुबाया है ॥ ५ ॥

देवनाथ कृष्ण मिले, हुए हम पारथ के रूप ।

मान कपड़ों के जो बदले मन को रंगाया है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग झिंझोटी । ताल तिताला ॥

अब न ठगायेंगे हम, सुत चत्राणी के ॥ टेर ॥

पहिले नहीं जानते थे, तब हम इनकी मानते थे ।

अब तो हुए हैं हम पूरब राजधानी के ॥ १ ॥

भला है अच्छा है यह, पास में न आवो मेरे ।

अब न चलेंगे तुमारे चक्र यह दिवानी के ॥ २ ॥

उल्टे अर्थ वेदों के, और सूत्र अर्थ उल्टे करो ।

अब रहो चुप वरना करें बिन जुबानी के ॥ ३ ॥

जितनी चली सो चली, अब न चलेगी यहाँ ।

हम भी तो आगे हैं कोई सिंहनी सयानी के ॥ ४ ॥
चाहे रूठो देवी या, देवता भी रूठो तुम।
अब न देने वाले हैं हम आत्म कुरबानी के ॥ ५ ॥
नाथ हू को साथ कियो, आप सो-सनाथ कियो।
मान छोड़ पोला पन्थ ज्ञाता वेद वानी के ॥ ६ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मानसिंह संसार में, सत्पुरुषाँ रो संग।
भेटत करले आपसा, पलट देत है रंग।
पलट देत है रंग, अंग ज्यों त्यों ही रहावे।
बदल जात है भाव, जबे वे भृङ्ग कहावें।
करम काठ सबही जले, जैसे जले पतंग।
मानसिंह संसार में, सत्पुरुषाँ रो संग ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार में, हंस स्वरूपी सन्त।
इण हंसन के भेष में, बुगला बसत अनन्त ॥

॥ कवित्त ॥

ज्ञान और विचारशील अन्तर विवेक भरयो, मिथ्या विषयन को नित करत रहत त्याग है। मरने को डर न कोय कर्त्तव्य आरूढ़ होय, ज्याँरो संसार बीच सत्य वैराग है। आतम स्वरूप सोय अवर नहीं जाने कोय, देह अभिमान ताको कियो सत्य त्याग है। मान यूँ विचार करे ऐसे सही पार करें, ज्याँरे आतम तत्त्व बीच साचो अनुराग है ॥

॥ गान ॥

॥ राग गौरी। ताल कैरवा ॥

लीजे अमर फल लीजे, सत्संग माँय लीजे अमर फल लीजे ॥ टेर ॥
तीरथ व्रत को तो गुप्त ही फल है, ज्या सूँ मन न पतीजे।

कर हिम्मत ले लीजे। सत्संगत० ॥ १ ॥
प्रतक्ष फल श्रो सत्संग देवे, कर हिम्मत ले लीजे।
औराँ री कही यहीं नहीं सुनिये, तर्क आपनी कीजे।
देवे जबाब प्रमाण सहित जो, सेवा जिकाँरी कीजे। सत्संगत० ॥ २ ॥
कर सत्संग कुसंग त्याग दे, मन ममता हर लीजे।
एक रंग सूँ रहे नित रँगिया, ज्ञान अमीरस पीजे। सत्संगत० ॥ ३ ॥
कर सत्संग खाली मत रहीजो, करे जितनी समझीजे।
करके विचार धारे उर अन्दर, जीवत मोक्ष कर लीजे। सत्संगत० ॥ ४ ॥
पीवे भंग और चरस चौगुणो, धूआँ घोर मचीजे।
वे तो बापड़ा आप जलत है, थाने शीतल किम कीजे। सत्संगत० ॥ ५ ॥
भंग तमाखू और सुलफा पलीता, दोय दोय हाथ उठीजे।
अपनी तो बुद्धि उण आग में होमदी, ज्याँरो संग नहीं कीजे। सत्संगत० ॥ ६ ॥
शीतल सदा हृदय ज्याँरे समता, ज्याँ सूँ राम पतीजे।
कनक कामनी में लम्पट लोभी, ज्याँ सूँ राम नहीं रीझे। सत्संगत० ॥ ७ ॥
देवनाथ को साथ कियो जद, सन्मुख दर्शन कीजे।
जगत ब्रह्म और ब्रह्म जगत है, मान आन तज दीजे। सत्संगत० ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

लोक कहे सत्सङ्ग करो सत्सङ्ग को ढङ्ग तो और है भाई।
सत्सङ्ग के रंग में आन फँसे तब छूट पड़े सबही चतुराई।
सत्सङ्ग को रंग तो बहुत कड़ो यह सहजहू में तो लागे ही नाँही।
जो यह कदाचित् लाग गयो तो सोय गयो फिर जागे ही नाँही।
मान अजान ते आयो मैं मेरो लागो मना अब भागे ही नाँही।
सत्सङ्ग के रस को चाख लियो अब और रसादि को चाखे ही नाँही॥

॥ सोरठ ॥

कर कर के सत्सङ्ग, जो रङ्ग उर लाग्यो नहीं।
खाली गयो निखङ्ग, पाहन कूड़ो मारियो ॥

खूब करी सतसङ्ग, ऊमर सब भटकत फिर्‌यो ।
लग्यो न शब्द को रङ्ग, शब्द विहूणा रह गया ॥
कर सतसङ्ग मन आँट, जाति वरण की रह गई ।
चुपड़े घड़े जो छाँट, सुपने न लागे मानसी ॥
नहीं पारस में दोष, दोष पड़्यो लोहे मँही ।
वृथा करे क्यूँ रोष, कर्म काठ काट्यो नहीं ॥
जितनो कट गयो काठ, तितनो सब कंचन भयो ।
रह गयो लोह निराठ, काठ जठा सूँ ना कट्यो ॥
इण सूँ जन्म अनेक, धार धार फिरता फिर्‌या ।
मिले न आतम एक, मति शुद्ध बिन मानसी ॥
लगी ज्ञान की बेल, जड़ा मूल जावे नहीं ।
कोई दिन देसी पेल, ब्रह्म रूप आ मानसी ॥
ज्ञान बीज दियो बाय, प्रेम नीर सूँ सींच दी ।
आ जन्म अनन्ताँ न जाय, फल तो लागे चक्त पर ॥
रयो तत्व फल लाग, चाखत चित्त में चेतिया ।
लगी करम पर आग, कौन बुझावे मानसी ॥
ज्ञान बीज दे बाय, मत डर रे मन माँयला ।
प्रेम नीर सूँ पाय, धूप पड़्याँ जलसी नहीं ॥
सगलाँ री जड़ जाय, इणरी जड़ जावे नहीं ।
औराँ री देत गमाय, आ मन सूँ करले मानसी ॥
मान मान रे मान, बिन मान्याँ फिर मारसी ।
अब तो शुभ फल जान, मिथ्या फल तज मानसी ॥
उठ उठ माँझल रात, जाप अजपा सब ही करे ।
फेरण स्वर्ग पर हाथ, ओ माँग्याँ मिले न मानसी ॥
ज्याँरो मन बल होय, तो स्वर्ग विचारो कौन है ।

हमें न चहिए कोय, म्हारी कल्पना मानसी ॥
आज है कल मिट जाय, इसे स्वर्ग रो क्या करॉं।
थिर तो रहवे नाँय, थिर निज मेरो रूप है ॥
स्वर्ग और अपवर्ग, जेता सब मन माँय है।
सब को कर अनुसर्ग, मिथ्या तज सब मानसी ॥
निन्दु न वन्दू कोय, चाहे सो जावो स्वर्ग में।
आखिर रहसो रोय, वहाँ पर स्थिरता है नहीं ॥
ज्याँरो नाम और रूप, वो तो अवश्य ही बिखरसी।
मेरो शुद्ध स्वरूप, अमर हमेशा मानसी ॥

॥ सोरठा ॥

मरें न लाखों भ्रात, प्रेम पय पीवण लग्याँ।
ऊगे ज्ञान प्रभात, मिटें अन्धारो मानसी ॥
पड़्या अन्धारी रात, साथ कियो घू घू तणो।
पकड़ अन्ध को हाथ, दोरो मरसी मानसी ॥

॥ दोहा ॥

कहने को ब्रह्मज्ञान सो, कीनो नहीं विचार।
कागद की सी नाव है, डूबेगी मझधार ॥
जो कह वह कर जात है, सो सेवे ब्रह्मज्ञान।
आप तिरे और तारले, साचे पूज्य महान ॥
उन सन्तों की सेव से, नहीं डूवे मझधार।
आप खेवइया है खरा, खेके करदे पार ॥

॥ सवैया ॥

नाव को डाँड उठायो नहीं कर कूर खेवैये की बातें बनावे।
उनको कछु न भरोसो मेरे मन जहाज कहीं अधबीच डुबावे।
मान पिछान करो उर में यदि कोई खेवैया हाथ परावे।
पहिले परिछा करो चित में यह कहाँ तक हमको पार लगावे ॥

मिले खेवैया जब नाव को ले जावे खेय, देरी न लगात तुरत करेत किनारे है। आप गये पार अब औरन को पार लेत, क्या है मजाल कोई डूबे मझधारे हैं। कीनो प्रकाश विना दीप अन्तर्गत ऐसो, जिनके प्रकाश भये कछु ना अन्धारे है। कहे राव मानसिंह अब है डर कौन यार, नाथजी तो साथ हर वक्त जो हमारे हैं॥

॥ दोहा ॥

आये वन्ध छुड़ावने, बाँध दिये चहुँ ओर।
ना कोई गया न आविया, रहे ठौर के ठौर॥

॥ सोरठा ॥

जिन्हें न पूरो भाव, पोला पन्थ बाताँ करे।
मन में रति न चाव, ए चित हीना चोर सा॥
पण्डिताई रे पाण, ए सब ही सूँ करड़ा रहे।
पड़े न उर में निशाण, करड़ा बजर ज्यूँ मानसी॥
पोथी पढ़ी अनेक, कई शिष्य और पढ़ाविया।
पण पड़्यो न उर में छेक, मन माने बिन मानसी॥
रोय करम री रेख, करम अजू छूटो नहीं।
अलगो रह गयो एक, मन मान्याँ विन मानसी॥
ज्याँरो हिरदो छेक, कोमल होय कागद जिसो।
ज्याँरा उलटा पड़ गया लेख, मन मान्याँ यूँ मानसी॥
हृदय बज्र सो होय, कलम बिचारी क्या करे।
वे यूँ रहसी रोय, मन मान्याँ विन मानसी॥
बाताँ रा बाचाल, श्रुति स्मृति छेड़दे।
निरख सके नहिं लाल, पढ़ पोथा थोथा रया॥
आवे आखर माँय, समझ्या जिके तो समझ्या।
चारूँ वेद पढ़ाय, काग हंस होवे नहीं॥

हंस कहे नहीं बैन, मुक्ता लेत अमोलसा।
कौवा पड़े न चैन, जिके चौंच धरे विष्टा मँही॥

रहो न काग समान, काग पलट हंसा बनो।
सहो शब्द के बाण, कहे ज्यूँ कीजे मानसी॥

तज तोते री चाल, लाल लखो घट बीच में।
माल छताँ कंगाल, हँसी जिकांरी मानसी॥

गुप्त खजानो माँय, देश विदेशाँ क्या फिरे।
गुप्त ही गुप्त रह जाय, मन मान्याँ बिन मानसी॥

इण दिल ने कर साफ, उजलो कर कागद जिसो।
तो तू अपणो आप, ब्रह्म लेख लिख मानसी॥

कूड़ी बकियाँ बात, हाथ कछू आवे नहीं।
मिटे न तिरगुण रात, माँय लख्याँ बिन मानसी॥

कुकरम करे अपार, ऊपर सूँ बाताँ करे।
दूणी पड़सी मार, जाण जहर लियाँ मानसी॥

खावे जहर अजाण, वैद्य औषधी कर दहे।
पण जिण नर खायो जांण, मरणो तेवड़ मानसी॥

बक रया ज्ञान अटूट, बक बक बुगले ज्यूँ रया।
ज्यों जङ्गल रो ठूँठ, काम न आवे मानसी॥

॥ वंक वचन ॥

यों मत कहो महाराज, ठूँठ भी आवे काम में।
कई सरत है काज, निकमो तो वो भी नहीं॥

जितनो काष्ट को काम, ओ सगलो ठूँठाँ सूँ बण्यो।
क्यों कर कहो निकाम, सोच विचारो भूपति॥

॥ मानसिंह जी वचन ॥

सगलो ले लियो काम, केवल जड़ बाकी रही।
वा आवे नहीं किण काम, इण से कही कविराज जी॥

ज्ञान रहे सब बाँट, आप तो कोरा ही रया।
निकली न मन री आँट, जिए सूँ ढूँठे सा क्या॥

॥ दोहा ॥

को नहीं जीते भूपति, चातुर चपल प्रवीण।
इमें उबारण कारणे, भू तन विधि धर लीन॥

॥ सोरठा ॥

ना कथनी सूँ काम, और कविता सूँ राजी नहीं।
वह आतम निज धाम, मन समझ्याँ मिले मानसी॥
कविता करो अनेक, शब्द कोष के जोड़ कर।
पण पड़े न उर में छेक, मन सुलझ्याँ बिन मानसी॥
कविता री नहीं जोड़, छन्द मात्रा देखी नहीं।
करी न किणरी होड़, मिली सो भाखी मानसी॥
कथ गया कवि अनेक, काली केशव सूरसा।
जामें कसर न नेक, मन अनुभव सो ना रुक्यो॥
अजब रंगीली बात, जग में सब मुड़दा फिरे।
जीव पणो नहीं जात, मन सूँ ज्याँरे मानसी॥
भया जीव सूँ ब्रह्म, कोई कोई दीखे जीवता।
ज्याँरा वचन है रम्य, लख महरम नित मानसी॥
नहीं रहणो मतिहीन, मन माँयलो समझायलो।
बजे प्रेम की बीण, मन सूँ समझ्याँ मानसी॥
पाँच तत्त्व गुण तीन, दस ले तार चढ़ाविया।
लिया सरस्वती बीण, मधु गुण गावे मानसी॥
वृत्ति सरस्वती नार, तार और तुरप मिलाय के।
ब्रह्म पिया दरबार, यूँ मधु गुण गावे मानसी॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मन समझ बिचारो, साची धारो, कर सत्पुरुषाँ रो सङ्ग ॥ टेर ॥

ऐसा जन ज्याँरी सङ्गत कीजे, क्रोध न व्यापे अङ्ग ।

स्वतः सिद्धाई होय जिकाँ रे, काल भी होवे तङ्ग रे; मन समझ० ॥ १ ॥

जन्तर ने मन्तर ने तन्तर सिद्धायाँ, ये सब जाणो पाखण्ड ।

आतम निष्ठा सदाई सुखी रहे, निशि दिन उड़त आनन्द रे; मन समझ० ॥ २ ॥

जन्तर लिखे और मन्तर साधे, जगत जमाई रा रङ्ग ।

माल मुफ्त में खात मसखरा, नाना विधि कर ढङ्ग रे; मन समझ० ॥ ३ ॥

गोरख कबीर न मन्तर साध्या, कीनी सदा सत्सङ्ग ।

मान कहे म्हाँने वे ही सुहाया, वाँरो लाग्यो म्हाँने रङ्ग रे; मन समझ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

जिकाँ आतम पाई, रुलत सिद्धाई, वाँ पुरुषाँ रे पाँय ॥ टेर ॥

आतम शक्ति में यह बल देखो, अखिल ब्रह्माण्ड समाय ।

अष्ट सिद्धि सब हाथ जो जोड़े, पण वो न करे वाँरी चाय रे; जिकाँ० ॥ १ ॥

कोण सईका ने कोण हजारी, कुण वाँरे लाख जपाय ।

आतम इष्ट जो एक ही पकड़्यो, सब होय उणरे माँय रे; जिकाँ० ॥ २ ॥

मन्तर ने जन्तर करे सिद्ध नाँही, जगत ठगाई रो भाव ।

स्वतः सिद्धि ज्याँरो महा मन्तर है, देख्याँ सूँ दुःख जाय रे; जिकाँ० ॥ ३ ॥

गोरख कबीर रविदास जिसा रे, नहिं कोई मन्त्र पढ़ाय ।

धरताँ ही हाथ कई शिष्य तार्‌या, ज्याँरी दृष्टि सूँ मृतक जिवाय रे; जिकाँ० ॥४॥

देवहुनाथ कृपा कर हमको, दीजो भेद बताय ।

मान कहे तुम जावो परे अब, मौकू चहिये नाँय रे; जिकाँ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मैं हूँ वीर सयाना(१), सिंह(२) समाना, भेडाँ(३) सूँ भिड़कूँ(४) नाँय ॥ टेर ॥
भेडाँ सूँ वे ही भिड़कसी रे, घास(५) जिके जन खाय।
सिंह को प्रण बह मरी(६) नहीं खावे, सो किम कर वो(७) खाय रे; मैं हूँ ॥१॥
सिंह की सी मेरीगाज(८) है रे, भेड़ी देख भगाय।
सिंह से सिंह होवे सोई अड़सी, भेड़ की ताकत नाँय रे; मैं हूँ० ॥ २ ॥
जन्त्र ने मन्त्र ने कंकरी तुम्हारी, मुझ पे देखो चलाय।
मन निर्बल ज्याँरे मूठ जो लागे, म्हारे तो नेड़ी न आय रे; मैं हूँ० ॥ ३ ॥
आतम मूठ(९) में आप चलाऊँ, लाखों को देऊँ गिराय(१०)।
मैं हूँ मुड़दा(११) जो ऐसा ही करलूँ, क्या मोपे जादू आय रे; मैं हूँ० ॥ ४ ॥
जितना मंतर जंतर तंतर, मुझ बिना कोई नाँय।
ओऽहं(१२) मंत्र निकाल देवो तो, फिर तुम देखो चलाय रे; मैं हूँ० ॥ ५ ॥
देवहुनाथ जभी मोहे छोड़्यो, पूरो सिंह(१३) बनाय।
मान कहे कोई सिंह हो आवे तो, देखूँ मैं हाथ चलाय(१४) रे; मैं हूँ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

सब(१५) भेड़ी(१६) डरावे, थाँने बहकावे, सिंहाँ(१७) रे पास न आय ॥ टेर ॥

१—बुद्धिमान, २—स्वतन्त्र, निडर ३—अंधविश्वासी डरपोक लोग, ४—चमकूँ या डरूँ, ५—पंथापंथ या साम्प्रदायिक अंधविश्वास, ६—दूसरों पर निर्भर रहना, ७—अंधविश्वास रूपी घास, ८—संशय रहित निडर होकर बोलना, ९—आत्मज्ञान, १०—हरा देना, ११—देहाभिमान से रहित, १२—सब का आधार बीजमंत्र, १३—पूर्णज्ञानी, निडर, १४—विचार विनिमय, ज्ञान-चर्चा, १५—मजहबी पोला पन्थी धूर्त लोग, १६—विचारहीन अन्धविश्वासी जनता, १७—विचारवान ज्ञानी लोग।

जो ये सिंहाँ के पास में आवे तो, तालू में जीभ(१) रह जाय।

सिंह की धाक(२) बुरी है सबसे, सुणताँ मन घबराय रे; सब भेड़ी० ॥ १ ॥

सिंहाँ रे पास तो वोही ज आवे, सिंहनी(३) को सुत पाय।

नाहरी को दूध(४) पियो सोई आवत, ज्याँ रे कलेजो(५) नाँय रे; सब भेड़ी० ॥ २ ॥

मंतर ने तंतर मूठ चलावे, देवे जंतर बनाय।

सिंहनी के सुत एक न माने, सिंहाँ ने काल न खाय रे; सब भेड़ी० ॥ ३ ॥

गोरख कबीर रविदास मन्सूरा, याँ ने कोई मार्‌या नाँय।

जो वे मंतर साचा ही होता, तो वाँ पर क्यों न चलाय रे; सब भेड़ी० ॥ ४ ॥

देवहुनाथ हैं सिंह हमारे, इनके सुत कहलाय।

मान कहे सिंह के सुत सिंह है, भेड़ सूँ क्यों घबराय रे; सब भेड़० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विलावल, तर्ज "सत् गुरु सायब एक है" की। ताल धीमा कैरवा ॥

परतक परचो देखियो होजी; परचे सूँ क्या कामा।

परचे परचे में फँस रया होजी; दूर रयो निज धामा ॥ टेर ॥

तन बस मन बस कर रया होजी; परचाँ में उलझाया।

इतने परचो आवे काल रो होजी; सब रुल जावे सिद्धायाँ। ॥ १ ॥

गोरख परचा ना दिया होजी; नहीं उण कौन सिद्धायाँ।

दरसण से दुःख मेटता होजी; मन निग्रही केवाया ॥ २ ॥

धन सुत कारण दौड़ता होजी; जगत सिद्धाँ पर जावे।

जो वे सिद्ध साचा हुवे होजी; तो क्यों नहीं जगत रचावे ॥ ३ ॥

जो वे सिद्धायाँ सूँ सुत रचे होजी; हमको कष्ट क्यों आवे।

क्यों ब्रह्मचर्य खण्डन करें होजी; क्यों ब्रह्म तेज घटावें ॥ ४ ॥

जो वे किणी ने सुत दे सके होजी; तो औराँ रा सुत क्यों ढूँढ़े।

१—बोल भी नहीं सकते, २—आत्मज्ञान चर्चा रूपी गर्जना, ३—निश्चयात्मिका बुद्धि, ४—सत्य विवेक, ५—देहभाव से रहित।

परतक परचो देखलो होजी; पकड़ परायाँ ने मूँडे ॥ ५ ॥
मछन्दर किणी रा सुत हता होजी; जाँने गुरु शिष्य कर लाया ।
गोरखनाथजी ने मूँड लिया होजी; क्यों नहीं परचा दिखाया ॥ ६ ॥
मारण जारण उच्चाटनो होजी; मोहनी वशीकरण होवे ।
तो दुष्ट क्यूँ जग में होवता होजी; धर्म मूल क्यूँ खोवे ॥ ७ ॥
मानसिंह मन मानग्यो होजी; पाई मैं असल सिद्धाई ।
असली ओलख नक़ली तज्या होजी; दियो सब रोग मिटाई ॥ ८ ॥

बंक वचन

॥ दोहा ॥

बंक कहे भूपति सुनो, करो अन्याय की बात ।
पूज्य भया जो जगत में, झूठ कहे किम् जात ॥
जो वे सिद्ध होता नहीं, परचा देता नाँय ।
तो जग में क्यूँ मानता, सो सही देहु बताय ॥

मान वचन

मान कहे कविराज सुन, रूँ में कान को खोल ।
बात कहूँ चित्त में धरो, माणक मणी अमोल ॥
सिद्ध हुता साधक हुता, पर तू जाणे ज्यूँ नाँय ।
जीवत मोक्ष दिखावता, जद वे मृतक जीवाय ॥
देवनाथ भी सिद्ध है, पार आपाँने कीन ।
भव सागर सूँ तारिया, धन सुत कदे न दीन ॥
मोह मौत सूं म्हे मर्या, तत्त्वज्ञान दे प्राण ।
मूँवा फिर जिन्दा किया, ए साचा सिद्ध जाण ॥

॥ कवित्त ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो मैं तो इण विध मृतक जिवाया रे होजी ।
विषय मौत में पच पच मरिया, ज्ञान का मन्त्र सुणाया रे । साधो मैं तो० ॥टेर॥

वे जीया तो फिर मर जावे, ए नित अमर केवाया रे होजी।
याँ जीवतड़ा सूँ काल नित डरपे, काल रे पेच न आया रे। साधो०॥ १॥
शील सन्तोष रे हृदय कमण्डल सूँ, लेकर नीर छिड़काया रे होजी।
लागत छाँट कपट पट उघड़या, मौत के मुख नहीं आया रे। साधो०॥ २॥
म्हारा जिवाया फेर मर जावे तो, फिटफिट है वे जिवाया रे होजी।
प्रगट सिद्धाई छिपी नहीं किण सूँ, देऊँ ढोल बजाया रे। साधो०॥ ३॥
यों ही गोरख कबीर जिवाया, तुलसी यों ही जिवाया रे होजी।
मतहीना उलटे मग हाले, फिर फिर जगत बहकाया रे। साधो०॥ ४॥
थे केवो ज्यूँ मुड़द जिवाया तो वे, मौत चक्र क्यूँ आया रे होजी।
जो वे अमर तो आज मिलावो, पोल ही पोल चलाया रे। साधो०।॥ ५॥
खोटी हुण्डी किता दिन चलसी, कोई खरा निजर नहीं आया रे होजी।
खरा मिल्याँ तो टको नहीं बटसी, ज्यूँ का त्यूँ ही रहाया रे। साधो०॥ ६॥
देवनाथ गुरु शाह अडबपति, हुण्डि साच सिकरांया रे होजी।
मान विचार समझ कर कीनो, सुपने न घाटा खाया रे। साधो०॥ ७॥

॥ सोरठा ॥

मत कोई घालो हाथ, हिम्मत विन अड़जो मती।
अड़ियाँ दुःख हो जात, मरियाँ न छूटो मानसी॥
ज्ञान खड़ग पर हाथ, मरनो तेवड़ ने धरे।
झड़े सबी तन पात, वे जिन्दा रेवे न मानसी॥
जो मरणो मंजूर, पास हमारे आइये।
नहीं तर रहिये दूर, मन में समझो मानसी॥
कोई कहे मरियाँ भूत, होवे या होवे नहीं।
मान यूँ जीवत भूत, ब्रह्मज्ञानी ने जानिये॥
वो लाग्याँ हट जाय, ए लाग्याँ हटसी नहीं।
जिण सूँ निकट न आय, ए मरियाँ छोड़े मानसी॥

इण पर मन्त्र अनेक, इण पर एक चलसी नहीं।
ए लाग्याँ करसी छेक, लेने जासी मानसी ॥
वे देवे जान गमाय, पण बाकी ए राखे नहीं।
जीवत मुड़द बनाय, जीव पणे ने काढ़ दे ॥
मन भावे रा भूत, म्हारे तो नित मानसी।
ए हरदम रहे मजबूत, थाँ भूताँ सूँ ना डरे ॥
संग दस जबरा भूत, ज्याँ ने धरिया कैद में।
मार जमाँ सिर जूत, मारग लीनो मानसी ॥
वाँ भूताँ घबराय, लाखों डर डर मर गया।
पण याँ रे पास न आय, मार करे फिर जीवता ॥
मिले तो ऐसा भूत, भव भव मिलजो नाथजी।
भयो मान मजबूत, याँ भूताँ सूँ क्या डरे ॥
भायेला ही भूत, भूताँ भेला नित रेवाँ।
डरता रहे जमदूत, वाँ भूताँ सूँ मानसी ॥
कृष्ण बताया भूत, वे तो भूत भेला रहे।
ए पकड़ लिया मजबूत, जद दुःख पाया मानसी ॥
ए सब ने लाग्या भूत, एक ही ने छोड़्यो नहीं।
उल्टा खावे जूत, मरम विहूणा मानसी ॥
काजी पढ़े कुरान, पण्डित बाचे वेद ने।
पण याँ भूताँ री जाण, करी किणी नहीं मानसी ॥
काजी पाजी सोय, पागल हैं पण्डित सभी।
मंत्र पढ़े पढ़ रोय, मरम लखें नहीं मानसी ॥
काजी पण्डित दोय, पिवी भरम री भांग ने।
भूत न जाने कोय, ए मरम विहूणा मानसी ॥
देख्यो एक खईस, बहुत शीश और शिर नहीं।

वो जगरो जगदीश, पण कोई कोई जाणे जुगत सूँ ॥
धड़ सूँ न्यारो शीश, जो कोई करने जोयले ।
तो मिले जो असल खईस, संशय नहीं कुछ मानसी ॥
बाँध्या पाँचू प्रेत, दस भूताँ ने बाँधिया ।
जगदीश्वर सूँ हेत, जदे हुयों यूँ मानसी ॥
मरघट विश्व स्वरूप, भूत प्रेत भेला भया ।
लख्यो नहीं कुछ मूल, जद म्हे डरिया मानसी ॥
जो दूजा हो भूत, तो इच्छा सूँ सब कुछ करे ।
तो क्यों खावे सिर जूत, मंत्र विधी सूँ मानसी ॥
पहले ही निसर जाय, दिव्य दृष्टि सूँ देख कर ।
हाथ में आवे नाँय, तो मंत्रवादी क्या मारहीं ॥
जिण सूँ अपणी भूल, पृथक-पड़ी सामी दिखे ।
नाख अज्ञान की भूल, ज्ञान माग लख मानसी ॥

वंक वचन

॥ सोरठा ॥

तुलसी मिलिया भूत, भूताँ सूँ हनुमत मिल्यो ।
क्या यह कहनी झूठ, सही बतावो मानसी ॥

मान वचन

॥ कवित्त ॥

छानो न छिपे कवि तरक कोई छाँट लेत, शङ्क यह जरासी क्या अजहू रहाई है । एतो समझायो पर ज्ञान हू न आयो तोय, अजहू तरक तोमें कैसे उठ आई है । कहते ही पकड़ लेत तरक कोई काढ़ देत, हम भी निठुर बोले बिना ना रहाई है । कहे राव मानसिंह बाँकों में बात बाँकी, बिधना संयोग प्रीत तेरी जो मिलाई है ॥

वङ्क वचन

॥ कवित्त ॥

इतने न डरो नाथ सही होय कहो बात, क्षणभङ्गुर तन यह तो काल मिट जायगो । कही हू न मिटे बात जगत बीच अमर रहे, दीप को उजालो होय फेर कोई आयगो । हम तो कहोगे नाथ चुप भी हो जायँगे, अन्धविश्वास यह योंही रह जायगो । आये तुम जगत तारण घबरावो कौन कारण, तुम्हे छेड़ यश कुछ बङ्क भी ले जायगो ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

गोस्वामी गये जब ही बन में रघुनाथ के चरण में ध्यान लगायो ।
गुरुदेव मिले एक भूत उन्हें हनुमान ले ज्ञान को तहाँ प्रगटायो ।
उन ज्ञान विचार लियो उर में अपने चित के चित्रकूट में आयो ।
ब्रह्मानन्द मिल्यो यह बंक कहे मान तुम्हें सही समझायो ॥

बंक वचन

॥ दोहा ॥

शौच क्रिया के नीर से, तुलसी सींच्यो ढाक ।
सो वह ढाक है कौन सो, भूपति चौड़े भाख ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

प्रेम को नीर लियो सङ्ग में मल आवरण को जिन शौच करायो ।
निश्चय को ढाक जो सींच दियो गुरुदेव ही आयके दरस दिखायो ।
भूत मिले गुरुदेव उन्हें हनुमान जो ज्ञान जबी दरसायो ।
ब्रह्मानन्द मिल्यो तुलसी सुन बंक यही कह मान बतायो ॥

|| गान ||

|| राग सारंग-मलार "तर्ज वाणी" की | ताल दीपचन्दी ||

आवो रे आवो काजी पंडितो, देसो मंत्र पढ़ाऊँ ।
कृष्ण पढ़ायो पारथ प्रति, सो मैं सही समझाऊँ जी ।। टेर ।।
भूत प्रेत और जिन्द थे, औराँ रा निकलावो ।
थाँ में तो सब भेला बसे, पर घर क्यूँ जावो जी । आवो० ।। १ ।।
पाँच प्राण पाँचू विषय, दश भूत हैं माँई ।
एक एक रे दोय नार है, लागी रहत सदाई जी । आवो० ।। २ ।।
पाँच पितर परलोक रा, ज्याँने सही समझावो हाँ ।
समझ्याँ सूँ सुख होवसी, नहीं तर गोता खावो जी । आवो० ।। ३ ।।
सो परलोक अलगो नहीं, पित्तर नहीं आगा ।
नेणाँ रे नजीक है देखलो, फिरो मत भागा भागा जी । आवो० ।। ४ ।।
लख सब भूताँ में आत्मा, यही मंत्र है भाई ।
तत्त्वमसि तू साचो है, दूजो है कोई नाँई जी । आवो० ।। ५ ।।
कृष्ण अठारह अध्याय में, भूत न प्रेत बताया ।
आदू पितृ अपणो आप है, परापरी से आया जी । आवो० ।। ६ ।।
अभी तो पाँव पुजायलो, बाजो जग में सेणा ।
डंडा पड़ेला दोरा घणा, जैड़ा लेणाँ जैड़ा देणा जी । आवो० ।। ७ ।।
म्हाँने समझाया नाथ जी, दया थाँ पर आवे ।
मनुष्य जन्म आय बापड़ा, खाली क्यों जावे जी । आवो० ।। ८ ।।
मानसिंह कहे रे मान लो, तो निज देश ले जाऊँ ।
भेड़ पणे ने काढ़दो, मुझसा सिंह बणाऊँ जी । आवो० ।। ९ ।।

|| गान ||

|| राग गोरी | ताल कैरवा ||

मन्त्रों से सुत नहीं होवे, समझ देखो मन्त्रों से सुत नहीं होवे ।। टेर ।।

जो मन्त्रों से वंश बढ़े तो, रत्न बीरज क्यों खोवे।
मूरख अन्ध गन्द नहीं काढ़े, दीपक बिन क्या जोवे। समझ० ॥ १ ॥
कुन्ति आदि के मन्त्र सुत उपजे, यह अचरज सो होवे।
मन्त्रों सुत होय फिर क्या कहनो, कौन नारी दुःख टोवे। समझ० ॥ २ ॥
अन्धविश्वास को दूर करो सब, तब ही उजाला होवे।
नारी पुरुष दोय क्यों कीया, क्या ईश्वर गैलो है। समझ० ॥ ३ ॥
नारी सबही पढ़ लो मन्तर, जो मन्त्र कुंति पढ़्यो है।
वही तो मन्त्र वही तुम नारी, वेदों में लिख के धर्यो है। समज० ॥ ४ ॥
पढ़ पढ़ के सब पागल हूवे, असली क्या है नहीं जोवे।
मानसिंह नहीं अकल किणी में, मन्त्र मन्त्र पढ़्या रोवे। समझ० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

भूल परे बपुरे सगरे और मन्त्रन से ही वंश बढ़ावे।
बहुत बड़े बड़े ग्रन्थ रचे हैं बात कहा यह कोई नहीं पावे।
दशरथ के सुत चार हुवे कर मन्त्र ते यज्ञ हवी जो मँगावे।
वही तो मन्त्र और यज्ञ वही फिर क्यों इतनी बन्ध्या रहे जावे।
मान कहे कहा फरक पड़्यो जिनते अब क्यों नहिं वंश बढ़ावे।
बात बिना ही विचारे करे ये लाज जरा नहीं चित में लावे॥

॥ कवित्त ॥

धर्म मन्त्र पढ़ के कुन्ति युधिष्ठिर पैदा कियो, वही मन्त्र पढ़ के फिर युधिष्ठिर बनाइये। सूर्य मन्त्र साध के कर्ण उत्पन्न कियो, ऐसा ही कर्ण फिर मन्त्र से लाइये। पवन मंत्र पढ़ के जिन भीम को कियो पैदा, उसी मंत्र से फिर भीम जन्माइये। शक्र सुत कियो पैदा इन्द्र को मंत्र पढ़, ऐसो ही अर्जुन फिर करके दिखाइये। कहे राव मानसिंह अन्धविश्वास छोड़, सीधे जो राह होके सीधे तुम आइये। लिखी हूं न वाचो यार गहरे उतर राचो इनमें, कैसे सुत पैदा किये समझ बिच लाइये॥

॥ सवैया ॥

मंत्र के बीच में तन्त्र लिखे उन तन्त्र को जान हम कहते दवाई।
दवाई को खाय नपुंसक मर्द हो तो फिर उनसे हो यंत्र शुद्धाई।
यन्त्र हुआ शुद्ध वंश बढ़ा फिर ऐसे करे तो बन्ध्या रहे नाँई।
मान न माने कोई मन में अब साँप गयो रहे लीक कुटाई॥

॥ सवैया ॥

पाँच हू तन्त्र और पाँचो ही मंत्र हैं न्यारे ही न्यारे चहे सुत लीजे।
मंत्र के अर्थ ते तंत्र करो और तन्त्र जिसो जस यन्त्र हो दीजे।
मान कहे नहिं मंत्र है भूठे ये भूठे तो पढ़णे हार कहीजे।
स्वारथ आग लगी इनमें यह आग बुझे बिन कैसे लखीजे॥

॥ कवित्त ॥

कौशल्या कुन्ति और माद्री है यज्ञवेदी, केकई सुमित्रा ताही कर मानिये। वशिष्ठ और व्यास आदि मन्त्र के तन्त्र किये, दशरथ और पाण्डु इन्हें यज्ञकार जानिये। तन मन से सेवा कीन मन चाहे पुत्र लीन, सही है बात याको अचरज न आनिये। मन्त्र हू न भूठे भूठे वेद के न करनहार, बिना अर्थ जाने बकें भूठे इन्हें ठानिये॥

॥ कवित्त ॥

प्रथम वेदाचार्य कोई द्वितीय वेदाचार्य बने, कोईक तृतीय वेदाचार्य जो कहाते हैं। कई चतुर्वेदाचार्य आचार्य बने बैठे, आपहू बहके और जग को बहकाते हैं। आपहो सलूझे नाँय कैसे सलुझावे औरन, आप तो आचार्य बीच अचार बन जाते है। कहे राव मानसिंह आप में फर्क पड़्यो, आपको फरक महा पुरुषन में बताते हैं॥

॥ गान ॥

॥ राग गोरी। ताल कैरवा ॥

यूँ मन्त्रन सुत लीजे, लेना हो तो यूँ मन्त्रन सुत लीजे॥ टेर॥

भैरव भूत प्रेत कर पूजा, मुफ्त न जूत सहीजे।
मंत्र से तन्त्र कर यंत्र करो शुद्ध, जूत इन्हीं के शिर दीजे। लेना हो० ॥ १ ॥
बिगड़यो यंत्र और तंत्र कियो नहीं, मन्त्र किता पढ़ लीजे।
यूँ मंत्रों से कभी न सुत होवे, चाहे जितो दुःख सहीजे। लेना हो० ॥ २ ॥
मन्त्र मात्र से ही सुत होवत, तो एक एक दूर रहीजे।
किनके पति और नारी फिर किनकी, लेना जिता सुत लीजे। लेना हो० ॥ ३ ॥
चारों वेद को भाष्य हम देख्यो, देख के दुःख ना सहीजे।
है तो कुछ और यह क्या कहवे, जिण सूँ मन ना पतीजे। लेना हो० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिले दिव्य दृष्टि, अन्ध होय क्यों रहीजे।
मान छान कर साफ कहेंगे, चाहे माने न मानीजे। लेना हो० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह जीवणे(१) चले, जगत निकम्मी सोय।
हम तो बायें(२) जायँगे, धके न खावें कोय॥
मानसिंह में बल होवे, तो जग बायें ले जाय।
जो जग में बल होयगा, तो जीवणा ले खैंचाय॥
मैं दृष्टा हूँ जगत का, जगत दृश्य है मोर।
खैंचे दृश्य जो दृष्टा को, तो दृष्टा कमजोर॥
दृष्टा पण जब ही निभे, जग लेह दृष्टा बनाय।
जो तू दृश्य ही बण गयो, तो लेसी जगत दबाय॥
जग खैंचन को बल नहीं, तो लहे न दृष्टा नाम।
दृष्टा तो जबही वने, कि ले ले जगत तमाम॥
रे योगी सीधो रहे, कहा धरे त्रिपुटी ध्यान।

१—परम्परा की रूढ़िवाद का सीधा मारग, २—रूढ़िवाद परम्परा को तोड़ कर आचरण करने का उल्टा मारग।

२४

ध्याता ध्येय और धारणा, सब मेरे एक समान ॥
इड़ा पिंगला सुखमणा, रेचक पूरक छोड़ ।
विश्व सभी निज रूप है, कुम्भक से मन मोड़ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

सुन पंडित ज्ञानी, मत हो अभिमानी, कर पहिचानी जान ।
तू क्या पढ़े वेद पुराण रे; सुन पंडित० ॥ टेर ॥
पूजा करावे प्रेम सूँ रे, लेवे नित रो दान ।
काको केश ताणे लो थारा, तो उठे खुड़ावेला कौन रे । सुन पंडित० ॥ १ ॥
एक तो लेवें और सहस्र तू देवे, खुल्यो खज़ानो कौन ।
साह की हुण्डी तो सिकरे बरोबर, दूणा देवे ना जान रे । सुन पंडित० ॥ २ ॥
जैसा लेवणिया तैसा देवणिया, दोनों ही एक समान ।
खोटे खताँ में साख कुण देवे, इण-सूँ तो रहिये मौन रे । सुन पंडित० ॥ ३ ॥
व्यास वशिष्ठ पराशर विप्र ज्याँने, कोईयन दीनो दान ।
ऊमर सारी काम कियो वाँ, जद बाज्या गुणवान रे । सून पंडित० ॥ ४ ॥
आगे पीछे रो वे सौदो न रखता, देता वें तुरत चुकान ।
धन और सुन वांरे हाथ में होता, वे होता ब्रह्म समान रे । सुन पंडित० ॥ ५ ॥
दशरथ ने सुत परगट दीना, गावे वेद पुरान ।
थाँरी बुद्धि ने तो वे ही ज पहोंच्या, थारी ने लागे अजान रे । सुन० ॥ ६ ॥
वे गुण होवे और होवे वा विद्या, तो तन ही कर दाँ दान ।
ऐसे मुफ्त कुण टाट कुटावे, कहे यूँ नृपति मान रे । सुन पंडित० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ॥

पण्डित किसड़ो तू वेद सुणावे । मेरे विचार खोज्यो मैं माँही,
नहीं आवे नहीं जावे रे । पण्डित किसड़ो तू० ॥ टेर ॥

कौण जपे ने जाप फेर किण रो, म्हाँ सूँ जप्यो नहीं जावे।
आतम जाप माँयलोड़े ने कियो, म्हारे और जाप नहीं भावे रे। पण्डित० ॥१॥
देव है एक सकल जग माँही, सो निज मोमें समावे।
दूजे देव सूँ काम सरे नहीं, कुण जो वृथा भटकावे रे। पण्डित० ॥ २ ॥
आनन्द स्वरूपी तो मैं निज मेरो, मोहे क्यों बिसरावे।
माला मंत्र जपूँ अब किण रो, दूजो निजर नहीं आवे रे। पण्डित० ॥ ३ ॥
"तत्त्वमसि" यूँ वेद तेरो गावे, सोहो हम "असि" जो कहावे।
तत् त्वम् छोड़ असि ने लख जद, पूर्ण पण्डितता आवे रे। पण्डित० ॥ ४ ॥
इसड़ी केवाँ जद थे नहीं मानो, वाँने तो समरथ बतावे।
अपणी गरज ने खुद समरथ बणो, मन में लाज नहीं आवे रे। पण्डित० ॥ ५ ॥
तुम नहीं समरथ तुम्हें क्यों पूजाँ, समरथ जिकाँने पुजावें।
सिंह छोड़ भेड़ाँ ने पूजाँ, म्हारे हाथ काँई आवे रे। पण्डित० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु समरथ मेरे, हम भी समरथ कहलावें।
मानसिंह हम टोली सिंहन की, भेड़ाँ ने शिर क्यों नमावे रे। पण्डित० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल तिताला ॥

अब चुप रहो मत मोहे बतलावो; अब चुप रहो मत मोहे बतलावो ॥ टेर ॥
मेरी तरफ नहीं तुम देखो; तुमतो अपनी अपनी गावो। अब चुप रहो० ॥ १ ॥
स्वारथ आग मिटे नहीं तुमरी; जावो जावो तुम परे जावो। अब० ॥ २ ॥
तुम्हरे तो यज्ञ हवन मिटे नहीं, जीव फँसाय लूटो खावो। अब० ॥ ३ ॥
तुम्हरे तो दान पान भोजन के; गीत उमर भर यही गावो। अब० ॥ ४ ॥
अपनो मुक्ति करलो पहले; फिर मेरी करने आवो। अब० ॥ ५ ॥
खुद तो फँसे जाल माया के; हमें मोक्ष कैसे ले जावो। अब० ॥ ६ ॥
नवग्रह तुम्हारे लगेंगे तुमको; हमें मिथ्या मत डरपावो। अब० ॥ ७ ॥
खोटे वार तिथी सब तुम्हरे; तुमहि काल के मुख जावो। अब० ॥ ८ ॥

नित हूँ अजर अमर ना मरूँ मैं; डारके भरम मत बहकावो । अब० ॥ ६ ॥
जीवित पिंड लेऊँ त्रय वक्त मैं; बाद मरे ना देने आवो । अब० ॥ १० ॥
कचा अन्न हम खाने न आवें; चाहे नरक कुण्ड भज जावो । अब० ॥ ११ ॥
जावें नरक तो तुम्हे क्या इसकी; हमको छुड़ाने मत आवो । अब० ॥ १२ ॥
क्या यमराज बाप है तुम्हारो; देकर साख कैसे छुड़वावो । अब० ॥ १३ ॥
थोथी बात हाथ नहीं आवे; कोरे कागद क्यों चलवावो । अब० ॥ १४ ॥
देवनाथ गुरु सहज मोक्ष दिवी; मान फंद में क्यों आवो । अब० ॥ १५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के डंके "सगीजी ने वरजण आया" की । ताल कैरवा ॥

हाँ ब्रह्म विद्या नहीं जाणे; ये सब अपनी अपनी ताणे ।
ब्रह्म विद्या रही दूर हाथ नहीं, आवे ये कहा बखाणे ।
विद्या नहीं जाणे । ये सब अपनी अपनी ताणे ॥ टेर ॥
व्यास गुणी और वशिष्ठ प्रवीन । जिनके काल भयो आधीन ।
वे नर उत्तम ज्ञानी हुए सो, ज्यांने सकल जग जाणे । विद्या नहीं० ॥ १ ॥
ब्रह्म विद्या सहजे नहीं कोय । रचना रची आदि जिन सोय ।
उण विद्या ने गुप्त करी यह, भूल कभी नहीं छाणे । विद्या नहीं० ॥ २ ॥
मनु आदि रिषि महर्षि जोय । ज्याँरा वाक्य सत्य ही होय ।
स्वर्ग पाताल और मृत मण्डल में, जीव मात्र सब जाणे । विद्या नहीं० ॥ ३ ॥
असल माँय दिवी निकल मिलाय । सो पण ज्ञानी रेवे नाँय ।
परमारथ तज स्वारथ केरे, पड़िया ए सब पाने । विद्या नहीं० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु गह कर हाथ । मेट दिवी स्वारथ की रात ।
मानसिंह आतम परमातम, सब घट दीखत म्हाँने । विद्या नहीं० ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥

अपने करने में आरूढ़ तुम आप रहत, हम भी हमारा कहना कहते कह जायँगे । मानो न मानो यह मरजी तुम्हारी मित्रो, बाट जो हमारी वह हमी

बह जायँगे । आवोगे नहीं तो तुम ही दुःख पावोगे, यदि साथ चलो तो साथ ले जायँगे । कहे राव मानसिंह अभिमान दूर कर, याही अभिमान बीच खाली रह जायँगे ॥

॥ दोहा ॥

ए कीयाँ बिन ना रहे, कहता मैं रेहेऊँ नाँय ।
मानसिंह करते रहो, कब तक करते जाँय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी, "कोरे काजलिये" की । ताल कैरवा ॥

द्विज लिख मन में निज ज्ञान, कोरो कागदियो ॥ टेर ॥
नित्य कर्म ऊपर करो; ब्रह्म भेद से मती डरो ।
ओ देखो ब्रह्म समान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ १ ॥
अपनी अपनी खैंच मती; आतम लख निज पाय गती ।
यूँ गावे वेद पुराण; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ २ ॥
पढ़याँ पढ़याँ ब्रह्म नाँहि मिले; गायाँ सूँ भ्रम नाँहि टले ।
कर उर में कछु पहिचान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ३ ॥
सत्यता री स्याही भरो; आतम एक विचार करो ।
जद ऊगे निज भान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ४ ॥
ज्योतिष देख्याँ नहीं सरे; घर रो मरणो नहीं टले ।
वो देखणो धूल समान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ५ ॥
पाती लिखलो प्रेम तणी; सीधा चालो धार अणी ।
थे छोड़ो पोल पुराण; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ६ ॥
ऋषि महर्षि जन साफ कही; इनमें समझो झूठ नहीं ।
ओ आतम रूप जहान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ७ ॥
पोल कागद ने फाड़ देवो; आतम तत्त्व उघाड़ लेवो ।
याँ में डूबे भारत सन्तान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ८ ॥

देवनाथ गुरु सही कही; मान बात निज मान लही ।
थे बात बड़ी आसान; कोरो कागदियो । द्विज लिङ्ग० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग वसन्त, तर्ज "बाजे-बाजे रे वृन्दावन माँय, खेलत फाग सुहावनो" । ताल कैरवा ॥

कही मानो, हाँ रे कही मानो रे;
द्विज कुल और सन्त, स्वारथ पणे ने मन सूँ त्यागो ॥ टेर ॥
थे तो सत् उपदेश छोड़ो मती रे । थाने केवे, हाँ रे थाने केवे रे;
जैसे वेद और ग्रन्थ । स्वारथ पणे ने मन सूँ त्यागो ॥ १ ॥
थे तो सत् उपदेश में चित्त जोड़ो । मुख मोड़ो, हाँ रे मुख मोड़ो रे;
जो है पाप रो पन्थ । स्वारथ पणे ने० ॥ २ ॥
थे तो ब्रह्म उपदेश विचारलो रे । थाँने रटसी, हाँ रे थाँने रटसी रे;
जग जहाँ अनन्त । स्वारथ पणे ने० ॥ ३ ॥
थे तो ब्रह्म विद्या ने भूल गया रे । जिण सूँ लाजे, हाँ रे जिण सू लाजे रे;
रिषि कुल कुलवन्त । स्वारथ पणे ने० ॥ ४ ॥
मान कहे द्विज वर सुनलो । बण जावो, हाँ रे बण जावो रे;
वेद विद्या गुणवन्त । स्वारथ पणे ने० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग वसन्त, तर्ज "बाजे रे वृन्दावन माँय, खेलत फाग सुहावनो" की । ताल कैरवा ॥

कही मानो, हाँ रे कही मानो रे; सब सन्त समाज, प्रेम पन्थ छोड़ो मती रे ॥टेर॥
गोरख कबीर जैसे सन्त भया । देखो जनक भीष्म सा केता भया ।
जिण बान्धी, हाँ रे जिण बान्धी रे; सत् धर्म री पाज । प्रेम पन्थ० ॥ १ ॥
व्यास वशिष्ठ गुणी कहिये । वाँसे सन्ताँ री मति लइये ।
ज्याँ सूँ रेवे, हाँ रे ज्याँसूँ रेवे रे; थारी जग माँहिं लाज । प्रेम पन्थ० ॥ २ ॥
वाँरी गाई काँई गावणो । जो गावो तो उण घर आवणो ।
बण जावो, हाँ रे बण जावो रे; जग रा सिरताज । प्रेम पन्थ० ॥ ३ ॥

कहे मान इसो मत झालियो। मैं तो मन माँयले ने पालियो।
जद जोयो, हाँरे जद जोयो रे; मेरो मैं ही महाराज। प्रेम पन्थ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की। ताल कैरवा ॥

किए ने बात बताऊँ मेरे सन्तो; किए ने बात बताऊँ होजी।
बोलाऊँ(१) तो चोर(२) से मिलिया, किए ने साथ ले जाऊँ; मेरे सन्तो० ॥टेर॥
कही सुणी ये कुछ नहीं माने, किम करके समझाऊँ होजी।
देऊँ सैन सैन नहीं माने, कहो कैसे सुलझाऊँ। मेरे सन्तो० ॥ १ ॥
तोड़े एक और दोय बिछावे, क्यों कर जीव बचाऊँ होजी।
पक्षापक्ष की गलियाँ साँकड़ी, कहो किए मारग लाऊँ। मेरे० ॥ २ ॥
देवनाथ गुरु नाथ मान के, मन मान्याँ घर आऊँ होजी।
पक्षापक्ष का दूर निवेड़ी, गुरु गम खोज लगाऊँ। मेरे० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता। ताल कैरवा ॥

समझलो अपने मन में तुम, दोष औरों को क्या देना ॥ टेर ॥
कोई कुछ भी कहे तुमको, धरो मत ध्यान तुम उनका।
करो बन आय सो तुमसे, करो मत और का कहना ॥ १ ॥
वृथा है दोष देना भी, किसी के शिर पे ऐसा ही।
समझलो दोष अपने का, चले नहीं घर की तुम सैना ॥ २ ॥
करें क्या साधु और ब्राह्मण, जबरदस्ती नहीं किसकी।
आप दौड़े ही जा जा कर, चरण में मुफ्त शिर देना ॥ ३ ॥
कहा गुरुदेव ने कुछ तो, समझ लिया घर से कुछ हमने।
मान निज रूप को यामें, किसी का लेना ना देना ॥ ४ ॥

१—पहरेदार = गुरु आचार्य लोग २—अन्धविश्वास।

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी। ताल दीपचन्दी ॥

अब मोहे, अपनो हि दोष दिखायो। दोष कोई अवर निजर नहीं आयो ॥ टेर॥
पाखण्डी पाखण्ड जो कीनो, मैं ही भरम भुलायो।
अपनी तरफ कौन गहे ओछी, मैं ही ज भोंदू कहायो। अब मोहे० ॥ १॥
घर की बात जरा नहीं सोची, औरन के बहकायो।
दौड़ दौड़ के गयो मैं इनमें, जद अधिकार जमायो। अब मोहे० ॥ २॥
आछा बुरा ग्रह मैं पूछ्या, जद इन बाँच सुनायो।
जंत्र मंत्र तंत्र इन कीना, इनमें ही मोय भुलायो। अब मोहे० ॥ ३॥
इनको दोप रती नहीं मित्रो, मेरो ही दोप कहायो।
बिन विश्वास फिर्यो मैं बहकत, हाथे ही माल लुटायो। अब मोहे० ॥ ४॥
खाताँ माल मना मुख किणरो, मैं ही खवायो याँ खायो।
मैं अपने घर की नहीं सोची, जब तक वृथा लुटायो। अब मोहे० ॥ ५॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, ले एकान्त बैठायो।
बात करी घर की जो होती, विधि-विधि मोय समझायो। अब मोहे० ॥ ६॥
कुछ गुरु कही कुछ मन की सोची, दोनों हि मेल मिलायो।
हाथे किया दोष अब किणने, करके फिर पछतायो। अब मोहे० ॥ ७॥
इनको दोप इतो ही कहिए, साच हुतो ना बतायो।
अपनो घर सो आप कुण बाले, यह मन में समझायो। अब मोहे० ॥ ८॥
साधु न बुरे और विप्र बुरे नहीं, मैं ही बुरो जो कहायो।
मान कहे अब ही मन मान्यो, मानत अलग होय आयो। अब मोहे० ॥ ९॥

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल दीपचन्दी ॥

वृथा विवाद न कीजे, मित्रो वृथा विवाद न कीजे।
जो कुछ करूँ अपनी मन आई, तुम अपनो मग लीजे। मित्रो वृथा० ॥ टेर॥

तुमरो जीव तो जीव रहन दो, नाहक मगज पचीजे।
मेरो तो रूप सकल जग दीखे, तुमते मन न पतीजे। मित्रो वृथा० ॥ १ ॥
मैं अमी अपनो छान के पीऊँ, क्यों तुम रेत नखीजे।
अलग रहो तुम निकट न आवो, भावे तुम कीच हि पीजे। मित्रो वृथा० ॥ २ ॥
तुम करो अपनी और मैं करूँ अपनी, इनमें न झंझट कीजे।
मेरी माने सो मेरी मानसी, तुमसे अन्ध पतीजे। मित्री वृथा ॥ ३ ॥
तुमरे वेदान्त सिद्धान्त पड़े रहो, हमको यह न चहीजे।
मेरो वेदान्त जगत से न्यारो, जग इन माँय रहीजे। मित्रो वृथा० ॥ ४ ॥
तर्क वितर्क कुतर्क करो तुम, वक्त वृथा यों छीजे।
मान कहे अब जावो परे तुम, और कोई पकड़ीजे। मित्रो वृथा० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार में, मच्यो मोक्ष को शोर।
मोक्ष गाँव न्यारो रह्यो, मारग बड़ो कठोर ॥
मोक्ष मोक्ष की हाक ते, बहक्यो जगत तमाम।
वाचालू बाताँ करे, माया तणा गुलाम ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

नहीं चहिये अस मोई, मोक्ष साधो नहीं चहिये अस मोई ॥ टेर ॥
दूर ते दूर बतावत जावे, साच न आवत कोई।
ऐसी मोक्ष ते यों ही भले हम, होय निशंकित सोई। मोक्ष साधो० ॥ १ ॥
पोल के ढोल बजाय बजाय के, सारी जगत डुबोई।
आप नरक में मोक्ष औरन दे, कहो किम कर पत होई। मोक्ष साधो० ॥ २ ॥
इनकी लार धार बहे काशी, मत जावो तुम कोई।
इनकी मोक्ष इन्हें ही लेन दो, मूरख जन मति खोई। मोक्ष साधो० ॥ ३ ॥
देवनाथ को साथ कियो जद, मेरी मोक्ष मैं जोई।
मोक्ष स्वरूप हमी तो कहिये, दूजी मोक्ष न कोई। मोक्ष साधो० ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

भूल पर्‍यो सगरो जग यह नित वेद कहे पर एक न माने ।
नाँय तजे अपनी यह आदत जादत पन्थ पुराने पुराने ।
भटकत आये सदा जिसमें फिर ताहि ज पन्थ की राह उठाने ।
मोक्ष की पोल के ढोल बजे जिनमें भये बहरे सुने नहीं काने ।
मोक्ष को गाँम कितो अलगो कई लाद चले फिर कोऊ न आने ।
केतोक लम्बो और चौड़ो किगो जिसमें सब जाय के जगत समाने ।
देत प्रमाण न कोई हमें यह मोक्ष हि मोक्ष की हाक मचाने ।
मान कहे परमाण बिना हम मोक्ष की बात कभी नहीं माने ॥

॥ सवैया ॥

कबीर कबे जिन स्वाँग धरयो अरु जनक कबे भगवाँ जो रँगायो ।
व्यास कबे जिन भीख हू जाँची कब शुकदेव जो माँग के खायो ।
मान कहे पुरुषारथ कीन उन्हें हरि आप में सहज मिलायो ।
जो पुरुषारथ हीन हुए जन योंहि फिरे और जगत हँसायो ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

हाँरे सन्तो करो अपनो व्यवहार, हिम्मत मत हारो रे ॥ टेर ॥
इन व्यवहार में क्या दुःख होय; इनको देख कर तू क्यो रोय ।
हाँरे सन्तो कर लोनी अपनो विचार । हिम्मत मत हारो रे ॥ १ ॥
जगत जले तेरो क्या लहे; तू इनके पीछे क्यों बहे ।
हाँरे सन्तो रहे निर्लेप निराधार । हिम्मत मत हारो रे ॥ २ ॥
त्याग ग्रहण क्यों न्यारो दिखाय; त्याग में जाय नफा क्या पाय ।
हाँरे सन्तो क्या है घर बिच हार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ३ ॥
क्यों सन्यस्त ले फिरे उदासी; प्रीतम पायो सर्वज्ञ अविनाशी ।
हाँरे सन्तो सब को है प्राण आधार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ४ ॥

ये उलटी मोये हाँसी आवे; जहाँ जावे निकमो न रहावे ।
हाँरे सन्तो कर रह्यो अपनो कार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु घर में बतावें; मेरी बलाय बाहर अब जावे ।
हाँरे सन्तो मान सभी अपनो दीदार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल तिताला ॥

वक्ता ज्ञान न कीजें; ज्ञानी वक्ता ज्ञान न कीजे ।
हित अहित को कर विचार मन, साचो ब्रह्म रस पीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ टेर ॥
ब्रह्म ब्रह्म कहे भरम न राखो, अनरथ चित मत दीजें ।
खाँड कथाँ मुख मीठो न होवे, साच कहूँ सुन लीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ १ ॥
जग को कहे खल्विदं ब्रह्म है, उर में विषय बरतीजे ।
यह तेरो ब्रह्म काम नहीं आसी, उलटी मार सहीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ २ ॥
भूल से किये तो माफ भी होवे, थोड़े में भोगीजे ।
जाण के करे जूत लगे दूणा, कोहू न सहाय करीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ कहे, वाक्य हृदय धर लीजें ।
मानसिंह मत जान अजान होय, काँटाँ में पाँव न दीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

ज्यों बाचो ज्यों ही राचो; ज्ञानी ज्यों बाचो ज्यों ही राचो ।
बाचो और करो कुछ और ही, काम रहे सब काचो । ज्ञानी ज्यों० ॥ टेर ॥
बाच विचार धार हिरदे बिच, क्या कूड़ो क्या साचो ।
कूड़ कूड़ को दूर निवारो, छाँट लेवो जो है आछो । ज्ञानी ज्यों० ॥ १ ॥
नाँही विचार कियो उर अन्दर, ऊपर बाच्यो ही बाच्यो ।
आप पढ्यो और कईयन पढ़ाये, नाँहि रचायो नहिं राच्यो । ज्ञानी० ॥ २ ॥
औरन को ब्रह्मज्ञान बतावो, आप धरो पग पाछो ।
मान कहे हम साची कहेंगे, चाहे तुम लाल होय नाचो । ज्ञानी ज्यों० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

राच रही ज्यूँ लाली; हिना(१) बिच राच रही ज्यूँ लाली(२) ॥ टेर ॥
शब्द शिला पर सतगुरु घोटी, कबहू न दरसे काली ।
ज्यूँ घोटी ज्यूँ रङ्ग है चौगुणो, रङ्ग सुरङ्ग खुशाली । हिना बिच० ॥ १ ॥
बाँटी जुगत सूँ गुरु कृपा कर, मिट गई मन बदहाली ।
घोटत घोटत ऐसी घोटी, फिर ऊगण से टाली । हिना बिच० ॥ २ ॥
पाँच(३) पचीस(४) हिना कर घोटे, होय रही लाल गुलाली ।
या हिना को वोही लगावे, पिव रंग(५) में मतवाली । हिना बिच० ॥ ३ ॥
देवनाथ को साथ कियो जद, मिट गई और की ख्याली ।
मानसिंह जब बोझ भयो हलको, छूटी द्वैत हमाली । हिना बिच० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई वाचक ज्ञान तज दीजे रे ।
वाचक ज्ञान आनन्द नहीं उपजे, आयु घटे तन छीजे रे ॥ टेर ॥
बाताँ कियाँ ब्रह्म नहीं मिलसी, भरम भरम न रहीजे रे ।
ब्रह्म विचार धार उर अन्दर, तत्त्व अमी रस पीजे रे ॥ १ ॥
जाग्रत होय नींद ने त्यागो, निज असली ओलखीजे रे ।
अपनो ही रूप आप में लख तू, भरम भूत भागीजे रे ॥ २ ॥
देवनाथ को साथ कियो जद, निज आतम ओलखाया रे ।
मानसिंह अब मरे न जन्मे, विश्व विभू में समाया रे ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई जाग्रत काहे जगावो रे ।

१—संसारिक व्यवहार रूपी मेंहदी, २—आत्मज्ञान, ३—इन्द्रियाँ ४—प्रकृति
५—विश्व-प्रेम ।

नित चेतन चेतें क्या अब हम, भूल भरम नहीं भावो रे ॥ टेर ॥
नहीं मैं जाग्या नहीं मैं सूता, अपनी आ भूल मिटावों रे।
अपनी भूल छुड़ावे आपने, ब्रह्म तत्त्व दरसावो रे ॥ १ ॥
जाग्रत बीच जाग्रत निज मेरी, ऐसी सैन समावो रे।
जाग्रत सुपन सुषोपति तुरिया, एक स्वरूप लखावो रे ॥ २ ॥
देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मवेत्ता, दर्शन कर सुख पावो रे ।
मानसिंह जद एक रूप भयो, देव में द्रष्टा समावो रे ॥ ३ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

ब्रह्मज्ञानी अभिमान में, रह जावेला लार।
ज्यूँ खाजे ज्यूँ ऊबके, अन्तर अमी अपार।
अन्तर अमी अपार, पार इनको नहिं पावे।
अमी रूप हो जाय, नहीं जग के दुःख आवे।
तू ही जगत तू ही ब्रह्म है, निराकार साकार।
ब्रह्मज्ञानी अभिमान में, रह जावेला लार ॥

॥ सवैया ॥

औरन को ब्रह्मज्ञान कहे और आप पड़े भ्रम कूप के माँई।
औरन को ब्रह्म-रूप करे और आप बन्यो जग रूप रहाई।
आप स्वरूप को जाने नहीं जग को कस रूप स्वरूप बताई।
मान कहे यह भ्रम जो तीव्र है देख अती मन में हँसी आई ॥

॥ सवैया ॥

एक सौ आठ पढ़े उपनिषद् और वेदान्त के सूत्र संभारे।
अपने निज सूत्र को भूल गयो यह औरन को कर ज्ञान प्रचारे।
कहे मान विचार सदा निज सूत्र यह एकहू एक को देखले न्यारे।
सब सूत्र (१) मिलाय के एक किये तब आपही आपनो होत उजारे ॥

१—वृत्तियों की ब्रह्म में एकता।

॥ कवित्त ॥

बुद्धि को विवेक कर अन्तरगत छेक (१) कर, अन्तरगत छेक बुद्धि ब्रह्म (२) तू बनाइये। क्रिये हैं चार (३) ताको डार अब दूर (४) ज्ञानी, चारन के बीच रूप (५) एक दरसाइये । एक न रह्यो न रहे चार तहाँ देख अब, अपनो स्वरूप तू आप ही कहाइये । कहे राव मानसिंह तू ही है जगत, और जगत को प्रेरक नित साची तू सदाई है ॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली घर जोय समुदा माँही" की। ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई दूर करो रे अज्ञाना ।
ज्ञान विचार धार उर माँहि, मेट वृथा अभिमाना रे। साधो भाई० ॥ टेर ॥
करम करम सब जगत पुकारे, कर्म कौन नहिं जाना ।
करम करे और रहत अकर्ता, सो क्रम नाँहि पिछाना रे। साधो भाई० ॥ १ ॥
स्वारथ कारज साधे सिद्धायाँ, फिर फिर जगत बहकाना ।
अपणी भूल मेट नहीं जाणे, देखो अन्ध दीवाना रे। साधो भाई० ॥ २ ॥
पच पच करत मंत्र केई साधन, माया के अभिमाना ।
कर कर धाक जगत के ऊपर, अपनो ही स्वार्थ दिखाना रे। साधो भाई० ॥ ३ ॥
पर उपकारी सो संत सायब रा, आदि अनादि बखाना ।
किनको शाप देवे वर किनको, सब ज्याँ रे एक समाना रे। साधो भाई० ॥ ४ ॥
एक पर क्रोध खुशी दूजे पर, वो हम साधु न जाना ।
मानसिंह वो कुछ न करेगा, ले शिष्य साथ डुबाना रे। साधो भाई० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

झूठ ही झूठ कहे जग को फिर आप कहो कब सत्य कहायो ।
आप नहीं जब होवत तो जग काहे को ये फिर नाम धरायो ।
जिनसे उत्पन्न उनको ही निन्दत धूक है उनको जो छोड़न चायो ।

१—अविद्या को तोड़ना, २—शुद्ध ब्रह्माकार, ३—अन्तःकरण, ४—चारों की एकता, ५—महतत्त्व ।

तुम से कहो कब जगत भिन्न है तेरे अन्दर यह जगत समायो।
मरुधर पति मान कहे सब से कुछ गहे नहीं क्या त्यागन धायो।
जो जग झूठ तो झूठ तुमही हो जग है सत्य तो सत्य कहायो॥

॥ दोहा ॥

मान कहे संतो सुणो, यह अचरज मोहे आय।
जिण सूँ थे सब ऊपज्या, खोटी क्यों बतलाय॥
खोटी तो क्यों ऊपज्या, पड़िया क्यों न आकाश।
जो पड़ता आसमान सूँ, तो करता विश्वास॥
गन्दी गन्दी कहत हो, क्यों रह गये नौ मास।
जब क्या गन्दी ना हुती, अब क्यों करो विनास॥
जैसी है सो रहण दो, है यह नर की खान।
उपजे जिणरी निन्दा करो, थे मनुष्य हो या हैवान॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माळली" की। ताल दीपचन्दी॥

साधो मत नारी वंश बहकावो।
मिथ्या ही मिथ्या बको मत मुख से, इनको संकुचित ना बनावो रे॥ टेर॥
आप पवित्र देव ज्यूँ बने नित, देखो सकल बौराई।
आदि की बात कोई नहीं जाने, अपनी तान चलाई रे। साधो मत०॥ १॥
बुरी बुरी कह लूटो इनको, जावो परे क्यों न जावो।
खान पान सब लेवो इनसे, बुरी न कहत शर्माओ रे। साधो मत०॥ २॥
अक्षर एक न पढ़े विचारी, ज्यांने हाथ नीचे रखो चावो।
गार्गी अनुसूया जैसी नारी, जबरयाँ ने सती कह बतावो रे। साधो०॥ ३॥
सती क्या थीं वे गुरु थीं तुम्हारी, जिनसे पहलाई घबरावो।
त्याँरा रच्या कई सूत्र श्लोक हैं, ज्याँरो अर्थ थेई नहीं पावो रे। साधो०॥ ४॥
अब तो कहत अधिकार नहीं इनको, जिनसे न विद्या पढ़ावो।

आगे नारी हुई कई ऐसी, जिण चारों ही वेद सुणावो रे। साधो० ॥ ५ ॥
नारी जात है भोली बावरी, इनके पास क्यों जावो।
केवे बुरी ज्याँने पड्या रहण दो, मत इक टूक गिरावो रे। साधो० ॥ ६ ॥
थाँ सू पले और फोड़े थाँरी, इन सूँ थेई हट जावो।
निन्दक जीव है लक्षण बायरा, क्यों मुफ्त में माल गुमावो रे। साधो० ॥ ७ ॥
नारी ने पुरुष पुत्र ब्रह्मा के, दोनूँ बरोबर कहावो।
बाँया जीवणा दोऊ हाथ बरोबर, इनमें शंका काँई लावो रे। साधो० ॥ ८ ॥
वाम भाग बिन काम बणे नहीं, मत थाँने भरमावो।
तुम हो त्यागी तो नगर त्याग दो, मन आवे ज्याँ जावो रे। साधो० ॥ ९ ॥
गृहस्थ धर्म की तो जहाज नारि है, बैठो तो पार हो जावो।
एक ने निन्द दूजे ने बन्दो, अधबिच जाय डुबावो रे। साधो० ॥ १० ॥
थें ब्रह्मनिष्ठा दो क्यों देखो, आतम भाव उर लावो।
देह भाव तो थाँ सूँ ही मिटे नहीं, मार चौगुणी खावो रे। साधो० ॥ ११ ॥
गृहस्थी भया न संन्यास कमायो, दोनूँ दीन से जावो।
अपनी बुराई तो मेटो नाँई, थाँने बुरी बतलावो रे। साधो० ॥ १२ ॥
चारों वेद और श्रुति स्मृति, नारी रो भाग बतावो।
माया बिना वह ब्रह्म क्या बपुरो, सूखो लाठ कहावो रे। साधो० ॥ १३ ॥
यज्ञ हवन मख करने बैठो, तो क्यों पहिला नारि बुलावो।
माया रो भाग पैला क्यों देवो, इण रो कारण समजावो रे। साधो० ॥ १४ ॥
ज्याँ रे प्रताप मौज करो बैठा, नित उठ पाँव पुजावो।
मान कहे तुम नमक हरामी, मत म्हाँने मुख दिखलावो रे। साधो० ॥ १५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली" की। ताल दीपचन्दी ॥

साधो म्हाँ सूँ बुरी कही नहीं जावे।
बुरा पणो तो दीखे नहीं इनमें, कूड़ी कुण श्यान गुमावे रे। साधो० ॥ टेर ॥

फरक देख्याँ तो फरक केयदाँ, म्हाँ ने किसो डर आवे।
मनुष किसो कोई अमृत अरोगे, नारी किसो खड़ खावे रे। साधो० ॥ १ ॥
हाड चामरी नारी कहिये, और इणराई पुरुष कहावे।
पाँच पचीस सगलों रे कहिये, नहीं कमी दरसावे रे। साधो० ॥ २ ॥
पुरुषाँ अधिक कहा सो बताओ, म्हारे तो निजर नहीं आवे।
सींग पूँछ क्या नारी के अधिक है, पुरुषाँ रे सींग नहीं आवे रे। साधो० ॥ ३ ॥
बुरे दिन आय जद मूरख जन्मे, उल्टो पन्थ चलावे।
होय विनाश जबी यूँ उपजे, रतन गोफण माँय बावे रे। साधो० ॥ ४ ॥
नारी ने पुरुष बरोबर म्हारे, एक न कमी दरसावे।
नारि बुरी कहे तो हमें न सुहावे, उनको न पास बैठावे रे। साधो० ॥ ५ ॥
एक अंश को नारी बुरी है, वो हम खोल दिखावे।
ब्रह्मचारी आश्रम और सन्यस्त में, ज्याँ ने नहिं नारि सुहावे रे। साधो० ॥ ६ ॥
नारी बुरी नहीं ये ही बुरे हैं, वह इनके काम न आवे।
अपने लक्षण खोल नहीं देखे, नारी ने बुरी बतावे रे। साधो० ॥ ७ ॥
बुगलों के मोती काम के नाँही, तो मोती खोटे क्यों हो जावे।
बुगले हैं खोटे मोती नहीं खोटे, दे दृष्टांत समझावे रे। साधो० ॥ ८ ॥
नारी कई बुरी तो कई पुरुष बुरे हैं, कोई न कम कहलावे।
है जैसी तुम साच कह देवो, झूठ में हाथ काँई आवे रे। साधो० ॥ ९ ॥
पुरुष देव तो देवी है नारी, यूँ भारत स्वर्ग हो जावे।
मानसिंह कहे यूँ थे समझ लो, जीवत मोक्ष दिखावे रे। साधो० ॥ १० ॥

॥ गान ॥

॥ राग कालिंगड़ा। ताल कैरवा ॥

नारी रतन निपजावे, देखो ऐसे नारी रतन निपजावे ॥ टेर ॥
ध्रुव प्रह्लाद नारी से निपजे, व्यास वशिष्ट उपजावे।
राम और कृष्ण नारी से उपजे, जिनको जगत जस गावे। देखो ऐसे० ॥ १ ॥

नव नाथ और सिद्ध चौरासी, नारी बिना कैसे आवें।
सुर नर मुनि सब नारी से उपजे, फिर क्यों बुरी बतावें। देखो ऐसे० ॥ २ ॥
ग्रन्थ शास्त्र पुरुषन सब कीना, नारी न एक बनावें।
एक कोई ग्रन्थ नारी जो करती, तो पुरुषन की पोल उड़ावे। देखो ऐसे० ॥ ३ ॥
गार्गी और अनुसूया जैसी, नारी में ही पावें।
जिनसे पुरुष हार कर बैठें, फिर कहते शर्म न आवें। देखो ऐसे० ॥ ४ ॥
नारी बुरी तो पुरुष भले कब, यह मोहे हाँसी आवे।
नारी में लाज पुरुष नहीं इतनी, कैसे बड़े बन जावें। देखो ऐसे० ॥ ५ ॥
जो यह बुरी तो क्यों फिर बनाई, दोष ईश में आवे।
नारी बिना ही नर क्यों न किये, सगरो दुःख मिट जावे। देखो ऐसे० ॥ ६ ॥
नारी ही नारी कर कर इनको, उत्तम देश डुबावे।
नारी को अब नाहरी कर दे, तो सगरी सुधरावें। देखो ऐसे० ॥ ७ ॥
जब तक नाहरी करें नहीं इनको, तब तक हम दुःख पावें।
धर्मी विधर्मी शान गमावत, यह दुःख सह्यो न जावे। देखो ऐसे ॥ ८ ॥
गोरख कबीर भरथरी आदिक, तुलसी सूर कहावे।
वल्लभ शंकर जेते कहिये, नारी तज कहाँ धावे। देखो ऐसे० ॥ ९ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जब, हाथ पकड़ समझावे।
मान नारी को नाहरी कर अब, न्यारी रखी नहीं जावें। देखो ऐसो० ॥ १० ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की। ताल कैरवा ॥

साधो मेरे नारी पुरुष नहीं कोई रे होजी।
नारी पुरुष भाव दोय खोया, परमानन्द सुख होई रे। साधो मेरे नारी० ॥टे॥
पाँच तत्त्व रो धागो झूठो, सत यामें माला पोई रे होजी।
देह अभिमान मतलब क्या इणसे, आतम एक रस जोई रे। साधो० ॥ १ ॥
आतम एक पुरुष नारी मैं, जिणने सगलाँ खोई रे होजी।

प्रत्यक्ष चेतन ख्याल करे नहीं, फिकर है इणरो मोई रे। साधो० ॥ २ ॥
देवनाथ को साथ कियाँ सूँ, ज्ञान रयो नहीं गोई रे होजी।
आठूँ पहर घड़ी नित चौसठ, मान मगन सुख सोई रे। साधो० ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

नारी पुरुष न कोय, बालक बूढ़ो है नहीं।
जीवत मुक्ति होय, माँय लख्याँ सूँ मनसी ॥
नारी होय न ज्ञान, यह स्वप्ने मानें नहीं।
वो थी नारी कौन, अनुसूया मन्दालसा ॥
गारगी आदि नार, चार वेद भाषण किया।
जाणे जग संसार, छाने छिपी न मानसी ॥
नहीं यहाँ देह रो काम, काम है ज्ञान विवेक रो।
भूली नार तमाम. पड़ी बखेड़े मानसी ॥
मल मूत्र की है नार, तो मरद कढ़े मलयागिरी।
सब में यूँ ही विकार, जो तन धारी मानसी॥
नारी में दुर्गन्ध, सुगन्ध मरद में आवती।
तो जाणत निश्छन्द, नारी मलीन है मानसी॥
नारिन और स्वभाव, मरद हो और स्वभाव के।
यह अपणोईज भाव, मन सूँ हटादो मानसी॥
लाज लाज में लाज, खोई लाज समाज की।
भारत को सिरताज, सो ज्ञान न दीनो मानसी॥
नारी में नहीं ज्ञान, दोष सभी मरदाँ तणो।
कर कर खैंचा ताण, न्यारी राखी मानसी ॥
दे दे अन्धविश्वास, सब ही लूटण में रया।
बाँध भरम री फाँस, मारी मौत बिन मानसी ॥
मरदाँ रो उपदेश, कर टीका पोथा भर्‌या।

नारी रों उपदेश, राख्यो श्लेष में मानसी ॥
जो होता निष्पक्ष, तो अंग बरोबर राखता ।
एक अंग का भक्त, वें क्यों जीवे मानसी ॥
विधि किया दो अंग, एक बाप के लाल दोऊ ।
क्यों कर होवे भंग, राम रुखालो मानसी ॥
पतन देश को होय, अंग बरोबर बिन रख्याँ ।
पीछे रहसो रोय, भारत धससी भूमि में ॥
अजहु देहु तत्त्वज्ञान, करो गारगी मन्दालसा ।
प्रसन्न होय भगवान्, डूबी नइया तारदो ॥
विधर्मियों सूँ मार, एक अंग रेयाँ सूँ पड़ी ।
दोऊ अंग होता तैयार, तो कदे न मरता मानसी ॥
पड़ी एक अंग मार, एक अंग देखत रयो ।
शक्ति बिन लाचार, मदद करे किम मानसी ॥
जिण अंग कियो तैयार, जाने प्रत्यक्ष देखलो ।
करने उठी ललकार, जग जाग्रत है मानसी ॥

॥ सवैया ॥

हुए फकीर फ़िकर किनको जो फ़िकर होवे क्यूँ फ़कीर कहायो ।
कहा बंगले और महल में सोवत कहा कोई जो खाक लेटायो ।
कहा अतर और चन्दन चड़ावत कहा कोई मट्टी में लिपटायो ।
फ़ाका किया जो फ़िकर सबका तब होय फ़कीर जबे उठ धांयो ।
रंग कषाय रँग्यो मन है तो वस्त्र रँगाय भले न रँगायो ।
घर ही मसान मसान ही घर लख जंगल शहर सो एक दिखायो ।
मान कहे वेफ़िक्र भये तब सोही फ़कीर फतेपुर पायो ।
भाँड से डाँड फिरे बहुते ये भेख धराय के मूँडो दिखायो ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल कैरवा ॥

तोहे फिर कोई न सतावे रे, बन जा तू मस्त फ़कीर ॥ टेर ॥

स्वानवत् फक्कड़ नहीं होना, सुन लेना मेरे वीर।
भेख धार फिर निकमो न रहिये, जब लग रहे शरीर। तोहे फिर० ॥ १ ॥
मेह वृक्ष संत है पर उपकारी, केवे जग सगरीर।
पर उपकार उमर भर करिये, उर धर ऊँडी धीर। तोहे फिर० ॥ २ ॥
पर उपकार बिन साध न कहिये, वृथा न करिये भीर।
साध पन्थ यह बहुत कड़ो है, सन्मुख लेवे तीर। तोहे फिर० ॥ ३ ॥
चाहे तुम पाँचों कपड़ा पहिनो, चाहे नंगे चाहे चीर।
इन में भलाई नेक न कहिये, साध नहीं छलगीर। तोहे फिर० ॥ ४ ॥
चाहे सूके पकवान मिठाई, चाहे हलवा और खीर।
अच्छे बुरे की कुछ नहीं परवा, वो जीते ही जानो पीर। तोहे फिर० ॥ ५ ॥
लोकहित काज शीश धर देवे, नहीं होवे दिलगीर।
देवनाथ कहे असल फकीर वो, मान बनो ऐसा वीर। तोहे फिर० ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

मस्तान पिये मद यह जब ही दिन दूणी चढ़े उनको मस्ताई।
घूम रहे दिन रात सदा बेख्याल ज्यों घूमत है गजराई।
तीनूँ ही लोक डरे उनसे पर वे किनके डर नाँहि डराई।
मान कहे उन मस्तन को भगवान भी आन के शीश नँवाई॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग। ताल कैरवा ॥

साधो भाई कद मिटसी अन्धियारो रे।
दीपक बिना जोय रहे आतम, भूल गयो जग सारो रे। साधो भाई० ॥ टेर ॥
असली तत्त्व नहीं ये जाने, नहिं होवे उर उजियारो रे।
भूल पड़े यह जानत नाँहीं, खावत मार अपारो रे ॥ १ ॥
पन्थ अनेक सिद्धान्त अनेकों, कब तक गिन गिन हारो रे।
शास्त्र और ग्रन्थ अनेकों कहिये, थक गयो शेष विचारो रे ॥ २ ॥

धर्म अनेक और इष्ट अनेकों, कर्म अनेक पुकारो रे।
किनको करे त्याग दे किनको, खोज खोज मति हारो रे॥ ३॥
समता शील सहनता छोड़ी, आतम भाव निवारो रे।
पक्षापक्ष में जीवन सब खोयो, लख्यो न सार असारो रे॥ ४॥
इण अन्धियारे से हम दुःख पावें, रूठ्यो कृष्ण हमारो रे।
अमी को छोड़ जहर हम पीयो, मरण मतो उर धारो रे॥ ५॥
देवनाथ गुरु गीता अमृत, छान के खूब निकारो रे।
कृष्ण मथ्यो जैसो हमको पिलायो, जीवत मोक्ष निहारो रे॥ ६॥
दीपक की क्या देऊँ ओपमा, कोड़ भानु उजियारो रे।
मान कहे कोई मानो न मानो, मानो तो जीवन सुधारो रे॥ ७॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली घर जोव समुदा माँही" की। ताल दीपचन्दी॥

नाथ म्हाँने साकट साध न चहिये।
धर के स्वाँग करे सकटाई; ज्याँ सूँ दूर कर दइये हो। नाथ म्हाने०॥ टेर॥
त्यागी नाम और सम्पति संग्रह, ज्याँ सू दूर ही रहिये।
अपणो स्वारथ स्वारथ नहिं जग-रो, ज्याँने कहो क्या कहिये हो। नाथ०॥१॥
चेला चेली पुत्र सम अपणा, ज्याँने धोखा दइये।
आये विचारे तरण के ताँई, बाँय पकड़ डूबइये हो। नाथ०॥ २॥
होय पिता और काम करे पति को, ज्याँरो मुख न देखइये।
साधू नाम सीधा होय रहवे, याँरे सीधा पण निकट नहीं है हो। नाथ०॥ ३॥
साधन सहित सदा हितकारी, वे म्हाँ सूँ दूर न रहिये।
चाहे होय भेख गृहस्थ क्यों न होवे, इण रो बन्धन नहीं है हो। नाथ०॥ ४॥
देवनाथ गुरु गृहस्थ संन्यासी, जिण सूँ मैं दीक्षा लई है।
मानसिंह ऐसे दो चार होवे, तो भारत सहज तिरइये हो। नाथ०॥ ५॥

॥ दोहा ॥

वंक वचन

वंक कहे सुन मानसिंह, मत कर तू अन्याय।
षट दरशन है जगत में, जाको शीश नमाय॥

मान वचन

एक शीश सतगुरु लियो, धड़ पर रह्यो न कोय।
एक शीश छत्री तणो, यह अब नीचो न होय॥

वंक वचन

बाने से लियो ज्ञान तुम, उनकी काटो बात।
मुकुट मणी मानो जरा, नमकहराम कहात॥

मान वचन

जिनसे लीनो ज्ञान हम, वो बाना मिल जाय।
शीश नमाऊँ तुरत ही, इण में संशय नाँय॥
मर्यादा राखूँ सदा, सो मैं तोड़ूँ नाँय।
इष्ट शीश तो फिर नमे, मन फिर नमे न काय॥
मनवो मस्ताँ सूँ मिले, जो मन इकता होय।
देहवादी ये हैं सभी, मनवो मिले न कोय॥

वंक वचन

वंक कहे सुन मानसिंह, करे संन्यास को नाश।
वेद कहे संन्यास को, क्या भयो बावरो व्यास॥
जो संन्यास होतो नहीं, तो व्यास काहे को कहत।
तुम तो खण्डन कर रहे, कहो कौन के हेत॥

मान वचन

मान कहे कविराज सुन, कह्यो असल संन्यास।
वेद कह्यो मैं सो कह्यो, नहीं बावरो व्यास॥

तुम हम सब भये बावरे, उलटी सो लख लीन।
ताते जग भिक्षुक भयो, काम जो उलटो कीन ॥

॥ दोहा ॥

सोरठ सुन्दर रागनी, करे अलाप लगाय।
मान कहे यह सुहावनी, झिल आधी जब आय ॥
सात सुन्न से है परे, तुरिये पद स्थान।
मान यूँ सोरठ रागनी, ऊँची सब से जान ॥
सो रट सो रट क्या करे, वो रट है तू आप।
सो रट तज वो रट भयो, तो मिट गई तीनूँ ताप ॥
सो रट वो रट सब गई, अब रटणा रया न कोय।
मानसिंह निज रूप में, एक रया न कोई दोय ॥
ज्यूँ सुणताँ गुरु ज्ञान ने, भड़क उठे वैराग।
मानसिंह यूँ समझिये, चरकी(१) सोरठ राग ॥

॥ गान ॥

॥ राग गिरनारी-सोरठ। ताल कैरवा ॥

लग्यो रंग राम रो रे जोगिया, अब क्या लगावे राख ॥ टेर ॥
क्या सूता सुख नींद में रे जोगिया, नींद परी अब त्याग।
चेतन चौकी बैठ जा रे जोगिया, धार अखण्ड वैराग। लग्यो रंग० ॥ १ ॥
लकड़ा जलावे सूली चढे रे जोगिया, करे अफंड अपार।
सूली चढ्या निज नाम री रे जोगिया, वे मर गया एकणवार। लग्यो० ॥ २ ॥
मरजीवाँ रे स्वाँग में रे जोगिया, मरजीवाँ नर होय।
मद मस्ती निज नाम री रे जोगिया, नहिं तो हँसे नहिं रोय। लग्यो० ॥ ३ ॥
मन मैला तन ऊजला रे जोगिया, नहीं है भेख री टेक।
क्यूँ वे फिरे जग में जीवता रे जोगिया, वृथा लजावे भेख। लग्यो० ॥ ४ ॥

१—तीखी।

मन धोया ने तन धोविया रे जोगिया, मत कर कोयन्ने रो दाग।
रंग सुरंगी चढ़ रयो रे जोगिया, खेल कूद नित फाग। लग्यो० ॥ ५ ॥
ब्रह्म अगन में पक गया रे जोगिया, कुण बाले अब आग।
मान अखंडित सहज मिल्यो रे जोगिया, कुण करे दुःख सूँ अनुराग। ल० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

फ़कीरा सीयाँ सरे नहीं काम।
लिखी जम्मेवारी जगत सगले री; जोखो है सिर पे तमाम। फकीरा० टेर ॥
गृहस्थ छताँ तो अपणी थी परवा; मिल जातो आराम।
सन्त हुयाँ सूँ शरण सब थाँ रे; अब होवोला नमक हराम। फकीरा० ॥ १ ॥
सन्त अनन्त हुया जो आगे, वे पर उपकार के धाम।
फिर फिर जीव जगत में तार्‌या; दे दे ब्रह्म कलाम। फकीरा० ॥ २ ॥
दुःख सुख री थाँने क्या परवा; थाँ ने तो नित विश्राम।
बापजी कहताँ बाप जग सब रा; है यह पूत तमाम। फकीरा० ॥ ३ ॥
थेई मोह निन्द्रा बीच सो सो; तो कौन मिलावेला राम।
मान कहे मोह नीन्द ने त्यागो; खुश होय सुन्दर श्याम। फकीरा० ॥ ४ ॥

॥ गान

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा स्वाँग फकीरी सूँ बार।
स्वाँग फकीरी तो देखण मातर; करणे ने नमस्कार ॥ टेर ॥
धर कर भेख टेक नहीं राखी; तो दूणी पड़ेला मार।
फर्ज तुम्हारो जिणी दिन उतरे; जीव करो भव पार। फकीरा० ॥ १ ॥
लेकर शस्त्र निकसे जब सूरा; करड़ी कस तलवार।
जो शत्रु से हार घर आवे; लागे क्रोड़ फटकार। फकीरा० ॥ २ ॥
स्वाँग फकीरी बुरी न जग में; पण कीजे समझ विचार।

देखा देखी कदेई नहीं कीजें; पन्थ खण्डे री धार। फकीरा० ॥ ३ ॥
नग्न होय क्या फिरे जगत में; बैठा शरम उतार।
काम ने क्रोध पहरिया कपड़ा; याँने देवो जार। फकीरा० ॥ ४ ॥
ए तो कपड़ा बन्या सूत रा; तू पहर भलाँई यार।
करनी क्रोध डार दे तन सूँ; जद तोहे रंग अपार। फकीरा० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरू मन रंग दीनो; ओ रँग्यो रहत हर बार।
मानसिंह अन्दर रंग लागो; कौण रंगे म्हारे बार। फकीरा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल दीपचन्दी ॥

भेद फकीरी न भाय, सन्तो मोहे भेद फकीरी न भाय।
कहे कुछ और करे कुछ अवर ही; मिथ्या ही स्वाँग लजाय; सन्तो० ॥ टेर ॥
औराँ ने तो ब्रह्म बतावे; खुद की खबर न पाय।
घर रो जीव भाव नहीं जावे; औराँ रो कैसे मिटाय। सन्तो मोहे० ॥ १ ॥
पिछले कुटुम्ब ने छोड़ने आया; और अगले में लिपटाय।
उणने त्याग नफो क्या काढ्यो; दिवी आ जहाज डुबाय। सन्तो मोहे० ॥ २ ॥
देह का भाव बराबर दरसे; बाताँ ही ब्रह्म बणाय।
हुकम अदूली कोई शिष्य करदे; चट अग्नि भड़काय। सन्तो मोहे० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु नाथ कियो मोहे; अब न अनाथ रहाय।
मानसिंह जग रूप मेरो सब; कहूँ मैं ढोल बजाय। सन्तो मोहे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल दीपचन्दी ॥

नहीं ज्याँरे चाय अचाय, फकीरा समदृष्टि दरसाय ॥ टेर ॥
कहा धनवान् गरीब कहा है; दूजो निजर नहीं आय।
सब पर कृपा रहे नहीं कोई खाली; आतम रूप लखाय। फकीरा० ॥ १ ॥
कहा बालक और वृद्ध कहा है; क्या पशु पक्षी कहाय।

अपनो रूप सकल में दरसे; भिन्न बतावे नाँय । फ़कीरा० ॥ २ ॥
जब लग देह भाव रहे न्यारो; तब लग ही दुःख पाय ।
मरें और जन्मे जन्मे फेर मरणो; उल्टा ने सीधा जाय । फ़कीरा० ॥ ३ ॥
भगवाँ भेष सफेद कहा ज्याँ रे; एकहि भाव दिखाय ।
घर ही बन और बन ही घर है; सो घर तज कहाँ जाय । फ़कीरा० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कियो मोहे समरथ; अब असमर्थ कौन रहाय ।
मानसिंह जग मेरो रूप है; न्यारो दीसत नाँय । फ़कीरा० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

होय निडर ज्याँरो काम; फ़कीरा, ज्याँसूं ही रीझे राम ॥ टेर ॥
निरस होय नहीं बैठे जग में; करता रहे सब काम ।
बोले चाले उठे बैठे; आतम में विश्राम । फ़कीरा, होय० ॥ १ ॥
धारे भेख अलेख न चीन्हे; मन ज्याँ रे कंचन काम ।
माग सन्यस्त वृथा ही लजावे; खायने करत हराम । फ़कीरा० ॥ २ ॥
धरके भेख टेक नहीं राखे; अजगर होसी तमाम ।
ऊपर धूप धूल जले नीचे; कभी न मिले आराम । फ़कीरा० ॥ ३ ॥
असल फ़कीरी वे नर पावे; जल्यो देश आशाम ।
मानसिंह काम मरदाँ रो; क्या करे विषयी गुलाम । फ़कीरा० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

साधो ऐसो देखो मैं हूँ मस्त फकीर ।
रहूँ मैं फकीर और काम करूँ सब; फिर भी अजब अमीर । साधो ॥ टेर ॥
राज्य करें और दुःख नहीं हमको; कबहु न हो दिलगीर ।
दुःख को दुःख नहीं सुख को सुख नहीं; ऐसी अमर रोगीर । साधो० ॥ १ ॥
शाहों का शाह फकीर फकीरों का; क्या करें तकदीर ।

मरूँ न जन्मूँ मैं नित्य अमर हूँ; मैं हूँ मेरा पीर । साधो० ॥ २ ॥
देवनाथ गुरु हाथ गह्यो जद; उड़ गई मन मगरूर ।
मानसिंह यूँ मरी मन ममता; नित उठ रहे चकचूर । साधो० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

आया मैं तो मन रँगिया रे फकीर ।
जब मन मेरा रँगिया मैंने; मिट गई भव की पीर ॥ टेर ॥
ऊपर रंग जो कहा रँगावे; गेरू रंग ले चीर ।
अन्तर रंग लग्यो जब जानूँ; सन्मुख लागत तीर । आया मैं० ॥ १ ॥
मन रँगिया सो साधू जगत में; लेत अमोलख हीर ।
पर उपकार उमर भर करते; जब लग श्वास शरीर । आया मैं० ॥ २ ॥
जरणा झोरी लीवी हाथ में; मन में राखी धीर ।
सत् पुरुषन के संग रहे नित; हो गये गहर गंभीर । आया मैं० ॥ ३ ॥
जनक और शुकदेव रँग्यो मन; और रविदास कबीर ।
नामदेव रंगियो और छापियो; मान सरोवर तीर । आया मैं० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु हाथ गह्यो जब; पोहचियो पहले तीर ।
मानसिंह अधबिच से निकस्यो; भवसागर को चीर । आया मैं० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

वंक वचन

मुख होत बाचाल अति, कहे जो शब्द अनेक ।
क्या वो ही साधु सही, क्या साधु की टेक ॥

मान वचन

श्वान स्याल नित ही बके, करे जो हाहाकार ।
साधु एक ही शब्द में, करे कलेजा पार ॥

बंक वचन

बंक कहें हो मानसी, मिले अनन्त जो सन्त ।
हमको कुछ लागी नहीं, नहीं पायो कुछ तंत ॥
जिनको आप सराहत हो, वे ही मिले केई बार ।
तदपि आनन्द ना मिल्यो, भयो शब्द नहीं पार ॥

मान वचन

या में कसूर न सन्त को, कसर आप में होय ।
भँवरे तणो कसूर कहा, शब्द सुणे नहीं कोय ॥
तूँ नहीं लट उण जाति को, कि जिनसे भँवरा होय ।
मान कहे सुनिये कवि, सन्तन दोष न कोय ॥

॥ सवैया ॥

नाम वैरागी धर्यो अपनो और राग अपार जो पार नहीं है ।
क्रोध की झाल उठे तन में जिन नेकहू ज्ञान विचार नहीं है ।
नाम तो सन्त धरे पुनि आपने सन्तपने को संचार नहीं है ।
मान कहे हम साची कहें इनमें कुछ झूठ लिगार नहीं है ॥

॥ दोहा ॥

वैरागी मुख से कहें, देखो अर्थ विचार ।
गृहस्थी हुते तो कम हुती, अब भई राग अपार ॥
पहिले खात कमाय के, फुरसत मिली न कोय ।
अब तो बैठे खात हैं, काम यही तब होय ॥
वेद गिनो चाहे शास्त्र तुम, रामायण है एक ।
इनके सिवा जाणे नहीं, उसको भी नहीं विवेक ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

देखो ज्याँरो मन न भयो है वैरागी होजी ।

राग ने द्वेष रती नहीं निकस्या, भया है चौगुणा रागी रे; देखो ज्याँरो० ॥टेर॥
ऊपर है त्याग आडम्बर धारे, आशा उर नहीं त्यागी होजी।
भूख मिटावण भेष धऱ्यो शिर, शबद चोट नहीं लागी रे। देखो० ॥ १ ॥
मूरख को कहैं खाई भाँग क्यूँ, यहाँ तो प्रत्यक्ष ही फाकी होजी।
नाम ही भाँग भरम कैसे भागे, उलटी अक्ल ने भाँगी रे। देखो० ॥ २ ॥
गोला रा गोला चरस धरत है, जोत चिलम पर जागी होजी।
याँ में अकल जो आवे कठे सूँ, आग अक्ल ने लागी रे। देखो० ॥ ३ ॥
मुख आवे ए बके बलधाँ ज्यूँ, साध नहीं है स्वाँगी होजी।
ऊपर अन्ध अन्ध ज्याँरो हिरदो, ब्रह्मज्योत नहीं जागी रे। देखो० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, मन री भरमना भागी होजी।
मानसिंह पाणी सूँ पग काढ्या, जद मैं असल भयो पागी रे। देखो० ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥

सीताराम कहत मुख जोर जोर हाक करत, मानो लंगूर सो स्वाँग ये दिखावे है। भस्मी रमाय देह चन्दन को नाश करत, सैंठो आडबन्ध ले कमर जो कसावे है। करत लंगोटी गाढी मल्लम को लेप करत, साक्षात रूप जाणे प्रेत सो दिखावे है। धाक से डरावे जगन क्रोध मानो शेष जैसो, समता को भाव जाके लेश हूँ न आवे है। राग को न पार जहाँ नाम के वैरागी कहत, कूड़ी सिधाई बीच जगत ठग खावे है। कहे राव मानसिंह ऐसो नहीं भाय मोको, ऐसे सन्तों से मोहे राम ही बचावे है॥

॥ कवित्त ॥

सेर सेर पीये भंग खड़क रहे कुण्डी घोटा, लाल लाल आँख करत जगत को डरावे है। कहत फिर दाऊदयाल कहत अयोध्या के लाल, आप तो डूबे नाम वड़ो के डुबावे है। जादू और टोना करत माल मता सकल हरत, सेर सेर चरस भङ्ग गाँजो मँगवावे है। कहे राव मानसिंह ऐसे नहीं भावे सन्त, देश को डुबावे याँ को काल हू न खावे है॥

॥ सवैया ॥

आवे जिसी घस मारत हैं ये अर्थ कहा इन को न विचारे।
अर्थ करे कोई छेड़त हैं तबही ये लेके चिम्मट मारे।
जाते डरें सब बोले नहीं कोई चोरन आगे हैं ढोर ही सारे।
मान कहे कछु नाँय डरें हम सिंह के सुत हैं कौन के सारे॥

॥ सवैया ॥

नाँय रहे इतने ही में सीधे ये और नई नई बातें बनावें।
लोहे को सुवर्ण ताम्बे को रूपो रसायन को विश्वास दिलावें।
भोंदू है जीव भूले बपुरे जिनते इन गुण्डन हाथ ठगावें।
लोहा न सोना न ताम्बा न रूपा है अपनी झूठी दुकान जमावें।
मान कहे मैं तो मानूँ नहीं विश्वास हमें इनको नहीं आवे।
दूर से शीश नमावत हूँ मैं तो पहिले ही ते नहीं मुँह लगावे॥

॥ कवित्त ॥

राम रक्षा के सिवा दूसरो न मन्त्र कोई, तामें भी शुद्ध मंत्र पढ़नो न आवे है। तुलसीकृत रामचरित्र सिवा नहीं ग्रन्थ पढ्यो, घणी हद करे तो बालमीक गावे है। जैसे गुरु मूर्ख तैसे शिष्य भी मिले मूर्ख, भूखे सिधाई के दौड़ दौड़ जावे है। द्रव्य को उतार लेत आप से बनाय देत, भंग गाँजा चरस पीनो साथ में सिखावे है। लकड़ को जलाय देत द्रव्य हू की करे रेत, देखो जगत गैली कैसे मूढ़ गुरु ध्यावे है। कहे राव मानसिंह इनमें जो सिद्धाई होय, बैठे क्यों न रहें काहे माँग माँग खावे है॥

॥ दोहा ॥

मान कहे हो नाथ जी, कीजे ब्रह्म विचार।
बिन निज ब्रह्म विचारियाँ, दूणी पड़सी मार॥

॥ सवैया ॥

स्वाँग धर्यो सिर नाथ पने को नाथ पनो हर नाँय निभायो।

साय माँगे जवाब जबे तब देनो तुम्हें जो कठिन रहायो।
नाथ को हाथ लियो सिर पे हमने तो नाथ पने को निभायो।
मान कहे गुरुदेव कृपा कर मोहि तो नाथ सही जो बनायो॥

॥ सवैया ॥

भेष दियो नहीं कान जो फारे ना हमको उन भीख मँगाई।
आपही पूरण नाथ हुते अस ही हमको निज घूँटी पिलाई।
मेट दिवी सब ताप मेरी उन आपके बीच में दीन लखाई।
मान कहे जब जान परी तब जाय मिले हम नाथ के माँई॥

॥ सवैया ॥

चाहे रहो तुम जायके वन में चाहे रहो तुम शहर निवासी।
चाहे रहो तुम गृहस्थ बीच में चाहे बनो बन जाय संन्यासी।
चाहे खुशी और खेल करो तुम चाहे रहो सब ही से उदासी।
मान कहे मन स्थिर न होवे तब तक तुमको नहीं सुख आसी॥

॥ सवैया ॥

ना उतते कुछ जोग सज्यो और ना इतते कुछ भोग भोगायो।
ना उतते जो वैराग हुवो और ना इतते तैं गृहस्थ कमायो।
ना उतते त्रिवेणी को देखी इत चन्द्र-मुखी को गले न लगायो।
मान कहे धृक स्वाँगन में तैं तो स्वाँग धर्यो योंही जीवन बितायो॥

॥ दोहा ॥

माला फेरत मसखरा, तिलक करत बेईमान।
जिन अन्तःकरण माँजियो, सोही सन्त सुजान॥

॥ कुण्डलिया ॥

स्वामी सरड़ा सेवड़ा, संन्यासी दरवेश।
भलो बिगाड़्यो भेख ने, कर स्वारथिया भेष।

कर स्वारथिया भेष, बात हित री नहीं जाणे।
करत हैं वाद विवाद, नहीं वे असल पिछाणे।
निज वैराग आगो रयो, आगो रह गयो देश।
स्वामी सरड़ा सेवड़ा संन्यासी दरवेश॥

गीता महिमा

॥ सवैया

चारों हि वेद तो गाय बनी एकादश उपनिषद् पय पाये।
ज्ञान का बछुआ भया तिनते उपनिषद् का पय पान कराये।
ताहि को कृष्ण ने ताया अति षट शास्त्र की छाछ सभी छिटकाये।
गीता सो घृत्त निकाल लियो जो निकाल के पारथ को ले पिलाये।
देवहुनाथ कृपा करके उस घृत को स्वाद हमें जो चखाये।
मान वो पीते ही मस्त हुए जब मस्त हुए तब सहज समाये॥

॥ सवैया ॥

दश और एक पढ़े उपनिषद् चारों हि ब्रह्म के वाक्य सुनाये।
और पद शास्त्र के मंत्र पढ़े तदपि तृप्ति उर में नहिं आये।
पुराण अठारह को बाँच लिये कछु औरहि और जो और बताये।
मंत्र हजारों हि याद किये पर ऐसो तो मंत्र कोई न सिखाये।
कृष्ण कृपा कर पार्थ को यह गीता को मंत्र भले समझाये।
मान कहे ऐसो घृत हमें फिर कृष्ण कृपा कर के जो पिलाये॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "सोढे सूमरे" की। ताल धीमा कैरवा ॥

धर्म भूमि और कुरुक्षेत्र रे माँय, सजनो म्हारा रे।
कोई पारथ सूँ गिरधारी हँसने बोलिया रे; म्हारा लाल॥ टेर॥
भलो डर्‌यो तू लड़ने सूँ मन माँय, मित्र हमारा रे।

कोई कविता ने कायर री चारण जोड़सी रे; म्हारा लाल ॥ १ ॥
कुन्ति मात रो दूध जो देवे लजाय, मित्र हमारा रे ।
कोई कलङ्क जो लागे रे कुन्तीभोज ने रे; म्हारा लाल ॥ २ ॥
डूबे-डूबे पाण्डु राव री जहाज, मित्र हमारा रे ।
कोई दुश्मण देवेजा थाँने मैंणिया रे; म्हारा लाल ॥ ३ ॥
फिट रे अर्जुन यूँ मत काची लाय, मित्र हमारा रे ।
कोई म्हारो तो रथ हाँक्यो मुफ्त गुमायसी रे; म्हारा लाल ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अर्जुन वचन

कुटुम्ब घात मैं ना करूँ, लाज भलाँई जाय ।
पुत्र पौत्र सब ही खड़े, वंश नाश हो जाय ॥
ताते माँग के खावणो, यही निश्चय मैं कीन ।
खड्ग चलाणो नहीं बणे, सब ही बिचारे दीन ॥

कृष्ण वचन

जो तुमको लड़नो नहीं, तो क्यूँ लायो मोये साथ ।
अब मैं जाणे ना देऊँ, करणो पड़सी घात ॥
पाप पुण्य मोही सबे, तुम्हें पाप नहीं होय ।
लड़णो पड़सी खेत में, जाण न देऊँ तोय ॥

अर्जुन वचन

कुटुम्ब हनन हत्या बुरी, महापाप की चाल ।
अब पाछा चालो परा, मान लेवो गोपाल ॥
राज सबी हर लेत ये, जिनकी परवाह नाँय ।
घर संन्यस्त द्वारे फिरूँ, माँग माँग कर खाय ॥

भजन का अन्तरा

कृष्ण वचन

माँग के खणो तो पहिले क्यूँ नहीं खाय, मित्र हमारा रे ।

तैं किण ने हिम्मत सूँ झगड़ो साँभियो रे; म्हारा लाल ॥ ५ ॥
जो लेणो तो पहला लेत संन्यास, मित्र म्हारा रे।
कोई अब तो संन्यासी होवण ना देऊँ रे; म्हारा लाल ॥ ६ ॥
रण में आयाँ गुरु कुटुम्ब कोई नाँय, मित्र हमारा रे।
कोई लड़वाने आया तो समझो काल सा रे; म्हारा लाल ॥ ७ ॥
भय दीनो पण अर्जुन मान्यो नाँय, सजनो म्हारा रे।
कोई तब तो गिरधारी जुगति उपाय ली रे; म्हारा लाल ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण वचन

कुण मारे और कुण मरे, तज अर्जुन अज्ञान।
आतम अज अम्मर सदा, पारथ गह कर बान ॥
पाप पुण्य में भूल के, तू पारथ गयो फँसाय।
धर्म भूमि में खेलताँ, पाप लगे कछु नाँय ॥
नित्य कर्म करतो रहे, करत करत मर जाय।
सो पारथ दुःख ना गहे, मुझ में रहे समाय ॥

भजन का अन्तरा

अर्जुन वचन

जप तप सुमरण करणो नित को काम, प्रभु जी म्हारा हो।
कोई बणे तो हाथाँ सूँ दान दिलावणो रे; म्हारा राज ॥ ९ ॥
देणो देणो गौवाँ सुवर्ण दान, प्रभु जी म्हारा हो।
कोई दीन जनों पर दया राखणी रे; म्हारा राज ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सुन पारथ के बैन ये, बोले कृष्ण सरोष।
यूँ जाणूँ क्यों आवतो, लग्यो संग को दोष ॥
भीष्म पिता दादा तेरे, उनसो ज्ञानी नाँय।

परशुराम से क्यों लड़े, इनको पूछो जाय ॥
शान्तनू राजा हुते, तुम इन वंश के माँय ।
लाखो जीव उण मारिया, कौन नरक बतलाय ॥
भीष्म पिता दादा तेरो, उण सम पापी नाँय ।
जाय देश गंधार में, खोस के कन्या लाय ॥
मारण मरण यह काम है, छत्री तणो सुजान ।
नीच कर्म को छोड़ दे, नित्य कर्म पहिचान ॥
जप-तप यज्ञ और दान सब, पीछे जाय कर लेह ।
लहे गाँडीव को हाथ में, के शिर ले या देह ॥
इतनी कही पर ना लखी, फेर कही गोपाल ।
अब तो कहनो मान ले, नहीं तर होय बेहाल ॥

॥ सोरठा ॥

जाणी मन गोपाल, अर्जुन दिल में बहक गयो ।
होसी खोटो हाल, निज तत्त्व यही समझाय दो ॥

भजन का अन्तरा

कृष्ण वचन

जो तू करे सो नित्य करम ही जाण, मित्र हमारा रे ।
कोई नित्य करम सूँ अर्जुन ना टलो रे; म्हारा लाल ॥ ११ ॥
पढ़णो पढाणो कहिये विप्र को काम, मित्र हमारा रे ।
और वैश्य जो करे नित वणिज व्यौपार ने रे; म्हारा लाल ॥ १२ ॥
रण में आयने मत हिम्मत ने हार, मित्र हमारा रे ।
कोई ओई ने छत्री रो नित्य जो करम है रे; म्हारा लाल ॥ १३ ॥
शूद्र होय सेवा सूँ चूके नाँय, मित्र हमारा रे ।
कोई करम परवाणे जाति जाण ले रे; म्हारा लाल ॥ १४ ॥

चारों वरण हैं सब ही मेरे माँय; मित्र हमारा रे।
कोई म्हारो ही स्वरूप जगत ने जाण ले रे; म्हारा लाल ॥ १५ ॥
मो में कौरव पाँडव कोई नाँय, मित्र हमारा रे ।
कोई नहिं तो यादव ने ना कोई ग्वाल है रे; म्हारा लाल ॥ १६ ॥
तुम हम हम तुम कहिये एकम एक, मित्र हमारा रे।
कोई कुण तो मारे ने कुण जो मर सके रे; म्हारा लाल ॥ १७ ॥
यह तो समझ तू देह थकाँ सब भाव, मित्र हमारा रे।
कोई देह तो मिटियाँ सूँ म्हारे माँयने रे; म्हारा लाल ॥ १८ ॥
पंचभूत और तिरगुण मेरो रूप, मित्र हमारा रे ।
कोई पाप ने पुण्य सब म्हांने जाण ले रे; म्हारा लाल ॥ १९ ॥
ऊठो अर्जुन उठने करो संग्राम, मित्र हमारा रे ।
कोई साचो ने बताऊँ मारग जोग रो रे; म्हारा लाल ॥ २० ॥

कवि वचन

असल योग री कही अर्जुन ने बात, सजनो म्हारा रे ।
कोई जद तो अर्जुन उठ सन्मुख लड़ रह्यो रे; म्हारा राज ॥ २१ ॥
कर कर बोल्यो गाँडीव टंकार, सजनो म्हारा रे ।
अब देरी नहीं कीजो ने झगड़ो छेड़दो रे; म्हारा राज ॥ २२ ॥
दिवस अठारह भारत खूब हि कीन, सजनो म्हारा रे।
कोई गिरधर रो कयोड़ो उर बिचधारियो रे; म्हारा राज ॥ २३ ॥
नहीं लागो जाने पाप पुण्य रो लेस, सजनो म्हारा रे।
वे तो आखिर बिलिया में मिलिया श्याम में रे; म्हारा राज ॥ २४ ॥
थोड़े में वरणी जो गीता सार, सजनो म्हारा रे।
कोई ज्यादा ने कयाँ सूँ सुण्यो न जावसी रे; म्हारा राज ॥ २५ ॥
नहीं अर्जुन ने दियो श्याम संन्यास, सजनो म्हारा रे।
कोई नाँही कुशा ने जनेऊ धारली रे; म्हारा राज ॥ २६ ॥

नहीं बिठायो यज्ञ हवन रे माँय, सजनो म्हारा रे।
कोई भेडी तो बणियोड़े ने सिंह बणावियो रे; म्हारा राज ॥ २७ ॥
मारण मरणो सदा हमारो काम, सजनो म्हारा रे।
कोई निश्चय राखों जो आतम ज्ञान ने रे; म्हारा राज ॥ २८ ॥
दीनो दीनो देवनाथ यही ज्ञान, सजनो म्हारा रे।
कोई मानतो माले यूँ जीवत स्वर्ग में रे; म्हारा राज ॥ २९ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "सोढे सूमरे" की। ताल कैरवा ॥

देखो देखो गीता ग्रन्थ विचार, सजनो म्हारा रे।
कोई केशवजी सन्यासी पारथ ने ना कियो रे; म्हारा राज ॥ १ ॥
जीवत मुक्ति पाण्डव सुत ने दीन, सजनो म्हारा रे।
कोई गीता तो सुणाई रण खेत में रे; म्हारा राज ॥२ ॥
नहीं वहाँ होतो जप तप यज्ञ रो काम, सजनो म्हारा रे।
नहीं तो होतो उठे मारग जोग रो रे; म्हारा राज ॥ ३ ॥
नहीं पण होतो मृतक काल रो काम, सजनो म्हारा रे।
कोई राजा ने पाण्डु ने कई दिन बीतिया; म्हारा राज ॥ ४ ॥
जो अर्जुन ने देत कृष्ण संन्यास, सजनो म्हारा रे।
कोई हस्तिनापुर तज आवे क्यूँ रण खेत में रे; म्हारा राज ॥ ५ ॥
ए सब बाताँ कल्पी पोल पुराण, सजनो म्हारा रे।
कोई तायोड़े घृत में छाछ ले भेलदी रे; म्हारा राज ॥ ६ ॥
अंधविश्वाश से नैणाँ दीखे नाँय, सजनो म्हारा रे।
कोई निकल्योड़ो घृत पाछो छाछ में ना मिले रे; म्हारा राज ॥ ७ ॥
स्वारथिया ए निज घृत पावे नाँय, सजनो म्हारा रे।
कोई छाछ ही पाय पाय ने देश डुबावियो रे, म्हारा राज ॥ ८ ॥
अन्तकाल में दे गीता रो ज्ञान, सजनो म्हारा रे।

कोई जिण माँही स्वारथ री बाताँ ए केवे रे; म्हारा राज ॥ ६ ॥
बोलचाल भी लागे खारी जहर, सजनो म्हारा रे।
कोई एड़ी रे बिलियाँ मैं गीता क्यां सुणे रे; म्हारा राज ॥ १० ॥
तन थिर मन थिर वचन नहीं थिर होय, सजनो म्हारा रे।
कोई शिर पर तो बाजा बाजे काल रा रे; म्हारा राज ॥ ११ ॥
देखो जग रो कैड़ो अंधविश्वाश, सजनो म्हारा रे।
कोई स्वारथिया लूटे इण भारत देश ने रे; म्हारा राज ॥ १२ ॥
सब सूँ ऊँचो उत्तम गीता ज्ञान, सजनो म्हारा रे।
कोई स्वारथियाँ बिगाड़्यो गीता ग्रन्थ ने रे; म्हारा राज ॥ १३ ॥
परहित कारण पारथ कृष्ण सम्वाद, सजनो म्हारा रे।
कोई स्वारथियाँ रुलायो रतन ने राख में रे; म्हारा राज ॥ १४ ॥
अर्ज सुणे तो धरे कृष्ण अवतार, सजनो म्हारा रे।
कोई दुराचार्यों रो पापो काट दे रे; म्हारा राज ॥ १५ ॥
गीता समझो अखिल विश्व रो सार, सजनो म्हारा रे।
थे तो मंतर ही मात्र गीता मत जाणजो रे; म्हारा राज ॥ १६ ॥
गीता कहिये असल व्यवहार समुद्र, सजनो म्हारा रे।
कोई रंचक भर नहीं मारग इण में त्याग रो रे; म्हारा राज ॥ १७ ॥
गीता ग्रन्थ ने लख्यो भरतृराज, सजनो म्हारा रे।
कोई उण रे भाष्य में निश्चय जाण लो रे; म्हारा राज ॥ १८ ॥
देवनाथ गुरु गीता घृत ने लेय, सजनो म्हारा रे।
कोई सोई ने पिलायो घृत मान ने रे; म्हारा राज ॥ १९ ॥
मानसिंह ज्याँरो भूले नहीं एहसान, सजनो म्हारा रे।
म्हाँने सतगुरु नहीं मिलता तो खाली रेवता रे; म्हारा राज ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

बंक कहे सुन मानसिंह, यह मोहे हाँसी आय।

इतनी कहाँ फुरसत हती, जो गीता दई समझाय ॥
पद श्लोक है सात सौ, सेना दोऊँ तैयार ।
ताहि समय कैसे कही, केहि विधि कृष्ण विचार ॥

॥ कवित्त ॥

एक हू पद को अर्थ जो करे कोऊ, केती ही घड़ी तामें करत बीत जात है। यह हुते सात सौ कैसे कहे कृष्णचन्द्र, एक दिवस कहा कई दिवस गुजर जात है। ऐसी यह उड़त बाताँ मैं तो नहीं मानूँ मान, कहो समझाय क्या यह झूठी कही जात है। विना विश्वास कहो बात कैसे मानें हम, तुम जो कहत बात समझ में न आत है। कहे कवि बंक यह बंक है बात तेरी, बिना सीधी कियाँ बिना वृथा ही लखात है। आप बिना कौन यह स्पष्ट समझावे मान, गुणिजन को काम अमी ज्ञान के पिलात है ॥

॥ दोहा ॥

मान हँसे मुखते मधुर, कवि बंक कहा कीन ।
छानो तू कछु ना रह्यो, बोल उठ्यो परबीन ॥

॥ कवित्त ॥

थोड़ी सी कही कृष्ण अर्जुन भी सुनी थोड़ी, दोनों चतुर हुते उन सैनी समझायो है। वेदव्यास जैसे विज्ञानी पुरुष हाजर तहाँ, दोनों को भाव देख ग्रन्थ यह बनायो है। दूजी हू न समझ याको समझ तू कृष्ण वाक्य, कृष्ण और व्यास कोई दोय ना कहायो है। जामें थे आत्मदर्शी मूर्ख थे नाहिं दोऊँ, आतमदर्शिन के विश्व सगरो समायो है। कहे राव मानसिंह बंकी न समझ याको, तोको कहा बंकी बंक बंक तू कहायो है। तू तो है प्रवीण कवि तोको समझाऊँ कहा, तेरो हित नाँय हित तैं औरन को चायो है ॥

॥ दोहा ॥

पर हित कारण तैं कियो, मोते यह संवाद ।
मैं तो ते अति खुश भयो, समझूँ नाँय विवाद ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

बंक वचन

धन्य तुम्हारी माई । बात सब खोल सुनाई; धन्य तुम्हारी० ॥ टेर ॥
कृष्ण कही अर्जुन के ताँई, क्या हाजिर थे वहाँई ।
हाजिर होय जिम बात कही तुम, कसर रखी कछु नाँई । बात सब० ॥ १ ॥

मान वचन

मैं हूँ अनादि आज को नाँही, यह क्या शंका आई ।
तुम हम हम तुम केते जन्म लिये, अबके हि मारग पाई । बात सब० ॥ २ ॥

बंक वचन

हमें तो बात याद नहीं नृपति, तुम्हें किम याद रहाई ।
हम तुम न्यारे या भेले होते, यह समझावो गुसाँई । बात सब० ॥ ३ ॥

मान वचन

भास मात्र तुम हम दोऊ हैं, कितनी ही वार बताई ।
भास उड्यो महा भास में मिल गयो, तब कहाँ दोय दिखाई । बात सब० ॥ ४ ॥

बंक वचन

क्या तुम व्यास कृष्ण खुद आये, यह संशय मन माँई ।
कितने झंझेड़े हटत नहीं निश्चय, दिन दिन साफ दिखाई । बात सब० ॥ ५ ॥

मान वचन

मोते व्यास कृष्ण कब भिन्न थे, झूठी शंका चलाई ।
खोटे नहीं तो निकसत कहाँ ते, कितनो ही छेड़ भलाँई । बात सब० ॥ ६ ॥

बंक वचन

क्या कहूँ बात समझ नहीं आवे, तुम खुद बोलो गीताई ।
बार बार मैं कहूँ आपको, तुम नहीं रूठत कदाई । बात सब० ॥ ७ ॥

मान वचन

यामें रीस क्रोध कहा करिये, तू मेरी आतम पाई।
आतम धन यह अखूट खजाना, ज्यों बाँटे त्यों बधाई। बात सब० ॥ ८ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण मिले थे, जिन हू न बात छिपाई।
मान छिपावे क्या अक्ल है खोई, गुप्त रख्याँ गुम जाई। बात सब० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

गीता गीता क्या करे, नहिं तायो तो ताय।
स्वारथियाँ स्वारथ वशी, दीवी छाछ मिलाय ॥
ओ घृत चट ही सुधरसी, मिलियो रहसी नाँय।
मन ने पकड़ निज मन करे, तो छाछ सभी उड़ जाय ॥
जो तू घी नहीं ता सके, तो गुरुमुख होकर ताय।
स्वारथिया गुरु ना करो, फिर देसी स्वारथ मिलाय ॥
आगे स्वारथ बहु मिल्यो, कियो अरथ अनरथ।
साचा गुरु जो केवसी, सुणसी होय पारथ ॥
पारथ हो गीता सुने, तो गुरु की पोल उड़ जाय।
कृष्ण रूप गुरु ठहरसी, पोल जिकाँ में नाँय ॥
श्रोता भी पारथ नहीं, तो गुरु कृष्ण किम होय।
गलती दोनों में रही, समझ्या नहीं है कोय ॥
शिष्य जाने गीता सुनी, पूरो कीयो नेम।
गुरु जाने मतलब कियो, नहीं दोनों में प्रेम ॥
मानसिंह अस शिष्य गुरु, वे ऊँडे कूवे जाय।
चाहे तो एक गीता सुनो, चाहे वेद सुनाय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

होवे होवे जो पारथ समान, ज्याँने गीता भावे रे ॥ टेर ॥

नहिं गीता सुन ले संन्यास; नहिं वह जग से रहे उदास।
दीखे जग अपने समान । ज्याँने गीता० ॥ १ ॥
गीता जीवत मोक्ष कहे सोय; ऐसी मुक्ति सहजे होय।
देखो देखो वेद प्रमाण। ज्याँने गीता० ॥ २ ॥
खाटो खारो चरपरो नाँय, स्वादि ने इनमें स्वाद न आय।
पड़े हैं नरक की खान। ज्याँने गीता० ॥ ३ ॥
स्वारथ बस प्रमाण क्या दीन; पढ़ के तोते मोक्ष ले लीन।
देखो क्या गहरो है अज्ञान । ज्याँने गीता० ॥ ४ ॥
भवन वृक्ष तल प्रेत गमाय; सिर्फ गीता को पाठ पढ़ाय।
मत होवो अति रे अज्ञान । ज्याँने गीता० ॥ ५ ॥
तन तरु मन मन्दिर जो कहाय; क्रोध प्रेत तो निकस्यो नाँय।
पढ़ पढ़ दीनी उमर गुमाय । ज्याँने गीता० ॥ ६ ॥
तोते ज्यों पढ़ पढ़ परवीन; शिष्य जो शंका कुछ भी न कीन ।
हरे नमः कह कर वक्त बिताय। ज्याँने गीता० ॥ ७ ॥
हरे नमः अर्जुन कर जाय; तो यह गीता बनती नाँय।
कृष्ण भी नाँय सुनाय । ज्याँने गीता० ॥ ८ ॥
पद पद ऊपर शंका कीन; पैंड एक नहीं जावण दीन।
जब हुवे अठारह अध्याय । ज्याँने गीता० ॥ ९ ॥
यहाँ तो दी प्रथा उल्टी डार; शिष्य को पूछन नहिं अधिकार।
गुरु चाहे कहीं दे गिराय। ज्याँने गीता० ॥ १० ॥
देवनाथ धर कृष्ण अवतार; कियो मान को परले पार।
क्यों कर भूलूँ मैं अहसान । ज्याँने गीता० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

यह गीता प्यारी, नर और नारी, देखो समझ विचार।

जिन्हें भाखी वसुदेव कुमार रे; यह गीता० ॥ टेर ॥
पाठ पाठ में रहीजो मती रे, कर कर लाख हजार ।
गीता पढ़जो ने प्रेम लगाजो, लखजो सार असार रे । यह गीता० ॥ १ ॥
कृष्ण जी जैसे तो योगी सुनाई, और अर्जुन से चतुर सरदार ।
वेद व्यास जैसे कविता बन्ध कीनी; गलती न होय लिगार रे। यह गीता० ॥ २ ॥
मन्त्र स्वरूप जानली इसको, कीनो अति अपकार ।
सार असार विचार न कीनो, डूब गये मझधार रे । यह गीता० ॥ ३ ॥
गीता जैसो घृत है अमृत, रहे जमी पर डार ।
मानुष तनु बिन और न मिलसी, होसी कष्ट अपार रे। यह गीता० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, दीनो शुद्ध विचार ।
मान कहे रे धन्य महा पुरुषों, धन्य है लाख हजार रे। यह गीता० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉंड । ताल दादरा ॥

निज प्यारा हमारा, नैनों का तारा, क्यों रूठा करतार ।
यह करलो मन में विचार रे; निज० ॥ टेर ॥
उनके तो प्रेम की नदियें बहतीं, यहाँ पर जाल ही जाल ।
उनके तो ज्ञान विज्ञान भरा था, यहाँ पर चाल कुचाल रे । निज० ॥ १ ॥
उनने तो गीता ताया हुआ घृत, दिया था तुमको निकाल ।
उलटी कुमति यह हुई तुम्हारी, फिर दिया छाछ में डाल रे। निज० ॥ २ ॥
गीता पढ़ो और प्रेम से रहो, राजी हो दीनदयाल ।
बाड़ा बन्दी को छोड़ दो भाई, कभी न खावे काल रे । निज० ॥ ३ ॥
बाड़े की भेड़ों को बाहर निकालो, और सिंह करो तत्काल ।
हो हुशियार ललकार करो तो, दूर भगे सब जाल रे। निज० ॥ ४ ॥
गोरख कबीर और दादू नानक, काल दिया शिर से टाल ।
गीता के अमृत को छान के पीया, राजी हुआ नन्दलाल रे। निज० ॥ ५ ॥

मान कहे कोई मानो न मानो, मेरा तो बदला ख्याल।
देवनाथ ने हाथ गह्यो जब, भाग्यो अन्देश को जाल रे। निज० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

मन गीता वाक्य उर धर रे। कृष्णचन्द्र ने प्रगट प्रकास्यो,
जाको दूर मत कर रे। मन० ॥ टेर ॥
सब तज शरण एक की रह नित, निर्भय होय विचर रे ॥ १ ॥
सब तज दे तो शरण कौन की, यह संशय परहर रे ॥ २ ॥
सर्व तज्यों पर आप तज्यो नहीं, वाही की शरण सुमर रे ॥ ३ ॥
मान आप अपने की शरण बन, सब बंधन ते टर रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

पढ़ गीता रहे रीता उन्ही को धूड़ जमारो रे, अर्थ निज नाँय विचारो ॥ टेर ॥
गीता मंत्र समान ही जान; होय बिमार सुणावत आन।
स्वारथ हित ये करत सबी नहीं अर्थ विचारो रे। अर्थ निज० ॥ १ ॥
समझे कृष्ण यशुमति को लाल; उनको खाय अवश्य ही काल।
कृष्ण रहे यूँ विश्व बीच में व्यापक सारो रे। अर्थ निज० ॥ २ ॥
देख कृष्ण को आतम रूप; सबी भूत को आप स्वरूप।
अखंड रूप लख लेहे अविद्या दूर ये डारो रे। अर्थ निज० ॥ ३ ॥
गीता कही उण अर्थ विचार; कृष्ण समान गुरु को धार।
तारण कारण कष्ट कियो यह कृष्णजी सारो रे। अर्थ निज० ॥ ४ ॥
देवनाथ कल्याण के रूप; मेट दिवी जिन त्रिविध की धूप।
मान जान निज-रूप नैन बिच सहजे निहारो रे। अर्थ निज० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल धमाल ॥

कीनो है जुलम अपार रे; जिन गीता बिगाड़ी। कीनो है ॥ टेर ॥

कोई कहे ये साँख्य योग है; कोई कहे त्याग पुकार रे। जिन गीता० ॥ १ ॥
कोई कर्मकाण्ड ले भेले; जुदाई जुदा मत धार रे। जिन गीता० ॥ २ ॥
गीता यह जो ताया घृत है; छाछ पीए संसार रे। जिन गीता० ॥ ३ ॥
मंत्र ही मात्र कहे गीता को; पढ पढ मरती वार रे । जिन गीता० ॥ ४ ॥
तत्त्वमसि और समता भाव ले; मुख सूँ करणो व्यवहार रे । जिन० ॥ ५ ॥
गीता पढ़ाय भेष दे जिनको; उनके पड़े मुख छार रे । जिन गीता० ॥ ६ ॥
ये तो खबर पड़े प्यारो जब ही; कृष्ण धरे अवतार रे । जिन गीता० ॥ ७ ॥
मान कहे ये गीता ऐसी; सगले जगत रो सार रे । जिन गीता० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल धमाल ॥

फेर धरो अवतार रे; निज तत्त्व सुनावो । फेर धरो० ॥ टेर ॥
सत् उपनिषद् सार बखाण्यो; मेट्यो मेट्यो द्वैत विकार रे । निज तत्त्व० ॥ १ ॥
मिथ्या मोह पारथ ने घेर्यो; दिवी है ज्ञान तलवार रे । निज तत्त्व० ॥ २ ॥
उपज्यो ज्ञान खड़ो भयो अर्जुन; करके लड़्यो ललकार रे । निज तत्त्व० ॥ ३ ॥
तुम बिन गिरधर कौन बचावे; भारत डूबे मझधार रे । निज तत्त्व० ॥ ४ ॥
यह स्वारथिया उलटी बतावे; अब तो छुड़ावो याँसू लार रे । निज तत्त्व० ॥ ५ ॥
सुरपति सुत को ज्ञान दियो जैसे; ऐसे ही दीजे पधार रे । निज तत्त्व० ॥ ६ ॥
सब ही देश सुरक्षित रहेवे; कर समता रो व्यौहार रे । निज तत्त्व० ॥ ७ ॥
मान कहे मोये फिकर न मेरो; तारे तो भारत खंड तार रे । निज तत्त्व० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल धमाल ॥

गर जो गीता न होती तो रहते यौंही; अनमोल अमी नहीं पाते कभी ॥ टेर ॥
श्रीकृष्ण ने महर करी कैसी; जिन गीता अमोल धरी कैसी ।
जिन्हें पढ़ते ही द्वैत गई कैसी । अनमोल० ॥ १ ॥
गोपाल ने सब कुछ ठीक किया; मतवादी बखेड़ा मिलाय दिया ।

जब नाथ ने आ अवतार लिया। अनमोल० ॥ २ ॥
गीता सी गाय दिनी हमको; जिन आते ही दूर किया तम को।
सब खोज लिया अपने दम को। अनमोल० ॥ ३ ॥
इस गाय को दुह के दूध लिया; तब बुद्धि के माट जमाय दिया।
अब तर्क वितर्क बिलोना किया। अनमोल० ॥ ४ ॥
छाछ बखेड़ों को दूर किया; निज तत्त्व का घृत यह लूए लिया।
जिन शीश दिया उन घृत पिया। अनमोल० ॥ ५ ॥
यह गैया मेरी मरने की नहीं; चोरों से कभी हरने की नहीं।
और दूध से यह टरने की नहीं। अनमोल० ॥ ६ ॥
हैं हम इनके जो बाछड़िया; गो गीता का पय हम खूब पिया।
हम पीते ही पीते इक रूप भया। अनमोल० ॥ ७ ॥
देवनाथ गोपाल मिले; वे कर्ता अकर्ता ग्वाल मिले।
हम मान उन्हीं के लाल मिले। अनमोल० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता। ताल कवाली ॥

भरी क्या रोशनी गीता में; ऐसी कृष्ण ने प्यारी ॥ टेर ॥
जो जाने है वही जाने, विचारे ज्ञान से इसको।
न जाने मूर्ख जन भूले, हुए कंकर के व्योपारी ॥ १ ॥
जबर है रोशनी सबसे, न कह सकते कोई शोभा।
पुराण और वेद सब खोजे, तो सबसे रोशनी न्यारी ॥ २ ॥
न होते कृष्ण दुनिया में, पिलाते कौन मथ के घृत।
स्वार्थियों ने बिगाड़ी है, छाछ इसमें जो फिर डारी ॥ ३ ॥
निकाला फिर नहीं मिलता, जबरदस्ती मिलाते हैं।
पृथक आती नजर है यह, स्वार्थ की छाछ जो न्यारी ॥ ४ ॥
यज्ञ और हवन का करना, भेष धर बन में बीचरना।

काम क्या था वहाँ करना, अंधविश्वासता डारी ॥ ५ ॥
अगर संन्यास ही करना, मराये काहे को कौरव ।
क्रिया यह कृष्ण क्यों ऐसा, हिंसा का पाप दुःख कारी ॥ ६ ॥
तजो इस अन्धता को अब, उघाड़ो आँख उर देखो ।
कहे यूँ मान ब्रह्मविद्या, भरी गीता में है सारी ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

उगाया एक नया सूरज, हमारे कृष्ण प्यारे ने ॥ टेर ॥
अन्धेरा छा रहा गहरा, न सूझे कर से कर भी तो ।
दया कर भारत के ऊपर, बताया अर्थ दुलारे नें ॥ १ ॥
स्वारथी फिर से ये करते, अन्धेरा भारत भूमि में ।
बड़ा के साम्यता को यें, मिटाते फिर उजारे को ॥ २ ॥
उघाड़ो ज्ञान की आँखे, मिटा दो फिर अन्धेरे को ।
सभी दुनिया को कीया तंग; इसी भ्रम के अन्धारे ने ॥ ३ ॥
मान इस बात को मानी, न जाऊँ मैं अन्धेरे में ।
कृपा कर चानणा दीया, मेरे यशुमति दुलारे ने ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

रेख पर मेख मारी है, हमारे कृष्ण प्यारे ने ॥ टेर ॥
भाग्य की रेख को रोते, बितादी उम्र सारी को ।
पढ़ाया मंत्र गीता का; हमारे कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ १ ॥
जो अर्जुन भाग्य को रोता, विजयी नहीं कभी होता ।
उतारा भार भूमि से; हमारे कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ २ ॥
अगर क़िसमत को वो जोते, मिटता कब मान दुष्टों का ।
हटाये दैत्य भूमि से; हमारे कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ३ ॥

जो करते करम का खण्डन, करे क्यों कर्म कृष्ण जो खुद ।
ज्ञान से युक्त कर्म करना; बताया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ४ ॥
करम को साथ लेकर के; ज्ञान की बुद्धि बतलाई ।
योग और यज्ञ का रस्ता, दिखाया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ५ ॥
कर्म है जोकि शुभ करना, योग है आप में जुड़ना ।
यज्ञ है सब के रह शामिल; बताया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ६ ॥
मिटा दो रेख किसमत की, इसे तुम झोको आगी में ।
बनो मत आलसी यारो; बताया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ७ ॥
अगर रोते हो किसमत को, पढ़ो मत कृष्ण की गीता ।
पढ़ के क्यों बोझ उठाते हो; बताया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ८ ॥
कहे नृप मान सच सुनिये, भारतवासी बहिन भाई ।
बड़ा अनमोल यह अमृत; पिलाया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

अगर श्रीकृष्ण नहीं होते, अन्धेरे में ही रह जाते ।
उगाता कौन यह सूरज, यूँ ही भव बीच बह जाते ॥ टेर ॥
अन्धेरा छा रहा गहरा, न दिखता पाणी से पाणी ।
उमर तो है यह थोड़ी सी, इसी में यूँ ही चले जाते ॥ १ ॥
कृपा कर कृष्ण ने दीया, नेत्र यह ज्ञान का हमको ।
अगर नहीं गीता को करते, तो जंगल बीच रह जाते ॥ २ ॥
कृपा कर कृष्ण ने हमको, पिलाया ज्ञान का अमृत ।
नाहक मिसरी के धोखे में, डली कहीं जहर खा जाते ॥ ३ ॥
मिले गुरु नाथ जी हमको, लिया अवतार गिरधर का ।
कहे यूँ मान निज जोया, मरें क्यों पोल के खाते ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कव्वाली ॥

पढ़ें हम मन्त्र गीता का, अमर रहते हमेशा हैं ।
उठा सिर कृष्ण का कहना, अमर रहते हमेशा हैं ॥टेर॥
कवच हम पहन गीता का, खड़े रण बीच में झूमें ।
उड़ाके फौज दुश्मन की । अमर रहते० ॥ १ ॥
भरे हैं बाण तरकस में, चलाये यह नहीं खूटें ।
सहें हम बाण व्यौहार के । अमर रहते० ॥ २ ॥
बनें जंगल के क्यों जोगी, दिखा के दिल में कायर पन ।
कवच जो अमर पहना है । अमर रहते० ॥ ३ ॥
अगर हम मरने से डरते, कवच क्यों गीता का पहनें ।
करें क्यों खुद को शरमिन्दा । अमर रहते० ॥ ४ ॥
पहन लो कवच गीता का, शाह संसार के बनलो ।
चक्र चले लोक तीनों में । अमर रहते० ॥ ५ ॥
कहे यूँ मान निश्चय से, शाहनशाह हैं हम दुनिया के ।
जगत सब रूप मेरा है । अमर रहते० ॥ ६ ॥

प्रेम महिमा

॥ दोहा ॥

पीओ प्याला प्रेम का, जो कोई पीआ जाय ।
बिन पायाँ पीजो मती, पीयो तो फचसी नाँय ॥

॥ चौपाई ॥

और घृत पिवत बिमारी मिटावे । प्रेम घृत पीए तो बिमार हो जावे ॥
ताते पिओ समझ कर भाई । पिया जिके नर जीया नाँई ॥

॥ सवैया ॥

कोई तो प्रेम के हौद कहे तथा कोई जो वापी तड़ाग बतायो ।
कोईक कूप के बीच में रोकत कोईक प्याले को रूप सुनायो ।
हौद न वापी तड़ाग न कूप यह प्यालो सभी तुमरे नजरायो ।
मान तो कूद्यो समुद्र के बीच में डूब गयो फिर पीछो न आयो ॥

॥ सवैया ॥

नीर समुद्र में जाय डुबे करके कोई युक्ति उन्हें निकलावे ।
प्रेम समुद्र में जाय डुबे फिर युक्ति नहीं कर कैसे कढ़ावे ।
वो प्रेम दरिया जबरो सबसे या में आन गिरे जाको नीर बनावे ।
मान कहे जब नीर भयो तो जुदाई नहीं कैसे थाह लगावे ॥

॥ सवैया ॥

नीर में नीर समाय गयो जब एक स्वरूप समुद्र कहावे ।
रंचक मात्र वो नाँहि रहे यदि थोड़ो ही रहे तो जाय के लावे ।
मान की शान मिटी सगरी डगरी न मिले अब क्या कोई जावे ।
मान महान् समाय गयो अब मान नहीं किनको हम पावें ॥

॥ चौपाई ॥

प्रेम की लहर नजर नहीं जोई । प्रेम ही प्रेम बके सब कोई ॥
प्रेम के पन्थ में आवे जो कोई । जो आवे सो जीवत नहीं होई ॥
बकियाँ उपजे न प्रेम की वाणी । कही यह प्रेम की गजब निशाणी ॥
प्रेम करे जिंदा क्यूँ भाई । दोऊ बात की हँसी मोहे आई ॥
गदगद कण्ठ नयन जल धारा । जिन उर लागे प्रेम कटारा ॥
लागे कटारी और रह जावे माँई । खटक खटक वह फिर खटकाई ॥
बिना मूठ बिन मारे कटारी । टूट जाय निकले नहीं बारी ॥
मान कहे उपज्यो निज ज्ञाना । स्थिर भयो मन अब आन न जाना ॥

॥ गान ॥

॥ राग कल्याण । ताल कैरवा ॥

समझ के कोई आवे प्रेम के पन्थ ॥ टेर ॥

प्रेम पन्थ की गली साँकड़ी, ताहिन काढ़े तंत ।
प्रेम गली में जो कोई बड़ गयो, लीनो पिया को अंत । समझ के० ॥ १ ॥

मान और अभिमान मिटावे, रहे नित सीधा संत ।
अपनो ही रूप सबी में समझे, मेटे कूड़ अनन्त । समझ के० ॥ २ ॥

प्रेम ने नेम रखो तुम दोनो, स्वप्ने ही नाँहि निभंत ।
या तो प्रेम नेम या राखो, तो मिलसी आनन्द । समझ के० ॥ ३ ॥

जिनके प्रेम आचार कौन सो, एक ही रंग रंगन्त ।
बन बस्ती सो एक सी दीखे, छोटो न बड़ो बणवंत । समझ के० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु समरथ मिलिया, जिण दीवो प्रेम की संथ ।
मानसिंह यूँ प्रेम पद परस्या, ले न सकोगे कोई अन्त । समझ के० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह यह प्रेम का, दावा करे सो झूठ ।
जिनके मन में प्रेम है, सो खूटे नहीं अखूट ॥

पोथा पढ़ थोथा रया, पंडित भया न कोय ।
ढ़ाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय ॥

प्रेम बिहूणा मानवी, मनुष्य नहीं पशु जान ।
मानसिंह वो समझले, संगत करो पहिचान ॥

॥ सवैया ॥

विरह को रोग लग्यो जिनको यह नाँहि मिटे करो लाख दवाई ।
वैद्य अनेकों ही हार गये हैं बिमारी की बूटी किणी नहीं पाई ।
वैद्य मिले सो अनारी मिले ये बिमार की नारी पिछानत नाँई ।
आशिक इश्क बिमारी को जानत जाने जभी वह मरज दवाई ।

मान की कौन सुनें अब पीड़ यह स्वारथ की सब आग लगाई ।
विरहिया सन्त मिले जो कोई जिन पीड़ बिमारी की आप लखाई ॥

॥ सवैया ॥

स्वारथिये सब वैद्य मिले सो इनके पास में औषध नाँई ।
मेरी तो पीड़ सभी से अलग है जाने वही जम दरद में आई ।
कोई कहे क्षय रोग बन्यो और कोई हमें जो दिवानो बताई ।
जगत् दिवानो है मैं क्यों दिवानो जो मैंने तो यारी उन्हीं से लगाई ।
मान को रोग मिटे तब ही जो महान् जभी अपने घर आई ।
जावो रे जावो वैद्य परे तुम मोको दवाई पिलाओ न भाई ॥

॥ कवित्त ॥

वैद्य हूँ की ताकत कहा जाने यह बिमारी मेरी, मान को जो प्यालो एक प्रेम भर पायो है। छके रहें एक साथी दीखे नाँय दिन राती, वर्ष और दिवस मोको एक सो दिखायो है। जैसो वर्ष बीते तैसो दिवस एक बीते मेरे, जब तक प्रीतम मेरे पास हू न आयो है। कहे राव मानसिंह विरह की बिमारी ऐसी, वही शख्स जाँणे जाने काढ खड़्गखायो है ॥

॥ दोहा ॥

औषध एक लागे नहीं, सबी वैद्य थक जाय ।
बूटी उणरी है नहीं, केतोहि मगज्ज पचाय ॥
उनकी बूटी एक है, निश्चय आतमज्ञान ।
वो अन्तर आवें जभी, टूट जाय सब मान ॥
मानसिंह इण जगत में, घणा तो बुगला हंस ।
इक टक ध्यान लगाय के, खोय दियो सब वंश ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल कैरवा ॥

मिलो निज पीव सूँ हे जोगिन, पापी जब कहलाय ॥ टेर ॥

पीय पीय सखी क्या करे हे जोगिन, पिये तो पिया मिल जाय।
पीये बिना तुम क्यों रही हे जोगिन, पिये को आनन्द नहीं आय। मिलो० ॥ १॥
पीपा पापी पी सके हे जोगिन, पिव बिच जीव समाय।
पिया पिया तूँ क्या करे हे जोगिन, पिया नहीं कैसे जाय। मिलो० ॥ २॥
प्यारी तू वाँरी नहीं हे जोगिन, वाँरी बिना न बुलाय।
वाँरी वाँरी सब पी गई हे जोगिन, वाँरी बिना किम पाय। मिलो० ॥ ३॥
मान महान् सब ले गयो हे जोगिन, मान कहाँ से आय।
मान महान् सूँ गल गयो हे जोगिन, मान महान् के माँय। मिलो० ॥ ४॥

॥ चौपाई ॥
॥ शिष्य वचन ॥

हम तो मरे पर नफा क्या पावो। रह रह के क्यों तीर चलावो ॥
करणा तो कर पिया एक ही निशाना। रह रह के मत कर तू दीवाना ॥
सुनो प्रभु देवनाथ गुरु पीरा। मारो तो मारो नहीं तो बन्ध करो तीरा ॥
अब प्रभु मोसे सही नहीं जावे। क्षत्री वंश अंश उर आवे ॥
हैं रजपूत हम भूत समाना। कब तक सहेंगे तुम्हारे यह बाना ॥
मैंने तो झेली है इतनी तुम्हारी। एक चोट अब झेलो हमारी ॥

॥ सवैया ॥
॥ गुरु वचन ॥

बात सुनी है मान की यह जब देवहुनाथ ने बैन सुनायो।
रे रे मान शाबास तुम्हें अब दाव उठावन को जो आयो।
जानी हती कि मैं ही मर्यो पर ज्ञान की आग तुझे भड़कायो।
अब मुझ से युद्ध करण तू चाहत मान तूही सत शिष्य कहायो।
चोट है तेरी जो एकही काफी तू दास हतो ते आप मिलायो।
नीचे की पैड़ी को छोड़ी नहीं और चढ़त चढ़त ऊपर चढ़ आयो।
व्यवहार हतो जग को सब मान वो त्योंहि रह्यो नहीं नेक घटायो।
कहन के मात्र तो कहत गुरु पर शिष्य गुरु दोऊँ एक समायो ॥

॥ चौपाई ॥

देवनाथ कहे मान रंग तोई । तुमसो विरहिया अवर नहिं होई ॥
नाहरी पय पी स्तन न लजायो । धन्यवाद क्षत्राणी सुत जायो ॥
गृहस्थ माँय संन्यस्त कर लीना । प्याला जहर अमी कर पीना ॥

॥ शिष्य वचन ॥

माफ करो गुरुदेव गुसाँई । मेरी बड़ाई शोभावत नाँई ॥
तुम हम दोय हते कब स्वामी । देह मात्र करि भक्त नमामी ॥
यह सुन बैन नाथ चुप होये । भरम मान के सब विधि खोये ॥
मान कहे सुनो लोक लुगाई । इश्क कथा है ऐसी भाई ॥
इश्क करो तो समझ के कीजे । श्रद्धा बिना पाँव नहीं दीजे ॥
देवनाथ गुरु यों समझाई । मान कहे गुप नहीं भाई ॥
मानसिंह गुरु की जो गावे । गुरु सम होय गुरु रूप समावे ॥
अर्थ न धर्म न काम न भाई । मोक्ष भी तिनसें मिलसी नाँई ॥
चारों पदार्थ ते है न्यारो । मान कहे ऐसो इश्क हमारो ॥

॥ दोहा ॥

मोक्ष मोक्ष की होत है, ऐसो इश्क कमाय ।
मानसिंह या इश्क में, लीन होय तो आय ॥

॥ सवैया ॥

प्रेम के हौद में डूब गये फिर डूबे हुए निकले किम भाई ।
नहाये जो प्रेम के हौद में हैं फिर प्यासे रहे किम हाँसी यह आई ।
छोटे से पानी के हौद गिरे उनकी न रहे तन प्यास मिटाई ।
सो तुम प्रेम के हौद गिरे फिर प्यासे रहे तुम भूल कमाई ।
मान कहे विरही न बने तुम विरहन को ऐसो ढोंग सजाई ।
वेद ने ग्रन्थ कहे सगरे जिन प्रेम कियो सो तो प्यासो है नाँई ॥

॥ गान ॥

॥ राग गोरी । ताल कैरवा ॥

प्रभु है प्रेम से राजी; सुन्यो है मैं तो प्रभु है प्रेम से राजी ॥ टेर ॥
वेद कुरान प्रेम विना पढ़ई, मूरख पंडित काजी । सुन्यो० ॥ १ ॥
प्रेम के नेम कायदा कौनसा, रात दिवस रहे साजी । सुन्यो० ॥ २ ॥
हरि ने रिझावन एक न जाने, माया रिझावन पाजी । सुन्यो० ॥ ३ ॥
शबरी गणिका गीध गवालन, कौन गायत्री साधी । सुन्यो० ॥ ४ ॥
नेम आचर कायदा टूटे, प्रेम घटा शिर छाजी । सुन्यो० ॥ ५ ॥
मान कहे हम सत्य कहेंगे, चाहे कोई राजी नाराजी । सुन्यो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल तिताला ॥

वो मग रह गयो न्यारो; साधो वो मग रह गयो न्यारो ॥ टेर ॥
अजामील गज गनिका लीनो, मग पकड़्यो जिन सारो ।
यों हो बको उण मग नहीं जावो, तो कैसे मिले पिव प्यारो । साधो० ॥ १ ॥
शबरी निषाद आदि सन्त जन, जिन निज मारग विचारो ।
मारग विचार उजड़ नहीं चाल्या, तो कट गयो पैंडो सारो । साधो० ॥ २ ॥
आदि भक्तन गाय गाय कर, बीत्यो सगरो जमारो ।
आप चल्याँ बिन राह कटे नहीं, बक बक के झख मारो । साधो० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु कीन दया जब, दरस्यो पंथ हमारो ।
मानसिंह या मग कोई आवे, सो मोहे लागत प्यारो । साधो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

सब जग रूप हमारो; सन्तों सब जग रूप हमारो रे ॥ टेर ॥
ऊँच नीच मेरे क्या कोई, ये नहीं दुःख अपारो रे ।
सब में मैं और मुझ में सब हैं, एको एक आधारो रे । सब जग० ॥ १ ॥

क्या हिन्दू और तुर्क कोई ये, झूठो झौड़ तुम्हारो रे।
आतम रूप सबहि में ओलख्यो, भरम उड़ायो सारो रे। सब जग० ॥ २ ॥
ब्राह्मण छत्री वैश्य शूद्र यह, मेरे वर्ण नहीं चारो रे।
ब्रह्म ज़नेऊ पहर गले में, मिट गयो द्वैत विकारो रे। सब जग० ॥ ३ ॥
नहीं मैं खप्पर हाथ उठाऊँ, नहीं दंड को धारो रे।
भगवाँ रँगू न भेख नहीं धारूँ, ना कोई बनूँ भिखियारो रे। सब जग० ॥ ४ ॥
पतड़ो नाँय पढूँ मैं कबहू, ना कोई ज्योतिष विचारो रे।
तीसों ही तिथि बरोबर समझूँ, एक ही सातों वारो रे। सब जग० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, उलझन सूँ कियो न्यारो रे।
कहे मानसिंह सुनो भाई साधो, आतम दृष्टि निहारो रे। सब जग० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल कैरवा ॥

क्या कहूँ कहियन जाय; लक्ष्मण क्या कहूँ कहियन जाय ॥ टेर ॥
प्रेम नदी में मैं जो बह रयो; मोसूँ समरथ नाँय। लक्ष्मण० ॥ १ ॥
विप्र ऋषियाँ रे प्रेम न अन्तर; क्रोध भट्टी जगे माँय। लक्ष्मण० ॥ २ ॥
शबरी गरीब प्रेम कैसो इसके; नाम लियाँ हृदय भर जाय। लक्ष्मण० ॥ ३ ॥
जहाँ अभिमान तहाँ मैं नहीं रेहऊँ, जिनके गरीबी तहाँ जाय। लक्ष्मण० ॥ ४ ॥
कहत कहत शबरी गुण रघुवर; लीवी हृदय लगाय। लक्ष्मण० ॥ ५ ॥
नयन सजल जाणे बहत परनाला; बिरह व्यथा नाँय समाय। लक्ष्मण० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु मान मय शबरी; राम गरीबी सुहाय। लक्ष्मण० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग। ताल कैरवा ॥

ऊँच नीच नहीं म्हारे; लखण भैया ऊँच नीच नहीं म्हारे ॥ टेर ॥
जब बन माँय जो बनफल खाये; तब कहाँ विप्र हतारे ॥ १ ॥
भील किरात निशाचर लाये; सोई फल कीन अहारे ॥ २ ॥

जात न पूछी मैं तो बर्ण न पूछ्यो; आतम जात विचारे ॥ ३ ॥

शवरी के बेर झूठे नहीं खाते; भूख मरत रैन सारे ॥ ४ ॥

प्रेम प्रभाव कहाँ लग वरणूँ; वरण वरण हम हारे ॥ ५ ॥

मानसिंह हरि भक्त भक्ति वश; बार हि बार पुकारे ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

निषाद भैया कर म्हाँने गंगा पार, तरन ताँई नाव मँगावो हो ॥ टेर ॥

प्रभुजी म्हारी सुनो हो बात रघुनाथ, म्हाँने थारी पत नहीं आवे हो ॥ टेर ॥

पाहन नार अहिल्या उड़ गई हो । प्रभुजी म्हारी उड़ जावे काठ की नाव,

कमाय के किण सूँ खावे हो ॥ १ ॥

थाँरी चरण रज इसड़ी कहिये हो । प्रभुजी म्हारा धोयलूँ तो आवे विश्वास,

पछे म्हारी नाव चढ़ाऊँ हो । ॥ २ ॥

मन मुस्काय सिया से हरि बोले हो । जनक सुता पाँव धोवण यह चाहत,

जिके सूँ सारी बात बनावे हो ॥ ३ ॥

लावो लावो जल वेग मँगावो हो । निषाद भैया मन आवे सो कर लेय,

थाँने हम कछु न कहावे हो ॥ ४ ॥

कनक कटोरो भर कर लायो हो । प्रभुजी म्हारा पतित पावन पग धोय,

हर्ष मन नाँय समावे हो ॥ ५ ॥

आप पियो ने कुटुम्ब ने पायो हो । प्रभुजी म्हारा दियो भवन छिड़काय,

कटोरे नीर रहायो हो ॥ ६ ॥

हँस कर कहे रघुनाथ सुन भैया हो । निषाद भैया अब करो परले पार,

काहे को देर लगावो हो ॥ ७ ॥

सब मल्लाह मिल जहाज चलायो हो । प्रभुजी म्हारा गावे वे प्रेम सूँ गीत,

गायन वाँरा बहुत सुहावे हो ॥ ८ ॥

लक्ष्मण सूँ रघुपति फरमावे हो । लक्ष्मण भैया कैसो याँरो सुन्दर गान,

जिकाँ सूँ मन आगे न जावे हो ॥ ९ ॥

गंगा रो नीर ओड़ो हों रयो तिरनो हो। लक्ष्मण भैया म्हाँने भावे इण रो गान, नदी इण सू चढ़ क्यों न जावे हो ॥ १० ॥

पार पहुँच ने राम हँस बोले हो। निषाद भैया लीजे उतराई आप, माँग तुम जो चित चावे हो ॥ ११ ॥

क्या मैं माँगू क्या तुम देवो हो। प्रभुजी म्हारा खुद तो धारयो है संन्यास, आप बन माँय सिधावो हो ॥ १२ ॥

धर संन्यास ने महमान आया म्हारे हो। प्रभुजी म्हारा क्या माँगू माँगी न जाय, उतराई अब पास तुमारे हो ॥ १३ ॥

तुम हम एक ही तारक कहिये हो। प्रभुजी म्हारा अपणो है एक ही काम, उतराई फिर क्यों कर लीजे हो ॥ १४ ॥

तुम भी केवट केवट हम कहिये हो। प्रभुजी म्हारा केवट सूँ केवट कैसे लेय, जवाब म्हाँने इण रो कहिये हो ॥ १५ ॥

जो चाहो तुम मजूरी देणी हो। प्रभुजी म्हारा कर दीजो भव पार, फेर कछु देनी न लेनी हो ॥ १६ ॥

आज री कयोड़ी भूल मत जाईजो हो। प्रभुजी नहीं तो रह जावे सिर अहसान, याद हर वक्त रखाजो हो ॥ १७ ॥

ऊँडी प्रीत गुहा की देखी हो। प्रभुजी म्हारा हृदय में प्रेम विशेष, हरि हंस कंठ लगावे हो ॥ १८ ॥

ऊँच ने नीच वर्ण नहीं प्रेम में हो। लक्ष्मण भैया जद तन मन शुध होय, प्रेम ज्याँरे हिरदे समावे हो ॥ १९ ॥

देह को भाव जो निषाद जाणतो हों। लक्ष्मण म्हाँनें कह देतो दशरथ लाल, पतित पावन काहे को बतावे हों ॥ २० ॥

ज्ञानी राम गुहा पण ज्ञानी हो। मित्रो वो तो मिलिया पूरबियाँ एक, पूरबिया सूँ प्रेम बढ़ावे हो ॥ २१ ॥

देवनाथ गुरु मिले हैं पूरबिया हो । प्रभुजी म्हारा प्रीत पूरबली जाण,
पूरब रो प्रेम जगायो हो ॥ २२ ॥
मानसिंह निषाद जिकाँरो हो । प्रभुजी म्हाँने जीवत कियो भव पार,
सहजे ही जीते स्वर्ग समायो हो ॥ २३ ॥

॥ गान ॥
॥ राग सोरट । ताल कैरवा ॥

धीरे चलावो नाव; केवट भैया धीरे चलावो नाव ।
काम किसो पड़ियो रे भाई क्या ताकीदी; मीठे मीठे स्वर सूँ गाय ॥ टेर ॥
थारा तो गायन भैया अमृत सा लागे; ऐसा म्हे तो सुणिया नाँय । केवट० ॥१॥
भाषा ज्याँरी सुन्दर भैया बोल ज्याँरा मीठा; लघुता रो रस ज्याँरे माँय ॥ २ ॥
नदी तो छोटी भैया गायन सुहावे; या में थोड़ी देर लगाय । केवट० ॥ ३ ॥
धीरी न चले तो भैया इणने रोकदे; गाय ने पूरो सुणाय । केवट० ॥ ४ ॥
मात ने तात म्हाँने याद नहीं आवे; कोई दुःख नहीं दरसाय । केवट० ॥ ५ ॥
गायन नहीं रे भैया वेद मंत्र थारा; भाग जद म्हाँने सुणाय । केवट० ॥ ६ ॥
प्रेम जिकाँ रे ऊँच नीच कौन सो; सब माँहे एक दिखाय । केवट० ॥ ७ ॥
मानसिंह यूँ दीन के बन्धु; दीन ज्याँने लिया अपनाय । केवट० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥
॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

निषाद भैया अब अपने घर जावो ।
हम जब लौट आवेंगे वन से, तब फिर दरस दिखावो । निषाद० ॥ टेर ॥
यह उपकार एक नहीं भूलूँ, जब तक प्राण रहावो ।
तुम मोय अति पिता सम प्यारे, कहाँ तक गुण तेरो गावो । निषाद० ॥ १ ॥
पार लगाये गीत सुणाये, फिर कब गीत सुणावो ।
अवसर मिले तो फेर मिलेंगे, याद रहे भूल न जावो । निषाद० ॥ २ ॥
पुलकित नैन हृदय भयो पुलकित, नैन नीर बरसावो ।
मानसिंह ऐसो नेह दीन से; रघुवर सो दरसावो । निषाद० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

नाथ हम चरण छोड़ कहाँ जईये ।
हम सो दीन बन्धु अस तुमसो, फिरत कहीं ना पईये । नाथ० ॥ टेर ॥
वन में रहेंगे प्रभु मारग दिखावें, अपने संग ले लईये।
पुष्प पत्र तहाँ तोरि तोरि के, सुन्दर सैज बिछईये । नाथ० ॥ १ ॥
निशिचर वन में हैं अति गहरे, साथ तुम्हारे कोई नहीं है ।
अधम जाति हम पहाड़ गति जानें, साथ हमारो चहिये । नाथ० ॥ २ ॥
कहा हम गरीब दाय नहीं आवें, इनते उत्तर दे दईये ।
रहत पैजार पाँव के माँहि, पाँव ते दूर नहीं है । नाथ० ॥ ३ ॥
बिन पैजार पाँव दुःख पावें, साची कहूँ सुन लईये ।
छोटे बिना बड़ो फिर किनको, सीख कहा तुम्हें दईये । नाथ० ॥ ४ ॥
प्रेम प्रवाह रोकयो जो रुके नहीं, मानो सरिता बही है ।
दीनानाथ हाथ गहे दोनूँ, दूर हटाय नहीं है । नाथ० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु नाथ मान के, वही गति मोरी भई है ।
मान शरण में लियो सत्गुरु को, दुवधा दूर गई है । नाथ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठा । ताल कैरवा ॥

निषाद भैया यह नहीं बोल सुहावे ।
तुम मोये हो दशरथ सम प्यारे, दूर किये किम जावे । निषाद० ॥ टेर ॥
हम तीनों को दियो वन पितु, ने, चौथो संग नहीं जावे ।
चौथा तुमको जो संग लेवें, पितु के वचन टरावें । निषाद० ॥ १ ॥
तन से दूर भैया दूर नहीं मन से, निकट ते निकट कहावे ।
तू कहा दीन दीन हम तेरे, तुम मद्द माँगन आवे । निषाद० ॥ २ ॥
ना कोई जात पिछान न अपनी, आगे न मेल मिलावे ।

आते ही तुम सत्कार कियो अति, आश्रम रह सुख पावे। निषाद० ॥ ३ ॥
कौन है मोट छोट को भैया, कहा तुम्हें ज्ञान सुनावे।
तुम तो ज्ञानी आप जो कहिये, मम पितु तुल्य कहावे। निषाद० ॥ ४ ॥
यह सुन वचन निषाद राज मन, अतुलित हर्ष बढ़ावे।
जिनकी डोर हाथ भगवत् के, कहो कुण ताहि गिरावे। निषाद० ॥ ५ ॥
देवनाथ अवतार राम के, दीन जान मिल जावे।
मानसिंह कहे अब डर किनको, पतितन पार लगावे। निषाद० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल कैरवा ॥

दूर नहीं होत निषाद; भरत म्हाँ सूँ दूर नहीं होत निषाद ॥ टेर ॥
एक निषाद सुग्रीव दूसरो, तीजो निशाचर जात।
तू जाने याँको त्याग अलग कर, ये मम उर में समात। भरत म्हाँ सूँ० ॥ १ ॥
गुरु वशिष्ठ जो मोये बताई, वो मोसे तजी न जात।
मेरोहि आतम सब जग कहिये, ये मोहे बहुत सुहात। भरत म्हाँ सूँ० ॥ २ ॥
स्वारथ हेत निकट न जाने ये, ख्याल रहे मन माँय।
जैसो तू तैसी सृष्टि सगली, भिन्न भेद नहीं आय। भरत म्हाँ सूँ० ॥ ३ ॥
भेद नहीं रावण सूँ होतो, नहीं वो अलग कहाय।
नीति युक्त युद्ध हम कीनो, इन माँहे दोष न आय। भरत म्हाँ सूँ० ॥ ४ ॥
गद्गद् कण्ठ भरत इम बोले, तुम हो दीनानाथ।
मोको निषाद आप सम दीखे, हम कब दूर हटात। भरत म्हाँ सूँ० ॥ ५ ॥
देवनाथ रघुनाथ स्वरूपी, जिन पकड़्यो मेरो हाथ।
पकड़त हाथ ज्ञान मन उपज्यो, हो गयो मान सनाथ। भरत म्हाँ सूँ० ॥ ६ ॥

॥ गायन ॥

॥ राग मंगल। ताल दीपचन्दी ॥

लखण भैया प्यारो लागे मरकट साथ, म्हाँ सूँ अब छोड़्यो न जावे हो ॥ टेर ॥

ऊँच और नीच म्हारे नहीं कहिये हो।
लखण भैया म्हाँने दीखे एक ही जात साथ म्हारो पूरो निभावे हो ॥ १ ॥
आपत् काल मदद म्हाँने दीनी हो।
लखण भैया नहीं आये क्षत्री काम अबे याँने क्यूँ बिसरावे हो ॥ २ ॥
गीध निषाद काम कैसो कीनो हो।
लखण भैया याँ माँडी राक्षसाँ सूँ मौत जिकांने कैसे दूर हटावे हो ॥ ३ ॥
प्रेम वाणी रघुवर फरमावे हो।
लखण भैया आय गयो नैणाँ में नीर मुख सूँ नहीं बोल्यो जावे हो ॥ ४ ॥
दीन वचन हरि बहुत सुहावे हो।
लखण भैया मन कियो मरकट आन मान सब दुःख मिट जावे हो ॥ ५ ॥

गोपी महिमा

॥ छप्पय ॥

व्रज वनिता सी भक्त कृष्ण की खोजी न पावे।
कोई ना कर सके होड होय नहीं पच मरे जावे ॥

॥ सोरठा ॥

कृष्ण वियोग के बीच में, कारो तन कीनो सखी।
अपनो रंग तज दीन, जिन कृष्ण रंग में आ फबी ॥

॥ सवैया ॥

त्याग चले हरि गोकुल को मथुरा में उन्हें क्या हती अधिकाई।
गोपिन को परभाव बढ़ावन यह हरि ने एक माया दिखाई।
प्रेम ही प्रेम में जात वही यह कृष्ण स्वरूप को जानत नाँई।
आपनो रूप जनावन कारण यह हरि ने एक युक्ति बणाई।
पूरण ज्ञानी जो उद्धव हतो तिनते ब्रह्मज्ञान की बात सुनाई।
और न काज कोई इन में निज रूप स्वरूप की कीन कृपाई।

मान कहे जग भूल गयो निज अर्थ को त्याग अनर्थ लगाई।
साचो है अर्थ जो उलट के देखे तो जान परे सब ही उर भाई॥

॥ कवित्त ॥

गोपिन ने लियो जान निज स्वरूप कर पिछान, प्रेम जो कहत ताको पूरण दरसायो है। नहीं सखा भाव नहीं भाव पति को है उर, रूप जगदीश जान ताहि को ध्यायो है। ताते रही मोक्ष होय ऊधो अभिमान खोय, सूखे ब्रह्मज्ञान को भण्डो जो गिरायो है। देवनाथ हाथ पकड़ दीनो सोही ज्ञान मोहि, मान गोपी होय मोक्ष पद में समायो है॥

॥ सवैया ॥

याद करे सगरी ब्रज यों अब तो हरि वेग हिं दरस दिखावो।
हाहा त्राहि करे ब्रजनारी ये नारी बिचारी को आन बचावो।
दीनों के बन्धु है नाम तेरो अब नाम के काम को नाँहि लजावो।
मान कहे नहिं जात मेरो कछु तेरो हि मान जो जात घटावो॥

॥ सवैया ॥

और तो काम सभी हम भूले हैं नन्द को लाल तो भूल्यो न जावे।
खावत पीवत सोवत जागत श्याम हि श्याम की टेर सुनावे।
लाग रही तन में मन में वह नन्द को लाल कहो किम आवे।
मान को मान बढ़े जबही वो तो नन्द को लाल गोपाल मिलावे॥

॥ सवैया ॥

नन्द के लाल में आन अड़ी अब लागी झड़ी मेरे नयन में मानो।
कौन उपाय करूँ सजनी यह तो विरह नहीं मोते रहवत छानो।
विरह दिवानी मैं हुई हैरानी रे ब्रज्ज कहा सगरो जग जानो।
मान को मान उतार दियो इन कान्ह ते आन पर्यो जब पानो॥

॥ सवैया ॥

माखण खायो ने दूध पिलायो जाको सखी हम यह फल पायो।

छोड़ गयो चित मोड़ गयो वो तो तोड़ गयो फिर पाछो न आयो।
जानूँ कहाँ वो तो कौन गली बिच कौन से महल में जाय छिपायो।
ढूँढत ढूँढत हार गई पर नयन से पार नहीं दरसायो।
ऐसी मैं जानूँ बेदर्दी हरि तब क्यों इतनो हम मोह लगायो।
मान कहे हरि माने नहीं देओ कृष्ण जिसो भरतार जो पायो॥

॥ सवैया ॥

एती तू लाज करै थी सखी वह लाज को साज वहाँ पे खो आई।
घूँघट के पट केशन की लट रूप को जहाज कहाँ तू डूबाई।
कारी सी नारी फटी सी है सारी जो मानो मसान से प्रेतिनी धाई।
मान कहे यह भाव है विरह को विरह दरियाव डूबी चतुराई॥

॥ कवित्त ॥

कागद जो लिखूँ तो सखी कलम हू न रहत हाथ, स्याही में भरूँ तो कलम वाँही रह जात है। लिखूँ कहा हृदय बीच जरत विरह भट्टी सखी, विरह की बीमारी ते कम्पत उर गात है। बहुत समाचार लिखन बचे नहीं ओली सखी, और की और मेरे नैनाँ बच जात है। नैनों में नीर मानो खीर सो समुद्र उलट्यो, रोकूँ मैं बहुत पर मोते ना रुकात है। मैं तो हूँ नारी पर पीव है अनारी सखी, नारी ते अनारी की जोड़ आ मिलात है। कहे यूँ मानसिंह को तो विचार करो, कैसो भाव विरह को यह हँसने की न बात है॥

॥ गान ॥

॥ राग कानड़ा-काफी। ताल जलद तिताला॥

सखी किण विध आय मुरारी॥ टेर॥
एक सखी वाको यों उठ बोली, तुम भी दीखत अनारी।
पास हमारे गयो कहाँ वो, परदे में श्याम छिपारी॥ १॥
धीरज धरो डरो मत मन में, हर दम खोज लगारी।
जैसो मजो है नाहिं मिलन में, मिलने में नाहिं मिलारी॥ २॥

जो तू श्याम से मिलनो चाहे तो, लगी रहे इकधारी ।
विरह आग में उठे भभक जो, तो मिल जावे उनमें प्यारी ॥ ३ ॥
तुझ में ही है प्रेम की खामी, जब तक यह परदा री ।
मानसिंह जब तार मिलेगी, फिर स्वप्ने नहीं नारी ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

जैसो मजो पिव नाँय मिलन में ऐसो मजो मिलने में है नाँई ।
नाँहि मिले तब प्रेम बन्यो रहे जो मिल जाय तो प्रेम घड़ाई ।
मिलन मिलन मन रहत हमारे मत मिलजो रे भले यदुराई ।
रोवन में है आनन्द हमें हँसने में आनन्द दिखे कछु नाँई ।
मान कहे तू मिलो न मिलो पर विरह की शूल निकालहु नाँई ।
विरह की शूल जो खटक रहे नित ताते तुम्हें हम ना बिसराई ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह सोरठ करी, सो रट जाणे नाँय ।
वो रट तो वोई करे, उण रट में मिल जाय ॥

॥ गान ॥
॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

आछो लागे ब्रज रो सनेह; ऊधो म्हाँने आछो लागे ब्रज रो सनेह ॥ टेर ॥
आछा ब्रजवासी म्हारा साचा कहिये; साचो ज्याँरो सुघड़ो है नेह । ऊधो० ॥१॥
प्रेम पवित्र ऊधो भूल्यो न जावे; नाम लियों नीर बहे । ऊधो० ॥ २ ॥
छोटे सूँ मोटा ऊधो ब्रज माँहि होया; कैसे ज्याँरो गुण विसरे । ऊधो० ॥ ३ ॥
ब्रज रो रस ऊधो मथुरा में नाँई; वह रस अपने घरे । ऊधो० ॥ ४ ॥
मानसिंह कहे सिन्धु सुता पति, भक्तों रो विरध बरे । ऊधो म्हांने० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥
॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

ऊधो म्हाँने मीठी लागे गोपियाँ री प्रीत ॥ टेर ॥

थाँरी प्रीत माँय मन म्हारो बन्धियो; और नहीं आवे म्हारे चींत।
ऊपर से भूलूँ म्हारे माँय सूँ नहीं जावे; आडी दीवी प्रेम तणी भींत ॥ १ ॥
मेरे कारण जोग लियो जिन; शिर सहे उष्ण और शीत।
मेरे सिवाय इष्ट नहीं दूजो; गावत मेरे ही गीत ॥ २ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण मिले हो; चरण रहूँ जग जीत।
मानसिंह शिर धर गुरु चरणाँ; जाय समाऊँ गुरु बीच ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥

प्रीत लगी ब्रजनारि तणी इन प्यार को ख्वार कियो नहीं जावे।
तू सो कहे ब्रह्मज्ञान अरे पर गोपी को देख सभी बिसरावे।
मोको कह्याँ कहा होय रे उद्धव मालुम हो उनके संग जावे।
साच कहूँ या कूड़ कहूँ ये तो देखे जभी तुमको पत आवे।
तन शुद्ध है मन ही शुद्ध है जहाँ चित्त मलीन न एकहु पावे।
सो उद्धव ब्रजनारि की प्रीति यह बहुत ही मो मन बीच सुहावे।
मान कहे मैं जाण लिवी यह तो कूरी निकामी जो बात उड़ावे।
बात निकामी को माने नहीं मन झूठहि कृष्ण को दोष लगावे ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश। ताल कैरवा ॥

कद मिलसी गोपाल; ऊधोजी म्हाँने कद मिलसी गोपाल ॥ टेर ॥
हरि जो मिले वो बात कहो रे ऊधो, और सभी जंजाल।
बिन गिरिधर बिन कोई नहीं रे, मैं निशि दिन रहूँ बेहाल। ऊधोजी० ॥ १ ॥
जब हरि आवें हम सुख पावें, सब ही होवें निहाल।
छोड़ चले हरि पूछे नहीं कछु, करत नहीं मेरो ख्याल। ऊधोजी० ॥ २ ॥
घर ने बाहर ऊधो सब मैं छोड़या, कबकी मैं फिरत कङ्गाल।
ऐसी मैं जानूँ तो छोड़ती क्यों यह, कर गयो गिरिधर चाल। ऊधोजी० ॥ ३ ॥
मान कहे अब मान कहाँ री सखी, जब से गये नन्दलाल।
श्याम बिहूणी फीकी लगूँ रे ऊधो, मेलत नहीं मोय काल। ऊधोजी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल तिताला ॥

उद्धव क्या ब्रह्मज्ञान बतावे । मोय बात दाय नहीं आवे । उद्धव० ॥ टेर ॥
ब्रह्म तुम्हारो हिले न चाले, ना कोई वचन सुनावे ।
ऐसो ब्रह्म कहा कहे उद्धव, हमरो चित नहीं चावे । उद्धव० ॥ १ ॥
हँस हँस खेल रास संग कीनो, सो किम कर बिसरावे ।
घर घर डोल्यो पकर कर मेरो, मुख मधु बीन बजावे । उद्धव० ॥ २ ॥
दीखे कृष्ण और नहीं दूजो, रग रग श्याम समावे ।
एक म्यान में दोय खड़्ग अब, कहो उद्धव किम मावे । उद्धव० ॥ ३ ॥
झम्पत नाँहि नैन निशि वासर, श्रवण मूरली स्वर चावे ।
अटकी रहे सुरत नित मेरी, कब माधव घर आवे । उद्धव० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरुदेव दयामय, कृष्ण स्वरूप कहावे ।
मान कहे जो बने व्रजबनिता, तो पिया सहज मिलावे । उद्धव० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे क्या ब्रह्मज्ञान पढ़ावे ।
ऐसो ब्रह्म तुम्हारो उद्धव, मेरे काम क्या आवे । ऊधोजी प्यारे० ॥ टेर ॥
जोग समझ या भोग समझ ले, हमको तो एक दिखावे ।
भोगहि जोग जोग भोग सम है, मो उर और न आवे । ऊधोजी० ॥ १ ॥
हमको जोग एक श्याम विरह को, और न जोग सुहावे ।
तू जो जोग कहे रे उद्धव, मेरी समझ नहीं आवे । ऊधोजी० ॥ २ ॥
ऐसे ब्रह्म ते प्रीति क्या उद्धव, संग खेलन नहिं आवे ।
मानसिंह यों कहे व्रजबनिता, भरम को ब्रह्म बतावे । ऊधोजी० ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥

राच रही वाके रंग माँही अब और को रंग जो आवत नाँई ।
कारे को रंग चढ़्यो हमको अब और को रंग चढ़े न कदाई ।

जो मिलतो मोय पहले तू उद्धव तो सुनती ब्रह्मज्ञान कथाई।
कारे ने आन हिरदो कियो कारो और की नाँय लगे जो सफाई।
बाहर कारो और भीतर कारो है कारे ही कारे रही हम छाई।
मान कहे यह प्रेम की रीति है प्रीति करे फिर टूटत नाँई।
प्राण जहे तो भलाँ ही जहे पर पीव की प्रीत मैं नाँही रुठाई॥

॥ दोहा ॥

ब्रज नारी सब यूँ कहे, सुन रे उद्धव बात।
यहाँ नेक चाले नहीं, झूठ सफाई लगात॥
यह तेरो ब्रह्मज्ञान तू, औरन को बतलाय।
जा दिन को माधव मिले, सो दिन मोहि सुनाय॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म की बात करे मत उद्धव दूर रखो तेरे ब्रह्म की फाँसी।
ब्रह्म ही ब्रह्म बके कद को तेरो ब्रह्म हमें कछु नाँहि सुहासी।
श्याम कहे तो तखत्त बिछाऊँ मैं ब्रह्म कहाँ देऊँ बाहर निकासी।
श्याम कहयाँ मुख पान को बीड़ो और ब्रह्म कहाँ सूँ धका दश खासी।
मान कहे कछु अर्थ करो तुम ऐसे मती समझो मन हाँसी।
सगुण बीच रहे नित निर्गुण यों उल्टाय जबे पद पासी॥

॥ सवैया ॥

तेरो तो ब्रह्म अलूणो है उद्धव श्याम सलूणो सो मोहि सुहावे।
सूको सो लाठ है ब्रह्म तेरो कछु बोले न चाले न बैन सुनावे।
कर गह कृष्ण को नाच नच्यो और जो मिल जाय तो अजहू नचावे।
खायो थो माखण हाथ मेरे और आज मिले तो अजू ले खवावे।
मान कहे धन हैं ब्रजनारि को प्रेम के पन्थ को अन्त दिखावे।
काग तो कागा हि रोल करे अरु अर्थ को ये अनरथ लगावे॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म की बात को छोड़ दे उद्धव बार हि बार क्यों जीव जरावे ।
मिनखाँ ज्यों सौ बार कहो तेरे ब्रह्म को पन्थ हमें नहीं भावे ।
तेरे जिसो कोई ढीठ नहीं और ना मुझसी तुमको समझावे ।
तू तो तेरो यह ब्रह्म न छोड़त मोते मेरो नहिं श्याम छुटावे ।
मान नरेश ये भाव है विरह को विरहिया मिले जब आनन्द आवे ।
कहा कहूँ ब्रजनारी को प्रेम यह कहत ही कहत हृदय उमगावे ॥

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी-टोडी ताल तिताला ॥

थोथी बात बनावे; उद्धव थोथी बात बनावे ।
थोथी बात हाथ नहीं आवत, तोते ज्यूँ बक जावे । उद्धव० ॥ टेर ॥
है वो व्यापक गयो क्यों मथुरा, पहिले क्या वहाँ न रहावे ।
दो दो कृष्ण किया क्यों भेला, हमरो तो हमें दिलावे । उद्धव० ॥ १ ॥
मारी पूतना बकासुर आदि, कंस को मार गिरावे ।
ऐसो काम तेरे व्यापक कियो नहीं, मेरो ही कृष्ण करावे । उद्धव० ॥ २ ॥
बाताँ करण में निपुण है तू उद्धव, वक्त पड़े भग जावे ।
तेरे ऊपर धरूँ ये गिरिवर, तो सगली बात उड़ जावे । उद्धव० ॥ ३ ॥
और बाब तेरी है सो रहन दे, हमको तो कृष्ण मिलावे ।
तू तो उद्धव भंग पिवी है, हमें क्यों नाहक पिलावे । उद्धव० ॥ ४ ॥
आतम व्यापक सबही जाने, ये क्या हमें समझावे ।
जिन को काम उनही से होवे, काहे ज्ञान चलावे । उद्धव० ॥ ५ ॥
तुम में है व्यापक और हम में है व्यापक, तो क्या हमें समझावे ।
वृत्रासुर बच्छासुर कंसा, उनमें न व्यापक कहावे । उद्धव ॥ ६ ॥
कृष्ण को पकड़ कृष्ण क्यूँ मार्‌यो, यह मोंये हाँसी आवे ।
तेरो निर्गुन तो ऐसो कहिये, स्वप्न मात्र दरसावे । उद्धव ॥ ७ ॥

देवनाथ गुरु द्वैताद्वैत सब, मेट के एक दिखावे।
मानसिंह बरतन सी वस्तु, बरतन भेद जनावे। उद्धव० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश। ताल तिताला ॥

निगुन सगुन कहा न्यारो, श्यामा निगुन सगुन कहा न्यारो।
भूल के दोय भेद तोय दीखे, ये भ्रम दूर निवारो। श्यामा० ॥ टेर ॥
निगुन माँय सगुन कहे व्यापक, सगुन औ निगुन विचारो।
जल को कुम्भ पड़्यो है जल में, जल है भीतर बारो। श्यामा० ॥ १ ॥
सब कुछ बोले फिर भी अबोला, जग को प्राण आधारो।
तुम हम में सब जग में कृष्ण है, एक रस भरिओ सारो। श्यामा ॥ २ ॥
ऐसी बात सुनी उद्धव की, हंसो उपज्यो मन भारो।
मानसिंह व्रजनारी कहे यूँ, तू कहा जाने बिचारो। श्यामा० ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥

दोय से एक जो शूरा करे वह कैसे करे हमको समझावे।
एक बनाय बताय दहे तब ही उनको हम शीश नमावें।
झोर झकोर करे सगरे यह आपनि आपनि रोल मचावे।
मान कहे जब ही हम मानत एक बनाय के सामने आवे ॥

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी टोडी। ताल तिताला ॥

ह निर्गुन नहीं भावे; रे ऊधो मोहे, यह निर्गुन नहीं भावे ॥ टेर ॥
न न दीखे और बोले नहीं निर्गुन, कौन लो ऐसो ध्यावे।
ल्यो शामिल और मक्खन खिलायो, सो दूर कियो किम जावे। रे० ॥ १ ॥
नहीं और रंग नहीं है, को अन्ध कूप गिरावे।
व देव बिहारी हमारो, हँस हंस बैन सुनावे। रे० ॥ २ ॥
र्गुन कृष्ण रखो मथुरा में, मेरे सगुन पठावे।

निशिचर हनन करे तेरो निर्गुन, मेरो सगुन क्यों ले जावें। रे० ॥ ३ ॥
हम तो चाहत हैं कि माँग मक्खन ले, हँस हँस कण्ठ लगावे।
वो नहीं दीखे तेरे निर्गुन में, ताते नाँहि सुहावे। रे ऊधो० ॥ ४ ॥
जो तेरो निर्गुन कंस को मारत, क्यूँ मेरो श्याम बुलावें।
थोथी बात करे मत ऊधो, गैब धक्के क्यूँ खावे। रे ऊधो० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण हमारे, मान गोपी बन जावे।
ज्ञान उद्धव तेरो निर्गुन त्यागूँ, बोलत आतम ध्यावे। रे ऊधो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल कैरवा ॥

ऊधो क्या मोहें जोग सुनावे। तोय कहत शरम नहिं आवें। ऊधो ॥ टेर ॥
एक श्याम और जोग दूसरो, नहीं यहाँ जगह समावे।
जगह मिले तो तूही राखदे, मोहे अन्देशो न आवे। ऊधो० ॥ १ ॥
नभ और जल थल अगनि पवन में, खाली कहीं न पावे।
सुन्न ते सुन्न अपर सुन्न कहिये, ता विच श्याम समावें। ऊधो० ॥ २ ॥
श्याम परा पश्यन्ति श्याम है, मध्यमा श्याम दिखावे।
बैखरी खेल श्याम को सब ही, ओंकार धुन गावें। ऊधो० ॥ ३ ॥
स्वप्न हि श्याम सुषुप्ति श्याम ही, जाग्रत श्याम कहावे।
तुरिये श्याम शुद्ध है मेरो, जहाँ जगत मिट जावें। ऊधो० ॥ ४ ॥
सभी देह सो गोपी कहिये, सब में श्याम लखावें।
गो अतीत गोपाल सभी में, भूले बात बनावें। ऊधो० ॥ ५ ॥
देवनाथ सो स्वयं कृष्ण है, मान कृष्ण बन जावे।
मल विक्षेप आवरण मिटियो, महान में मान समावे। ऊधो० ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

जोगहि जोग बके कहा उद्धव मुझसी जोगन होवें न हुई रे।
कोई तो प्राण गयाँ ते मरे और मैं तो यूँ प्राण छतें ही मुई रे।

विरह व्यथा तें जोग परे कहाँ सो तू उद्धव समझाय मोई रे।
विरह की लाग परी तन में अब और की लाग लगे न कोई रे।
तन में मन में घर में बन में मोय श्याम बिना न मिले जो दुई रे।
देशन में परदेशन में एक श्याम की मूरत को मैं जोई रे।
हुतो अनाथ सनाथ कियो गुरु देवहिनाथ दुविधा जो खोई रे।
मान कहे गुरु चरण में गोपी हो सहज समाधि में जाय सोई रे॥

॥ सवैया ॥

कौन जो योग समाधि करे यहाँ कौन जो स्वास रूँधे दुःख पावे।
कौन जो छेदे त्रिकुटी को उद्धव कौन उलट मेरे बंक को जावे।
हाथ ते मक्खन दी मिश्री सो वह ब्रह्म तेरो कद मक्खन खावे।
घर घर नाच नचायो हमें संग ब्रह्म कहो किम नाच नचावे।
वंशी बजाई और गाई सबी संग कहो तेरो ब्रह्म कबे संग गावे।
जो उद्धव तू ब्रह्म कहे फिर क्या उनमें नहिं ब्रह्म रहावे।
जो तुम में हम में सब ब्रह्म है सो तू हमें अब क्या समझावे।
ब्रह्म ही ब्रह्म को खेल करे सब ब्रह्म हरि हम ही ब्रह्म कहावे।
ब्रह्म से ब्रह्म की प्रीत किसी ऊधो यही मेरे मन हाँसी जो आवे।
जो हम में तुम में सब ब्रह्म है तो किम कृष्ण को विरह सतावे।
ब्रह्म ते ब्रह्म की यारी करी फिर एक हि एक जो ब्रह्म समावे।
मान कहे यही बात हँसी मोये है तो दोय किम एक बतावे॥

॥ गान ॥

॥ राग जोगिया । ताल दीपचन्दी ॥

ऊधो मैं जोगन वा दिन की।
जब ते श्याम त्याग चले मोहि, व्याकुल हूँ ता दिन की। ऊधो० ॥ टेर ॥
श्याम वियोग सह्यो नहीं जावे, कल न पड़त एक छिन की।
का से कहूँ अब कौन लखे यह, मैं जानू मेरे मन की। ऊधो० ॥ १ ॥

भगवाँ बाना फिर भी उतरे, कौन रंगे रंगन की ।
श्याम को रंग रंग्यो नहिं उतरे, और न रंग चढ़न की । ऊधो० ॥ २ ॥
कहा हमको मृगछाल ओढ़ावे, लावे कौन मृगन की ।
मन को मार मृगा हम कीनो, खाल न लेऊँ अवरन की । ऊधो० ॥ ३ ॥
श्याम मिले तो जीऊँ रे उद्धव, नहीं तो प्राण तजन की ।
मान कहे यों भई बावरी, भूल गई सुध तन की । ऊधो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग दुर्गा अथवा सारंग । ताल तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे क्या मोहि जोगिन बनावे ।
ब्रह्मज्ञान को पकड़ के बैठी, खुद जोगी बन आवे । ऊधोजी० ॥ टेर ॥
खुद तो जोग रीति नहीं जाने, औरों को समझावे ।
हमसे परे फिर जोग कौन सो, जिनको तो मोहि दिखावे । ऊधोजी० ॥ १ ॥
एक म्यान में खडग दोय किम, लाखं जतनें नहिं मावे ।
भाव पुराने श्याम श्याम के, ब्रह्म मोको नहिं भावे । ऊधोजी० ॥ २ ॥
कोई तो भगवाँ रंगत गेरू में ऊधो, वो रंग फिर उतरावे ।
श्याम रंग मेरो उतरे नाँहीं, दूजो नाँहि चढ़ावे । ऊधोजी० ॥ ३ ॥
एक सखी उठ ऐसी बोली ऊधो, निकल क्यों न अब जावे ।
मर जावें और खाक मिलेगी, खाक श्याम धुन गावें । ऊधोजी० ॥ ४ ॥
ऐसो कह्यो जब उद्धव पिघल्यो, अब नहिं चाल चलावे ।
ब्रह्म रूप हरि को ही जान्यो, और ध्यान नहिं आवे । ऊधोजी० ॥ ५ ॥
मान कहे मित्रो समझ सोच कहो, अर्थ अनर्थ न हो जावे ।
ज्ञानी उद्धव पर गोपी कम नहीं, दधि से दधि टकरावे । ऊधोजी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल धीमा केरवा ॥

ऊधोजी थाँने कहताँ लाज नहीं आवे । म्हाँने क्या ब्रह्म ज्ञान बतावे । ऊ० ॥ टेर ॥

ऐसो ब्रह्म ऊधो देवो कुब्जा ने जो मेरो कृष्ण तजावे।
बोले न चाले वचन केवे नहीं, हमको तो नाँह सुहावे। ऊधोजी० ॥ १ ॥
ब्रह्म और जीव जी चाहे कहे रे ऊधो, म्हाँने क्या भरमावे।
जो कुछ है तो कृष्णचन्द्र है, नहीं तर पोल दिखावे। ऊधोजी० ॥ २ ॥
म्हाँने तो कहे ऊधो जोग की करणी, कृष्ण ने क्यों न समझावे।
गोकुल छोड़ भग्यो मथुरापुरी, उनको काहे न सिखावे। ऊधोजी० ॥ ३ ॥
जोगी कृष्ण जोगण कर कुब्जा ने, तो दुःखड़ो मिट जावे।
वाँने तो तू कुछ न कहे रे ऊधो, म्हाँने क्यूँ निकमी बहकावे। ॥ ४ ॥
वा जो मरद मूँछ मुख ऊपर, ज्याँने ब्रह्म न पावें।
नारी जात मती गती ओछी; क्योंकर ओलख्यो जावे ऊधोजी० ॥ ५ ॥
हमरी साड़ी पहने मुरारी, हम सिर मुकुट चढ़ावें।
गोपी कृष्ण कृष्ण बने गोपी, जदहि ब्रह्म मिल जावे। ऊधोजी० ॥ ६ ॥
रैण में सूरज कदे न ऊगे, ऊगे तो रैण मिट जावे।
रे ऊधो तू चुप रह बावरे, नाहक जरी को जरावे। ऊधोजी० ॥ ७ ॥
पूरण ब्रह्म केवे तू जिकाँने, वे मथुरा क्यों चहावें।
क्या तो राज अरु क्या कोई जंगल, एकहि क्यों न दरसावें। ऊधोजी० ॥ ८ ॥
उद्धव ज्ञान और गोपी जीव है, आप मिल्याँ मिट जावें।
मानसिंह के देवनाथ प्रभु, दूजो दाय नहीं आवे। ऊधोजी० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल धीमा तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे अब तो चुप होय जावो।
श्याम कहो तो ठहरो रे ऊधो, ब्रह्म कहो तो जावो। ऊधोजी० ॥ टेर ॥
लाख कहो हम एक न मानें, नाहक शान गमावो।
जीव कहो चाहे ब्रह्म कहो तुम, मोरे रंग श्याम रंगावो। ऊधोजी० ॥ १ ॥
एकहि ब्रह्म तो सखा तुम किनके, अपनो तो भाव मिटावो।

हम अबला को क्या समझावत, अपनो हि मन समझावो। ऊधोजी० २॥ ॥
ब्रह्महि ब्रह्म बको क्या ऊधो, नाहक मूँड पचावो।
छोड़ जिकर हरि मिले सो कह अब, प्राणाँ ते अधिक सुहावो। ऊधोजी०॥ ३॥
प्रेम सम्बन्ध बन्ध सब तोड़्या, ऊधो सुध बिसरावो।
मानसिंह सुध भूल गयो सब, जीव न ब्रह्म कछु पावो। ऊधोजी० ॥ ४॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म कहे तो परे हट ऊधो श्याम कहे कर बीड़ी खिलाऊँ।
ब्रह्म कहे घर ते मैं निकारूँगी श्याम कहे जब तख्त बिछाऊँ।
श्याम कहे तब प्रेम करूँ हम ब्रह्म कहे दश धक्के दिलाऊँ।
ब्रह्म कहे तब बाहर निकारूँगी श्याम कहे तब फेर बुलाऊँ।
रूप नहीं और रंग नहीं उस ब्रह्म से क्यों फिर मोह लगाऊँ।
नैन न रूप न रेख जहाँ उन कहो ऐसे ब्रह्म ते कहा सुख पाऊँ।
घर घर नच नचायो है कर गहे ऐसे हरि को मैं क्यों बिसराऊँ।
ब्रह्म तेरो तेरे पास रखो ऊधो मैं तो इसे नहीं लेवन पाऊँ।
बात को ब्रह्म बने कहा ऊधो देख्यो नहि फिर क्यों कर चाऊँ।
हाथ ते मक्खन दीन डली हम मैं तो वही हार का नित ध्याऊँ।
चाहे जड़ है चाहे चेतन है वह जो समझूँ इनही समझाऊँ।
मान कहे सब छांड़ जिकर ऊधो श्याम मिल्याँ तुम रे गुन गाऊँ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी। ताल कैरवा ॥

ऐड़ो रस और न आवे रे; ऊधोजी म्हाँने, ऐड़ो रस और न आवे रे।॥ टेर॥
दूध पिलायो ने नाच नचायो रे; लूट लूट दधि खावे रे। ऊधोजी० ॥ १॥
गऊआँ तो दूध देणो छोड़ियो रे; तृण जल कछु नहीं खावे रे। ऊधोजी०॥ २॥
म्हाँने तो ऊधोजी तुम आये समझावन; बछियाँ ने कुण समझावे रे। ऊधोजी०॥ ३॥
गोरस गयो ने गई रंग रलियाँ रे; श्याम बिना कुण खावे रे। ऊधोजी० ॥ ४॥
मान कहे धन है ब्रज बनिता; इण विध प्रेम बढ़ावे रे। ऊधोजी० ॥ ५॥

॥ सवैया ॥

ऊधो रहो तो रहो तुम सूघे ना हम से करिये अकड़ाई।
भूल पर्यो नहीं जाने ऊधो तू चाहे इक रंग में दोय चढ़ाई।
एक में दोय सुपने नहिं लागत लाख करो अपनी चतुराई।
मान सुने ब्रजनारी के बैन तो ऊधो की बुद्धि ठिकाने आईं॥

॥ सवैया ॥

बात सुनी ब्रजनारिन की तब ऊधो सब निज होश भुलायो।
पोल हती सो उड़ी मन की निज ब्रह्म को भूल के श्याम सुनायो।
बहुत हुतो ब्रह्मज्ञानी बड़ो वह प्रेम समुद्र में जात बहायो।
ब्रह्म की पोट अचानक छूटी है डूब गयो फिर ऊँचो न आयो।
एक भयो गलतान मिल्यो ब्रह्म को बकनो सब ही बिसरायो।
भूल गयो अब आहा कर्यो मुख नैन में नीर की धार बहायो।
मान कहे धन है ब्रजनारि को यह जिन काम कमाल कमायो।
आप तो कारी भई सो भई फिर बपुरे ऊधो को कारो बनायो॥

॥ दोहा ॥

ऊधो ज्ञान की गूदड़ी, प्रेम हौद हइ लीन।
विरहवत रत ऐसे भयो, मान भयो मति हीन॥
मान कहे मित्रो सुनो, जो चहिये ब्रह्म ज्ञान।
छाँटो गोपि विलास को, तो टूट जाय मन तान॥
जो पीनो होय प्रेम रस, गोपी पद चित लात।
मान कोई गो पी सके तो, गोपी कृष्ण समात॥

॥ सवैया ॥

अपनी सुधि भूल गयो सगरी डगरी निज प्रेम के बीच मिलायो।
ब्रह्म न जाने उड्यो है कहीं ये तो कारो हि कारो सो रंग जो छायो।
प्रेम के पंथ में पाँव दियो न जबे तक उद्धव ब्रह्म बकायो।

प्रेम के पंथ में पाँव धरयो वहाँ जीव या ब्रह्म को थाह न पायो।
गोपी कहै भला ये बापुरो अबतो निज आपने पंथ में आयो।
प्रेम के पन्थ में पागल सो कुछ को कुछ ही वो कहत बकायो।
देवहिनाथ जो कृष्ण मिले गुरु मान को प्रेम पियालो पिलायो।
गुरुपद में हम गोपी बने वहाँ कृष्ण और गोपी जो एक दिखायो॥

॥ सवैया ॥

गोपीहि गोपी करो मत भाई जो गोपी तो योगी को जीव कहावे।
गोपी सों प्रेम लगावे कोई तबही जन जोगी सच्चो बन आवे।
गोपी मिली जाय कृष्ण के अन्दर जोगी बने अस यों मिल जावे।
गोपी के प्रेम को नेम नहीं कुछ कहवत कहवत वाणी थकावे।
जो थक जात सरस्वती तो हम कहा बिचारे एको मुख गावे।
जोगिन की महा जोगी हती उन गोपिन को दुर्वचन सुनावे।
मान कहे धृक् है धृक् लम्पट ये बकते कछु ना शर्मावे।
कूड़हि कूड़ बके मुख ते नित साच जो बात को नाँय बतावे॥

॥ सवैया ॥

कृष्ण और गोपी को गाय ही गाय के नारि हजारों बिगाड़ दई है।
बढ़ाय दियो व्यभिचारन को आचार की रीति उड़ाय दई है।
शृंगार शृंगार में जुल्म कियो इन लम्पट रोल मचाय दई है।
मान की तान जुड़ी अबही गुरुदेव ने नींद उड़ाय दई है॥

॥ सवैया ॥

गोपी के पद को भूल गये और ये विष पीना सबी को सिखाया।
गोपी कृष्ण को नाम जो ले ले गुरुडन ने व्यभिचार बढ़ाया।
सत्य की नाव डुबोय दिवी इन भारतवर्ष कलंकी बनाया।
पूर्ण ब्रह्म की हाँसी करे यह धर्म विरोधी उन्हें लो हँसाया।
कहे मुख ते सच्चिदानन्द है यह योंही कह कर जगत भुलाया।
मान कहे कछु एक के दोय हैं दो दो बात कहो किम पाया॥

॥ सवैया ॥

है मुख में रसना पुनि एक ही बात कहा किम दोय बताया।
व्यभिचारी कहो ब्रह्मचारी कहो किम भूलहि भूल में जगत भुलाया।
मानुष तो एक बात करे द्वे बात करे द्वे बाप के जाया।
मान कहे फिट है तुमको व्यभिचार के फन्द में देश डुबाया॥

॥ सवैया ॥

ना ब्रज में उन खेल रच्यो और ना किनके घर छाछ हू खाई।
नाँहि किन्हीं से दान हू माँग्यो अरु ना कोई ग्वालन नारी छेड़ाई।
प्रेम प्रतीति हुती उनके मन दौड़ हि आवत ब्रज की लुगाई।
मान कहे ब्रह्मचारी हरी यह तो लम्पट लाँछन झूठी लगाई॥

॥ सवैया ॥

कृष्ण कभी नहीं नारी बन्यो और नाँही बन्यो कबहू मनिहारी।
नहिं व्यभिचार कियो उनने उर आतम भाव लगे सब प्यारी।
आपनो ही जानके खेल खिलावत नाचत आपही दे दे तारी।
मान कहे ब्रह्मचारी हरी यह तो लाँछन झूठ लगाय लबारी॥

॥ सवैया ॥

व्यभिचारी बुरे किम कहत उन्हें जिन गीता अमीरस ताय पिलायो।
दूध वेदान्त जमाय के ताय के ज्ञान अमीरस घृत बनायो।
श्रद्धा करी जिन पी ही लियो बिन श्रद्धा रहे उन मुफ्त गमायो।
मान कहे ऐसे कृष्ण बिना कोई आगे ही गीता अमीरस पायो॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "गूजर" की। ताल कैरवा ॥

अब आवो हे सखी मिल आवो, श्याम निज प्यारो ए॥ टेर॥
अज अमर कृष्ण निज कहिये, मनड़े रो भरम मिटावो ए। श्याम निज०॥ १॥
ना कोई कृष्ण देवकी जायो, ना कोई गोकुल आवो ए। श्याम निज०॥ २॥

चेतन देव सभी में व्यापक, यह भ्रम दूर भगावो ए। श्याम निज० ॥ ३॥
निर्गुण सगुण सभी है झगड़ा, ये सब जिकर हटावो ए। श्याम निज० ॥ ४॥
तुझ में कृष्ण कृष्ण में तू नित, मान शुद्ध दरसावो ए। श्याम निज० ॥ ५॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी। ताल दीपचन्दी या कैरवा ॥

लम्पट रोल मचाई रे, दीनो देश बिगाड़ ॥ टेर ॥
ब्रह्म रूप जो कहिये कृष्णजी, कैसे कियो व्यभिचार।
अण्दीठी यह ऐसी मेली, कर दीनो सब ख्वार। लम्पट रोल० ॥ १॥
कहत जगदीश शरम नहिं आवे, महा लुच्चन सरदार।
धृक धृक वाँने दोष देवे झूठा, धर्म रूप अवतार। लम्पट रोल० ॥ २॥
कोई कहे कृष्ण यशोमति जाये, कोई कहे नन्दकुमार।
कोई कहे कृष्ण वाल है हमरो, काम करे बेजार। लम्पट रोल० ॥ ३॥
कृष्ण नाम ले लीला करत है, नाना भोग विहार।
कृष्ण की हद को एक न पहुँचे, माल मुफ्त खावे मार। लम्पट रोल० ॥ ४॥
ज्ञान घृत गीता के अन्दर, पायो है सार निकार।
क्या व्याभिचारी की ताकत कहिये, भरदे उपनिषद् सार। लम्पट रोल० ॥ ५॥
कृष्ण समान कोई योगी हुवा नहीं, नहि छोड़े घर बार।
वाताँ ब्रह्म कृष्ण नहिं जाण्यो, जाण्यां सत् आधार। लम्पट रोल० ॥ ६॥
घर संन्यास योग को धारे, कीना फैल अपार।
मुख बाचाल जो ब्रह्म बके यूँ, माँगत द्वार हि द्वार। लम्पट रोल० ॥ ७॥
देवनाथ गुरु हाथ धर्यो शिर, बिगड़ी दीन सुधार।
मानसिंह संन्यास लेत तो, बह जाते कली धार। लम्पट रोल० ॥ ८॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

यह मत हमको न भावें; दूर रखो यह मत हमको न भावे।

छूत ही छूत में उमर सब खोई, छूत कभी नहीं जावे। दूर रखो० ॥ टेर ॥
नित ही मरत चौके दस चींटी, यह कुण पाप कमावे।
जीवहिंसक बणे कुण पूरे, कुण ऐसो ध्यान गमावे। दूर रखो० ॥ १ ॥
अपने कुटुम्ब को वस्त्र नहीं छूवे, झूठ पराई खावे।
धृक धृक है ऐसे वैष्णव को, इनमें कहा सुख पावे। दूर रखो० ॥ २ ॥
जिन पति से परमेश्वर नातो, नीर ऊपर से पावे।
गुण्ड गोल में जाय खुशी से, वस्त्र सभी फड़वावे। दूर रखो० ॥ ३ ॥
निज पति प्रेम कभी नहीं कीयो, महा प्रसाद वाँरो पावे।
निज पति यों ही पड़्यो झख मारो, ये तो दौड़ो रास में जावे। दूर० ॥ ४ ॥
निज पति सेती उमर वितानी, तिनको आँख दिखावे।
ये गुण्डे दस दिन के कहिये, तिनते प्रेम लगावे। दूर रखो० ॥ ५ ॥
जो बालक अपने से उपजे, उनते छूत रहावे।
गर्मी शीत गिने नहीं कोई, केतेई बार नहवावे। दूर रखो० ॥ ६ ॥
निज पति अपणो कृष्ण कर माने, जो कोई मुक्ति चावे।
पुरुष को चाहिये स्वप्रिया निज गोपी, तब प्रभु प्रेम निभावे। दूर रखो० ॥ ७ ॥
जगत पिता है विष्णु मेरो, सब जग बीच समावे।
कुटुम्ब कलत्र रूप विष्णु को, नित सेवा करवावे। दूर रखो० ॥ ८ ॥
पशु पक्षी जड़ चेतन विष्णु, खाली ना दरसावे।
ऐसे वैष्णव बन कोई आवे तो, चरणों में शीश नवावें। दूर रखो० ॥ ९ ॥
देवनाथ गुरु पूरे वैष्णव, नेक न फरक रहावे।
मान लियो है ब्रह्म समर्पण, जग ब्रह्म रूप लखावे। दुर रखो० ॥ १० ॥

फुटकर पद्य

॥ दोहा ॥

कनक कामिनी जगत में, दुःख नहीं व्यापे मोय।
मानसिंह यह मन बुरो, देख दियो केई रोय॥

॥ सवैया ॥

कबहु मठ गाँव बसावत है कबहु चित योग वैराग धरे।
कबहु मन मन्द उमंग रहे कबहु संग कामिनी केल करे।
नृप मान कहे बरज्यो न रहे दृढ़ता न गहे इत उत ही फिरे।
हरि कैसे भजूँ सुन रे सजना मन तो मृग जैसे फलंग भरे॥

॥ दोहा ॥

चार वेद शुक मुनि पढ़्यो, व्यास पिता के पास।
तदपि मन तृप्ति नहीं, मिटी न अन्तर प्यास॥

॥ कवित्त ॥

चले शुकदेव तबे विष्णु के पास ध्यात, देख मुनि को विष्णु मन में हरषाये हैं। अहो धन्य भाग आज दरस दिये मुनिराज, किये शुभ कर्म जाको फल आज पाये हैं। उच्चासन दियो लाय भाव भक्ती अधिक भाय, सरिता को नीर लाय चरण जो धुवाये हैं। चरणामृत कियो पान स्वयं जो कृपानिधान, आप कियो पान और कमला को कराये हैं॥

॥ कवित्त ॥

व्यास सुत बोले तभी सुनहो कृपानिधान, चारों वेद पढ़े पर तृप्ति न आई है। कहा जगत जीव कहा ईश्वर और ब्रह्म कहा, कौन सत्य मिथ्या इन चरन के माँई है। पढ़े हम चारों वेद तदपि नहीं मिट्यो भेद, आपहू के पास आयो सही समझाई है। हँसे जब जगतपति शुक की कहा भई गति, व्यास पास पढ़्यो पर संशय ना भगाई है। हरि यूँ कहे मान जाय जनक गुरु ठान, कहेंगे वो सही प्रमाण तोय मन भाई है। पूर्ण है ज्ञानी राव गुरु दीक्षा ताते पाव, बिना गुरु बिना तेरो भरम हू न जाई है॥

॥ दोहा ॥

व्यास सुवन मन सोचियो, अस कहा जनक सुजान।
वेद निधी के पुत्र हम, लहें जनक ते ज्ञान॥

तदपि उर धीरज लयो, गयो जनक के पास।
जनक वहाँ पूछयो नहीं, खड़ो रह्यो सहे त्रास॥
एक दिवस जब सोचियो, नृपति निज उर माँय।
व्यास सुवन बाहर खड़ो, अन्दर लेहो बुलाय॥
पौढ़े राव सुख सैज में, शुक हू पहुँच्यो जाय।
तब शुक मन शंका भई, यह मोय कहा समझाय॥
व्यास पुत्र हम विप्र हैं, इन कुछ शंक न कीन।
यह शुक मुनि मन सोचते, भये निद्रा आधीन॥

॥ कवित्त ॥

शुक जैसो मुनि फेर हुये न होय कोई, ताही को मन ऐसो नाच जो नचायो है। स्वप्न में सूतो शुक प्यास जो लगी है भारी, महा वीरान जंगल बीच में जो धायो है। और कोई न पाय नीर प्यास हू से प्राण जात, एक जो चमारी बाला ताते भेटायो है। ताको कहत प्राण जाय नीर हू पिलाय मोको, सुनी ऐसी बात नारी हास्य सो दिखायो है। तू तो जात विप्र है और मैं हूँ जो चमारी नार, होत भ्रष्ट तू ही यदि नीर जो पिलायो है। कहे राव मानसिंह साच हू की बात नहीं, साच हू न समझो यह तो स्वप्न एक आयो है। नींद हू न सोने देत मन को स्वभाव देख, मन यह नकटो कैसो खेल जो दिखायो है। स्वप्न की कहूँ बात मन को प्रभाव कैसो, शुक जैसे ज्ञानी को स्वप्न में नचायो है।

॥ कवित्त ॥

दूर रह दूर रह छूयं ना तू मोय हू को, मोय हू को छूयाँ कहीं पाप तू लगायगो। मैं हूँ जो कुमारी नार तुम हो पुरुषाकार, पल्लो जो अड़ायो तोको पाप लग जायगो। ठहर ठहर पूछूँ जाय अपने पिता को मैं, पानी तभी पाऊँ जब मोय को तू ब्याहयगो। करले शरत यह मैं पूछूँ मेरे बाप हू से, बिना पूछे लाख बात नीर नहीं पायगो॥

॥ कवित्त ॥

कहे शुकदेव मुनि तोहि को न व्याहूँ कभी, प्राण मेरे जाय तो भलाँई क्यों न जाइये। ऐसे सुन नार चली पीछी जो मुड़ी है वह तो, सोचे शुकदेव नाहक प्राण क्यों गमाइये। पीय के पलट लेंगे यहाँ तो न देखे कोई, यह और हम तीजो कोई न गवाई ये। कर ललकार नार पीछी जो बुलाई शुक, पाय पाय नीर हम तुमही को व्याहिये। मानूँ नहीं लाख बात चलो जो पिता पे मेरे, पुरुष होत झूठे कहीं कहके बदलाईये। ऐसे सुनी शुक जब आपत्ति यह आई कैसी, अब तो पिता की तीजो साख जा बनाईये॥

॥ कवित्त ॥

चमारी जो लेके साथ अपने बाप पास आत, मधु जैसो मीठो मुख बैन जो सुनायो है। मोही को बिहावे यह पाऊँ मैं नीर पिता, यह वेदव्यास सुत शुक जो कहायो है। ऐसी बात सुनी जब हर्षित भयो पिता मन, पाय पाय नीर जो तैं वचन में बँधायो है। पाय दीनो नीर ताको आयो कुछ प्राण जब, तब शुकदेव मुनि वचन पलटायो है। तू तो है चमारी और मैं हूँ जाति विप्र देख, तेरे मेरे सम्बन्ध कहो कौन सो जुड़ायो है। रे रे मुनि गजब तू तो कह कर पलटे अब, साधू विप्र दोय जन झूठ न बोलायो है। कहे राव मानसिंह साच हू न मानो यारो, स्वप्न हू की बात यह तो स्वप्न में बतायो है। स्वप्न में ऐतो है दुःख जाग्रत में होय केतो, मन की गति को कोऊ ब्रह्मा हु न पायो है॥

॥ कवित्त ॥

लाख बात कही पर एकहु न मानी उन, हठ चढ़ कर शुकदेव हू को व्यायो है। कई दिन रहे संग सुत सुता दोय चार, अब शुकदेव के परिवार जो बढ़ायो है। नारी सुत लिए साथ जंगल में जो चल जात, आमहू को वृक्ष एक बहुत सुन्दर आयो है। ताके नीचे कूप एक ताके ऊपर लागी कैरी; ताको देख बालक एक रुदन जो मचायो है। यही आम लेऊँ मैं तो और हू न लेऊँ आम, लाखों बात कहकर शुक उनको समझायो है। सुपने की बात मान साची हू न मानो कोई, सुपने की चमारी ज्यूँ सुपने शुक आयो है॥

॥ कवित्त ॥

बालक को कहन तो नहीं शुक मान्यो कछू, नारी घूँघट पट में वैन गुटकायो है। झीणे झीणे नैन जोय तीखे जो भवारें होय, टेढ़ी निजर करके यूँ वचन फरमायो है। आछो मरद भयो तो ते हम ही भली है नार, एक आम काज केतो ओठो उतरायो है। मेरो भेष पहन ले तो मैं ही जाय तोड़ूँ याको, ऐसो वैन सुन्यो तो शुकदेव रिसियायो है। तुरत जाय चढ़्यो वह आम के ऊपर शुक, चढ़ते एक नारी को वचन जो सुनायो है। कठिन आम ऐसो याते नहीं टूटे गिरूँ मैं तो, बात सुनी नार हंस दंत जो दिखायो है। भलो मरद भयो ऐसो मरण हू से डरे तू, अंत जाति हू को भला विप्र जो कहायो है। कहे राव मानसिंह स्वप्न हू की बात यारो, स्वन्प हू की बात याको रिस हूं न लायो है॥

॥ कवित्त ॥

शुक चायो तोड़ने को आम हू की कैरी जाते, कैरी हू को तोड़े पहिले डारो जो गिरायो है। जाय गिर्यो साथ साथ कूपहू में शुकदेव, वैठो जो तखत पर आप झिझकायो है। चल्यो जो जनक हू के पाँव छुवन काज शुक, दूर रह दूर रह वैन जो सुनायो है। व्याह तो चमारी साथ कियो मोय भ्रष्ट करे, दोय चार सुत को बाप बन आयो है। ऐसी बात सुनी शुकदेव शरमायो मन, और नहीं सूझयो हाहा करके चिल्लायो है। कहे राव मानसिंह स्वप्न हू ते जागो मित्रो, वह स्वपनो तो यह कहा साच जो दिखायो है॥

॥ कवित्त ॥

कहे यूँ जनक राव धीरो रहधीरो शुक, रह चुप एती क्यूँ हाहा तैं मचाई है। वह स्वप्न यहो स्वप्न स्वप्न ही में स्वप्न देख्यो, वह न सत्य तो कब सत्य यह कहाई है। वो ही है असत्य और येही है असत्य देखो, यह असत्य से असत्य दरसाई है। जैसो मन बाहर लागे वैसो ही जो लागे डर, मन की कला को यह मन ही लखाई है। मन की कला कोई शूरवीर संत लखे, ज्ञान खड्ग हाथ लेके

शीश जिन उड़ाई है। नहीं तो चमारी हती नहीं तू चमार शुक, नहीं जो चमार तो तू विप्र कहाँ ते आयो है। कहे राव मानसिंह यदि पत आय नहीं, योग वशिष्ट पढो जामें साफ यह सुनायो है। मन की कला ते हारे बड़े बड़े सन्तजन, हार के हैरान भये पार हू न पायो है॥

॥ कवित्त ॥

स्वप्न हू में स्वप्न देख डरो नहीं शुकदेव, तू नहीं तो चमारी व्याही नहीं व्यास जायो है। व्यास हू को पुत्र माने माने जो चमारी पति, यह तो तेरो वृथा ही जो मन भरमायो है। नित्य है आनन्द रूप शुद्ध है स्वरूप शुक, जनक कहत तेरो उनमें मिलायो है। नारी साथ सोयो ताको दोष हू तैं जान्यो शुक, मैंने तेरे मन को यह भरम जो मिटायो है। जैसे तू स्वप्न में चमारी नारी व्यायो हतो, तैसे जाग्यो नींद हू ते एक न दिखायो है। ऐसे राज्य धन धान्य झूठे है यह स्वप्न जैसे, मेरो तो नित्यानन्द आनन्द रहायो है। कहे राव मानसिंह स्वप्न ऐसो होत यार, मन यह देखो स्वप्न बीच ही हलायो है। देवनाथ हाथ पकड़ स्वप्न बीच स्वप्न दोनो, मान जाग जाग्रत बीच आन जो जगायो है॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार । ताल दीपचन्दी ॥

एड़ो कलजुग भायाँ आवसी; सत् जुग दूर रहेला ॥ टेर ॥
बेटा नहीं गिणेला बाप ने, सामो जाब करेला।
नूर नरों का ऊतरे, नारी जोर चलेला। एड़ो कलजुग० ॥ १ ॥
धीरज धोरियाँ रो ऊतरे, पाडा हलिया खड़ेला।
ब्राह्मण अजिया राखसी, धोबी गाय रखेला। एड़ो० ॥ २ ॥
पंडित घर घर माँगसी, मूरख उत्तर करेला।
महाजन मजूरी कर रह्या, शूद्र धन जोड़ेला। एड़ो० ॥ ३ ॥
छत्री रेवेला सूधा गाय ज्यों, दुश्मण वैर करेला।
पोल पन्थ बधसी घणा, खैंचा ताण मचेला एड़ो० ॥ ४ ॥

ब्रह्मचारी ने बूझे नहीं, साधू देख्याँ डरेला ।
व्यभिचारयाँरी पूजा करे, सन्त कोई नाँय मिलेला । एड़ो० ॥ ५ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य ये, कन्या वेच करेला ।
वृद्ध बालक कछु ना गिणे, गल पर छुरी जो धरेला । एड़ो० ॥ ६ ॥
चिलम तंबाकू से प्रीतड़ी, ज्याँरा आदर करेला ।
दूध छोड़ दारू पिये, बिना मौत मरेला । एड़ो० ॥ ७ ॥
सिंहा रे संग स्यालनी, हाँसी इण री हवेला ।
निज नारी ने छोड़ के, वेश्या गोली रखेला । एड़ो० ॥ ८ ॥
गोलाई क्षत्री बाजसी, क्षत्रियाँ मान ढलेला ।
मानसिंह यों अगम कहे, चौथे अन्त मिलेला । एड़ो० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

अरे विधिना तू क्यों बावरी भई है ॥ टेर ॥
कंटक पेड़ गुलाब को रे, निर्फल वेल सही है ।
चतुर नारि गल बैलज बान्ध्यो, छैल को भद्रा दिवी है; लिखती तू भूल गई है १
धनवंत किरपण निर्धन पण्डित, धन जहाँ पुत्र नहीं है ।
पड़दायतणी गोद खिलावे, रानी के गर्भ नहीं है; लिखती तोको सुध ना रही है २
एक समय राजा रावण के, पायगा माँय रही है ।
दाणो दलती नीर भरंती, सो दिन भूल गई है; तोको कुछ याद नहीं है ३
सब असुरों मिल यज्ञ कियो है, ब्रह्मा त्याग दई है ।
आप स्वरूप जोगन होय बैठी, राजा मान कही है; बात यह सब ही रही है ४

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार । ताल तिताला ॥

मेहरवा बरसत क्यों नहीं पानी ।
तुम बिन राजा रंक दुखित भये, हार के हुए हैरानी ॥ टेर ॥

जल में थल में तरस रहे सब, थकित मोर पिक बानी।
पीव पीव कर रटत पपैया, किम कर देर लगानी ॥ १ ॥
मरुधर देश नीर नहीं नेड़ो, प्राण तजे सब प्राणी।
प्रजा दुखित देखी नहीं जावे, तब तुम तें विनय टानी ॥ २ ॥
देव में इन्द्र इन्द्रिय में मन तुम, गीता मध्य बखानी।
ताहि से हम विनय करत हैं, मान अरज गुन खानी ॥ ३ ॥
नर में राव सोही हम तुम हैं, या में झूठ न जानी।
हमरो काम काम जो तुमरो, भेद भिन्न नहीं मानी ॥ ४ ॥
जो हम तुम दोऊ एक रूप हैं, तो जुदा नहीं कोऊ प्रानी।
करके कृपा आवो जलधारा, ब्रह्म आनन्द बरसानी ॥ ५ ॥
मान कहे इतने नहीं मानो, वेद उक्त विनय ठानी।
अब तो कृपा मरुधर पर कीजे, सब घट अन्तर्यामी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "निहालदे" की। ताल कैरवा ॥

नृपति वोही संसार में रे, रहे प्रजा हितकार।
प्रजा दुःख देखे नहीं रे, करले जतन हजार।
करले जतन हजार; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ १ ॥
आप तो सोवे सुख में सदा रे, प्रजा दुःख सूँ मर जाय।
वो नृपति नहीं दुष्ट है रे, कहूँ न भला पण पाय।
कहूँ न भला पण पाय; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ २ ॥
प्रजा दुःखी खुद दुःखी रहे रे, प्रजा सुखी तो सुखी होय।
निश्चय रखे मन माँयने रे, वाँने जीते नहीं कोय।
वाँने जीते नहीं कोय; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ ३ ॥
चक्रवर्ती कई आगे भया रे, सुणलो जिकाँ रो भास।
रामचन्द्र और युधिष्ठिर रे, ज्याँसे प्रजा ने विश्वास।

ज्याँरो प्रजा ने विश्वास; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ ४ ॥
प्रजा सो जीव रूप है रे, नृपति आतम समान।
जीव मिल्यो फिर आतम भयो रे, यूँ कर नीति पिछान।
यूँ कर नीति पिछान; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ ५ ॥
देवनाथ प्रताप सूँ रे, बढ़्यो प्रजा सूँ सनेह।
मान हमेश आनन्द है रे; बरस्यो प्रेम को मेह।
बरस्यो प्रेम को मेह; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

सत संगत को सुख नाँहि लियो, हिय में नहीं जोत अखण्ड जगी।
मृगनयनी त्रिया के कटाच्छन की, उर में नहीं ये अनियाली खगी।
घर सूने के दीपक जैसे रहो, नहीं योग अरु भोग से प्रीति पगी।
नृप मान कहे धृक है उनको, गल सेली लगी ना नवेली लगी ॥

॥ सवैया ॥

नहीं डंबर अंग भभूत छई, आडंबर की नहीं खूबी खगी।
पद लंगर लोह झनंक न हो, कटि मेखली की न खनंक जगी।
जग मग्ग समाधि नहीं शिव से, छक अशन चन्द्रमुखी उमंगी।
नृप मान कहे धृक है उनको, गल सेली लगी नं नवेली लगी ॥

परिशिष्ट

॥सोरठा ॥

॥ मान वचन ॥

मन री मच रही हाक, मन मन कर दौड़े सभी।
इण री करणी राख, ओ मिले कठेई मानसिंह ॥

॥ वंक वचन ॥

मन तो सूक्ष्म रूप, जाल्याँ सूँ जलसी नहीं ।
भूल ने कह दी भूप, कही जिकी टलसी नहीं ॥

॥ मान वचन ॥

माया बन अन्धियार, जिणमें ओ मनवो बसे ।
ज्ञान अग्नि दो जार, कह्यो वचन पूरो करो ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मन गंगा न्हावो, मैल मिटावो, साफ करो मन चोर ।
ज्यासूँ मिलसी नन्दकिशोर रे । मन० ॥ टेर ॥
इन जल न्हायाँ तन होय उजला, मन है कठिन कठोर ।
ज्ञान की गंग हमेश न्हावे तो, चाले न मन रो जोर रे । मन० ॥ १ ॥
गंगा न्हावो ने न्हावो जमुना, मन तो ढोर को ढोर ।
इण मन रो नहीं मैल मिटे जद, जून पड़े दश ओर रे । मन० ॥ २ ॥
अड़सठ तीरथ भटक ने आया, खरचे द्रव्य करोड़ ।
बाहिर को मैल धोय भया उजला, पर मिट्यो न मन को शोर रे । मन० ॥ ३ ॥
सद्गुरु गिरी से गंगा निकसी, फैल्यो नीर चहूँ ओर ।
म्हे तो म्हारे घर में सूता, पर बहताँ दे गई हिलोर रे । मन० ॥ ४ ॥
लागत हिलोरो पाप सब उड़ग्या, मान गयो मन मोर ।
जीव ही जीव को बकणो भूल्यो, मिल गयो और ही और रे । मन० ॥ ५ ॥
महातम सुण ने गंगा न्हाईजो, मिट जावे जम रो जोर ।
ज्ञान की गंग गुरु नित बहावे, धार पड़े चहूँ ओर रे । मन० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु गंग न्हवायो, फन्द दिया सब तोड़ ।
और न्हावो तो न्हावो मित्रो, मान कहे कर जोड़ रे । मन० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

यह है गंग हमारी, बहे गहरी धारी, ब्रह्म समुद्र में जाय ।

कोई नर गंगासागर में न्हाय रे। यह है० ॥ टेर ॥
ब्रह्म समुद्र गहरो भरियो, नहीं है इण रो थाह।
भाग्य सभागी सो इण में न्हासी, नहिं तर नदियों में न्हाय रे। यह० ॥ १ ॥
पाँच पचीस वृत्ति उपवृत्ति, मच्छी बसे इण माँय।
मोह को मच्छ रहत है माँहो, चाहे तो बाहिर आय रे। यह० ॥ २ ॥
प्रेम की जहाज और सन्त खेवैया, जावे जिण ने ले जाय।
जहाज में बैठ कपट जो राख्यो, अधबिच देला डूबाय रे। यह० ॥ ३ ॥
साठ हजार सागर सुत तिरे, अचरज इण रो नाँय।
इण ही तरह सूँ सगला आवो तो, जग ने देऊं तिराय रे। यह० ॥ ४ ॥
हमने तो ब्रह्म समुद्र जो पायो, नाथ मिल्या म्हाँ ने आय।
सागर में गंग जो सहज समाई, गुरुगम दीवी मिलाय रे। यह० ॥ ५ ॥
मुवाँ मुक्ति वह गंग देवे, शायद देवे नाँय।
मेरी तो गंग सहजे देवे मुक्ति, आवो तो देऊँ दिखाय रे। यह० ॥ ६ ॥
इण गंग न्हाया अनन्तो मरग्या, पत्र किणी रो नाँय।
इण गंग न्हाया जिकाँरी सुनलो, आगे देऊँ बताय रे। यह० ॥ ७ ॥
विश्वामित्र वशिष्टजी न्हाया, राम गरक जिण माँय।
वेदव्यास शुकदेव मुनि जिन, प्रत्यक्ष साख सुणाय रे। यह० ॥ ८ ॥
दत्त ने गोरख कबीर भरतृ, न्हाये गंग के माँय।
शंकराचार्य न्हाये थे इण में, जीवत मुक्ति पाय रे। यह० ॥ ९ ॥
डंके की चोट मैं कह देता हूँ, मन घबराऊँ नाँय।
ऐते तिरे तो हम भी तिरेंगे, स्वप्ने नाँय डुबाय रे। यह० ॥ १० ॥
घर में गंगा समुद्र है घर में, घर में सब योग मिलाय।
मान यों जीवित मोक्ष मिलो फिर, बाहिर जाय बलाय रे। यह० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड। ताल दादरा ॥

मैं तो लिवी फकीरी, अजर अमीरी, छिन्न भिन्न नहीं होय।

फिर ले देखो सब कोय रे। मैं तो० ॥ टेर ॥
चार जिणों ने ले चेला मूँड्या, दीवी आपदा खोय।
राग ने द्वेष जन्मों जन्मों रा, पड़िया रेवे सब रोय रे। मैं तो० ॥ १ ॥
सुरता निरता दोय चेल्याँ मूँडी, रही विषय में मोय।
समता धार लिवी मन माँयने, मूधेनो मठ में सोय रे। मैं तो० ॥ २ ॥
सत्पुरुषों सूँ भीख जो माँगी, उतर न दियो कोय।
जः्णा झोली में लीनी भिक्षा, सत शब्दों री जोय रे। मैं तो० ॥ ३ ॥
चेला ने चेली सगला सुपातर, दुःख न देवे मोय।
कबहू हुकम लोपे नहीं मेरो, ज्यूँ चाहूँ वही होय रे। मैं तो० ॥ ४ ॥
देवनाथ को साथ कियो जद, अपनो आप में पोय।
मानसिंह ऐसो सन्यासी, होयाँ सूँ मिट जावे दोय रे। मैं तो० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

होत फकीर बुरे जबरे जो फ़कीरन तें तो हरी घबरावे।
नेकहू टेढ़ी दृष्टि करें तो ये राम को काम सभी जो मिटावे।
आप ही राम बने यह बैठे तो और सो राम की कौन कहावे।
काल हू देख डरे इन ते यह काल बड़े इन्हें काल न खावे।
आप ही राम बतावत हैं ये और राम को कहा बतावे।
राम ते राम डरे किम कर ये राम ही राम सो राम समचे।
देवनाथ गुरु राम मिले जो फ़कीरों के प्रीति की रीति रिखावे।
मान कहे कोई मानो न मानो ये संत अनन्त सो साफ़ सुनावे॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग। ताल कैरवा ॥

साधो मेरे चित्त गेरू रंग छाया रे।
रंगियों पिछे रंग कदे नहीं उतर्यो,
दिन दिन दुगुन सवायो रे। साधो मेरे० ॥ टेर ॥

कूँडी विचार प्रेम रो पाणी, गम री गेरू घिसाया रे।
बेफिकरी री लिवी फिटकड़ी, जद रंग पक्का आया रे। साधो मेरे० ॥ १ ॥
सत रो मान सुरता ने दीयो, श्वासो ही श्वास घुपाया रे।
मन कपड़े ने इमड़ो धोयो, कूड़ रा दाग मिटाया रे। साधो मेरे० ॥ २ ॥
निरख परख ने रंग में डुबायो, खूब झकोल रँगाया रे।
घोटो ताड़ना सद्‌गुरु दीनो, कर कुन्दी सुख पाया रे। साधो मेरे० ॥ ३ ॥
माया बादल अलगा हटिया, ज्ञान सूरज चमकाया रे।
अगम निगम रा दीया झपेटा, सुरती ने नितो सुकाया रे। साधो मेरे० ॥ ४ ॥
गुरु रंगरेज रँग्यो रंग आछो, पहर अमर पद पाया रे।
पाखँडिया तो देख ने डरिया, अलगाँ सूँ शीश झुकाया रे। साधो मेरे० ॥ ५ ॥
अग्नि वरण रंग मेरा भगवाँ, हम तेहा रूप कहाया रे।
पाँच तत्त्व ने पचीस प्रकृति, सबने भस्म बणाया रे। साधो मेरे० ॥ ६ ॥
इण रंग रंग मैं तो भया संन्यासी, ना कहीं गया न आया रे।
जरणा झोली भीख भाव की, जिण दिया जासूँ पाया रे। साधो मेरे० ॥ ७ ॥
ऊँच ने नीच वरण नहीं जाति, भेदाभेद मिटाया रे।
तीनूँ आश्रम के गुरु बन बैठे, अब भेद कौन विध लाया रे। साधो मेरे० ॥ ८ ॥
चारूँ ही वरण आश्रम तीनूँ, अब शिष्य मेरे कहाया रे।
आखिर देखा रूप सब मेरा, मम स्वरूप शुद्ध पाया रे। साधो मेरे० ॥ ९ ॥
देवनाथ गुरु किरपा करके, अगम योग दरसाया रे।
मानसिंह ऐसे होय संन्यासी, धिन ज्याँरी जननी जाया रे। साधो मेरे० ॥ १० ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ-गिरनारी । ताल कैरवा ॥

कोई चालो इण घर चालो रे, मत ऊला ऊला मालो। कोई चालो इण घर ॥ टेर ॥
रेचक पूरक कर कर कुम्भक, यूँ कँई मन ने पालो रे। मत ऊला० ॥ १ ॥
यूँ तो पालियो ओ नहीं पलसी, मनड़ो बड़ो है बिलालो रे। मत ऊला० ॥ २ ॥
कँई थे कुण्डली नागन जगावो, कँई सत भोम रुखालो रे। मत ऊला० ॥ ३ ॥

मुन्न ने धुनों सूँ ओ नहीं डरसी, मनवो बड़ो है नखरालो रे। मत० ॥ ४ ॥
इण मन ने निज मन कर देखो, झौड़ मिटेला जद थाँरो रे। मत० ॥ ५ ॥
निज मन होयाँ कठेई चाहे रेवो, नहीं चहिये रखवालो रे। मत० ॥ ६ ॥
मानसिंह मन निज मन कीयो, हरदम रहे मतवालो रे। मत० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ-गिरनारी। ताल कैरवा ॥

मैं तो नहीं हठयोग कमाया रे, नित राजयोग चित लाया। मैं तो नहीं० ॥ टेर ॥
भारत वंश उधार कृष्णजी, उनका मैं हुकम उठाया रे। नित राज० ॥ १ ॥
राजरोगी मन भयो विषयन में, गुरु को नबज दिखाया रे। नित राज ॥ २ ॥
समता सुवर्ण भस्म दिवी इसको, जिससे ताप मिटाया रे। नित राज ॥ ३ ॥
गीता गाय को लेकर माखन, कई-कई औषध(१) मिलाया रे। नित राज ॥ ४ ॥
सुवर्ण बसन्त(२) मालती करके, मन को लेके खिलाया रे। नित राज ॥ ५ ॥
सील सन्तोष को सितोपलादि, गर्व गिलोय सत लाया रे। नित राज ॥ ६ ॥
मैं ममता की मदिका छुड़ाई, तत्त्वमसि मद(३) लाया रे। नित राज ॥ ७ ॥
कर हठयोग बिमार भयो बपुरो, स्वास्थ्य सुधर सुख पाया रे। नित राज ॥ ८ ॥
भाव विदाम सेक कियो मोरा, आगम अभ्रक मिलाया रे। नित राज ॥ ९ ॥
छय रोगी को कियो है निरोगी, मरते फेर जिलाया रे। नित राज ॥ १० ॥
देवनाथ गुरु मिले रसायनी, जद यह रसायन सीखाया रे। नित राज ॥ ११ ॥
मानसिंह ऐसे वैद भये पक्के, सतगुरु मोय बनाया रे। नित राज ॥ १२ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश-सोरट। ताल कैरवा ॥

मो सम कौन है अन्तर्यामी।
सबके अन्तर व्यापक हूँ मैं, सब प्राणिन में नामी। मो सम० ॥ टेर ॥

१— साधन, २—उत्तम विचार, ३—शब्द।

वेद ने ग्रन्थ साख दहे सगरा, नहीं है इण में खामी।
न्यारो कहे सो कहे भूल से, कर कर बात निकामी। मो सम० ॥ १ ॥
दीन गरीब आप हम अपने, फिर क्यों लहें बदनामी।
करता हम अवरन से माँगें, बात नहीं मन मानी। मो सम० ॥ २ ॥
हम ही तो मात पिता पुनि हम ही, हम ही गरभ में जामी।
हम ही किये और हम ही भोगें, कुण होय नमक हरामी। मो सम० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु मिले हमें जद, मेट दिवी मन खामी।
मानसिंह जद अपने आप हम, किसकी करें गुलामी। मो सम० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग। ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई म्हाँने नहीं मुक्ति रो डर रे।
चाहे तो मुक्ति मिले ना मिले तो, इण रो नहीं है फिकर रे॥ टेर ॥
तीरथ व्रत खेल लड़कन का, म्हाँ पर नहीं है उजर रे।
शिर हो तो जद सब कुछ करिया, अब तो काट दियो धर रे ॥ १ ॥
पत्थर पाथर कदे न पूजूँ, मन मुड़दा लिया कर रे।
पोल पाखण्ड रो ढाल फोड़साँ, इण पर कसी कमर रे ॥ २ ॥
कुण गिरनार चढ़े अब म्हारे, जद चढ़ गया महल शिखर रे।
कुण रत्नाकर सागर तिरसी, ज्ञान समुद्र लिया तिर रे ॥ ३ ॥
रामेश्वर जगदीश द्वारिका, नहीं बद्री री हर रे।
सब कुछ में और मुझ में सब कुछ, पायो अजर अमर रे ॥ ४ ॥
तुंगनाथ त्रिजुगी चढ़े कुण, मैं तो पायो देव अधर रे।
कुण शङ्कर त्रिम्बक ने पूजे, पायो असल अणघड़ रे ॥ ४ ॥
कुण तो भैरव देवी पूजे, कुण दे शंखाँरा स्वर रे।
याँ बपुड़ों ने कुण आवण दे, नहीं अठे याँरी कदर रे ॥ ६ ॥
मुक्ति री मुक्ति कर देवाँ, म्हे क्षत्री सुत नर रे।

पन्थापन्थ बकरियाँ बापड़ी, इणने सिंह बण चर रे ।। ७ ।।
साचा बोलो तो सन्ताँ थे आईजो, नहीं तो रहिजो पर रे।
पग पर पग दे कर दूँ सीधा, मारूँ ज्ञान रो शर रे ।। ८ ।।
देवनाथ गुरु साथ कियो जद, मिट गई सब गड़बड़ रे।
मान कहे मत भूल थे आईजो, मर जीवाँ रे घर रे ।। ९ ।।

॥ गान ॥

॥ राग सारंग । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई मैं तो उड़ गयो बिन पग पर रे।
इण मारग तो वे नर आवे, जीवतड़ा जाय मर रे ।। टेर ।।
पाँच तत्त्वों से न्यारो रहूँ मैं, सब में राखूँ निजर रे।
क्या है मजाल विमुख कोई रेवे, राखूँ सगलों ने पकड़ रे ।। १ ।।
मेरो हुकुम सभी ये माने, कर राख्या सब ने सर रे।
दुश्मण जिणने मार पकड़ियो, भायों री करली कदर रे ।। २ ।।
ज्ञान विवेक विचार चार ए, भाई हमारे घर रे।
शुद्ध वैराग ने काम सब दीयो, नहि तर जातो बिगड़ रे ।। ३ ।।
"मैं" अहंकार पकड़ कियो उलटो, बात दिवी है बदल रे।
ब्रह्मास्मि स्वयं "मैं" ब्रह्म हूँ, आदि अजर अमर रे ।। ४ ।।
शीश उड़्यो तो कुछ नहीं परवा, अब दूजो शिर लियो धर रे।
तुरिया पद चौथे पर पहुँच्यो, जीत्यो काल समर रे ।। ५ ।।
पोला पन्थ गोल नहीं चलसी, म्हारी मत कीजो कोई हर रे।
आवणो हूवे तो समझने आईजो, मैं तो लेऊँ झट शीश कतर रे ।। ६ ।।
ख्याल जाण थे मत भरमाज्यो, मैं क्षत्रीसुत नर रे।
काढ्यो मैं खड़ग धधक तो बाहर, निकल जावेला अकड़ रे ।। ७ ।।
देवनाथ गुरु मार्‌यो मोकूँ, मैं तो मर ने जीयो फिर रे।
मानसिंह अब काल क्या करसी, काँपे ऊभो थर थर रे ।। ८ ।।

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

साधो सब जग कुटुम्ब हमारो । विश्वविभू में व्यापक हैं हम,
कौन रहे फिर न्यारो ॥ टेर ॥
सब वसुधैव रूप निज मेरो, वेद और ग्रन्थ उचारो ।
खेलत खेल अखेल रहें हम, देखो परम उजियारो ॥ १ ॥
मैं ही कर्म करत पुनि मैं ही, मैं हूँ कर्म से न्यारो ।
मैं ही फल और भोग मैं ही हूँ, मैं हूँ तत्त्व इकसारो ॥ २ ॥
जब "वसुधैव कुटुम्बकम्" चीन्यो, मिट गयो भरम हमारो ।
भिन्न भिन्न समझ मार नित आई, भयो मैं आत्म हत्यारो ॥ ३ ॥
व्यक्तिभाव नहीं उर आनूँ, नहीं अहङ्कार उर धारो ।
मेरो ही रूप विश्व यह कहिये, मैं ही विश्व आधारो ॥ ४ ॥
काम रूप होय काम करूँ मैं, देत यज्ञ में सहारो ।
एक अनेक अनेक एक होय, पूरो यज्ञ हमारो ॥ ५ ॥
मैं ही पिता पुत्र पुनि मैं हूँ, मैं पति पत्नि विचारो ।
मेरी खुशी से भयो अनेको, देख्यो ब्रह्मतत्त्व सारो ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु दया करी जद, पड़दो दूर निवारो ।
"तत्त्वं" पद में मान "असि" पद, सब जग मम उजियारो ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

जग रूप हमारो, ना कोई न्यारो, किनको जावें त्याग ।
मेरे ना कोई राग वैराग रे । जग० ॥ टेर ॥
अपणो आप ताप है किण री, कहो कहाँ लागे दाग ।
एक स्वरूप विचार लियो जद, न्यारो रयो कहाँ भाग रे । जग० ॥ १ ॥
सङ्कल्प विकल्प सब ही छोड़्या, सब की उडाई खाक ।

आधि ने व्याधि उणी दिन मिट गई, जागी ज्ञान की आग रे। जग० ॥ २ ॥
देवनाथ ने हाथ गह्यो जद, सीधो बतायो माग।
मान अमान निर्मान भयो जद, ना कोई किण री लाग रे। जग० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज "धाणी" की। ताल दीपचन्दी ॥

जीव ब्रह्म खोजण गया, अपना आप गमाया हाँ।
जीव ब्रह्म कुछ ना मिल्या, खाली हाथे आया जी ॥ टेर ॥
जीव कहो कद जनमियो, आप ही अलुझाया हाँ।
ईश कह्यो दूजो है कोई, यह सब भरम भुलाया जी ॥ १ ॥
ब्रह्म कह्यो व्यापक विश्व में, अपनो आप है सोई हाँ।
यों कर ब्रह्म चीन्यो नहीं, न्यारो कर जाई जी ॥ २ ॥
ब्रह्म जीव कुछ है नहीं, यह तो कल्पित सोई हाँ।
अक्षर जहाँ लगे नहीं, वरणी कैसे होई जी ॥ ३ ॥
ब्रह्म कोई खाडो नहीं, गिर ऊँचा नहीं आभा हाँ।
अपनो आप निज आप है, ना कोई शब्द लगाया जी ॥ ४ ॥
वाचक ज्ञानी सो इसा, ब्रह्म खाड के माँई हाँ।
खाड गिरयाँ कैसे मिले, सुन्न ही सुन्न कहाई जी ॥ ५ ॥
मेरो तो व्यापक विश्व में, आपो आप ही पाया हाँ।
जीव ब्रह्म और ईश भी, कल्पित मैं ही तो लगाया जी ॥ ६ ॥
माया भी मो से भिन्न नहीं, भिन्न कहे सोई कूड़ा हाँ।
"एकोहम् बहुस्याम" की, मो में भई है फोरा जी ॥ ७ ॥
दीपक लोय उजियार हो, कैसे कहे जो न्यारो हाँ।
वही तो उजारो वही लोय है, लोय ते होय उजियारो जी ॥ ८ ॥
देवनाथ सतगुरु मिल्या, भ्रम मेरो उड़ गयो सारो हाँ।
मानसिंह अपने रूप में, सगला रूप निहारो जी ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग कानड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

जनक जनक कहे सब ही गावे । हिम्मत करे तो खुद होय जावे । जनक० ॥ टेर ॥
जनक के हुती पंच भूत की देहा । देह छते भी वो था जो विदेहा ।
इण में संशय रती नहीं आवे । जनक जनक० ॥ १ ॥
जनक भी हुतो कोई जननी को जायो । नहीं वो जनक आकाश से आयो ।
कर पुरुषारथ निज पद पावे । जनक जनक० ॥ २ ॥
जनक शब्द को अर्थ सुण भाई । जिणसूँ जीत लेवो जनकाई ।
होय जनक निज रूप समावे । जनक जनक० ॥ ३ ॥
अपणा जाणे जनक है सोई । अपणा भूल्या सो मूरख होई ।
जाण्याँ विना कैसे जनक कहावे । जनक जनक० ॥ ४ ॥
हम नहीं हैं जनक भूलक हैं भाई । भूले हूवे कैसे वो पद पाई ।
भूल भूल में शान गमावे । जनक जनक० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु जानक चीना । मानसिंह को जानक कीना ।
अब देह छते ही विदेह रहावे । जनक जनक० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो हम ऐसा यज्ञ कर लीना होजी ।
कृत्य अकृत्य विचार लियो उर, आतम परगट चीना रे । साधो हम० ॥ टेर ॥
गुप्त देव को भूल कर बैठे, अब परगट कर लीना होजी ।
यज्ञ भाग हम प्रत्यक्ष देत हैं, इन हमें अमीरस दीना रे । साधो० ॥ १ ॥
जो कुछ किया सो यज्ञ रूप है, और भाव तज दीना होजी ।
सर्व देव सो हम में व्यापक, न्यारा फेर रहे ना रे । साधो० ॥ २ ॥
कृष्ण कृपा कर यज्ञ बतायो, कियो पारथ परवीना होजी ।
नित्यानित्य विचार मंत्र लख, दुविधा निकट रही ना रे । साधो० ॥ ३ ॥

छान्द्योग और केन पढ़े हम, साफ साफ कह दीना होजी ।
ताते यज्ञ हमें मन भायो, दुविधा तन पे सही ना रे । साधो० ॥ ४ ॥
यज्ञ चक्र गुरु देवनाथ से, कर हिम्मत ले लीना होजी ।
मानसिंह स्वारथिये मिले सब, असली बात कही ना रे । साधो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो म्हाँ सूँ वो यज्ञ बण नहीं आवे होजी ।
बैठे मंत्र जपे कई लाखों, कहाँ वक्त अस पावे रे । साधो० ॥ टेर ॥
कौन महनत कर देवे आहुति, कुण फिर अग्नि जलावे होजी ।
क्षुधा तृषा दोऊँ अग्नि जलत है, नित आहुति पहुँचावे रे । साधो० ॥ १ ॥
उण यज्ञ से फल मिले या मिले नहीं, कालान्तर बतलावे होजी ।
इण यज्ञ में जो देय आहुति, देते फल मिल जावे रे । साधो० ॥ २ ॥
शुद्ध ब्रह्म नित सद्गुरु कहिये, सो नित यज्ञ करावे होजी ।
ब्रह्म रूप सो अन्तर बैठा, नित साक्षी दरसावे रे । साधो० ॥ ३ ॥
वो यज्ञ करत यदि जो अर्जुन, सगलो काम बिगड़ावे होजी ।
शूरवीर तैयार खड़े शिर, दुश्मण वार चलावे रे । साधो० ॥ ४ ॥
मेघनाद नारायणतक जो, उण यज्ञ मूँड पचावे होजी ।
कर्म यज्ञ लक्ष्मण कियो हनुमत, यज्ञ विध्वंस करावे रे । साधो० ॥ ५ ॥
इन पर देवी कोपी नाँही, उन पर कोप दिखावे होजी ।
मंत्र यज्ञ से कर्म जबर है, इत कर इत फल पावे रे । साधो० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण मिले जद, साचो यज्ञ करावे होजी ।
मानसिंह ऐसो यज्ञ कीनो, जीवत मुक्त हो जावे रे । साधो० ॥ ७ ॥

॥ सोरठा ॥

मान वचन

कीनो विविध विचार, सार लख्यो गीता तणो ।
तो पायो नित्य अवतार, मन अपने में मानसी ॥

वंक वचन

सुन हो छत्रपति नाथ, मनुष्य ईश अवतार कहो।
यह मन नाँहि समात, बात तुमारी वंकुरी ॥

मान वचन

जो जन बाँका होय, सीधी तो सूझे नहीं।
बाँकी लेवे जोय, सीधी पर पग ना धरे ॥

॥ कवित्त ॥

कर्म के परवाण होत विभूति यह वेद कही, सो तो हम तुम्हें कैसे न्यारी बतलायँगे। बारह कला के अवतार श्रीरामचन्द्र, सोलह कला के श्रीकृष्ण दरसायँगे। इनकी विभूति अधिक उनकी कमी है क्यों, इनके सदंश क्या अवतार न कहायँगे। यह तो है भूल वंक त्याग भ्रमना को अब, जितनो है प्रकाश तितनो तेज दिखायँगे॥

॥ कवित्त ॥

निमित्त अवतार धार कारण सूँ लियो छण, पर मेरी इच्छा से वह बाहिर न कहाये हैं। माया बपु धार जीव तार पार किये जिन, आखिर तो मेरे शुद्ध रूप में समाये हैं। देख निर्वाण प्रकरण गीता को देख इत, सर्व भूतात्म यूँ कृष्ण फरमाये हैं। कहे राव मानसिंह घर को न लायो मैं, जैसे वेद कहे वचन तैसे हम गाये हैं॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे व्याऊं राधे कृष्ण तेरो कारो" की। ताल कैरवा॥

देखी उर माँय, हरि ने लीला दिखाई रे; देखी उर माँय ॥ टेर ॥
जननी जसोदा कहिये जरणा, जिन ऐसो सुत जाय॥
ज्ञान पुत्र ऐसो हम पायो, जन्म मरण ज्याँरा फेर नहीं आय रे। देखी० ॥ १ ॥
समता जमुना निर्मल बेवे, जिण रो तीर सुहाय।
तर्क वितर्क गैंद वो खेले, कबहू हार के घर नहीं आय रे। देखी० ॥ २ ॥

पाँच पचीस मिली सब गोपी, अनहद रास रचाय।
ओंकार ध्वनि बजी बाँसुरी, सुर नर मुनि याको सुन सुख पाय रे। देखी० ॥ ३ ॥
जिज्ञासु पण जीव हतो जद, रयो मुमुक्षु थाय।
जीव पणो तज ब्रह्म रूप भयो, शुद्ध स्वरूप को खोज लगाय रे। देखी० ॥ ४ ॥
जीव ने ब्रह्म दोऊँ जद मिट गया, लारे रयो कछु नाँय।
आप खिलारी आप भयो लीला, आप देख अपणा गुण गाय रे। देखी० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण मिल्या जद, दीयो कृष्ण बणाय।
मान कहे अब कृष्ण भये हम, भरम गाँठ को दीवी है गमाय रे। देखी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे ब्याऊँ राधे, कृष्ण तेरो कारो" की ताल कैरवा ॥

देख्यो घनश्याम, सब बीच मुरारी रे; देख्यो घनश्याम० ॥ टेर ॥
अजब खेल नटवर को देख्यो, खेल्यो जगत तमाम।
सभी खेल कर रह गयो न्यारो, पार न पायो वाको वेद पुरान रे। देख्यो० ॥ १ ॥
खेलत खेल अखेल रहे फिर, करता काम अकाम।
नाना रूप खेल रह्यो निशिदिन, फिर बैठो खूब ओ करे विश्राम रे। देख्यो० ॥ २ ॥
नाम रूप से न्यारो कहिये, सब ही उणरा नाम।
जो कोई उणने जाण विचारे, पाय लेवे वो पद निर्वाण रे। देख्यो० ॥ ३ ॥
सभी धाम में व्यापक कहिये, ना कोई उण रे धाम।
मानसिंह मैं ऐसो देख्यो, पूरण सब बिच आतमराम रे। देख्यो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे ब्याऊँ राधे, कृष्ण तेरो कारो" की। ताल कैरवा ॥

पारथ बनाय, हरि ने गीता सुनाई रे; पारथ बनाय० ॥ टेर ॥
कुकर्मों रा कौरव ऊभा, सब ही फौज जुड़ाई।
अर्जुन कुटुम्ब जाण कर डरियो, सद्गुरु उणने धीरज बन्धाई रे। पारथ० ॥ १ ॥
या तन रथ में सद्गुरु बैठा, करड़ी बाग सँभाई।

कर्मक्षेत्र में रथ को लीयो, इत उत घोड़ा अलग न जाई रे। पारथ० ॥ २ ॥
किसका तू और कौन है तेरा, देह अभिमान गिराई।
असल सिंह को भेड़ भयो तू, बनत नपुंसक शरम न आई रे। पारथ० ॥ ३ ॥
कर्म क्षेत्र में हारे मूरख, हारत लाज न आई।
उठ खड़ा हो कर्म कर निर्भय, पाप कर्म तोकूँ लागे नाँई रे। पारथ० ॥ ४ ॥
उतर गयो, तू कर्म क्षेत्र में, अब क्यों रयो घबराई।
करणा है सो करले निर्भय, अब क्यों पलट तेरी श्यान गमाई रे। पारथ० ॥ ५ ॥
जीव हतो ते ब्रह्म भयो अब, जीव ब्रह्म कुछ नाँई।
कर्म भूमि के कुरुक्षेत्र में, कुकरम कौरव दीना खपाई रे। पारथ० ॥ ६ ॥
घन पारथ कोई पढ़ले सुनले, धिन है वाँरी माई।
नित्य पाठ लख पढ़े गीता को, मनुष्य नहीं वो तो पशु सो कहाई रे। पारथ० ॥ ७ ॥
करे नित पाठ विचार करे मन, बुद्धि तर्क बढ़ाई।
देह अभिमान दूर धर दीनो, करता करम फिर रहे अकरताई रे। पारथ० ॥ ८ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण मिल्या जद, यह बूँटी घस पाई।
मान कहे मैं कृष्ण रूप हूँ, जीव ब्रह्म ईश की मिट गई जुदाई रे। पारथ० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड। ताल दादरा ॥

कैसे हीरे लुटाये, कृष्ण दिखाये, कर कर लो व्यापार।
एड़ा मिलसी न दूजी बार रे। कैसे० ॥ टेर ॥
काच कथीर ने पत्थर पाथर, काम न आवे लिगार।
गीता खाण के हीरे बिणजो, होवो भवसागर पार रे। कैसे हीरे० ॥ १ ॥
वाँ हीरा ने चोर ले जावे, छीने राज दरबार।
बुद्धि खजाने ए हीरा मेलो, काम आवे हर बार रे। कैसे हीरे० ॥ २ ॥
वृत्ति नारी रे हाथ खजानो, राखो पहरायत चार।
बिना विचार कदे नहीं खरचे खरचे, विचार विचार रे। कैसे हीरे० ॥ ३ ॥

जो याँ हीराँ में शङ्का होवे तो, राखो न शङ्क लिगार।
तर्क वितर्क को घण ले कर में, सद्गुरु सन्मुख मार रे। कैसे हीरे०॥ ४॥
मतवाद्यों जो खोटा भेल्या, वे रहसी न्यारा ही न्यार।
लागत चोट ही किरचा होसी, देखो पक्की मन धार रे। कैसे हीरे०॥ ५॥
हृदय एरन पर हीरा कूट्या, धँस गया एरन माँय।
एरन टूटी पर हीरा न टूट्या, जद मन में पत आय रे। कैसे हीरे०॥ ६॥
देवहूनाथ मिल्या जद जौहरी, टाल ने दिया निकाल।
मान कहे हम जौहरी पाके, खाय न खोटाँ री मार रे। कैसे हीरे०॥ ७॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिये" की। ताल कैरवा ॥

घर के कृष्णचन्द्र अवतार, अमी गीता को पायो है॥ टेर॥
पीने से अमृत होत अमर प्राणी होय सोई,
ऐसो अमी कृष्णचन्द्र प्रगट दिखायो है।
ढूँढ़ते फिरे सब जहाँ हू में सिर मारे,
असल अमी सो तो हाथ हू ना आयो है।
कृष्ण करी कृपा जद दीनो है अमी असल,
पीते ही अमर रूप कृष्ण के समायो है।
भरम करम के तोड़ बन्ध,
ब्रह्म रूप दिखायो है। घर के कृष्णचन्द्र०॥ १॥
पारथ हू की ओट लेके जगत को सुनाई गीता।
ऐसे जो दयाल हम पर दया भारी कीनी है।
भूल गये तत्त्वज्ञान भान हू न रयो इमें,
ताहूतें कृष्णजी यह गीता रच दीनी है।
रस है अपार यामें पार नहीं रस हू को,
जो ही जान सके याको शुद्ध होय पीनी है।

कर्मयोगी कियो कृष्ण पारथ हू को पल माँय,
कर्मयोगी करते कछु देर हू न कीनी है।
तत्त्वदर्शी नर हुए ज्ञान गीता को गायो है। घरके० ॥ २ ॥
चारों वेद सार को निकार भरयो गीता बीच,
कृष्णचन्द्र ऐसे कछु कमी हू न राखी है।
सात सौ श्लोक बीच न्यारी न्यारी कीनी सब,
एक एक हू के सब मन की जो भाखी है।
वेते ही पुराण ग्रन्थ शास्त्रों को पढ़ो तुम,
सब दर्शन बीच दर्शन गीता एक साखी है।
और की कहे कहा यह जगत हू की दाता गीता,
ऐसी कृष्णचन्द्रजी ने अद्भुत रच राखी है।
सभी सृष्टि को सार जगत में निजर न आयो है। घरके० ॥ ३ ॥
देवनाथ हाथ गह भूले यह बताई गीता,
सोते गहरी नींद बीच आन के जगायो है।
जाग के मैं जोयो खोयो भरम यह तमास मन,
मेरो स्वरूप सब बीच दरसायो है।
आव हैं न जाँय कहीं मरें न जन्में हम,
ज्यों के त्यों नित अत्तर अमर कहायो है।
राज हू करत कछु लेश दुःख को है नाँही,
ऐसी गुरुदेव युक्ति कर समझायो है।
मानसिंह अब जीव ब्रह्म एक ही दरसायो है। घरके० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राधे राधे सब करे, पर राह को लहे न कोय।
बिना राह लीयाँ बिना, पार कहो किम होय॥
राधे राधे क्या कहो, सुनो ब्रज के लोक।

बिना राह लियाँ बिना, मिटे कभी नहीं शोक ॥
राधे भई बड़ भागिनी, पर तुमरे फूटे भाग ।
इण सुहाग अमर कियो, तुप क्यों लियो दुहाग ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिये" की । ताल कैरवा ॥

क्या रटणो राधे श्याम, दोनूँ मेरे बसे मन्दिर माँही ॥ टेर ॥
बसत मन्दिर माँहि बाहिर न जावे मेरो,
एक ही स्वरूप मेरे निज में समायो है ।
आय है न जाय कहीं नित्य है प्रकाश यह तो,
धूप और छाया से निर्लेप ही कहायो है ।
निराकार निर्लेप सकल में वेद ग्रन्थ गाई । हेजी क्या० ॥ १ ॥
कौन ढूँढे कौन जाय आय फिर कौन मेरे,
नित्य है प्रकाश नहीं दूर जो बसायो है ।
नित्य है चेतन नहीं जड़ हू को काम कहीं,
सब खेल बीच आप खेल जो खेलायो है ।
खेलत खेल अखेल रहे नहीं बात समझ आई । हेजी क्या० ॥ २ ॥
मेरी ही इच्छा अवतार लियो गोकल माँहि,
मेरी ही इच्छा से सब खेल जो खेलायो है ।
मेरी इच्छा भई जब त्याग दिये खेल सब,
एक जो अखण्डी आप आप में समायो है ।
वेद ग्रन्थ यूँ कहे सकल फिर न्यारो किम पाई । हेजी क्या० ॥ ३ ॥
माया ईश ब्रह्म मेरी इच्छा हू से होत न्यारे,
मेरी इच्छा भई तो सब एक दरसायो है ।
दोय हू को तोड़ फोड़ एक ही स्वरूप बीच,
नहीं तो गयो ना कहीं नहीं वह आयो है ।
भेद भरम में भटक भटक के यों ही मार खाई । हेजी क्या० ॥ ४ ॥
निमित्त अवतार श्रीकृष्णचन्द्र धार लियो,

नित्य को अवतार गुरुदेव नाथ आयो है।
मानसिंह भयो जद पारथ सदृश मैं तो,
गीता को दरपण लेके मुख को दिखायो है।
कर्मयोगी हम बने सहज में उड़ी धूल काई। हेजी क्या० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिये" की। ताल कैरवा ॥

मेरे मंड्यो चौक में रास, देखण ने पर घर कुण जावे ॥ टेर ॥
चित के चौक बिच जाजम बिछाई रे। ज्ञान चन्द्र की खूब रोशनाई रे।
चित के चौक में जाजम बिछाई। ज्ञान चन्द्र की खूब रोशनाई।
प्रेम बाँसुरी ब्रह्मानन्द की, सुणताँ सुख पावे ॥ १ ॥
वृत्ति श्रृङ्गार सज्यो हद भारी रे। उत श्रृङ्गार सज मिल्यो है मुरारी रे।
वृत्ति श्रृङ्गार सज्यो हद भारी। उत श्रृङ्गार सज मिल्यो है मुरारी।
गोपी कृष्ण कृष्ण भये गोपी, द्वैत जो मिट जावे ॥ २ ॥
मान छोड़ कर आई अलबेली रे। सुरता नार जो राधे नवेली रे।
मान छोड़ कर आई अलबेली। सुरता नार जो राधे नवेली।
मिली पिया के माँय, न्यारी रह कुण अब भटकावे ॥ ३ ॥
देव तेतीस कोटि सब आया रे। रास देख सब ही सुख पाया रे।
देव तेतीस कोटि सब आया। रास देख सब ही सुख पाया।
गोप रुप सब होय ने खेल्या, रंग कर रचवावे ॥ ४ ॥
देवनाथ ऐसो रास देखायो रे। मानसिंह उण बीच समायो रे।
देवनाथ ऐसो रास देखायो। मानसिंह उण बीच समायो।
मिल्यो है अमृत मोय, जहर फिर क्यों अब हम खावें ॥ ५ ॥

॥ सवैयः ॥

हरी के कोई जात न पाँत हुती निर्बन्ध हुते नहीं बन्धन कोई।
हम बन्ध अनेकों डार दिये हरि दूर गये विश्वास यह मोई।

यदि तोड़ देवें सब बन्धन को हरि आय मिलें कछु जेज न होई।
मान विचार कियो मन में वह भरम मति में सब कुछ खोई ॥

॥ सवैया ॥

हरि के यदि जात और पाँत हुती तो क्यों शबरी घर बेर जो खाते।
हरि के यदि जात और पाँत हुती तो क्यों ले गीध को गोद उठाते।
हरि के यदि जात और पाँत हुती तो क्यों ले गुह को कंठ लगाते।
हरि के यदि जात और पाँत हुती तो क्यों हनुमत को हृदय मिलाते।
हरि के यदि जात और पाँति हुतो तो क्यों ले विभीषण को अपनाते।
मान कहे निर्बन्ध हरि ये सभी विवादी पक्ष उठाते ॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली" की। ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई आ भक्ति नहीं भावे हाँ जी।
भगवत आडी तो भींत लगाई, लम्पट माल ठग खावे रे। साधो भाई० ॥टेर॥
जगत आधार कृष्ण जी कहिये, ज्याँने क्षत्रिसुत बतलावे।
वाँसूँ ई ऊँचा आप बण बैठा, सो महाप्रसाद न पावे रे। साधो भाई० ॥ १ ॥
म्हाँने महाप्रसाद कर देवे, खुद क्यों दूर हटावे।
महाप्रसाद से मोक्ष मिले तो, आप ही क्यों नहीं जावे रे। साधो भाई० ॥ २ ॥
अवर नारी से तो रास रमत हैं, अपनी क्यों ये छिपावे।
भोला जीव जिके नहीं समझे, भोंदू आपाँ ने बणाँवे रे। साधो भाई० ॥ ३ ॥
सब कुछ करे फिर बालक रेवे, यही तो हँसी मोहे आवे।
उमर पर्यन्त बालक किम रेवे, न्याय न कोई चुकावे रे। साधो भाई० ॥ ४ ॥
बालक जिके तो रोय माँगे रोटी, ए तो फुरवाँ माल उड़ावे।
बालक होय सो मात बहिन समझे, ए गोपी कर नाच नचावे रे। साधो भाई० ॥ ५ ॥
बालक जिके तो धूल में लिपटे, कीचड़ में ही चले जावे रे।
केशर स्नान करे नित उठ ये, अष्ट सुगन्धी लगावे रे। साधो भाई० ॥ ६ ॥
इण भक्ति सूँ तो निकमाई आछी, भलाँई नरक में जावे।

बाजाँ डफोल हँसी होय जग में, कुण घर मुफत लुटावे रे। साधो भाई० ॥ ७ ॥
मोटा बालक ए भला घर अपने, म्हारे काम नहीं आवे।
थाँ रे स्वर्ग में ए ही जावो, म्हारे तो स्वप्ने नहीं चावे रे। साधो भाई० ॥ ८ ॥
स्वर्ग नरक सब मेरी इच्छा, मुझ में ही उत्पन्न थावे।
स्वर्ग नरक को मैं ही हूँ द्रष्टा, कुण फिर भोग भोगावे रे। साधो भाई० ॥ ९ ॥
म्हारी बात मानसी जो नर, थाँरे पेच नहीं आवे।
खर मूरख से समझे नाँहीं, मार खाय वहीं जावे रे। साधो भाई० ॥ १० ॥
देवनाथ गुरु सहजे मिलिया, मन का धोखा मिटावे।
मानसिंह अखिल प्रभु चीन्यो, न्यारो नहीं दरसावे रे। साधो भाई० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग परज। ताल धमाल ॥

बालकृष्ण क्या बुलाय कीर्तनी, बालकृष्ण क्या बुलाय।
इतनी देर भइ तोहे गावत, अजहू सुने नहीं आय। कीर्तनी० ॥ टेर ॥
क्या तो तू झूठे ही गावे, या कान है उनके नाँय।
इन दोनों में कौन बात है, साची देहु समझाय। कीर्तनी० ॥ १ ॥
तू ही ज झूठो हरि न बहरो, पण तू समझे नाँय।
पत्थरों को तू कृष्ण बनावे, तो स्वप्ने सुनन न आय। कीर्तनी० ॥ २ ॥
देख वेद और ग्रन्थ शास्त्र में, बात जबी यह पाय।
नित्य अवतार सबी है प्रभु को, तब धोखो मिट जाय। कीर्तनी० ॥ ३ ॥
कहा श्रृङ्गार पद गाय कलेवो, मूरत भोजन न खाय।
बालकृष्ण जो फिरे बारणे, जिनको लाय खिलाय। कीर्तनी० ॥ ४ ॥
युवा कृष्ण जो चहिये तुमको, तो हमें देय कुछ लाय।
हम खावें कुछ स्वाद बतावें, फिर तू गाय न गाय। कीर्तनी० ॥ ५ ॥
गुरु ही मूढ़ मूढ़ तुम चेले, कसर एक में नाँय।
मान कहे पत्थर पत्थरन से, रगड़याँ आग(१) उपजाय। कीर्तनी० ॥ ६ ॥

१—क्रोध।

|| गान ||

|| राग परज | ताल धमाल ||

ठाकुर सेवक नाँय, मेरे मन ठाकुर सेवक नाँय।
ठाकुर सेवक बने सो बनिये, जो बनिया दुःख पाय। मेरे मन ठाकुर० || टेर ||
अखिल विश्व में ठोस भरा हूँ, खाली जगह नहीं पाय।
जहाँ ठाकुर सेवक दोऊँ रेवे, रेवे तो तुम ही रह जाय। मेरे मन० || १ ||
क्यों ये बातें बनावे निकमी, फिर फिर जगत भुलाय।
आप ही ठाकुर आप पुजारी, व्यापक सब जग माँय। मेरे मन || २ ||
कौन वृथा यह घण्टा हिलावे, कौन विधर्मी हँसाय।
अपने आपको अँगूठा दिखावे, जा सूँ मन शरमाय। मेरे मन० || ३ ||
शामिल अताँ करें क्यों न्यारो, म्हाँ सूँ कियो नहीं जाय।
मान कहे मानो मत मानो, मैं तो साची दीनी सुनाय। मेरे मन० || ४ ||

|| गान ||

|| तर्ज "वाणी" की | ताल कैरवा ||

कृष्ण मेरो, नहीं गोरो नहीं कारो रे हेजी होजी।
जहाँ देखूँ मौजूद खड़ो है, पलक नहीं है न्यारो रे। कृष्ण मेरो० || टेर ||
दैत्य बकासुर बच्छासुर मार्‌या, तो भी न भयो हत्यारो रे हेजी होजी।
चाणू मुष्टि मार कुवलिया, कंस को पकड़ पछाड़्यो रे। कृष्ण || १ ||
मार जरासन्ध शिशुपाल को मार्‌यो, दैत्यन दल संहारो रे हेजी होजी।
सब को मार निर्लेप रहत यह, नटवर अजब खिलारो रे। कृष्ण० || २ ||
अर्जन सिखाय कुरुदल ने मार्‌यो, जालम जबर धूतारो हेजी होजी।
कुछ कह तो ओ कुछ कह देवे, याने मिल्यो नहीं बरजण हारो रे। कृष्ण० || ३ ||
आप वसुदेव देवकी आप है, आप है नन्द दुलारो रे हेजी होजी।
आप ही नन्द यशोमति आप ही, आप ग्वाल यूथ सारो रे। कृष्ण० || ४ ||
आप व्रज गोपी आप पूतना, आप दैत्य बलकारो रे हेजी होजी।

आप शिशुपाल जरासन्ध आप ही, आप जीत्यो आप हारो रे। कृष्ण० ॥ ५ ॥
कुरुदल आप आप पाण्डवदल, कौन मर्‌यो कौन मारो रे हेजी होजी।
जो इन में मैं झूठ कहत हूँ तो, रूप विराट विचारो रे। कृष्ण० ॥ ६ ॥
स्वारथियों तो अपने स्वारथ वश, कीनो फैल अपारो रे हेजी होजी।
सखा सखी हुड़दंगा नाचे, लम्पट देश बिगारो रे। कृष्ण० ॥ ७ ॥
गोला गोल रे भेला जो रहता तो, बह जाता भव धारो रे हेजी होजी।
देवनाथ गुरु गीता पढ़ाई, कीयो लम्पट मुख कारो रे। कृष्ण० ॥ ८ ॥
करूँ मैं व्यवहार लिगार नहीं दुख, सब जग रूप हमारो रे हेजी होजी।
मान कहे तुम रहो रे अलगा, छुवूँ न पल्लो तुमारो रे। कृष्ण० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वार्णी" की। ताल कैरवा ॥

साधो मैं तो वो ठाकुर मन ध्याया रे हेजी होजी।
विश्व विभु मैं परगट व्यापक, ना कोई पड़दा लगाया रे। साधो मैं० ॥ टेर ॥
सब कुछ खाय सभी कुछ देवे, लेण देण से वो न्यारो रे हेजी होजी।
प्रेम पूजारी सेवा माँय बैठो, सेवा करे हरवारो रे। साधो मैं० ॥ १ ॥
बोले ना बोलायो जागे न जगायो, वो ठाकुर फिर कैसा रे हेजी होजी।
पूजा करे उत्तर नहीं देवे, हमको न चहिये ऐसा रे। साधो मैं० ॥ २ ॥
भोजन छत्तीस छप्पन करे त्यारी, वो तो कदेई नहीं खावे रे हेजी होजी।
करके तैयारी महनत करे क्यों, सुपने न स्वाद बतावे रे। साधो मैं० ॥ ३ ॥
आतमदेव ठाकुर मेरो ऐसो, माँग माँग सब पावे रे हेजी होजी।
स्वाद अस्वाद कहे सब मुख सूँ, मन राजी होय जावे रे। साधो मैं० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिलिया गुसाँई, बलभ अवतार कहावे रे हेजी होजी।
मानसिंह ऐसो बन वैष्णव, ठाकुर बीच समावे रे। साधो मैं० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

हाँखी जो आत मेरे मन में पशुओं से बुरे अकल कछु नाँई।

राम के नाम को ऐसो गिने जिन आटे की गोली ले मच्छी चुगाई ।
आटे में मच्छी में राम बसे और राम बसे उण कागद माँई ।
मान कहे मत भूल करो इण भूल में क्यों सच ज्ञान गमाई ॥

॥ सवैया ॥

केतेक ओम् और राम के मंत्र को आप लिखे औरों से लिखावे ।
कौन से वेद में ऐसो लिख्यो जिनसे ये मूरख जगत बहकावे ।
कागद और गुमावत स्याही नयन को अपने अन्धे बनावे ।
मान कहे उर राच्यो नहीं घनश्याम उन्हें कहूँ दृष्टि न आवे ॥

॥ सवैया ॥

ओम् को मंत्र पढ्यो हमने हम ओम् स्वरूप में सहज समाये ।
ओम् ही रूप लख्यो जग को और ओम् बिना कछु और न पाये ।
ओ और वो सब दूर गये हम ही हम ओहं रूप लखाये ।
मान कहे अस ओम् रटे रटते रटते निज ओम् रहाये ॥

॥ दोहा ॥

सारंग मन मीठी घणी, शोभा कही न जाय ।
यह रस कहिये कानको, मुख जो कान के नाँय ॥
जहाँ मुख है शोभा नहीं, क्यों कर दहें सुनाय ।
मानसिंह सारंग को, सुणियाँ ही पत आय ॥
इत सारंग जो राग है, इत सारंगी साज ।
इत सारंग(१) को गान हो, और सारंग (२) को हो गाज ॥
सारंग एता भेला हुवा, क्या जानूँ क्या होय ।
एक ही सारंग राग आ, सुणताँ ले मन मोय ॥

॥ गान ॥

॥ राग सूर-सारंग ; तर्ज रसिये की । ताल कैरवा ॥

इणने भेड़ सूँ सिंह बनावो रे, मनवे ने ॥ टेर ॥

१—स्त्री, २—मेघ ।

जीव भौड़ में भूल गयो है। हेजी या सूँ अविद्या रो जाल हटावो रे; म० ॥ १ ॥
सिंहणी जायो पण पाल्यो गडरियाँ। हेजी अब याँरे हाथ सूँ छुड़ावो रे; म० ॥ २॥
घास गरीबी ओ खाय बापड़ो। हेजी ज्याने समता रो मांस खिलावो रे; म० ॥ ३॥
सिंह बणे जद चरसी विषयों ने। हेजी इणने तुरिया बन पहुँचावो रे; म० ॥ ४ ॥
मान कहे ऐसो मौको मिलियो। हेजी इण रो अब मत दाव गमावो रे; म० ॥ ५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की। ताल दीपचन्दी ॥

अब ही महल निज आवो रसिया ॥ टेर ॥
कुबड़ी रे महलाँ घणा दिन बीत्या;
अब सुमता सूँ प्रेम बढ़ावो जी रसिया। अब ही० ॥ १ ॥
पाँच विषय रस कई दिन पीयो;
अब ज्ञान आनन्द मद पावो जी रसिया। अब ही० ॥ २ ॥
सौती की सहज घणा दिन सूता;
पीव प्यारी सहज जगावो जी रसिया। अब ही० ॥ ३ ॥
मन मथुरा थे घणा दिन रहया;
अब गम री गोकुल में खेलावो जी रसिया। अब ही० ॥ ४
सुमता श्यामा याद दिलावे;
म्हाँ ने दिल सूँ मती बिसरावो जी रसिया। अब ही० ॥ ५ ॥
चित्तरो चैत म्हारो सगलो ही कुम्हल्यो;
या में प्रेम वर्षा बर्सावो जी रसिया। अब ही० ॥ ६ ॥
फागुण बीत्यो फिकर के माँ हि;
अब चैत चित्त सुलझावो जी रसिया। अब ही० ॥ ७॥
मानसिंह कह शुद्ध कामना;
म्हाँ ने तत्त्वमसि भोग भोगावो जी रसिया। अब ही० ॥ ८॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे नींद सुख सूतो मनवा ॥ टेर ॥
सूताँ सूताँ थारो काम न सरसी; ऊपर काल तो आय पकड़सी;
इण काल फौज सूँ तू किण विध लड़सी । काँई रे नीन्द० ॥ १ ॥
बहुत प्रबल आ काल की माया; इण में बड़ा बड़ा गोता खाया;
कैयाँ रा माल अठे मुफ्त लुटाया । काँई रे नीन्द० ॥ २ ॥
तेरो तू अजहू जाणे नाँई; आयोड़ी बाजी ने हाथे गमाई;
अजहू जीतले जेज लागे नाँही । काँई रे नीन्द० ॥ ३ ॥
अपनो रूप लख्याँ दुःख मिट जावे; काल बली फेर निकट न आवे;
अन्ध कूप सूँ तुरत बच जावे । काँई रे नीन्द० ॥ ४ ॥
पन्थापन्थ में तो पग मत दीजे; याँ रोलाँ सूँ तो अलगो रहीजे;
कोई सन्त पिलावे तो अमृत पीजे । काँई रे नीन्द० ॥ ५ ॥
मानसिंह जैसा गुरु कद पासी; जोया न मिलसी इसा संन्यासी ;
मान गुमान काट जम फाँसी । काँई रे नीन्द० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

अब के आनन्द म्हाँने आयो रसिया ॥ टेर ॥
बाहिर ढूँढत घर माँही मिलियो; आनन्द मगन होय मनवो खिलियो । अब० ॥१॥
बाट जोवताँ ने सहज मिलायो; सद्गुरु मिलताँ ही रतन दिलायो । अब० ॥२॥
भूल भरम सूँ अकेली सूती, मानी नहीं संग कुमता दूती । अब० ॥३॥
पिव प्यारी प्यारी पीव भया एको, दोय पणे रो मिट गयो लेखो । अब० ॥४॥
प्रीतम छताँ मैं तो जाणी कुमारी; हा हा भूल कर रह गई न्यारी । अब० ॥५॥
क यूँ हनुमान मान गुरू पायो; जिण गृहस्थ बीच संन्यास दिखायो । अब० ॥६॥

|| गान ||

|| तर्ज "कोरे काजलिये" की । ताल कैरवा ||

भर दिव्य नेत्र में सार, कोरो काजलियो || टेर ||
ज्ञान दीप नित जोत जगी । जिण में प्रेम की बाती लगी ।
तू गम को घृत नित डार; कोरो काजलियो० || १ ||
अंजन सूँ नित सुख पावे । काम क्रोध फिर नहीं आवे ।
और मोयले वृत्ति नार; कोरो काजलियो० || २ ||
दिव्य नेत्र जिण सूँ खुले । मोह निन्द्रा में नाँय घुले ।
जब होसी गीता विचार; कोरो काजलियो० || ३ ||
प्राज्ञ अन्ध तू क्यों जो भयो । प्रज्ञा चक्षु मीच रयो ।
चट पट लेवो उघार; कोरो काजलियो० || ४ ||
इण दम की कुछ ठाव नहीं । आवे और यह आवे नहीं ।
मत कीजे जेज लिगार; कोरो काजलियो० || ५ ||
जैसे कृष्ण पारथ हि दियो । देवनाथ गुरु मोय कह्यो ।
मोय अपनो सेवक विचार; कोरो काजलियो० || ६ ||
मान कहे मैं सब को कहूँ । गुप्त भेद नहीं नेक रखूँ ।
कोई देखो इणने सार; कोरो काजलियो० || ७ ||

|| गान ||

|| राग काफी । ताल दीपचन्दी ||

सत बोलो रे, साफ़ सत बोलो; कपट पट खोलो रे || टेर ||
स्वारथ छुरी को दूर फैंक दो, मत अमृत विष घोलो रे । सत बोलो० || १ ||
झूठ कपट सूँ किता दिन चलसी, मत ले सायब सूँ ओलो रे । सत० || २ ||
तुम भी जबर उस प्रभु से छिपाओ, अन्तर्यामी नहीं है भोलो रे । सत० || ३ ||
पन्थापन्थ के कपट पट दीया, खूब मचायो इन रोलो रे । सत० || ४ ||
बाँया ने जीवणा दसा ने बीसा, छोड़ सीधे मग होलो रे । सत० || ५ ||

नारी ने पुरुष स्वारथ सूँ बिगाड़ो, पड़ेला जमों रो शिर ठोलो रे। सत० ॥ ६ ॥
नकटों री लाज राम किम राखे, राम नहीं है थाँरो गोलो रे। सत० ॥ ७ ॥
देवनाथ गुरु सत समझाई, जाओ छाती मत छोलो रे। सत० ॥ ८ ॥
मानसिंह कहे सिंह जो बननो, कहूँ सो वचन कोंदे तोले रे। सत० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी। ताल कैरवा ॥

आवो जी मिल होरी खेलें, घोल्यो सुरंगी रंग ॥ टेर ॥
याँ रँगों सूँ मत खेल बावरे, कल उड़ जायगो पतंग। आवो जी० ॥ १ ॥
इण रंग सूँ तो अति सुख उपजे, शीतल होय जावे अंग। आवो जी० ॥ २ ॥
ब्रह्मानन्द की बूटी पिलाऊँ, पियो मत विषय की भंग। आवो जी० ॥ ३ ॥
प्रेम भाव सूँ खेलो फगवाँ, सत्पुरुषों के संग। आवो जी० ॥ ४ ॥
मान कहे नर नारी सभी मिल, खेलो खेलो करके उमंग। आवो जी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी। ताल कैरवा ॥

होरी में हिम्मत से खेलनो, अलबेलों रो काम ॥ टेर ॥
जो डरपोक जीव है बपुरा, विषयों तणाँ गुलाम। होरी में० ॥ १ ॥
इण होरी में काम फुरती रो, पलक नहीं है विश्राम। होरी में० ॥ २ ॥
महा जालिम सूँ जीत निकलनो, जबरी है माया भाम। होरी में० ॥ ३ ॥
जो चूके यो चिम्मट मारे, कर लेवे अपनो गुलाम। होरी में० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु फुरती सिखाई, मिल गयो आतमराम। होरी में० ॥ ५ ॥
मानसिंह कहे जेज मति कीजो, फुरती रो है ओ काम। होरी में० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल दीपचन्दी ॥

फकीरी कायर सूँ कद होय।
सूरा खेल इणी पर खेले, कायर देवे रोय। फकीरी कायर० ॥ टेर ॥

इण शूली पर काँई तू सोवे, हम नहीं मानें कोय।
निश्चय री शूली कलेजे पोवे, मरद जाणूँ जद तोय। फकीरी० ॥ १ ॥
काँई तू लकड़ जगावे गैला, क्यों हम अमोलक खोय।
जब तक ज्ञान अगन नहीं जागी, शिर कुटाई होय। फकीरी० ॥ २ ॥
काँई तू साँकल कसे कमर में, दीवी बुद्धि ने खोय।
नित साँकल जो बन्धे म्हारे गज रे, वज़न तोल मण दोय। फकीरी० ॥ ३ ॥
यूँ कीयाँ नहीं मानों फकीरी, म्हाँने भोला न जाणो कोय।
सिंहा रा सुत सिंह ही होसी, खाल भेड़ाँ री खोय। फकीरी० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु दीवी फकीरी, अब रेया बेफिकरी में सोय।
सूताँ पछे जागण री है सौगन्द, मत बतलावो कोय। फकीरी० ॥ ५ ॥
जगत बहके ज्यों मैं नहीं बहकूँ, सोच फिकर दिया खोय।
मानसिंह कहे मेरे घर आईजो, सुरत आप में पोय। फकीरी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा मती रे बिगाड़ो देश।
खेलणो हुवे तो खरी पर खेलो, ले गुरु रो उपदेश। फकीरा मती० ॥ टेर ॥
तारण कारण फकर भया थें, धर अग्नि रो भेष।
भेष री टेक तो भूल गया थें, कर कर मौज हमेश। फकीरा मती० ॥ १ ॥
छोटो कुटुम्ब छोड़ दियो घर में, अब मोटे सूँ आदेश।
अब तो स्वार्थ ने छोड़ो साधो, दोरा खेंचसीं केश। फकीरा मती० ॥ २ ॥
थाँ सूँ तो नर म्हे ही आछा, जिण पायो आतम अचलेश।
बाजो फकीर ने फिकर चौगुणो, कियो नहीं ब्रह्म प्रवेश। फकीरा मती० ॥ ३ ॥
भारत देश रसातल जावे, दिन दिन दूणो कलेश।
पन्थापन्थ में पच पच मूँवा, भूल्यां आतम नरेश। फकीरा मती० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, भागा भरम सन्देह।
मानसिंह जद मन समझायो, पहर्यो अचल रङ्ग भेष। फकीरा मती० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

नर ए नहीं व्यौपारी, देखो विचारी, बेचे काच कथीर ।
थेतो सुण लीजो सब वीर रे । नर ए० ॥ टेर ॥
मोटा मोटा धूणा घाले, बैठे गंगा तीर ।
राम की ओट में चोट करे ए, चावे पूड़ा ने खीर रे । नर ए० ॥ १ ॥
मोटी मोटी बाताँ बणावे, राखे लँगोटी चीर ।
लागे दम जब गम न पड़े कुछ, नहीं वे धरे मन धीर रे । नर ए० ॥ २ ॥
पन्थापन्थ री भौड़ मचाई, बांधे कड़ी जंजीर ।
बाजे तो बाबा पण काबा माया रा, नहीं समदाँ सूँ सीर रे । नर ए० ॥ ३ ॥
अलगाँ सूँई हाथ याँने जोड़ो, नेड़ा न अवणदो वीर ।
जो कोई याँरे पाने पड़िया, ज्याँरो फूटो तकदीर रे । नर ए० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु महर करी म्हाँने, दीया असली हीर ।
मान मिल्या जो समुद्र से जायके, कुण पीये नाल्यों रो नीर रे । नर ए० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग रेखता । ताल कवाली ॥

बने हम त्याग के त्यागी, त्याग यह क्या विचारा है । ॥ टेर ॥
अगर कहो देह को त्यागो, तो इसको हमने कब पकड़ी ।
छोड़ते देह को मूरख, ज्ञान झूठा तुम्हारा है ॥ १ ॥
छोड़ अभिमान इस तन का, लैन पर हम चलावेंगे ।
फँसेंगे किस लिये हम तो, हमें खारा न प्यारा है ॥ २ ॥
रहें व्यवहार में प्रवृत्त, वही तो सच्चे ज्ञानी हैं ।
निकल कर जाँय जंगल में, मता नहीं यह हमारा है ॥ ३ ॥
अगर कुछ त्याग में होता, तो भिक्षुक होता था अर्जुन ।
बचाया क्यों संन्यासी से, कृष्ण पागल तुम्हारा है ॥ ४ ॥

त्यागे कोई चीज और होवे, सभी यह खेल है मेरा।
स्वाँग में सब सजाता हूँ, बिगड़े ना कुछ हमारा है॥ ५॥
अगर कोई त्याग को त्यागे, बनाऊँ दोस्त में उसको।
कहे नृप मान रूप मेरा, न मुझ से कुछ भी न्यारा है॥ ६॥

॥ गान॥

॥ तर्ज "डंके" की। ताल कैरवा॥

धर्म धर्म सब कहे धर्म को अरथ न जाने रे, लख्याँ बिन किम पहिचाने॥ टेर॥
बाड़ा बन्धी धर्म बनाय। इसमें नाना जीव फँसाय।
कृष्णचन्द्र जो कयो धर्म सो कोइयन माने रे। लख्याँ बिन०॥ १॥
नाना मजहब सो धर्म है नाँय। यह मन आये दिये ठहराय।
धर्म वाक्य यूँ वेद उपनिषद सही बखाने रे। लख्याँ बिन०॥ २॥
धर्म यही शुभ कर्त्तव्य काम। अधरम वह विषयों के गुलाम।
विषय वास सूँ रहे रहित वो धर्म को माने रे। लख्याँ बिन०॥ ३॥
जब अधर्मी बहु बढ़ जाय। विषय ज्वाल को बहुत जगाय।
दिव्य मूरत धर कृष्णचन्द्र अधर्म मिटाने रे। लख्याँ बिन०॥ ४॥
आतमतत्त्व लखे कोई जान। उनको धर्मी सच्चे मान।
पाँच तीन को वश में किया जद आप समाने रे। लख्याँ बिन०॥ ५॥
कीनो असुर धर्म जब रूसार। देवनाथ गुरु लियो अवतार।
मानसिंह कहे सद् गीता को धर्म सुनाने रे। लख्याँ बिन०॥ ६॥

॥ गान॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली की वाणी" की। ताल दीपचन्दी॥

मित्रो म्हाँने वा लघुता नहीं भावे।
दुश्मण आय शीश काटण ने, क्यों कर लघु बन जावें।
क्षत्रीकुल को दाग पुनि लागे, गीता वचन शरमावे रे। मित्रो०॥ १॥
आग जले और बुझावे नाँ ईं, तो सगलोई घर जल जावे।
पाणी पहिला पाल बान्ध लो, वचन बड़ा फरमावे रे। मित्रो०॥ २॥

इण गम लघुता नाश कियो सगलो, अजहूं कियाँ ई जावें।
अर्जुन होय पढ़े कोई गीता, तो भ्रम तम मिट जावे रे। मित्रो० ॥ ३ ॥
जो नहीं हममें शक्ति होगी तो, खाय खड्ग मर जावें।
मरते मरते मारें दुष्टों को, खाली न हाथ गमावें रे। मित्रो० ॥ ४ ॥
वक्त पड़े तो लड़ें हम जम सूँ, नहीं तो चींटी नाँय सतावें।
काम पड़याँ तो शेर खा जावें, नहीं तो जल के जीव बचावें रे। मित्रो० ॥ ५ ॥
सज्जनों के लिये तो लघु हम इतने, चरणों की रज कहलावें।
दुष्टों के लिये बुरे हमें समझो, खुद यमराज बन जावें रे। मित्रो० ॥ ६ ॥
लघुता ही लघुता करी जद अर्जुन, गाली कृष्ण की खावे।
ज्ञानी होय लड़यो भारत में, जद महावीर कहलावे रे। मित्रो० ॥ ७ ॥
लघुता करी पृथ्वीराज चोहाना, तो गल में तोख पहिरावे।
जो हम होते तो इन म्लेच्छन को, जड़ों समेत उड़ावें रे। मित्रो० ॥ ८ ॥
चूड़ो सात पहराई शाह को, कारण कौन छुड़ावे।
हम नहीं थे या थे नहीं कृष्णजी, जिण से मार मुफत में खावे रे। मित्रो० ॥ ९ ॥
अपने ही शत्रु आप हम पाले, किण ने दोष लगावें।
अब शत्रुन को व्यूह भयो सैंठो, किम कर भेद्यो जावे रे। मित्रो० ॥ १० ॥
जहाँ तक बने जो हिम्मत नहीं हारें, गीदड़ नाँय कहलावें।
लघु से लघु करड़े से करड़ा, यूँ मनु महाराज फरमावें रे। मित्रो० ॥ ११ ॥
चाणक्य आदि ऋषि यही भाखे, कितने प्रमाण बतावें।
हिम्मत में मजबूत रहें जद, हिन्दू नाम धरावें रे। मित्रो० ॥ १२ ॥
कोई कहे सिन्धु से जाति हमारी, यह कोई प्रमाण न पावे।
इन्दु सिन्धु वृथा ए सबही, हिन्दु हिम्मत उर लावे रे। मित्रो० ॥ १३ ॥
सिन्धु नाम समुद्र को कहिये, कैसे सम्बन्ध मिलावे।
आदि अनादि हम आर्य वीर थे, हिन्दु इन्दु सिन्धु न कहावे रे। मित्रो० ॥ १४ ॥

मदत दिवी तुर्कन को जिनते, हिम्मत अपनी दिखावे।
कट्टर वीर उन हमको देखें, जद हिन्दू नाम छपावे रे। मित्रो० ॥ १५ ॥
ऊँचो पद लख मान लियो हम, प्रथा यह छोड़ी नहीं जावें।
साँप विचारो तो मारग लागो, निकमी लीक पिटावे रे। मित्रो० ॥ १६ ॥
हिम्मतदार हम करें क्यों लघुता, आदि असर नहीं जावे।
जिण में ही गुरु जो नाथ मिल्या हमको, ब्रह्म तेज दरसावे रे। मित्रो० ॥ १७ ॥
पैदल चलताँ ने अश्व मिल्यो जद, कुण कब पालो जावे।
ज्ञान के घोड़े करो असवारी, क्यों खर पीठ चढ़ावें रे। मित्रो० ॥ १८ ॥
वेद शास्त्र उपनिषद् देख्या, यह तो सब ही सुनावे।
सज्जनों का शिष्य गुरु मूरख का, कैसे हम वचन मिटावें रे। मित्रो० ॥ १९ ॥
मानसिंह यह आदि सनातन, ओछी गली न भटकावें।
ऋषि महर्षि सड़क दिवी सीधी, कुण कीचड़ माँहि जावे रे। मित्रो० ॥ २० ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल कैरवा ॥

झुर रयो भारत देश; वाँ नराँ बिन झुर रयो भारत देश ॥ टेर ॥
चिन्ता चित में रखत प्रजारी, महर की निजर हमेश। वाँ नराँ० ॥ १ ॥
कहा गरीब धनवान कोई क्या, सबको एक लखेस। वाँ नराँ० ॥ २ ॥
नर होता ही नारायण बाज्या, ज्याँरो गुण गावे शेष। वाँ नराँ० ॥ ३ ॥
पर मुलकों रा शीश नवाता, दरशण करता हमेश। वाँ नराँ० ॥ ४ ॥
ध्रुव ने प्रह्लाद प्रथम नर कहिये, करता राज योगेश। वाँ नराँ० ॥ ५ ॥
राम लखन और भरत शत्रुघन, भायों प्रेम विशेष। वाँ नराँ० ॥ ६ ॥
लव कुश बाल पणे युद्ध कीनो, रविकुल वंश ध्वजेश। वाँ नराँ० ॥ ७ ॥
पाँच पुत्र कुन्ती अस जाया, मानो धर्म धजेश। वाँ नराँ० ॥ ८ ॥
कृष्ण समान कौन अस ज्ञानी, करता ही न्याय रहेश। वाँ नराँ० ॥ ९ ॥

भीष्म पिता से वीर कहाँ वे, ज्याँरी इच्छा सूँ मृत्यु भयेश। वाँ नराँ० ॥ १० ॥

वीर अभिमन्यु से कहाँ वो लाला, जिण चक्रव्यूह भेदेश। वाँ नराँ० ॥ ११ ॥

पृथ्वीराज चौहान से कितना, सूतो ही कँपे तुरकेश। वाँ नराँ० ॥ १२ ॥

राण महाराण पातल सम कितना, रग रग वीर रस रेल। वाँ नराँ० ॥ १३ ॥

कब तक कहूँ गुण कह्यो नहीं जावे, नयनों में बरसे मेह। वाँ नराँ० ॥ १४ ॥

मान कहे विधना तू भेजे, ऐसा नर फेर शुभेश। वाँ नराँ० ॥ १५ ॥



